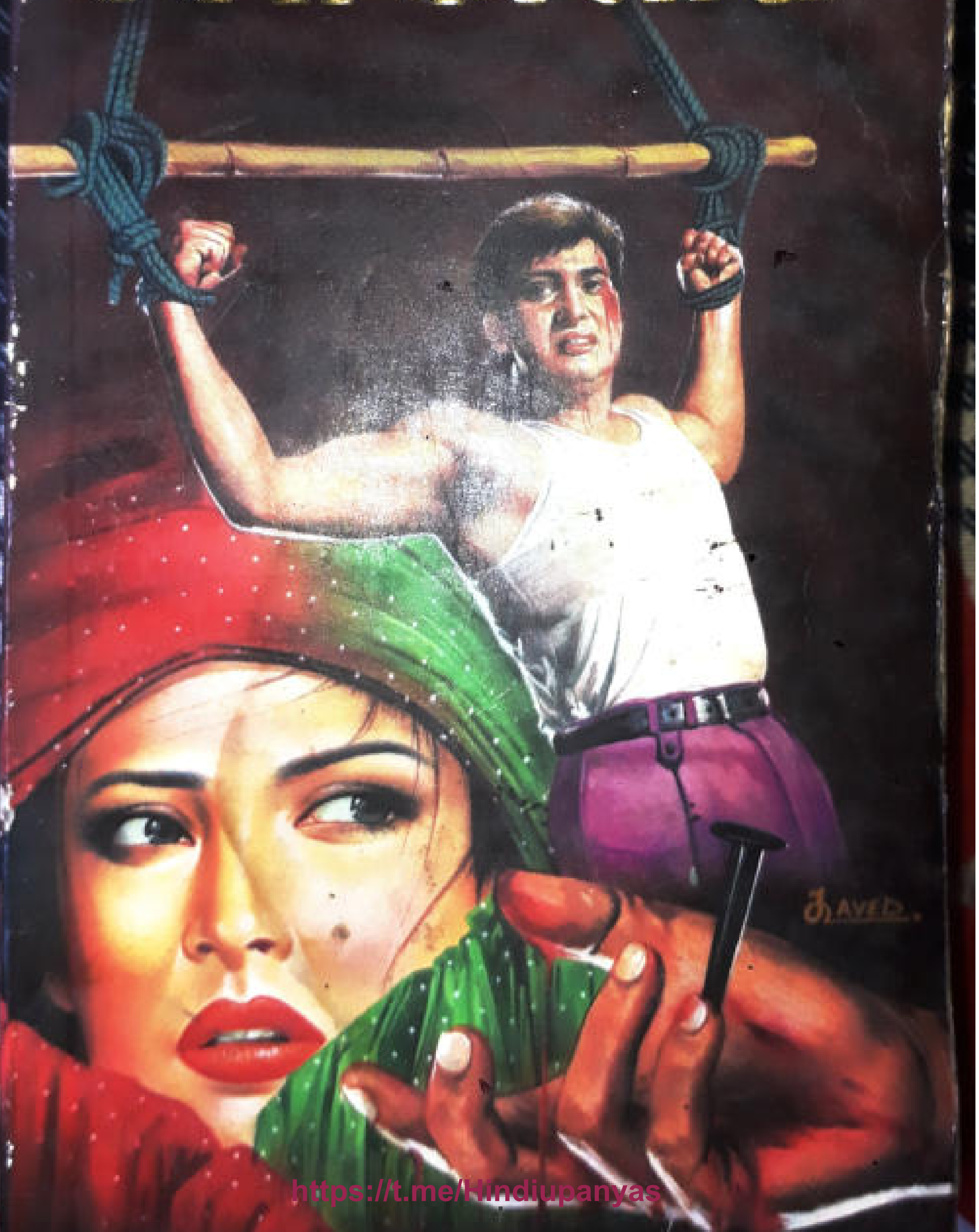
नया उपन्यास

अनिल सलूजा

वक्त का मारा



वक्त का मारा

अनिल सलूजा

"अरे सुना तूने—बिजली उस्ताद आ गया है।"

"कब?"

"आज ही आया है।"

"फिर तो समझो आज शाम को ही दो-चार फट्टड़ हुए कि हुए—। जब तक दो-चार के सिर पर पट्टियां नहीं बंधतीं—तब तक उसे चैन ही नहीं मिलता।"

"अरे यार—जेल में राज भी तो उसी का चलता है—। यह जेल तो जैसे उसकी सल्तनत है। कुछ रोज के लिये बाहर जाता है—फिर वापिस लौट आता है—और आते ही खून खराबा शुरू कर देता है।"

"वो तो करेगा ही—। राजगद्दी यूं ही हासिल नहीं हो जाती—खून बहाना पड़ता है उसके लिये—। उसके जाने के बाद कोई न कोई राजा बन बैठता है जेल का—ऐसे में बिजली उस्ताद के आने पर वह गद्दी खाली क्यों करेगा। बस उसी के लिये झगड़ा होता है।"

"हां भई—यह राजगद्दी का चस्का ही ऐसा है कि जो उसे चख ले—उससे चिपके ही रहना चाहता है।"

"अब कहां है बिजली उस्ताद?"

"पता नहीं—। अपनी बैरक में होगा—। अरे आधे घण्टे बाद खाने की घण्टी बजेगी—। अपने आप ही सभी को उसके दर्शन हो जायेंगे।"

यह बात हो रही थी दो कैदियों में जो कि जेल के ही एक हिस्से में भैंसों को नहला रहे थे।

'टन...टन...टन...टन।'

घण्टी बजने की आवाज दूर-दूर तक फैली—और उसी के साथ ही अलग-अलग कामों में लगे कैदियों ने अपना-अपना काम वहीं छोड़ा और एक लम्बे-चौड़े मैदान की तरफ बढ़ने लगे।

मैदान में एक जगह पर चार टेबल लगी हुई थीं जिनमें से दो पर बड़े-बड़े दो पतीले रखे हुए थे और एक मेज पर एक के ऊपर एक बड़ी-बड़ी रोटियों की कई कतारें लगी हुई थीं।

चौथी टेबल पर एल्युमीनियम की थालियां रखी हुई थीं तथा साथ में कटोरियां थीं।

टेबलों के पीछे दो आदमी खड़े थे—जिनकी वर्दी से ही पता चल रहा था कि वे भी कैदी हैं।

उनके करीब चार पुलिसकर्मी हाथों में डण्डे लिये खड़े थे।

मैदान के चारों कोनों पर एक-एक वाच टावर बना हुआ था—जिस पर कि राईफलों से लैस जवान ड्यूटी दे रहे थे।

उनकी तेज निगाहें उन कैदियों को देख रही थीं जो कि काम-काज छोड़कर मैदान में आ रहे थे।

देखते ही देखते टेबलों के करीब कैदियों की लम्बी लाईन लग गई।

"चलो शुरू हो जाओ—।" टेबलों के पीछे खड़े दोनों कैदियों में से एक ने लाईन में सबसे आगे खड़े कैदी से कहा।

कैदी ने तुरंत टेबल से एक थाली और कटोरी उठाई और पहले पतीलों के पीछे खड़े कैदी के पास आया।

"डाल।" वह थाली आगे करते हुए बोला।

उस कैदी ने पतीले में से कड़छी भरकर दाल निकाली और थाली में रखी कटोरी को दाल से लबालब भर दिया।

कैदी ने थाली वापिस अपने करीब की और एक कदम आगे बढ़कर रोटियों के सामने आ गया।

रोटियों वाले कैदी ने चार रोटी उसकी थाली में डाल दीं।

जैसे ही वह आगे बढ़ा—तुरंत उसके पीछे दूसरा कैदी आ खड़ा हुआ।

कैदी ने उसकी थाली में चार रोटी डाल दीं।

इसी तरह अभी चार कैदी ही भुगते थे।

उस वक्त पांचवां कैदी अपनी थाली उठा ही पाया था कि तभी—

"पीछे हट—।"

दाल वाले कैदी ने उसे फटकारा और खीसें निपोरते हुए लाईन की साईड में देखने लगा।

उसकी देखा-देखी लाईन में खड़े कैदी भी गर्दन मोड़ पीछे देखने लगे।

पांचवें कैदी ने भी, जिसने थाली और कटोरी पकड़ रखी थी पीछे देखा।

बिजली उस्ताद अपने छह चमचों के साथ आ रहा था।

साढ़े छः फीट ऊंचा—पहलवानों जैसा शरीर—चौड़े कन्धे—रंग गेहुंआ—। उसके सिर के बाल पीछे जाकर एक छोटी-सी चोटी की सूरत लिये हुए थे।

"सलाम बिजली उस्ताद।" लाईन में से एक ने उसे सलाम ठोंका।

"राम-राम बिजली उस्ताद।" दूसरे ने कहा।

"कैसे हो बिजली उस्ताद?" तीसरे ने कहा।

यह उसकी दहशत ही थी जो हर कोई उसे सलाम ठोंक रहा था।

लेकिन बिजली उस्ताद किसी की भी राम-राम का जवाब दिये बिना अपनी ताकत के मद में चूर मस्त हाथी की तरह चलता लाईन के बराबर चलता हुआ आगे बढ़ रहा था।

उसके चमचे सीना चौड़ा किये—बांहों को अकड़ाये उसके दायें-बायें ऐसे चल रहे थे जैसे उसके बॉडी गार्ड हों।

दाल वाला कैदी अभी भी खीसें निपोरे उसे देखे जा रहा था। जैसे ही वह करीब आया—वह चापलूसी भरे स्वर में बोला—

"आओ बिजली उस्ताद—अब बाकी के सभी तभी खायेंगे जब तेरा भोग लगेगा—।"

तभी वह चौंका—।

उसके पतीले के खड़कने की आवाज ने उसे चौंकाया था।

तुरंत उसने गर्दन दाल के पतीले की तरफ की तो बुरी तरह से हड़बड़ा उठा वह।

पांचवां कैदी दाल की कड़छी भरकर अपनी कटोरी में डाल रहा था।

"ऐ...।" कैदी गुर्राया—"यह क्या कर रहा है?"

पांचवें ने जवाब नहीं दिया और कड़छी वापिस पतीले में डाली और एक कदम आगे बढ़ाकर चार रोटियां उठाईं और जैसे ही वहां से हटने को हुआ—

पीछे से किसी ने उसका कालर पकड़ लिया।

पांचवें कैदी ने दोनों हाथों में थाली पकड़े गर्दन पीछे घुमाई।

बिजली उस्ताद का एक चमचा उसका कालर पकड़े खूंखार निगाहों से उसे घूर रहा था।

"साले—।" निगाहें मिलते ही वह गुर्राया—"जानता नहीं जब तक बिजली उस्ताद खा नहीं ले—तब तक कोई नहीं खा सकता। रख थाली वापिस मेज पर—।"

पांचवें की आंखों में खून उतर आया। चेहरे पर खुरदरापन आ गया।

लेकिन बोला कुछ नहीं वह—बस हल्का-सा फटका दिया उसने कंधे को और चमचे के हाथ से कालर छूट गया। हड़बड़ाते हुए चमचे ने बिजली उस्ताद को देखा जो कि खूंखार निगाहों से पांचवें को देख रहा था।

पांचवें ने गर्दन सीधी की और कदम उधर बढ़ाया—जिधर कि पहले के चार कैदी बैठे खाना खा रहे थे।

रोटियों पर वे इस तरह हाथ साफ कर रहे थे—मानो उन्हें डर हो कि अगर उन्होंने तुरंत खाना समाप्त नहीं किया तो रोटी उनके हाथों से छिन जायेगी।

टेबलों के करीब हाथों में डण्डे लिये खड़े सिपाही भी इस तरह मूक दर्शक बने हुए थे मानो वे जेल के मुलाजिम नहीं बल्कि बिजली उस्ताद के गुलाम हों।

पांचवें ने अभी दो-तीन कदम ही आगे बढ़ाये थे कि तभी बिजली की-सी तेजी से बिजली उस्ताद उसके सामने आया और टांगों को चौड़ाकर कमर पर हाथों को रख उसे घूरने लगा।

पांचवें के पांव वहीं स्थिर हो गये—और ठीक तभी बिजली उस्ताद के चमचों ने भी पांचवें को घेर लिया।

"थाली वापिस रख—।" फुंफकारा बिजली उस्ताद और टेबलों की तरफ उंगली सीधी की।

पांचवें ने गम्भीरता भरी सांस छोड़ी और बड़े ही ठहरे अंदाज में बोला—

"मैं नहीं जानता तुम कौन हो—? मुझे बस यही पता है कि मेरी तरह तुम भी यहां एक कैदी हो—। और इससे अधिक मैं जानना भी नहीं चाहता—। रही थाली वापिस रखने की बात तो...।" उसने थाली थोड़ी ऊपर की—"यह खाना मैंने लाईन में लगकर अपना नम्बर आने पर लिया है—।"

"ओये—।" तभी पीछे खड़े चमचे ने पांचवें की गुद्दी पर चपत जमाई—"जब उस्ताद यहां है तो समझ ले लाईन उस्ताद से शुरू होती है।"

पांचवें ने गर्दन पीछे घुमाकर जिन निगाहों से चमचे को देखा—उसे देखकर चमचा पहले तो हड़बड़ाया फिर छाती फुलाते हुए गुर्राया—

"अबे ऐसे क्या देख रहा है साले—चुपचाप थाली रख टेबल पर वर्ना अगर उस्ताद शुरू हो गया तो पांच-सात पसलियां नई डलवानी पड़ेंगी तुझे।"

निश्चय ही बिजली उस्ताद की मौजूदगी में वह दिलेरी दिखा रहा था।

पांचवें ने गर्दन सीधी की और बिजली उस्ताद की तरफ देखते हुए गहरी सांस छोड़ी।

"देखो बिजली उस्ताद—।" वह गम्भीरता से बोला—"इस थाली पर मेरा अधिकार है। यह तो अब वापिस जायेगी नहीं, रही मुझसे पहले खाना खाने की बात तो कल को तुम मुझसे पहले आ जाना और लाईन में लग जाना। तुम...।"

बात बीच में ही रह गई उसकी—ठीक तभी उसके बांईं तरफ खड़े चमचे ने लात चला दी।

लात थाली के निचले हिस्से में लगी और थाली पांचवें के हाथों से निकल हवा में उड़ी।

थाली में रखी रोटियां हवा में ही बिखर गईं—। दाल हवा में ही फैल गई और नीचे खड़े सभी चमचों के साथ-साथ बिजली उस्ताद और पांचवें पर आ गिरी।

रोटियां कच्ची धरती पर इधर-उधर गिरीं—और थाली तथा कटोरी तेज आवाज करते हुए एक तरफ गिरीं।

पांचवें की आंखों में खून उतर आया।

झटके से उसने डण्डे लिये खड़े पुलिसियों को देखा तो उन्होंने फौरन मुंह फेर लिये जैसे उन्हें इससे कोई सरोकार ही न हो।

पांचवें की मुट्ठियां भिंच गईं।

चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो उठा।

और अगले ही पल—

किसी की कुछ भी समझ में नहीं आया कि क्या हुआ—। बस थाली को लात मारने वाले चमचे को बुरी तरह से चीखते हुए उछलकर

पीछे गिरते देखा था सभी ने।

अपने साथी को इस तरह पीछे को गिरते देख चमचे पहले तो हकबकाये—फिर वे एक साथ पांचवें पर झपटे।

"ठहरो...।"

तभी दोनों हाथ उठाते हुए दहाड़ा बिजली उस्ताद।

सभी चमचों के कदम वहीं जाम हो गये।

बिजली उस्ताद ने अब पांचवें को गौर से देखा।

छह फीट के करीब कद—पतला मगर फुर्तीला नजर आने वाला शरीर—चौड़ा सीना—गाल भीतर को थोड़े-थोड़े धंसे हुए मगर मसल्स उभरे हुए—आंखों में चीते जैसी चमक व रंग गौरा। कुल मिलाकर वह अपने चेहरे से बिल्कुल ब्रूसली नजर आ रहा था।

बिजली उस्ताद ने अपनी उंगलियों को चटखाया और गर्दन को भी चटखाते हुए बोला—

"बहुत अर्सा हो गया किसी की टांग-बांह तोड़े हुए—आज मुराद पूरी हो रही है—। कोई बीच में नहीं आयेगा।"

चमचों के पैर पीछे हटते चले गये।

तभी बिजली उस्ताद ने तेज हुंकार भरते हुए पांचवें पर छलांग मार दी।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे बिजली उस्ताद एक ही घूंसे में उसका जबड़ा तोड़ देगा।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

पांचवें ने तेजी से अपनी पोजीशन बदली और उसी के साथ ही उसकी टांग उठी और अपने से भी लम्बे बिजली उस्ताद के मुंह पर पड़ी।

'हक' की आवाज निकली बिजली उस्ताद के मुंह से और वह पीठ के बल नीचे जा गिरा।

जिस ढंग से पांचवें ने उसे मारा था—उसी से पता चलता था कि वह लड़ने की कला में माहिर है।

तभी तो उसने पहली ही बारी में अपने से कहीं भारी बिजली उस्ताद को नीचे गिरा दिया था।

बहुत बड़ा अपमान था यह बिजली उस्ताद का...। तभी तो उसके चेहरे पर खीझ भरा गुस्सा उभर आया था।

उधर लाईन में लगे कैदी अब उन दोनों के चारों तरफ खड़े हो गये थे।

उछलकर बिजली उस्ताद खड़ा हुआ और पांचवें पर झपट पड़ा।
और फिर,
एक भयानक जंग छिड़ गई दोनों में।
एक ताकत में उस्ताद था तो दूसरा पैंतरेबाज़ी में उस्ताद था।
जहां बिजली उस्ताद का घूंसा पांचवें के होश उड़ा देता था—वहीं अपनी फुर्ती से पांचवां उसे धूल चटा देता था।
मुकाबला बराबर का हो रहा था।
दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं हो रहा था।
आखिर एकाएक ही पांचवां एकदम से इतना ऊंचा उछला कि वह उसके सिर से ऊपर हो गया और फिर उसके दोनों पैरों की फ्लाईंग किक बिजली उस्ताद के माथे पर पड़ी।
बिजली उस्ताद बुरी तरह से चीखता हुआ पीछे जा गिरा और उसी के साथ ही उसके चेहरे पर खून की धारायें बह उठीं।
इससे पहले कि वह खड़ा होता—जेलर वहां पहुंच गया।
"क्या हो रहा है यहं सब—?" वह दहाड़ा।
"कुछ नहीं जेलर—!" अपना खून पोंछते हुए बिजली उस्ताद खड़ा होते हुए हंसा—"अपुन का याड़ी है—जरा जोर आजमाईश कर रहे थे।"
जेलर ने घूरकर उसे देखा।
"तेरी ड्रामेबाजी मैं खूब जानता हूं बिजली—!" वह गुर्राया—"बाहर तुम दुनिया को चैन नहीं लेने देते—और भीतर भी कोहराम मचाते हो। यह तेरे लिये पहली और आखिरी वार्निंग है बिजली—अगर अब तूने कोई मारपीट की तो मैं तुझे ऐसी जगह बन्द कर दूंगा कि तू इंसान की शक्ल देखने को भी तरस जायेगा।"
"अब ऐसा नहीं होगा जेलर—तुम आराम से जाओ।"
हंसते हुए बोला बिजली उस्ताद।
जेलर ने उन चारों सिपाहियों को देखा जो कि हाथों में डण्डे लिये खड़े थे।
"ऐसे ड्यूटी करते हो तुम—?" वह गुर्राया—"लगता है गंदगी बढ़ गई है—सफाई करनी पड़ेगी।"
चारों सिपाही बुरी तरह से घबरा गये।
जेलर ने और कुछ नहीं कहा और उनकी तरफ पीठ करके वापिस चला गया।
उसके वहां से जाते ही बिजली उस्ताद के चमचे तेजी से पांचवें

की तरफ झपटे।

"खबरदार!" तभी गुर्राया बिजली उस्ताद—"जो किसी ने उसे छुआ भी तो।"

"लेकिन उस्ताद।" एक चमचा बोला—"इसने तेरे को मारा और...।"

'तड़ाक।'

बिजली उस्ताद का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

चमचा हड़बड़ाते हुए पीछे हटा, साथ ही उसका हाथ उसके गाल पर चिपक गया।

"साले, हरामी के पिल्ले—जब कह दिया कि इसे छूना भी नहीं तो फिर सवाल क्यों किया?"

चमचा अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

पांचवे ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया—चुपचाप वह टेबलों की तरफ बढ़ा—अपने लिये नई थाली तैयार की और थाली उठाये एक तरफ बढ़ गया।

किसी ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की इस बार।

अपनी बैरक में बिजली उस्ताद सीमेंट के चबूतरे पर हाथों को सिर के नीचे किये लेटा था।

उसके दो चमचे उसकी टांगों को दबा रहे थे और एक उसके सिर के पीछे बैठा सिर की मालिश कर रहा था।

"एक बात बोलूं उस्ताद—?" पीछे वाला चमचा उसके बालों में उंगलियां फिराते हुए बोला।

"बोल—।"

"मारेगा तो नहीं?"

"अबे साले—अब बोल भी।"

"वो छोकरा तेरे पर भारी पड़ रहा था। तेरा खून निकाल दिया उसने...।"

"तो?"

"फिर भी तूने उसे कुछ नहीं कहा—उल्टे भीखू को थप्पड़ मार दिया।"

"हां...।" उसकी बाँई टांग दबाने वाला चमचा बोला—"अभी

तक कान में सांय-सांय हो रही है।"

गम्भीर हो गया बिजली उस्ताद।

वह चबूतरे पर उठ बैठा।

"पता नहीं क्यों...।" वह गम्भीरता से बोला—"उसे मारते हुए मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं उस लौंडे के साथ गलत कर रहा हूं। उसका चेहरा ऐसा लग रहा था जैसे वह जिन्दगी से हार चुका है—। लेकिन उसकी आंखों में ऐसे भाव थे जैसे वह दुनिया को जलाकर राख कर देगा। और...।"

बात वहीं रुक गई उसकी।

निगाहें जेल की सीखचों के उस पार खड़े उसी कैदी पर जा टिकीं जो कि दोपहर को उससे लड़ा था।

एक वार्डन झुककर सीखचों वाले दरवाजे का ताला खोल रहा था।

बिजली उस्ताद के चमचे भी उसे देखकर अपने उस्ताद की तरह चौंक पड़े थे।

साफ नजर आ रहा था कि वह उसी बैरक में आने जा रहा था।

वार्डन ने सीखचों वाला दरवाजा खोला और उस कैदी की तरफ देखा।

चुपचाप वह बैरक में प्रवेश कर गया।

वार्डन ने दरवाजा बन्द करके ताला लगाया और फिर सीधा ही बिजली उस्ताद को देखते हुए बोला—

"इस बैरक में यह तेरा पार्टनर है बिजली उस्ताद—। झगड़ा नहीं करना इससे।"

कहकर उसने उसके जवाब का इंतजार नहीं किया और वहां से हट गया।

बिजली उस्ताद की निगाहें वहां से हटकर उस कैदी पर जा टिकीं जो कि सिर को झुकाये चुपचाप बैरक के कोने की तरफ बढ़ रहा था।

"ऐ।" बिजली उस्ताद ने उसे पुकारा।

लेकिन कैदी ने उसकी तरफ देखा भी नहीं—वह चुपचाप कोने में जा बैठा और घुटनों को बांहों के घेरे में लेकर ठोड़ी को घुटनों पर टिका लिया।

बिजली उस्ताद ने उसे दोबारा नहीं पुकारा—बल्कि वह चबूतरे से उतरा और उसकी तरफ बढ़ा।

पीछे-पीछे चमचे भी उस कैदी के पास जा खड़े हुए।

बिजली उस्ताद उसके करीब बैठा और उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोला—

"हुक्म चलाने की आदत-सी पड़ गई है अपुन को—आज तक कोई मर्द टकराया तो नहीं था—। लेकिन आज तूने अपुन को टक्कर देकर अपुन के कलेजे पर कब्जा कर लिया है—।" उसने अपने सीने पर हाथ रखा—"दोस्ती करेगा अपुन से?"

उस कैदी ने एक बार उसकी तरफ देखा—फिर निगाहें झुका लीं।

"अपुन का नाम बिजली पहलवान है—पन सब अपुन को बिजली उस्ताद कहते हैं। वैसे बाप ने अपुन का नाम विजेन्द्र रखा था—। बाप भी पहलवान था—सो उसने अपुन को बचपन से ही अखाड़े में उतार दिया। बड़ा फुर्तीला था अपुन—बिजली की माफिक—बस वहीं से अपुन का नाम बिजली पहलवान पड़ गया। ताकत आई तो गुण्डागर्दी भी आ गई। बस अपुन आ गया अण्डरवर्ल्ड में और बन गया बिजली उस्ताद। अब बिजली उस्ताद ठेके लेता है। हड्डी-पसली तुड़वाओ—मकान खाली कराना हो—कत्ल को छोड़ के कुछ भी काम करना हो अपुन हाजिर है। हर काम का पैसा काम के हिसाब से लेता है अपुन। इस बार एक दुकान खाली कराना था—एक लाख का ठेका लिया और ठोंक दिया किरायेदार को। सारा सामान निकालकर के बाहर फेंक दिया और ताला लगा दिया।

दुकान तो खाली करा ली अपुन ने।" उसने गहरी सांस छोड़ी—"पन यहां पहुंच गया—वह दुकानदार साला एक लीडर का सगे वाला था। सो उसने अपुन को अन्दर करा दिया—। पन अपुन यहां ज्यादा देर नहीं टिकेगा—दो-चार दिन में अपुन जमानत करा लेगा—। यह तो थी अपुन की कहानी—अब तू बोल—तू कौन है?"

कैदी ने उसकी तरफ देखा।

"वक्त का मारा।" कहते हुए उसकी आवाज में ही नहीं—उसके चेहरे पर भी दर्द उमड़ आया।

"क्या?" चौंका बिजली उस्ताद—"यह नाम है तेरा?"

"अरे नहीं उस्ताद।" भीखू बोल पड़ा—"इसके कहने का मतलब यह है कि यह गुनाह करके यहां नहीं आया...बल्कि बेगुनाह फंसा हुआ है।"

बिजली उस्ताद ने भीखू पर से निगाहें हटाकर पुनः कैदी की तरफ देखा और बोला—

"वो तो तेरा चेहरा ही बता रहा है कि तू गलत काम नहीं करता—। शरीफों की दुनिया से आया है तू—। पन मैंने तेरा नाम पूछा है तेरे से।"

"कमल...कमल अरोड़ा।"

"यहां कैसे पहुंच गया तू—?"

कमल की आंखों में पुनः दर्द भर आया।

उसने बिजली उस्ताद की तरफ देखा।

"बता दे। अपना सारा दर्द उगल दे बिजली उस्ताद के आगे—और यकीन रख—बिजली उस्ताद जितनी हो सकी तेरी मदद करेगा—क्योंकि एक तू ही वो मर्द है जिसने अपुन के चेलों का नक्शा बिगाड़ा है। और बिजली उस्ताद मर्द की इज्जत करता है।"

अपनत्व से भरी हुई थी उसकी आवाज—सो कमल की आंखें भर आईं।

आंखों में तैरते आंसुओं में अतीत की तस्वीरें उभरने लगीं।

होंठ अपने आप ही उसकी कहानी को बयां करने लगे।

"हू...।"

"हू...।"

"हा...।"

"हा...।"

"याऽऽऽ।"

"याऽऽऽ।"

एस० डी० स्कूल के लम्बे-चौड़े मैदान में कमल अरोड़ा कराटे के एक्शन दिखाने के साथ-साथ मुंह से आवाजें भी निकाल रहा था।

उसके सामने करीब डेढ़ सौ बच्चे कमल अरोड़ा जैसी सफेद वर्दी पहने उसके एक्शनों की नकल करते हुए वैसे ही मुंह से आवाजें निकाल रहे थे।

जूडो-कराटे, कुंगफू का कोचिंग सैंटर था कमल अरोड़ा का।

हर रोज सुबह और शाम को वह कोचिंग करता था।

खूब बढ़िया चल रहा था उसका कोचिंग सैंटर—और उसकी वजह यह थी कि वह खुद भी ब्लैक बैल्ट के साथ-साथ मार्शल आर्ट्स में भी पारंगत था।

बच्चों की तरह वह भी सफेद पायजामा-कुर्ता पहने हुए था—कुर्ते पर उसने कमर पर काले रंग की पट्टी बांध रखी थी।

डेढ़ घण्टे तक वह पूरी लगन से बच्चों को सिखाता रहा और फिर उसने क्लास खत्म कर दी।

छुट्टी करके वह एक तरफ खड़ी अपनी बाईक के करीब पहुंचा और अपने कपड़े उतारकर बाईक पर पड़ी अपनी पैंट शर्ट पहनने लगा।

पैंट-शर्ट पहनकर उसने पायजामा-कुर्ता तह किया और उसे बाईक की साईड में लगी डिग्गी में रखकर डिग्गी को लॉक किया और बाईक पर सवार हो उसे स्टार्ट कर स्कूल से निकला और अपने घर की तरफ रवाना हो गया।

"पीं...पीं...।"

बाईक के हॉर्न की आवाज सुनते ही नन्हा क्षितिज अपने छोटे-छोटे हाथों से ताली पीटने के साथ-साथ नन्हीं टांगों पर चलता हुआ अपनी मां नेहा की टांगों से लिपट गया।

"पापा आ दये...पापा आ दये।" वह तोतली जुबान में बोला।

खूबसूरती से लबालब नेहा ने अपने गोरे चेहरे पर आ गई बालों की लट को एक तरफ किया और झुककर क्षितिज को अपनी बांहों में उठा लिया।

अपने पापा की बाईक के हॉर्न की उसे पूरी पहचान हो गई थी—तभी तो उसका चेहरा खिल उठा था।

नेहा उसे उठाये हुए किचन से निकली और मेन डोर की तरफ बढ़ी।

छोटे से आंगन को पार कर नेहा लोहे की चादर के बने मेन डोर के पीछे पहुंची और उसका कुण्डा खोल दरवाजा खोल दिया।

सामने बाईक पर कमल अरोड़ा बैठा था।

अपने पापा को देखते ही क्षितिज अपनी मां की बांहों में मचलने लगा।

नेहा उसके मचलने का मतलब समझ रही थी—तभी तो वह हंसी और बाहर निकलकर क्षितिज को कमल अरोड़ा के आगे सीट पर बिठाते हुए बोली—

"जनाब चक्कर लगाने के बाद ही घर में घुसने देंगे।"

कमल अरोड़ा भी हंसा।

इधर बाईक पर बैठते ही क्षितिज टंकी पर लेट गया और अपने नन्हें हाथ से लगा हॉर्न बजाने।

कमल अरोड़ा ने बाईक आगे बढ़ाई और छोटा-सा चक्कर लगाकर वापिस आया और बाईक को दरवाजे में प्रवेश करा दिया।

बाईक को आंगन में खड़ा कर वह उतरा और क्षितिज को उठाकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

नन्हा क्षितिज अपने बाप की बांहों में बहुत खुश नजर आ रहा था।

खुद कमल अरोड़ा को भी अपने खून को अपनी बांहों में उठाने से एक अजीब-सी ठण्डक मिल रही थी।

दरवाजा बन्द कर उसने उसका कुण्डा लगाया और ड्राईंगरूम में आ गया।

ड्राईंगरूम में ज्यादा महंगा तो नहीं—फिर भी बढ़िया सोफा था, जिसके बीच में सोफे के रंग से मैच करती शीशे की टेबल रखी थी।

टेबल पर कुछ भी नहीं था—बिल्कुल साफ थी टेबल।

बाँई तरफ कोने में कलर टी० वी० था, जो कि स्टील के स्टैण्ड पर रखा हुआ था।

दाँई तरफ दीवार से लगता हुआ सोफे के ही डिजाईन में बना दीवान था।

क्षितिज को उठाये कमल अरोड़ा टी० वी० के करीब आया और उस पर रखे रिमोट कन्ट्रोल को उठाकर टी० वी० को ऑन करते हुए पीछे हटा और सोफे पर आ बैठा।

टी० वी० पर गानों का चैनल चल रहा था।

क्षितिज को अपनी बांहों से उतारकर उसने गोद में बिठाया और टी० वी० देखने लगा।

गाने की धुन पर क्षितिज हाथों को ऊपर उठा उसकी गोद में बैठा-बैठा ही नाचने लगा तो कमल अरोड़ा का सारा ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया।

अपने बाप को अपनी तरफ आकर्षित देख वह नन्हा और भी जोर-शोर से नाचने लगा।

अपने बेटे को पहली बार नाचते देख रहा था कमल अरोड़ा—तभी तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा था।

"नेहा... !" वह ऊंचे स्वर में बोला।

"क्या है?" किचन में से आवाज आई।

"इधर आओ।"

"सब्जी बना रही हूं... !"

"गैस बन्द कर दो—जल्दी आओ।"

शीघ्र ही नेहा अपने पैरों तक पहुंची फूलदार मैक्सी से हाथ पोंछते भीतर प्रविष्ट हुई।

"देखो—कैसे नाच रहा है?" खुशी भरे स्वर में बोला कमल अरोड़ा।

अपनी मां को देख क्षितिज और भी जोर-जोर से कमल अरोड़ा की गोद में नाचने लगा।

नेहा अपने लाडले को नाचते देख उस पर बलिहारी हो उठी।

वह आगे बढ़ी और क्षितिज को कमल की गोद से निकालकर फर्श पर खड़ा कर दिया।

क्षितिज फर्श पर किलकारियां मारते हुए नाचने लगा।

और इस तरह अपने बेटे को नाच में खोये उन्हें वक्त का पता ही नहीं चला।

पांच-छह गांने निकल गये।

आखिर कमल अरोड़ा ने उसे उठाया और अपनी गोद में उठाते हुए बोला—

"बस बेटे—अब थोड़ा आराम कर लो।"

नेहा फर्श पर हाथ टिका उठी और हल्के से लड़खड़ाई।

"ध्यान से... !" तभी एकदम से बोला कमल अरोड़ा—"वर्ना क्षितिज की बहन जाग जायेगी।"

उसने उसके पेट पर निगाह मारी जो कि मैक्सी की वजह से नजर नहीं आ रहा था।

नेहा के चेहरे पर शर्म की लाली फैल गई।

बोली कुछ नहीं वह—बस दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

डबल बैड पर नेहा पीठ के बल लेटी हुई थी।

क्षितिज उसके बाईं तरफ सो रहा था और उसके बाद कमल अरोड़ा लेटा हुआ था।

कमल अरोड़ा धीरे से उठा और नेहा के करीब आकर लेट गया।

"क्षितिज उठ जायेगा।"

धीरे से बोली नेहा, साथ ही उसने कमल अरोड़ा की तरफ पीठ कर ली।

"बहुत नाचे हैं जनाब—अब सुबह से पहले नहीं जागने वाले।"

कमल अरोड़ा उसकी छातियों पर हाथ फेरते हुए बोला।

नेहा के हाथ भी उसके बदन पर फिरने लगे।

शीघ्र ही नेहा की मैक्सी उसके शरीर से उतरकर उसके पैरों के करीब पड़ी नजर आ रही थी—और कमल की लुंगी उसके ऊपर दिख रही थी।

पूरा उभरा हुआ नेहा का पेट।

कमल अरोड़ा उसके पेट पर हाथ फेरने लगा।

एक अजीब-सा सुकून मिल रहा था नेहा को। साथ ही उसकी आंखों में नशा भर रहा था।

और थोड़ी देर बाद जब कमल अरोड़ा उस पर छाने लगा तो वह बोल पड़ी—

"जरा आहिस्ता—मेरी गुड़िया को चोट न लगे।"

"तुमसे ज्यादा फिक्र मुझे है।" हौले से हंसा कमल अरोड़ा।

और फिर दोनों उस खेल में खो गये जिसकी इजाजत उन्हें समाज से मिली हुई थी।

"टी...टी...टी...टी...टी...।"

ठीक साढ़े पांच बजे घड़ी का अलार्म बज उठा।

अपनी बीवी के साथ चिपककर सो रहे मोहन लाल की आंखें खुल गईं।

अपनी बीवी से अलग हो वह बैड से उतरा और बैड के एक कोने में पड़ा अपना कुर्ता-पायजामा पहनने लगा।

घड़ी का अलार्म अभी बज रहा था।

बन्द नहीं किया था मोहन लाल ने उसे।

उस वक्त वह पायजामा पहन रहा था जब उसकी पत्नी शीला की आंख खुल गई।

लेटे-लेटे ही उसने बैड की पुश्त पर रखी छड़ी का अलार्म बन्द किया और फिर से आंखें बंद कर लीं।

"उठिये मैडम।" अपने पायजामे का नाड़ा बांधते हुए बोला मोहन लाल—"सैर पर चलना है।"

"आज मूड नहीं है।" करवट बदलते हुए बोली शीला।

"मूड बनाओ...वर्ना मोटी होती जाओगी।" उसके करीब आकर बैठते हुए मोहन लाल ने उसके उभारों को दबाया।

शीला ने फौरन आंखें खोलीं और उठकर,एक भरपूर अंगड़ाई ली।

"अये हये—चालीस के पेटे में पहुंच गई हो—लेकिन अंगड़ाई ऐसी लेती हो कि दिल उछल पड़ता है। क्यों न आज यहीं बैड पर ही एक्सरसाईज कर लें—क्या ख्याल है?"

"हटो जी...।" शर्मीले अंदाज में बोली शीला—"सुबह-सुबह रब का नाम लो जी।"

कहते हुए वह बैड पर से उतर गई।

जीरो वाट की रोशनी में उसने अपने कपड़े व्यवस्थित किये और फिर दोनों पति-पत्नी कमरे से बाहर आकर लॉबी में आ पहुँचे।

लम्बी-चौड़ी लॉबी के सफेद पत्थर से बने फर्श पर चलते हुए दोनों मेन डोर से निकले और कम्पाउण्ड में आ गये।

अच्छी खासी कोठी थी वह।

कम्पाऊण्ड से निकलते ही वह लम्बा ड्राईव वे—जिसके दाँई तरफ शानदार लॉन बना हुआ था। ड्राईव वे के अन्त में लम्बा-चौड़ा गेट था।

गेट के करीब ही एक कुर्सी पर चौकीदार बैठा था। जो कि उन्हें देखते ही खड़ा हो गया था।

वर्षों से वह देख रहा था उन्हें—रोज का नियम था उनका सुबह सैर पर निकलने का।

तुरंत उसने गेट के बराबर में बने छोटे गेट को खोल दिया।

दोनों पति-पत्नी ड्राईव वे पर साथ-साथ चलते हुए गेट की तरफ बढ़ने लगे।

अभी उन्होंने आधा ड्राईव वे ही पार किया था कि तभी—

खुले गेट में से एक के पीछे एक तीन व्यक्तियों ने वे प्रवेश किया।

तीनों के हाथों में रिवॉल्वर थे—और उनके चेहरे भी बता रहे थे कि वे सही लोग नहीं हैं।

उन्हें देख मोहन लाल और शीला के कदम वहीं के वहीं जाम हो गये।

चेहरे फक्क पड़ गये उनके।

चौकीदार जो कि गेट के करीब ही खड़ा था की टांगें थर-थर कांपने लगीं।

तीनों में से एक तो चौकीदार के पास खड़ा हो गया—जबकि बाकी के दोनों पति-पत्नी के सामने आ खड़े हुए।

"क...कौन हो तुम...?"

किसी तरह से हिम्मत जुटाते हुए बोला मोहन लाल।

"मुझे तो पहचानता है।"

तभी गेट की तरफ से आवाज आई।

चौंकते हुए मोहन लाल ने जैसे ही गेट की ओर देखा—उसके चेहरे पर मौत नाचने लगी। पूरा बदन जूड़ी के मरीज की तरह कांपने लगा।

"छ...छो...टे शाह जी...।"

उसके होंठों से कांपता स्वर निकला।

करीब पच्चीस साल का नौजवान था छोटा शाह। रंग साफ—आंखों में क्रूरता—माथे पर चोट का निशान—कद लम्बा—काली पैंट और जैकेट पहने हाथ में रिवॉल्वर लिये छोटे शाह उसी की तरफ बढ़ रहा था।

मोहन लाल के गले की घण्टी बार-बार उछलने लगी।

छोटा शाह उसके सामने आया और रिवॉल्वर उसके माथे से लगा दी।

"छोटे शाह दो बार वार्निंग देते हैं—उसके बाद सीधे कार्रवाई।" वह गुर्राया—"लेकिन तुझे मैंने तीन-चार बार फोन किया—मगर तूने कोई गौर नहीं किया।"

मोहन लाल ने जोरों से थूक सटकी। कुछ कहने के लिये उसने मुंह खोला—लेकिन खौफ की अधिकता ने उसकी आवाज छीन ली थी।

"दस लाख मांगे थे न तेरे से?" गुर्राया छोटा शाह—"लेकिन अपनी जान से प्यारे तुझे दस लाख लगे...।"

"मैं...द...दूंगा...अ...आज ही...।"

"वक्त गुजर चुका है मोहन लाल। अब मेरे देने की बारी है—और मेरे पास देने के लिये सिर्फ गोली है।"

कहने के साथ ही उसने ट्रेगर दबा दिया।

गोली मोहन लाल के माथे में घुसी और खोपड़ी का पृष्ठ भाग फाड़ते हुए निकल गई।

मोहन लाल का जिस्म एक बारगी जोरों से उछला और फिर धड़ाम से ड्राईव वे पर गिरा।

गिरने से पहले ही वह ऊपर पहुंच चुका था।

अपनी आंखों के सामने अपने पति की हत्या होते देख शीला इस कदर खौफजदा हो गई कि वह चीख भी नहीं पाई। बस फटी-फटी आंखों से मोहन लाल की लाश को देखे जा रही थी वह। उसे यह भी पता नहीं चला कि कब छोटा शाह अपने गुलामों के साथ वहां से चला गया था।

बस अपने पति की लाश को देखे जा रही थी वह—जिसके माथे से खून भल-भल करता अभी भी निकल रहा था। हड़बड़ाई तो वह तब, जब चौकीदार चीखा।

"खून...खून...खून...।"

शीला ने एक बार उसकी तरफ देखा, फिर एकाएक मोहन लाल की लाश पर गिरकर दहाड़े मारने लगी।

देखते ही देखते कोठी में कोहराम मच गया।

मोहन लाल के दोनों लड़के भी उठकर बाहर आ गये।

रोना-पीटना शुरू हो गया।

शानदार दीवान पर सफेद रंग की चादर बिछी हुई थी। दांये-बांये तथा पीछे गोल तकिये लगे हुए थे—और बीच में बड़ा शाह बिल्कुल ऐसे बैठा था जैसे मुगलकाल के बादशाह बैठा करते थे।

दोनों टांगों को मोड़ एड़ियों को नितम्बों के नीचे दबाये बैठा था बड़ा शाह—।

इस तरह बैठने से उसकी कमर तीर की तरह सीधी हो रही थी।

दीवान पर बिछी चादर और तकियों पर नई गिलाफ की तरह उसके कपड़े भी सफेद उजले थे।

रंग गौरा—पतला-लम्बा शरीर—पचास से ऊपर की उम्र—सफेद फ्रेंच कट दाड़ी, आंखों पर नजर का चश्मा था उसके। कुल मिलाकर चेहरे से वह एक शरीफ और इज्जतदार व्यक्ति नजर आ रहा था—लेकिन हकीकत में वह अण्डरवर्ल्ड का सबसे बड़ा दादा था।

किशनपुरा में सिर्फ और सिर्फ बड़े शाह का ही राज चलता था। लोग अपने काम करवाने के लिये कानून की बजाये उसकी शरण में आते थे—और आने वाले का काम पूरी गारंटी से होता था—बशर्ते कि काम गलत होना चाहिये। दीवान के दांयें-बांयें हाथों में स्टेनगनें लिये चेहरों से ही क्रूर नजर आने वाले दो व्यक्ति खड़े थे—जिनकी स्टेनगनें हर वक्त इस तरह तनी रहती थीं, मानों उन्हें बरसने का हुक्म किसी भी पल मिल सकता हो।

दीवान के दांयें पाये के पास एक व्यक्ति हाथों में कापी और पैन पकड़े बैठा हुआ था—जिसका चेहरा इस वक्त उस व्यक्ति की तरफ था जो कि बड़े शाह के सामने फर्श पर घुटने टिकाये एक फरियादी की तरह खड़ा था।

वह आदमी करीब पैंतालीस साल का था जिसके चेहरे पर उसके अमीर होने की चमक थी। शरीर भी काफी सेहतमंद था।

अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर उसने बड़े शाह के घुटनों को छूते हुए माथे को दीवान के कोने पर टिकाया—जैसे माथा टेक रहा हो—फिर सीधा हो हाथ जोड़ते हुए बोला—

"मेरा नाम गंगाधर है बड़े शाह जी...।"

"जानता हूं तुझे..।" बड़ा शाह मुस्कराया—"छह महीने पहले तूने अपनी फैक्ट्री के पार्टनर को कत्ल करवाया था, वही है न तू।"

"ह...हां...शाह जी।" हल्की-सी हड़बड़ी के साथ बोला गंगाधर।

"अब कैसे आया है तू...?"

"म...मुझे शादी करनी है।" कहते हुए गंगाधर का सिर झुक गया।

"ह...हा...हा...।" हंस पड़ा बड़ा शाह और दीवान के पाये के साथ बैठे व्यक्ति की तरफ देखा—"ले भई करमे...अब पण्डितों के काम भी मिलने लगे हैं हमें।"

करमा—जिसका पूरा नाम करमचन्द था भी हंस पड़ा।

हंसते हुए ही बड़े शाह ने गंगाधर की तरफ देखा और पूछा—

"इस उम्र में शादी करेगा तू?"

"म...मैं अभी कुंवारा हूं बड़े शाह जी...।"

"और जाहिर है कि तूने अपने लिये लड़की भी देख ली है—और वो तेरे से शादी नहीं करना चाहती। तभी तो तू आया है यहां...।"

"ह...हां...शाह जी।"

"कौन है वो लौंडी?"

"मेरे पार्टनर की पत्नी।"

बुरी तरह चौंका बड़ा शाह—और फिर एकाएक ही उसके होंठ सीटी बजाने वाले अंदाज में गोल हो गये।

"तो अपने पार्टनर की विधवा से शादी करना चाहता है तू?"

"ह...हां शाह जी।"

"ताकि सारी की सारी प्रापर्टी का मालिक तू हो जाये।"

गंगाधर बोला कुछ नहीं—बस थूक सटककर रह गया।

"बड़ी शानदार गेम खेली है तूने—पहले अपने पार्टनर का कत्ल करवाया और अब उसकी बेवा से—हिस्सा कितना है तेरा पार्टनरशिप में?"

"प...पन्द्रह परसेंट।"

"और बाकी की पिचासी परसेंट की पार्टनर वो है।"

"ह...हां...शाह जी।" फंसे स्वर में बोला गंगाधर।

"बढ़िया—जवाब नहीं तेरी खोपड़ी का।" मुस्कुराया बड़ा शाह—"कितने फायदे में होगा तू?"

"प...पांच करोड़ से ज्यादा का फायदा होगा।"

"अस्सी लाख जमा करवा दे...तेरा काम हो जायेगा।"

"ज...जी...शाह जी।"

वह बोला।

उसे पता था कि बड़े शाह के साथ सौदेबाजी नहीं होती—जो उसने एक बार कह दिया—वही देना होगा।

घुटने फर्श पर टिकाये हुए ही उसने पुनः बड़े शाह को माथा टेका और फिर खड़ा हो गया।

"करमे...।"

गंगाधर के वहां से जाते ही बोला बड़ा शाह।

"हुक्म शाह जी।"

तुरंत बोला करमचंद।

"गंगाधर के पार्टनर की बीवी की पूरी कुण्डली कल शाम तक तैयार हो जानी चाहिये।"

"हो जायेगी बड़े शाह जी।"

बोला करमचन्द और कापी पर कुछ घसीटें मारने लगा।

तभी हॉल के दरवाजे पर एक व्यक्ति प्रकट हुआ।

"इंस्पेक्टर गौतम आया है बड़े शाह जी।" वह वहीं खड़े-खड़े ही ऊंचे स्वर में बोला।

सुनकर बड़े शाह के माथे पर बल पड़ गये।

"भेज उसे।" वह बोला।

कुछ ही देर में इंस्पेक्टर गौतम घुटनों के बल उसके सामने खड़ा था।

इंस्पैक्टर गौतम करीब तीस साल का लम्बे कद चौड़े सीने वाला व्यक्ति था। पुलिस की वर्दी उसके बदन पर खूब जंच रही थी। उसने गंगाधर की तरह ही बड़े शाह के घुटनों को छूते हुए माथे को दीवान के किनारे पर लगाया और फिर सीधे होते हुए उसकी तरफ इस तरह देखने लगा—जैसे बोलने की इजाज़त मांग रहा हो।

"बोल। क्या कहना हैं?" उसे गहरी निगाहों से घूरते हुए बोला बड़ा शाह।

"जुबान कटी जा रही है कहने में बड़े शाह जी। गर्दन पर छुरी चलने का भी डर है।"

"निर्भीक होकर बोल—क्या कहना चाहता है?"

सुनकर इंस्पेक्टर गौतम के चेहरे पर राहत उभरी।

"कल छोटे शाह जी ने मोहन लाल को अपने हाथों से गोली मारकर उसका खून कर दिया था।"

"तो क्या हुआ? वह हरामी दस लाख जो नहीं दे रहा था।"

"ल...लेकिन छोटे शाह जी को अपने हाथों से खून करने की क्या जरूरत थी? किसी को भी भेज देते—मुझे कह देते—मोहन लाल का काम हो जाता।"

"तो अब कौन-सी आफत आ गई।"

"आफत ही तो आ गई है बड़े शाह जी।" रोनी सूरत बनाते हुए बोला गौतम।

"क्या मतलब?" चौंका बड़ा शाह।

"मोहन लाल के बड़े लड़के के ससुराल वालों की जान-पहचान केन्द्र के मन्त्री डी० एन० यादव से है।"

"तो?"

"आज सुबह ही एस० पी० साहब को दिल्ली से फोन आया है कि अगर...।" बोलते-बोलते चुप हो गया गौतम।

"क्या अगर?"

"जुबान कटी जा रही है कहने में बड़े शाह जी...।"

"बोल—।" गुर्राया बड़ा शाह—"क्या फोन आया है दिल्ली से?"

"य...यह कि अगर...अगर चौबीस घण्टे में छोटे शाह जी को गिरफ्तार नहीं किया गया...तो...तो मोहन लाल का केस सी० बी० आई० को सौंप दिया जायेगा।"

कहकर उसने जोरों से थूक सटकी और बड़े शाह को देखा, जिसकी आंखों में कहर उभर आया था—चेहरा क्रूर हो उठा था।

"तो तू मेरे जिगर के टुकड़े को गिरफ्तार करने आया है?" उसके होंठों से फुंफकार निकली।

"मेरी ऐसी औकात कहां बड़े शाह जी जो मैं ऐसा सोच भी सकूं।" गौतम ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"मैं तो एस० पी० साहब की तरफ से फरियाद लेकर आया हूं।"

"क्या कह रहा है एस० पी०?"

"उन्होंने कहा है कि...कि छोटे शाह के ग...गि...फ्तार होने में ही अ...आपका फायदा है। वो... ।"

"उस हरामजादे की इतनी हिम्मत... ।" दहाड़ उठा बड़ा शाह।

वह दहाड़ा क्या—उसके दायें-बायें खड़े गार्डों की गनें गौतम की तरफ तन गईं।

गौतम का रोयां-रोयां कांप उठा।

चेहरे पर आतंक उभर आया।

"अ...आप पूरी बात तो सुन लीजिये बड़े शाह जी।"

किसी तरह हिम्मत करते हुए वह बोला।

"क्या अभी भी कुछ कहना है?" फुंफकारा बड़ा शाह।

हाथ जोड़े हुए ही गौतम ने जोरों से थूक सटकी—।

"कर अपनी बात पूरी—।" गुर्राया बड़ा शाह।

गौतम ने पुनः थूक सटकी और थर्राये स्वर में बोला।

"एस० पी० साहब ने कहा है कि अगर केस सी० बी० आई० के हाथ में पहुंच गया तो फोर्स सैंटर की होगी। छोटे शाह जी ने मोहन लाल की पत्नी की आंखों के सामने मोहन लाल का खून किया था। उसका चौकीदार भी चश्मदीद गवाह है। अ...अगर सैंटर का डंडा न चढ़ता तो उन दोनों को भी खत्म करके मामले को रफा-दफा किया जा सकता था। ल...लेकिन अब उन्हें खत्म करना भी मुमकिन नहीं... ।"

"तू यह भौंक कि एस० पी० क्या चाहता है?"

"उन्होंने कहा है कि हम चौकीदार और मोहन लाल की बीवी को तोड़ने की कोशिश करेंगे।"

"और अगर न टूटे तो...?"

गौतम कुछ नहीं बोला।

"तो मेरा बेटा हवालात में जेल और जेल से...नहीं ऐसा नहीं हो सकता...चाहे मुझे सेंटर से ही टक्कर क्यों न लेनी पड़े...मैं अपने बेटे को गिरफ्तार नहीं होने दूंगा।"

"अ...आप...इत्मिनान रखिये बड़े शाह जी। छोटे शाह का बाल भी बांका नहीं होगा—और यह मेरा दावा है कि परसों तक छोटे शाह जी आपके पास होंगे। बस एक छोटा सा नाटक करना होगा।"

"कैसा नाटक?"

गौतम ने उसे प्लानिंग समझाई और बोला—"आपके लिये यह कोई बड़ा काम नहीं है। आपका कोई भी गुलाम यह काम कर सकता है।"

"फिर?"

"मजबूर होकर सरकार को छोटे शाह जी को छोड़ना ही पड़ेगा। उसके पश्चात् आप पांच-सात महीने के लिये छोटे शाह जी को कहीं और भेज दीजियेगा—और जब मामला ठण्डा हो जाये तो छोटे शाह जी वापिस आ जायेंगे।"

"तो अब भेज देता हूं उसे कहीं बाहर...?"

"अब भेजने से दिक्कत होगी बड़े शाह जी। अब सैंटर में यह समझा जायेगा कि पुलिस छोटे शाह जी से मिली हुई है। सो बिना वक्त गंवाये सी० बी० आई० छोटे शाह जी की खोज में लग जायेगी। और...और आपको भी उससे नुकसान हो सकता है। जबकि छोटे शाह के गिरफ्तार होने के बाद आप एक छोटा सा टी० वी० इन्टरव्यू देकर यह कह सकते हैं कि आप कानून की इज्जत करते हैं...इस तरह छोटे शाह जी के फरार होने के बाद सैंटर की टेढ़ी नजर आप पर नहीं पड़ेगी—और छोटे शाह जी किसी को मिलेंगे नहीं।"

बड़े शाह को गौतम की बात जंची।

वह लाख ताकतवर सही, लेकिन सीधे सैंटर से टकराने की ताकत नहीं थी उसमें। सो उसने वही करने का निश्चय किया जो गौतम ने कहा था।

उसने ताली बजाई।

"तड़...तड़।"

फौरन हॉल के गेट पर वही व्यक्ति प्रकट हुआ जिसने गौतम के आने की सूचना दी थी।

"छोटे शाह को यहां आने को बोल।"

वह व्यक्ति फौरन गायब हो गया।

बड़े शाह ने निगाहें गौतम के चेहरे पर जमाईं और गुर्राया—

"एक बात गौर से सुन ले।"

"ज...जी हुक्म कीजिये बड़े शाह जी।"

"अपने जिगर के टुकड़े को निकालकर दे रहा हूं तुझे—अगर उसे हल्की-सी खराश भी आई तो...।"

"अ...आप इत्मिनान रखिये बड़े शाह जी—छोटे शाह जी को जरा भी तकलीफ नहीं होगी।"

"और परसों तक वह आजाद हो जाये...।"

"वो हो जायेगा...बस आपको नाटक बढ़िया करना पड़ेगा।"

"उसकी चिंता मत कर तू जो होगा—वो नाटक नहीं होगा—बल्कि उसमें हकीकत का रंग होगा।"

कहते हुए बड़े शाह के चेहरे पर क्रूरता भरती चली गई।

करीब पांच मिनट बाद छोटा शाह वहां पहुंचा।

इस बीच गौतम बड़े शाह के सामने वैसे ही घुटने टेके खड़ा रहा।

छोटा शाह अपने बाप के करीब आया और उसके बराबर दीवान कर बैठते हुए बोला—

"आपने मुझे बुलाया पापा?"

"हां...।"

गम्भीरता से बोला बड़ा शाह।

"कहिये।"

बड़े शाह ने उसे बड़े प्यार से समझाया सब कुछ, फिर बोला—"अब तू इसके साथ जा...।"

"कैसी बात करते हैं आप पापा।" मुस्करा पड़ा छोटा शाह।

"क्यों?" हल्के से चौंका बड़ा शाह—"क्या प्लानिंग ठीक नहीं लगी तुझे?"

"प्लानिंग तो इस पुलिसिये ने बढ़िया बनाई है—लेकिन आखिर में सब गुड़-गोबर कर दिया...।"

"वो कैसे?"

"अगर मैं अभी इसके साथ चल पड़ा तो सारी दुनिया समझ जायेगी कि यह सब नाटक हो रहा है। छोटा शाह हूं मैं। न कोई गोली चली, न फोर्स आई। एक मामूली-सा इन्सपैक्टर आया और बिना गोली चलाए मुझे आराम से गिरफ्तार कर ले गया—वो भी यहां से। आप खुद ही सोचिये पापा—पब्लिक और सरकार दोनों ही यह समझेंगे न

कि यह सब नाटक है।"

बड़ा शाह प्रशंसा भरी निगाहों से उसे देखने लगा।

"वाह।" उसने उसकी पीठ पर थपकी दी—"तूने तो इस इंस्पेक्टर की मां...।" उसने गाली निकाली और गौतम की तरफ देखा—"देखो—इसे कहते हैं दिमाग—। बड़ा आया था स्कीम बनाने वाला।"

गौतम ने चुपचाप सिर हिला दिया।

उसकी स्कीम में वाकई त्रुटि थी जो कि छोटे शाह ने फौरन पकड़ ली थी।

"अब तू बोल बेटे।" बड़े शाह ने छोटे शाह की तरफ देखा—"क्या करना चाहिये?"

छोटा शाह गौतम को समझाने लगा।

गौतम समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाने लगा।

उसी शाम को साढ़े चार बजे इंस्पेक्टर गौतम के ऑफिस में गौतम पत्रकारों से बात कर रहा था।

"मोहन लाल मर्डर केस में पुलिस ने क्या प्रोग्रेस की है अब तक?" एक पत्रकार ने पूछा।

"मृतक मोहनलाल की पत्नी शीला और चौकीदार के मुताबिक मोहन लाल का खून उनकी आंखों के सामने छोटा शाह जी उर्फ विजेन्द्र शाह ने मोहन लाल के माथे में गोली मारकर किया है।"

"फिर छोटे शाह जी को गिरफ्तार क्यों नहीं किया पुलिस ने?" एक अन्य पत्रकार ने पूछा।

"मैं गया था छोटे शाह जी की कोठी पर। लेकिन वह कोठी पर नहीं मिला।" बोला गौतम—"लेकिन खातिर जमा रखिये, बहुत जल्द छोटा शाह गिरफ्तार होगा—। मैंने मुखबिरों का जाल फैला दिया है। वह जहां भी कहीं छुपा होगा। उसका पता चल जायेगा मुझे। बस यूं समझ लीजिये कि...।"

"ट्रिन...ट्रिन...।"

ठीक तभी फोन की घण्टी घनघना उठी।

गौतम ने अपनी बात बीच में रोक रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो। इंस्पेक्टर गौतम स्पीकिंग।"

दूसरी तरफ से कुछ कहा गया।

"कहां?" बुरी तरह से चौंकते हुए बोला गौतम।

"..................।"

"ओ० के० तुम नजर रखना—मैं अभी रवाना हो रहा हूं।"

कहने के साथ ही गौतम ने रिसीवर रखा और फौरन कुर्सी से खड़ा हो गया।

"अपराधी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो"—वह बोला—"लेकिन कानून से बड़ा नहीं हो सकता—। वह किसी भी बिल में छुपा हो, कानून की निगाहों से नहीं बच सकता।"

"लगता है छोटे शाह जी का पता चल गया है?"

एक पत्रकार बोला।

"हां।" गौतम बोला—"और अगर आप लोग चाहें तो आप भी उसकी गिरफ्तारी का नजारा अपनी आंखों से देख सकते हैं।"

"छुपा कहां है वो?"

एक दूसरे रिपोर्टर ने पूछा।

"सॉरी...मैं यह नहीं बता सकता...।"

"मगर...!"

"आप मेरे साथ चलें...आपको खुद ही पता चल जायेगा।"

सारे पत्रकार तैयार हो गये साथ चलने को।

वे जितने भी पत्रकार थे—बड़े शाह के भेजे हुए थे। जब पूरे किशनपुरा में उसका राज चलता था तो फिर पत्रकारों की क्या औकात थी जो उससे बाहर जाते।

गौतम से पूछताछ तो बस दुनिया की नजरों में धूल झोंकने के लिये की गई थी।

कुछ ही देर में पुलिस की चार गाड़ियाँ आगे पीछे चलते हुए थाने के गेट से निकल रही थीं।

सबसे पीछे पुलिस की जिप्सी थी जिसमें कि गौतम बैठा था—उसके साथ छह-सात पत्रकार थे। जबकि आगे की गाड़ियां बन्द बॉडी के ट्रक थे जिन पर कि नीला लाल पेंट किया हुआ था।

आधे घण्टे के सफर के बाद सबसे आगे वाली गाड़ी रुकी।

उसके पीछे दूसरी गाड़ी—और फिर गौतम ने भी अपनी जिप्सी रोक दी।

"यह तो हरी बाग कालोनी है।" एक पत्रकार दांये-बांये देखते

हुए बोला—"क्या छोटे शाह यहां छुपा है?"

"आप देखते रहिये।" फुसफुसाया गौतम और जिप्सी से बाहर आ गया।

ठीक तभी उससे आगे की गाड़ी का पिछला दरवाजा खुला और राईफलों से लैस सिपाही उसमें से उतरने लगें।

आगे वाली गाड़ी से भी सिपाही उतर रहे थे।

देखते ही देखते करीब तीस हथियार बंद सिपाही गौतम के सामने खड़े थे।

गौतम से एक नजर ऊपर आकाश की तरफ देखा।

अंधेरा हल्का-हल्का फैलना शुरू हो गया था।

"जवानों—।" वह सिपाहियों से मुखातिब हुआ—"आज हमारे डिपार्टमैंट की इज्जत दांव पर लगी हुई है। अगर छोटा शाह हमारे हाथ से निकल गया तो यह केस सी० बी० आई० के पास पहुंच जायेगा—और इस तरह जो धब्बा हमारे माथे पर लगेगा वह कभी भी नहीं मिट पाएगा—। मुझे छोटा शाह चाहिये—जिन्दा—इसलिये काली मन्दिर के खण्डहरों को चारों तरफ से घेर लो। छोटा शाह उन्हीं खण्डहरों में छुपा हुआ है। और ध्यान रहे—वह अकेला नहीं है—उसके साथ उसके साथी भी हैं। इसलिये मेरे आदेश के अनुसार चलना है—समझे...।"

"यस सर।" सभी सिपाही एक साथ बोले।

"नाऊ गो एण्ड टेक द पोजीशन।"

तुरन्त सभी सिपाही वहां से हट गये।

गौतम पीछे मुड़ा तो उसके होठों पर एक हल्की-सी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

एक कैमरा मैन कैमरे को कंधे पर रखे—अपनी सीट पर खड़ा मूवी उतार रहा था।

उसके मुड़ते ही एक रिपोर्टर जिप्सी से उतरकर उसके करीब आया और हाथ में पकड़े माईक को उसके आगे करते हुए बोला—

"क्या आपको पक्का यकीन है कि छोटा शाह काली के खण्डहरों में छुपा हुआ है...?"

"जिस मुखबिर ने मुझे यह सूचना दी है, उसकी सूचना आज तक गलत नहीं निकली—ऐसे में मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि छोटे शाह काली के खण्डहरों में ही है। बाकी जो होगा—आपके सामने ही होगा।"

काली के खण्डहर।

नाम से ऐसा लगता था जैसे वहां हजारों साल पुराना कोई माँ काली का मन्दिर था—जो कि अब खण्डहर में तब्दील हो चुका है।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं था वहां।

मन्दिर का कोई अवशेष नहीं था वहां।

हां—खण्डहर जरूर थे।

एक लम्बी चौड़ी हवेली के खण्डहर।

काली के खण्डहरों के नाम से मशहूर उन खण्डहरों से एक कहानी जुड़ी हुई थी।

कहानी भी काफी खौफनाक थी।

उस काहनी के मुताबिक तीन सौ साल पहले किशनपुरा के महाराजा किशन देव का राज था।

उस वक्त उस हवेली में काली नाम की एक बुढ़िया अपने आठ-दस साल के पोते के साथ रहती थी। नाम के मुताबिक ही उसका रंग-रूप काला था और ऊपर वाले ने भी उसकी सूरत जैसे जल्दबाजी में बनाई थी।

उसके शरीर का कोई भी अंग अनुपात में नहीं था।

काली की टांगें काफी लम्बी थीं और उसका धड़ टांगों के हिसाब से काफी छोटा था।

बस यूं समझ लो कि कमर थी ही नहीं उसकी। टांगों के बाद छातियां शुरू हो जाती थीं।

बांहें भी छोटी-छोटी थीं काफी छोटी।

नाक लम्बी और गिद्ध की चोंच की तरह मुड़ी हुई थी। आंखें बड़ी-बड़ी और उसके कान भी लम्बे थे।

कुल मिलाकर पहली ही नजर में देखने वाला उससे डर जाये।

बिल्कुल डायन दिखती थी वह।

लेकिन तब लोग उससे डरते नहीं थे—बल्कि उसकी पूजा करते थे।

न जाने क्या जादू था उसके हाथों में कि उसके छूते ही रोगी ठीक हो जाते थे।

लोग वैद्य-हकीमों के पास जाने की बजाये उससे अपने परिजनों

के इलाज कराते थे। और काली भी खुले मन से सबकी सेवा करती थी।

जिस हवेली में वह रहती थी—उसे उसने एक तरह से धर्मशाला बना रखा था।

लोग वहां आकर ठहरते और जो उनका दिल करता उसे भेंट कर चले जाते। उसी से काली और उसके पोते का गुजारा चल रहा था।

काली के हाथों की शिफ़ा की ख़बर राजवैद्य के कानों में पहुंची, और वह खबर पहुंची किशनपुरा के वैद्यों के जरिये—जिनका धंधा काली की वजह से चौपट हो गया था।

राजवैद्य ने किशनपुरा के वैद्यों को हौसला दिया और कुछ करने का आश्वासन दिया।

और फिर उसने एक ऐसी चाल चली कि खुद महाराज किशन देव उसकी बातों में आ गया।

राजवैद्य जानता था कि महाराज किशनदेव की आशनाई राजनर्तकी बाला से चल रही है और वह बाला पर बुरी तरह आसक्त है।

जड़ी-बूटियों का ज्ञाता तो था ही वह। सो एक दिन मौका देखकर उसने बाला को एक ऐसी बूटी खिला दी कि दरबार में नृत्य करते-करते बाला ऐसी गिरी कि फिर नहीं उठ पाई।

उसको जैसे लकवा मार गया था।

राजवैद्य उसका इलाज जानता था और वह कर भी सकता था—लेकिन उसने किया नहीं—। उसने महाराज किशनदेव को कहा कि बाला का इलाज ऐसी जड़ी बूटी से हो सकता है जो सिर्फ हिमालय पर पाई जाती है। सो महाराज ने राजवैद्य को फौरन हिमालय के लिये रवाना कर दिया।

उसके जाने के बाद महाराज ने बाला को अन्य वैद्यों को दिखाया।

मगर सभी ने बाला को देखते ही कह दिया कि वह ठीक नहीं हो सकती। साथ ही उन्होंने यह बात भी राजा के कानों में डाल दी कि काली नाम की औरत खुद को बहुत बड़ी हकीम बताती है। जबकि हकीकत में वह डायन है। अगर महाराज जोखिम उठा सकते हैं तो बाला को उसे दिखा सकते हैं।

महाराज ने काली को तलब किया।

वह आई तो उसे देखते ही राजा को विश्वास हो गया कि वह डायन है। बेचारी का कद बुत ही ऐसा था।

हाथ जोड़कर काली ने उसे तलब करने की वजह पूछी, तो महाराज ने उसे बाला को दिखाया और कहा कि अगर उसने बाला को ठीक कर दिया तो ठीक—वर्ना उसे खत्म कर दिया जायेगा।

काली उसे ठीक नहीं कर पाई और महाराज ने उसकी गर्दन को धड़ से अलग करवा दिया।

और उसी दिन काली के पोते की मौत हो गई।

महाराज किशनदेव ने बाला के ठीक होने के बाद काली की हवेली बाला को दे दी, लेकिन तीसरे दिन ही बाला की उस हवेली में मौत हो गई।

बस तभी से उस हवेली को अभिशप्त मान लिया गया।

कुछ लोगों ने वहाँ रहने की हिम्मत भी की—लेकिन सभी की मौत हो गई—हां—जो आदमी वहां सिर्फ एक-दो रोज के लिये ठहरने के इरादे से आया—उसे कुछ नहीं हुआ। ऐसे ही कुछ आदमियों के अनुसार काली की आत्मा उस हवेली में भटकती है।

बस तभी से उसका नाम काली की हवेली पड़ गया।

वक्त गुजरा तो हवेली खण्डहरों में तब्दील होने लगी—और वह हवेली काली के खण्डहरों के नाम से मशहूर हो गई।

काली की भटकती आत्मा की वजह से अभी लोग खण्डहरों में जाने से डरते थे।

हालांकि आजादी के बाद वहां ऐसा कोई वाक्या पेश नहीं हुआ था—मगर फिर भी लोग डरते थे। सो अब वे खण्डहर चोर-डाकुओं की पनाहगाह बन गये थे।

उन्हीं खण्डहरों के मुख्य द्वार के सामने थोड़ी दूरी पर इस वक्त गौतम अपनी जिप्सी के करीब खड़ा था।

उसके हाथ में माईक था—और जिप्सी के आगे एक स्पीकर लगा हुआ था।

रिपोर्टरों और कैमरामैनों को उसने एक सुरक्षित स्थान पर खड़ा कर दिया था—जहां से कि वे सारा नजारा कैमरे में कैद कर सकते थे।

गौतम ने मुख्य द्वार की तरफ देखा, जहां लकड़ी का दीपक लगा दरवाजा बस गिरने के कगार पर खड़ा था—और फिर माईक को मुंह के करीब ले जाकर बोला—

"छोटे शाह—मैं जानता हूं कि तुम वहां छुपे हुए हो। पुलिस ने तुम्हें चारों तरफ से घेर रखा है—ऐसे में तुम्हारे सामने बस एक ही रास्ता बचता है कि तुम खुद को कानून के हवाले कर दो।"

उसके मुंह से निकली आवाज जिप्सी के आगे लगे स्पीकर में से सैकड़ों गुणा तेज होकर वातावरण में गूंज रही थी।

एक पल रुककर वह पुनः माईक में बोला—

"मैं तुम्हें दस सेकेण्ड की मोहलत देता हूं छोटे शाह—अपने हाथ ऊपर उठाकर बाहर निकल आओ—वर्ना मुझे मजबूर होकर ताकत का इस्तेमाल करना पड़ेगा। एक...।"

उसने गिनती शुरू की।

भीतर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

"दो...।"

भीतर मौत का-सा सन्नाटा छाया रहा।

"तीन...।"

कोई हरकत नहीं।

"चार...पांच...छह...सात...आठ...नौ...।"

तभी

'धांय-

भीतर से गोली चली और जिप्सी के बोनट से टकराई।

गौतम ने हड़बड़ाते हुए फौरन जिप्सी की ओट ले ली और माईक में चीखा—

"हमला करो।"

खण्डहरों को घेरे सिपाही अपनी-अपनी पोजीशनों से फायरिंग करने लगे।

"धांय...धांय...धांय...।"

खण्डहरों के भीतर से भी फायरिंग होने लगी।

"धांय...धांय...।"

दोनों तरफ से गोलियां चलने लगीं।

करीब पांच मिनट तक गोलीबारी होती रही—फिर एकाएक ही भीतर से गोलियों के चलने में रुकावट आ गई।

सिपाही अभी भी गोलियां चला रहे थे।

"छोटे शाह...।" गौतम रिवॉल्वर हाथ में पकड़े माईक में चीखा—"तुम्हारे पास अभी भी खुद को सरैंडर करने का मौका है—वर्ना मजबूरन मुझे तुम्हें गोली मारने का आदेश देना पड़ेगा।"

"ठहरो...।" तभी भीतर से आवाज आई—"मैं आत्म-समर्पण करने को तैयार हूं...।"

"फायरिंग रोक दो...।" एकदम से चीखा गौतम।

फौरन फायरिंग रुक गई।

"अपने हाथ उठाये अपने साथियों के साथ बाहर आ जाओ छोटे शाह।"

गौतम माईक में बोला।

और थोड़ी देर बाद छोटे शाह दो आदमियों के साथ हाथों को सिर पर रखे काली के खण्डहरों के मुख्य द्वार से बाहर निकलता नजर आया।

देखते ही देखते कई सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया।

और तब गौतम जिप्सी के पीछे से निकला और आगे बढ़कर छोटे शाह और दोनों गुण्डों की कलाईयों में हथकड़ी डाल दी।

"इंस्पेक्टर।" मुस्कराया छोटे शाह—"मुझे गिरफ्तार करके तूने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।"

"अच्छा!" हंसा गौतम।

"तू क्या समझता है—तूने मुझे गिरफ्तार कर लिया तो बहुत बड़ा किला फतह कर लिया तूने। नहीं इंस्पेक्टर...।" कहर भरे स्वर में बोला छोटा शाह—"यह तेरी भूल है। छोटा शाह तो वो आंधी है जिसे कोई भी कैद नहीं कर सकता। देख लेना बहुत जल्द मेरे हाथ इन हथकड़ियों से आजाद होंगे...।" उसने अपनी हथकड़ी वाली बांह ऊपर की—"और जिस वक्त भी मैं आजाद हुआ—तेरी जिन्दगी खतरे में पड़ जायेगी।"

"छोटे शाह!" गुर्रा उठा गौतम—"यह वर्दी देख रहा है न...।" उसने अपनी खाकी शर्ट उंगली और अंगूठे से पकड़कर खींची—"यह मेरा कफन है। जिस दिन मैंने यह वर्दी पहनी थी—उसी दिन से मैंने मौत की परवाह करनी छोड़ दी—और तू मुझे मौत का खौफ दिखा रहा है। अरे—अगर मुझे मौत का डर होता तो मैं पुलिस की वर्दी न पहनकर कोई किराने की दुकान कर रहा होता। ले चलो इसको।"

वह गुर्राया।

कमाल की एक्टिंग कर रहे थे दोनों—और उनकी एक्टिंग कैमरे में कैद होकर वास्तविकता का रूप ले रही थी।

टेलीविजन के एक न्यूज चैनल पर रात नौ बजे की खबरों में पत्रकारों के थाने से निकलने से लेकर छोटे शाह और उसके दो साथियों

के गिरफ्तार होने तथा छोटे शाह की गौतम को दी धमकी और गौतम की बात को दिखाया गया।

उसके पश्चात टी० वी० की स्क्रीन पर उस चैनल के संवाददाता का चेहरा उभरा जो कि माईक हाथ में लिये कैमरे के सामने बोल रहा था।

"आपने देखा कि किस तरह अपनी जान जोखिम में डालकर इंस्पैक्टर गौतम ने छोटे शाह उर्फ विजेन्द्र शाह को पकड़ा। लेकिन छोटे शाह पर केस दायर तभी होगा, जब मकतूल मोहन लाल की पत्नी शीला और चौकीदार कातिल के रूप में छोटे शाह की शिनाख्त करेंगे। पुलिस ने कल ग्यारह बजे शीला देवी और रामदीन को थाने में कातिल की शिनाख्त करने के लिये तलब किया है।

केस आगे क्या करवट लेगा—यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा।

आर० एस० न्यूज के लिये मैं रविकांत किशनपुरा से।"

सवांददाता का चेहरा स्क्रीन से गायब हो गया और उसके स्थान पर न्यूज रीडर का चेहरा आ गया—" मोहन लाल के कातिल छोटे शाह उर्फ विजेन्द्र शाह के गिरफ्तार होने के पश्चात हमारे संवाददाता ने जब छोटे शाह के बाप बड़े शाह उर्फ रघुनाथ शाह से बात करने का वक्त मांगा तो उन्होंने फौरन वक्त दिया। आईये—देखते हैं बड़े शाह का इस केस के बारे में क्या कहना है।"

न्यूज रीडर का चेहरा स्क्रीन से गायब हो गया और उसके स्थान पर बड़े शाह का चेहरा उभरा।

पूरी तरह से गम्भीर नजर आ रहा था वह।

"कानून की मैं दिल से इज्जत करता हूं। मेरा एक ही बेटा है—फिर भी मैं यही कहूंगा कि अगर उसने गुनाह किया है तो उसे सजा मिले—। लेकिन मैं यह कहने से नहीं हिचकूंगा कि मेरे बेटे को गलत भी फंसाया गया हो सकता है। इसलिये एक बाप की हैसियत से मैं अपने बेटे के लिये लड़ूंगा और तब तक लड़ूंगा जब तक दूध का दूध और पानी का पानी नहीं हो जाता।"

बड़े शाह का चेहरा स्क्रीन से गायब हो गया और पुनः रीडर का चेहरा नजर आने लगा। वह अगला रूपान्तर पढ़ने लगा।

कमल अरोड़ा का चेहरा बिगड़ गया।

"सब साले नाटक बाज हैं।" वह बड़बड़ाया—"पूरा किशनपुरा जानता है कि दोनों बाप-बेटों का कब्जा हो रहा है किशनपुरा पर। यहां

कानून का नहीं—इन दोनों का राज चलता है। यह साला इंस्पेक्टर क्या—यहां के बड़े अफसर भी उसके तलवे चाटते हैं। मेरा बस चले तो सालों की गर्दन कलम कर दूं।"

निश्चय ही वह यहां की व्यवस्था से काफी खफा था।

वह क्या—किशनपुरा का बच्चा-बच्चा दोनों बाप-बेटों के खौफ तले जी रहा था—। दोनों जब जी चाहे किसी भी वक्त कहीं भी कुछ भी कर सकते थे—और प्रशासन उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता था।

क्षितिज उसकी गोद में सो रहा था।

तभी बर्तन वगैरह साफ करके नेहा भीतर प्रविष्ट हुई और उसके करीब आकर सोफे पर बैठते हुए बोली—

"क्या बात है? अभी-अभी तो आप भले चंगे थे और अब मूड बिगड़ा हुआ है?"

कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ते हुए उसकी तरफ देखा और टी० वी० पर छोटे और बड़े शाह के बारे में दिये गये समाचारों के बारे में बताया और फिर बोला—

"कितनी सफाई से यह लोग देश के कानून को धोखा दे रहे हैं।"

"हां...और इसमें कानून के रक्षक भी उनका साथ दे रहे हैं...।" नेहा भी गम्भीर हो गई—"जबकि किशनपुरा का बच्चा-बच्चा उसके खौफ तले जी रहा है।"

"लेकिन दुनिया तो वही समझ रही है न जो टी० वी० पर दिखाया जा रहा है...।" कमल अरोड़ा बोला—"सब कुछ तो हो गया है बिक़ाऊ, पत्रकार क्या और कानून क्या—पैसा फैंको और कुछ भी गुनाह कर लो—और फिर टी० वी० पर अपनी पब्लिसिटी भी करवा लो। वाह रे हिन्दुस्तान।"

उसने गहरी सांस छोड़ी।

"अब छोड़ो इन सोचों को।" नेहा उसकी गोद से क्षितिज को निकालते हुए बोली—"क्यों अपना मूड ऑफ कर रहे हो। हम कर ही क्या सकते हैं? अब सो जाओ।"

कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ी और रिमोट कन्ट्रोल से टी० वी० बन्द कर खड़ा हो गया।

लवली पब्लिक स्कूल

प्री-नर्सरी से पांचवी

तीन मंजिला उस स्कूल के सामने खड़ी कार की पिछली सीट पर बैठे दो व्यक्तियों ने स्कूल के मेन गेट के ऊपर लगे बोर्ड को पढ़ा और फिर गेट वाली साईड का पिछला दरवाजा खुला।

पिछली सीट पर बैठे दोनों व्यक्ति बाहर निकल आये। दोनों के हाथों में स्टनेगनें थीं।

पीछे निकलने वाले ने कार की तरफ पीठ किये हुए ही दरवाजा बन्द किया और उसी के साथ ही कार आगे रेंग गई।

गेट में दाखिल हो दोनों व्यक्ति लम्बी चौड़ी लॉबी में आ गये जिसमें बाँई तरफ प्रिंसीपल का दफ्तर था और दाँई तरफ स्कूल के होनहार बच्चों की तस्वीरें लगी हुई थीं।

वहीं पर ही बच्चों के अभिभावकों के बैठने के लिये बैंच लगे हुए थे।

लॉबी के अन्त में एक और गेट था जो कि बन्द था। उसके पीछे छोटे बच्चों का शोर सुनाई दे रहा था।

दोनों आदमियों ने सीधे प्रिंसीपल के ऑफिस का रूख किया और दरवाजे पर लगे पर्दे को हटाकर ऑफिस में प्रवेश कर गये।

सामने एक लम्बी-चौड़ी टेबल के पीछे करीब चालीस साल की औरत साड़ी पहने आंखों पर नजर का चश्मा लगाये बैठी एक रजिस्टर पर झुकी कुछ लिख रही थी।

तभी एक गुण्डे ने ऑफिस का दरवाजा बन्द कर दिया।

दरवाजे की आवाज सुनकर प्रिंसीपल ने चौंककर जैसे ही सिर उठाया—उसका कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

स्टेनगन की आंख उसी को घूर रही थी।

"क...कौन हो...त...तु...म...?" किसी तरह हिम्मत करते हुए वह बोली।

"वो भी बतायेंगे—।" दूसरा दरवाजे की सिटकनी चढ़ाकर टेबल के करीब आकर बोला—"पहले अपने बारे में सोच।"

"क...क्या...?"

"नाम क्या है तेरा?"

"ह है...मलता...।"

"यह स्कूल तेरा ही है न?"

"ह...हां।"

"तीसरी मंजिल पर रिहाईश है तेरी?" दूसरा आराम से कुर्सी पर बैठते हुए बोला।

"ह...हां।"

"इस वक्त कौन है ऊपर?"

"क...कोई नहीं।"

"तेरा घरवाला तेरे बच्चे...?"

"म...मैं विधवा हूं।"

"और बच्चे?"

"क...कॉलेज गये हैं।"

"शाबास—ऐसे ही प्यार से जवाब देती रहेगी तो तेरे बच्चे यतीम नहीं होंगे...यह मेरा वादा है।" पहला मुस्कराते हुए बोला।

हेमलता ने जोरों से थूक सटकी।

"नर्सरी की कितनी क्लासें हैं यहां?" दूसरे ने पूछा।

"त...तीन ए...बी...सी...।"

"किस क्लास में सबसे कम बच्चे हैं?"

"ए में...दस बच्चे हैं।"

"शाबास।" कहते हुए दूसरे ने फोन का रिसीवर उठाया और उसकी तरफ बढ़ाया—"इन्टरकाम तो होगा ही यहाँ? किसी को भी...जिसे तू यहां फोन से हुक्म देती है, बोल, कि वह नर्सरी की पूरी 'ए' क्लास को ऊपर तेरी रिहाईश में ले जाये।"

"ल...लेकिन...।"

"जो कहा है वही कर।" एकाएक फुंफकार उठा दूसरा और स्टेनगन उस पर तान दी।

"साथ में टीचर भी ऊपर जाये।" पहला बोला।

मजबूर हो गई थी हेमलता। दो-दो स्टेनगनें उस पर तनी हुई थीं—ऐसे में उसे वही तो करना था जो वह कह रहे थे। उसने फोन पर नर्सरी 'ए' की क्लास को टीचर समेत ऊपर जाने का आदेश दिया और फिर रिसीवर को क्रेडिल पर रखकर सहमी-सहमी सी उन्हें देखने लगी।

"ऊपर भी फोन लगा है क्या?" दूसरे ने पूछा।

"ह...हां।"

"कितनी देर में बच्चे ऊपर पहुंच जायेंगे"

"प...पांच-सात मिनट लग जायेंगे।"

दूसरे ने सिर हिलाया और उसे घूरने लगा।

ठीक सात मिनट बाद उसने आदेश दिया—"ऊपर फोन करके

पता कर कि बच्चे पहुंचे कि नहीं। और बच्चों की टीचर से बोल कि वह नीचे नहीं उतरे—और न ही किसी बच्चे को आने दे।"

हेमलता ने कांपते हाथों से रिसीवर उठाया और ऊपर फोन किया।

शीघ्र ही ऊपर से फोन उठाया गया।

"रीटा।" वह बोली।

"यस मेम।" उसके कान में आवाज पड़ी।

"बच्चों को मेरे बैडरूम में ले जाओ—मैं...मैं अभी थोड़ी देर में आ रही हूं...।"

"ल...लेकिन मेम।"

"जो कहा है सिर्फ वही करो।"

"यस मेम।"

हेमलता ने रिसीवर वापिस रखा और दूसरे की तरफ देखा। जैसे पूछ रही हो कि अब क्या करना है।

"घण्टी बजा दे छुट्टी की।" मुस्कुराया दूसरा।

हेमलता ने पुनः रिसीवर उठाकर छुट्टी करने का आदेश दे दिया। दूसरी तरफ से जब पूछा कि छुट्टी करने की वजह क्या है, तो हेमलता ने डांट दिया।

और अगले ही मिनट घण्टी बज उठी।

"टन...टन...टन...।"

उसी के साथ ही लॉबी वाला स्कूल का गेट खुल गया।

बच्चे शोर मचाते बाहर निकलने लगे।

इधर दूसरा हेमलता से पूछ रहा था—"ऊपर—तेरी रिहाईश में पहुंचने का रास्ता किधर से है?"

"अन्दर से।"

"चल—ऊपर चलते हैं।" वह बोला—"खड़ी हो जा।"

हेमलता कुर्सी छोड़कर खड़ी हुई और कांपती टांगों पर किसी तरह चलते हुए टेबल के पहलू से निकलकर उनके करीब आ खड़ी हुई।

दूसरा भी कुर्सी से खड़ा हो गया था।

बच्चों का शोर अब खत्म हो गया था।

पहले ने पीछे हटकर ऑफिस के दरवाजे की सिटकनी गिराई और दरवाजा खोल दिया—जबकि दूसरे ने स्टेनगन हेमलता के पेट से लगा दी।

पहला ऑफिस से निकला तो लॉबी में स्कूल की कई टीचर खड़ी थी।

एक स्टेनगनधारी को बाहर निकलते देख टीचर्स खौफ के मारे चीखने लगीं।

"खामोश।"

दहाड़ा वह।

फौरन वहां ऐसा सन्नाटा हो गया मानो वहां कोई हो ही न।

"जाओ यहां से सभी।" पहला गुर्राया—"अगर एक मिनट बाद मुझे यहां कोई भी नजर आई तो उसकी...में गोली उतार दूंगा।" उसने गाली निकाली—"भागो—!"

टीचर्स बौखलाती हुई वहां से फौरन बाहर की तरफ भागीं।

देखते ही देखते पूरी लॉबी खाली हो गई।

पहला मेन गेट की तरफ बढ़ा और उसे आनन-फानन बन्द करके भीतर से कुण्डा लगा दिया।

"आजा बाहर।"

उसने अपने साथी को आवाज दी।

शीघ्र ही दूसरा हेमलता के साथ बाहर निकला।

"तू ऊपर पहुंच।" पहला बोला—"मैं जरा राऊंड लगा लूं, देखूं कोई है तो नहीं यहां।"

"चलो मैडम—देखें कैसी रिहाईश बना रखी है तुमने?" दूसरा मुस्कुराया।

हेमलता कांपती टांगों पर किसी तरह अपना वजन सम्भाले भीतर वाले गेट की तरफ बढ़ी।

उन दोनों के जाने के बाद पहला भी भीतर प्रविष्ट हुआ।

सामने लम्बाई में ईंटों के फर्श का बना मैदान था—जिसके दाँईं तरफ लम्बा बरामदा था और कमरों की लम्बी कतार थी।

बरामदे की शुरूआत में ही ऊपर को जाती सीढ़ियां थीं।

ऐसे ही दूसरी मंजिल बनी हुई थी।

पहला बरामदे में प्रविष्ट हुआ और एक-एक कमरे को चेक करने लगा कि कोई बच्चा या टीचर वहां है तो नहीं। इधर दूसरा हेमलता के पीछे-पीछे सीढ़ियां चढ़ता हुआ तीसरी मंजिल पर हेमलता के घर में प्रविष्ट हुआ। हेमलता की पीठ से स्टेनगन सटाए जैसे ही वह उसके बैड रूप में प्रविष्ट हुआ—उसके होठों पर मुस्कान फैल गई। कुछ बच्चे बैड पर। उछल-कूद मचा रहे थे तो कुछ कमरे में इधर-उधर दौड़ रहे थे—जबकि रीटा नाम की टीचर एक कुर्सी पर व्याकुल मुद्रा में बैठी पहलू बदल रही थी।

और जैसे ही रीटा की निगाहें स्टेनगन पर पड़ीं—"उसके होंठों से खौफ भरी चीख उबल पड़ी।"

"खामोश।" फुंफकारा दूसरा।

रीटा के होंठ ऐसे बंद हुए जैसे वह पैदा ही सिले हुए होंठों के साथ हुई थी।

अपनी टीचर की चीख सुनकर खेल रहे बच्चे भी सहम गये।

दूसरे ने हेमलता को पीछे से बैड की तरफ धकेला।

लड़खड़ाती हुई हेमलता औंधे मुंह बैड पर गिरी और वैसे ही पलटकर उसे खौफ भरी निगाहों से देखने लगी।

"चुपचाप बैठ जा—।" गुर्राया दूसरा—"और सभी बच्चों को सम्भाल।"

हेमलता पीछे को सरककर बैड पर बैठ गई और बच्चों को अपने आस-पास बैठा लिया। रीटा ने फर्श पर खड़े बच्चों को भी बैड पर बिठा दिया।

अब तक बच्चे भी समझ गये थे कि कोई बड़ी गड़बड़ है—सो वे खेलना-कूदना बंद कर चुपचाप बैड पर बैठ गये थे। अब दूसरे ने रीटा को देखा।

करीब उन्नीस-बीस साल की खूबसूरत युवती थी वह—जिसका पेट अन्दर को धंसा हुआ था—जबकि छातियां जैसे ब्लाउज फाड़ने को आतुर हो रही थीं।

आसमानी रंग की साड़ी और ब्लाउज पहने हुए थी वह—जो कि उस स्कूल की टीचर्स की ड्रैस थी।

दूसरे के होंठों पर एकाएक ही जहरीली मुस्कान नाच उठी—आंखों में वासना से भरी चमक उभर आई।

"साड़ी उतार अपनी।" वह बोला—साथ ही गन का मुंह उसकी तरफ कर दिया।

सुनकर रीटा का पूरा शरीर पसीने-पसीने हो गया।

"नहीं...।" वह कांपते स्वर में बोली और पीछे हटी—"मैं साड़ी नहीं उतारूंगी।"

"साली नाटक करती है।" गुर्राया वह और झपटकर एक बच्चे को उठाकर स्टेनगन उसकी कनपटी पर तान दी।

"उतारती है कि नहीं?"

बच्चा खौफ के मारे रोने लगा।

"उ...उतारती हूं..!।" रीटा कांपते हुए बोली—"ब...बच्चे को

कुछ मत कहना।"

"पूरी नंगी हो।"

मजबूर थी रीटा।

कहा मानना पड़ा उसे। और कुछ ही देर में वह सिर से पैर तक निर्वस्त्र खड़ी नज़र आ रही थी।

उसका सिर झुका हुआ था—आंखों से आंसू बह रहे थे। अपनी छातियों को वह बांहों से ढकने की असफल कोशिश कर रही थी।

"तू भी।" कुटिलता से मुस्कुराया दूसरा—"तू भी नंगी हो जा।"

हेमलता सिर से पैर तक कांप उठी।

"म...मुझ बुढ़िया...।"

"अभी पूरी जवान है तू...कपड़े उतार...।"

मजबूरन हेमलता को भी निर्वस्त्र होना पड़ा।

छोटे-छोटे मासूमों के सामने उनकी प्रिंसीपल और टीचर निर्वस्त्र खड़ी थीं। भला इससे बड़ा खौफनाक नजारा और क्या हो सकता था उन बच्चों के लिये। तभी तो वे और भी बुरी तरह डर गये थे।

दूसरा ललचाई निगाहों से कभी हेमलता को देख रहा था, तो कभी रीटा को।

रीता तो थी ही कड़क जवान—उसका कसा हुआ शरीर—अकड़े हुए वक्ष सब कुछ हाय-तौबा कर देने वाला था उसका—लेकिन कम हेमलता भी नजर नहीं आ रही थी।

अपने जिस्म को उसने काफी सहेज कर रखा हुआ था—बस पेट और छातियों में थोड़ा ढीलापन था—बाकी वह भी टनाटन थी।

इससे पहले कि दूसरा कुछ कहता—पहला कमरे में दाखिल हुआ।

"अरे वाह।" दोनों को देखते ही वह चहका—"तूने तो पूरी दावत की तैयारी कर रखी है।"

दूसरा हंसा—"दावत तो होती ही—तू बोल—क्या करके आया है तू?"

"नीचे मेन गेट को ताला लगा दिया है और एक तरफ से चैक भी कर लिया है—।" पहला बोला—"यहाँ पहुंचने का कोई भी रास्ता नहीं—ऊपर छत पर पहुंचकर भी पुलिस यहां तक नहीं पहुंच सकती—क्योंकि छत पर जाने की सीढ़ियां ही नहीं। हर तरफ की दीवार काफी ऊंची है और ऊपर कांटेदार बाढ़ लगी हुई है—जिसमें कि मैंने करंट चालू कर दिया है।"

"यानि सीढ़ी लगाकर भी पुलिस पीछे से या दांयें-बांयें से यहां नहीं पहुंच सकती।"

"हां।"

"और आगे से।"

"आगे की तरफ एक बड़ी खिड़की है बस जो कि सड़क की तरफ खुलती है। उसी से हम पुलिस से बात कर सकते हैं।"

"खिड़की किधर है?"

"साथ वाले कमरे में।" पहला बोला—"मैं देख आया हूं।"

"फिर तो बाहर सड़क पर भी देखा होगा तूने?"

"हां...भीड़ इकट्ठी हो गई है।" हंसा पहला।

"पुलिस वगैरह नहीं आई?"

"अभी तो नहीं पहुंची।" कहकर पहले ने हेमलता और रीटा को देखा—फिर रीटा पर निगाहें स्थिर करते हुए बोला—"तू बच्चों को लेकर साथ वाले कमरे में पहुंच—मैं जरा इस छोकरी का टेस्ट देखता हूं।"

"और मैं...?"

"तुझे उम्र दराज औरतों का चस्का ज्यादा है, मैं भुगत लूं—फिर तू प्रिंसीपल जी से कर लेना।"

हेमलता और रीटा के पहले से ही पीले पड़े चेहरे और भी पीले पड़ गये।

आने वाले वक्त के बारे में सोच-सोचकर ही उनके रोंगटे खड़े होने लगे थे।

दूसरे ने तुरंत एक बच्चे को उठाया और हेमलता पर गुर्राया—"सब बच्चों को लेकर साथ वाले कमरे में चल।"

मजबूर थी हेमलता।

उसने दो बच्चों को उठाया और बाकी बच्चों से बोली—"अ...ओ बच्चों।"

डरे-सहमे बच्चे बैड से उतरकर उनके आगे चलते हुए साथ वाले कमरे में आ गये।

स्टोर था वह कमरा जिसमें कि टूटा-फूटा फर्नीचर पड़ा था।

ऐन सामने खिड़की थी जिसके दोनों पट बन्द थे।

"उधर बैठ जाओ।" हुक्म दिया दूसरे ने।

हेमलता बच्चों के साथ फर्श पर एक तरफ बैठ गई।

बच्चे को बेदर्दी से पकड़े हुए ही दूसरा खिड़की के करीब पहुंचा

और उसके पट खोलकर गर्दन बाहर निकालकर नीचे झांका।

लोगों का समूह ठाठे मार रहा था।

सभी ऊपर ही देख रहे थे।

५।

ठीक साढ़े आठ बजे कमल अरोड़ा ने ...ंग क्लास खत्म की और अपनी बाईक के करीब आकर कपड़े बदलने लगा।

कपड़े बदलकर उसने उतारा हुआ पायजामा कुर्ता डिग्गी में डाला और बाईक पर सवार हो अपने घर की तरफ रवाना हो गया जैसे ही उसने बंदा बहादुर गुरूद्वारा पार किया उसकी नजर लोगों की भीड़ पर पड़ी जो कि लवली पब्लिक स्कूल के सामने खड़ी थी। एक तरफ पुलिस की कई जिप्सीयां कतार में खड़ी थीं।

उसने थोड़ा आगे जाकर बाईक को स्टैण्ड पर लगाया और हैंडल लॉक करके पैदल ही भीड़ की तरफ बढ़ा।

लोग ऊपर की तरफ देख रहे थे, सो चलते हुए उसने भी ऊपर देखा।

एक हाथ में स्टेनगन लिये दूसरे हाथ में एक बच्चे को चौखट पर खड़ा कर पकड़े हुए एक व्यक्ति खड़ा था।

बस उसका हाथ छोड़ने की देर थी कि बच्चा सीधा नीचे पक्की सड़क पर आ गिरता। और इतनी ऊंचाई से गिरने का एक ही मतलब था।

मौत।

उस मासूम को देख खुद कमल अरोड़ा के दिल को कुछ होने लगा।

वह भीड़ में पीछे खड़े एक व्यक्ति के पास जाकर बोला—

"क्या हुआ भाई साहब?"

"अरे भई देख नहीं रहा क्या?" वह आदमी ऊपर देखते हुए ही बोला—"बच्चों को बंधक बना रखा है उसने। पूरे दस बच्चे हैं—वो भी नर्सरी के। साथ में प्रिंसीपल और टीचर को भी बंधक बना रखा है।"

"ये हैं कौन—और चाहते क्या हैं?"

"छोटे शाह जी के आदमी हैं और चाहते हैं कि छोटे शाह जी को उसके दोनों साथियों के साथ छोड़ दिया जाये।"

"ओह।"

"पुलिस ने बड़े शाह जी को बुलाया है। हो सकता है उनके कहने पर वो बच्चों और प्रिंसीपल तथा टीचर को छोड़ दें।"

"क्या वो छोड़ देंगे।"

अब उस आदमी ने पहली बार कमल अरोड़ा को देखा।

"कौन है रे तू भाई...?" वह उसे घूरते हुए बोला—"लगता है किशनपुरा में नया-नया आया है तू...। यहां सिर्फ बड़े शाह जी का हुक्म चलता है—उनके खिलाफ कोई बोलने की भी जुर्रत नहीं कर सकता और तू मेरे से उल्टे-सीधे सवाल कर रहा है। अब कुछ न पूछना—। चुपचाप जो होगा देखता रह—और जब तमाशा खत्म हो जाये तो चुपचाप चले जाना।" कहकर वह पुनः ऊपर देखने लगा।

कितनी दहशत थी बड़े शाह की—यह उस आदमी की बातों से ही पता चल रहा था।

कमल अरोड़ा उसके पास से हटा और भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ आगे आ गया।

अब उससे आगे पुलिस थी, जिसमें सिपाही से लेकर एस० एस० पी० तक मौजूद थे।

इंस्पैक्टर गौतम के हाथ में एक छोटा-सा स्पीकर था जिसके पीछे ही माईक लगा हुआ था।

सिपाहियों ने पूरे स्कूल की लम्बाई को घेर रखा था।

तभी एकाएक शोर उठा।

"बड़े शाह जी आ गये—बड़े शाह जी आ गये।"

लोग अपने आप ही पीछे हटने लगे—साथ ही सभी की निगाहें उधर घूम गईं—जिधर बड़ा शाह अपने दो आदमियों के साथ भीड़ में प्रवेश कर रहा था।

लोग कमर तक झुक-झुककर उसे ऐसे सलाम कर रहे थे जैसे वह वहां का शंहशाह हो।

एक दशहत-सी थी लोगों के चेहरों पर।

भीड़ में बने रास्ते पर चलता हुआ बड़ा शाह आगे आया और इंस्पैक्टर गौतम के हाथ से स्पीकर ले उसे अपने मुंह के आगे कर स्पीकर का रूख ऊपर की तरफ किया और बोला—

"कानून से टक्कर मत लो बेवकूफों। ऐसा हिमाकत भरा काम करके तुम मेरे बेटे के लिये और भी मुश्किलें खड़ी कर रहे हो। मैं कहता हूं चुपचाप नीचे आ जाओ और खुद को कानून के हवाले कर दो।"

ठीक तभी ऊपर खड़े आदमी ने बच्चे को छोड़ दिया।

बच्चे के मुंह से तेज चीख निकली और उसका शरीर हवा में तैजी से नीचे गिरता हुआ सड़क पर आ गिरा।

'फचाक।'

खोपड़ी खील-खील हो गई मासूस की और खून की छींटें चारों तरफ फैल गईं।

भीड़ में से कइयों की आंखें उबल पड़ीं।

"बड़े शाह जी।" तभी ऊपर वाला दूसरा दहाड़ा—"हमारा जवाब देख लिया आपने। हमें छोटे शाह चाहिये—हमें रिश्ता आपसे नहीं छोटे शाह से है।"

"भाड़ में जाओ तुम और भाड़ में जाये विजेन्द्र—आज से मेरा उसका रिश्ता खत्म।"

गुस्से में दहाड़ा बड़ा शाह और वापिस हो लिया। स्पीकर उसने वापिस गौतम को दे दिया था।

मगर यह सब नाटक था। और यह नाटक जरूरी भी था—। इस नाटक से छोटे शाह के आजाद होने के बाद सैंटर उस पर सन्देह नहीं कर सकता था—और इस तरह उसका राज बदस्तूर चल सकता था।

"इंस्पेक्टर...।" तभी ऊपर वाला दहाड़ा—"अभी तो बच्चे और हैं...और एक प्रिंसीपल और एक टीचर भी है। अगर दो घण्टे के अन्दर-अन्दर छोटे शाह जी को और उनके दोनों साथियों को रिहा नहीं किया गया तो एक और बच्चा नीचे गिरकर ऊपर पहुंच जायेगा। और हर खून के जिम्मेदार तुम होवोगे—सरकार होवेगी। अब साढ़े नौ हुए हैं—साढ़े ग्यारह बजे तक का वक्त है तुम्हारे पास।"

गौतम फौरन ही अफसरों के पास पहुंचा और उनसे बात करने लगा।

इधर कमल अरोड़ा के चेहरे पर तूफान उठ रहे थे।

सामने पड़े बच्चे की क्षत-विक्षत लाश उसे अपने क्षितिज की लाश नजर आ रही थी।

जो नाटक बड़ा शाह वहां करके गया था—उसे वह ही क्या—वहां मौजूद हर व्यक्ति समझता था।

उसने बच्चे की लाश पर से निगाहें हटाईं और दीवार पर नजर मारी।

निश्चित ही वह ऊपर चढ़ने का कोई रास्ता तलाश रहा था। तलाश करती उसकी निगाहें उस पाईप पर जा अटकीं जो कि

ऊपर छत पर बनी पानी की टंकी से नीचे आ रहा था।
एक इंच का पाईप था वह और दीवार पर हुकों के सहारे चिपका हुआ था।
इतने बारीक पाईप को पकड़कर ऊपर चढ़ना किसी के बस की बात नहीं थी।
लेकिन वह मार्शल आर्टस का माहिर था। बारह-तेरह फीट ऊंची प्लेन दीवार पर भी वह फुर्ती दिखाते हुए बिना हाथ लगाये चढ़ सकता था।
वह पाईप तो उसके लिये काफ़ी मोटा था।
लेकिन एक समस्या थी उसके लिये।
वह थी पुलिस।
वह ही क्या पूरा किशनपुरा जानता था कि पुलिस बड़े शाह की गुलाम है और ऊपर चढ़ते वक्त वह सभी की निगाहों में आ जाता और पूछने पर पुलिस उसे किसी भी सूरत में ऊपर नहीं चढ़ने देगी। इसका बहाना भी होगा उसके पास कि वह बच्चों की जिन्दगी का रिस्क नहीं ले सकती।
फिर क्या करे वह?
उपर चढ़ने का बस यही एक रास्ता था।
कैसे सभी की निगाहों में आये बिना वह ऊपर चढ़े।
बस दो मिनट का वक्त चाहिये था उसे ऊपर चढ़ने के लिये। यानि दो मिनट के लिये वह सभी का ध्यान अपनी तरफ से हटाना चाहता था।
कैसे हटाये वह।
उसने तेजी से सोचा—और फिर जो स्कीम उसके जेहन में आई—वह उसके लिये काफी नुकसानदेह थी।
लेकिन उसने अपना नुकसान करना ठीक समझा—। बच्चों की जिन्दगी के आगे उसका वह नुकसान तो कुछ भी नहीं था।
तुरंत वह पीछे हटा और भीड़ से बाहर निकलकर अपनी बाईक की तरफ बढ़ा।
कल शाम को ही उसने टंकी फुल कराई थी।
बाईक के करीब आकर उसने जेब से चाबी निकालकर उसकी टंकी का ढक्कन खोला और फिर जेब से माचिस निकालकर इधर-उधर देखा।
सभी को उसने ऊपर ही देखते पाया।

तुरन्त उसने एक तीली निकालकर ...लाई और टंकी में फैंक दी।

'भक्क' की आवाज के साथ पैट्रो... ने आग पकड़ ली।

टंकी से आग का फव्वारा फूट पड़ा।

"आग...आग...आग...।"

वह जोरों से ... और भीड़ की त... भागा।

कुछ ही पलों में ... अफरा-तफरी ... ई।

लोग डर के मारे ...र-उधर भागने लगे।

पुलिस भी इस बदली स्थिति पर घबरा गई।

सभी वहां से दूर होने की कोशिश करने में भाग रहे थे क्योंकि टंकी किसी भी वक्त फट सकती थी।

ऊपर खिड़की में मौजूद दोनों व्यक्ति भी बाईक को देख रहे थे।

यह सुनहरी मौका था कमल अरोड़ा के लिये—और इस मौके का उसने भरपूर फायदा उठाया।

बिजली की-सी तेजी से वह पाईप के करीब पहुंचा और पाईप को उंगलियों के पोरों से पकड़कर तेजी से ऊपर चढ़ने लगा।

कमाल की फुर्ती दिखाई उसने।

वह अंदाजा तो दो मिनट का लगा रहा था—लेकिन वह पहुंच डेढ़ मिनट में ही गया छत पर।

छत पर पहुंचते ही उसने पाईप को छोड़ा और सीढ़ियों की तलाश में इधर-उधर भटका—

नीचे जाने की सीढ़ियां नहीं थीं।

लेकिन यह कोई बड़ी समस्या नहीं थी उसके लिये।

यहां भी उसने पाईप का प्रयोग किया जो कि पानी की टंकी की दूसरी साईड से नीचे किचन में जा रहा था। पाईप को पकड़कर वह बिना कोई आवाज किये नीचे उतर आया।

पंजों के बल चलते हुए वह उस दरवाजे के करीब पहुंचा—जिसके भीतर वे दोनों गुण्डे बच्चों और टीचर तथा प्रिंसीपल को बंधक बनाये हुए थे।

दीवार से चिपककर उसने गर्दन को आगे की तरफ लम्बा किया और भीतर झांका।

दोनों गुण्डों का ध्यान बाहर सड़क पर ही था।

स्टेनगनें उनके हाथों में थीं।

"बड़ा...म।"

तभी एक गगनभेदी विस्फोट हुआ।

बाईक की टंकी फ[illegible]ाई थी।

बस इतना वक्त [illegible]त था कमल अरोड़ा के लिये।

विस्फोट ने उन्हें [illegible]ताकर रख दिया [illegible] और वो पीछे हट गये थे।

तुरंत वह भी[illegible]ा और अगले [illegible] उसका शरीर उछलकर दोनों से टकराया। [illegible] ी क

पीछे से इ[illegible]रह हमला होने की [illegible] सपने में भी उम्मीद नहीं थी—तभी तो वे बुरी तरह से बौखला गये थे।

बौखलाहट में ही एक उछलकर खिड़की से बाहर उछल गया। और उसी के साथ ही उसकी गगन भेदी चीख हवा में गूंजती चली गई।

लेकिन कमल अरोड़ा ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया—वह दूसरे पर झपटा और अपने पैर की भरपूर ठोकर उसके जबड़े पर दे मारी।

बड़ा ही घातक वार था वह।

गुण्डे के दो दांत कुर्बान हो गये और वह उछलकर पीछे जा गिरा।

स्टेनगन उसके हाथ से छूट गई।

उसके गिरते ही कमल अरोड़ा उछला और उसका घुटना सीधे गुण्डे के पेट पर पड़ा।

"हा।"

गुण्डे के मुंह से बस इतना ही निकला और वह थोड़ा-सा छटपटाकर शांत हो गया।

बेहोश हो चुका था वह।

अब कमल अरोड़ा ने कमरे में निगाहें दौड़ाई।

एक तरफ बच्चे सहमे हुए खड़े थे और प्रिंसीपल तथा टीचर पूरी तरह से निर्वस्त्र खड़ी थीं।

कमल अरोड़ा ने अपनी निगाहें झुका लीं और बोला—

"अब आपको कोई खतरा नहीं—जाइये—कपड़े पहन लें।"

भावावेश में दोनों कमल अरोड़ा से आकर लिपट गईं और फफक-फफककर रोने लगीं।

"इन कुत्तों ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा।" हेमलता रोते हुए बोली—"हमारी इज्जत लूट ली और एक बच्चे को भी मार डाला।"

"अ...आप किसी से भी अपनी इज्जत लुटने की बात मत करियेगा...इसमें आप ही की बदनामी होगी। जाइये कपड़े पहन लें।"

दोनों उससे अलग हुई और क[illegible] से निकल गई।

कमल अरोड़ा ने बच्चों की त[illegible] देखा जो उसी की तरफ टुकर-टुकर देख र[illegible]।

वह मुस्कुरा[illegible]

"देखो बच्चो[illegible] कैसे ढिशुम-ढि[illegible] करके इन्हें मार डाला। तुम भी ऐसे गंदे लोगों[illegible] ढिशुम-ढिशुम क[illegible]न?"

उसकी बात सुन[illegible] बच्चों के चेहरों पर [illegible]ड़ी-बहुत रौनक आ गई। लेकिन वे अभी तक पूरी तरह से भय मुक्त नहीं हुए थे।

"ऊपर कौन है?" तभी स्पीकर में से निकलती आवाज कमल अरोड़ा के कानों में पड़ी—"किसने गिराया है इसे नीचे?"

कमल अरोड़ा तुरंत खिड़की के करीब पहुंचा और नीचे झांका।

अब वहां पहले की तरह भीड़ थी।

नीचे बच्चे की लाश के पास दूसरे गुण्डे की लाश पड़ी थी। उसके करीब ही उसकी स्टेनगन थी।

उसने अपनी बाईक की तरफ देखा।

काले लोहे का मुड़ा-तुड़ा ढांचा नजर आया उसे वहां।

"मैंने फैंका है।" वह ऊंचे स्वर में बोला—"घबराने की कोई बात नहीं—दूसरे को बेहोश कर दिया है मैंने—अब कोई खतरा नहीं।"

उसकी बात सुनकर वहां खुशी से भरा शोर उभरा।

"मैं सभी बंधकों के साथ नीचे आ रहा हूं।" कमल अरोड़ा बोला और खिड़की के पास से हट गया।

आगे बढ़कर उसने स्टेनगन उठाई और पुनः खिड़की के करीब आकर स्टेनगन को नीचे फेंक दिया।

स्टेनगन फेंककर वह जैसे ही पलटा—बच्चे खुशी से किलकारियां मारते हुए उसकी तरफ भागे और उसकी टांगों से लिपट गये। इस वक्त कमल अरोड़ा के दिल को जो खुशी—जो सुकून मिल रहा था—उसे वह शब्दों में बयान नहीं कर सकता था।

तभी हेमलता और रीटा अपने कपड़े पहनकर कमरे में दाखिल हुईं।

कमल अरोड़ा उन्हें देखकर मुस्कुराया—"चलें?"

दोनों ने एक साथ सिर हिलाए।

और फिर बच्चों को लेकर कमल अरोड़ा नीचे आ गया।

पीछे-पीछे हेमलता और रीटा थीं।

लॉबी वाला गे[illegible]लकर वे लॉबी में आये तो मेन गेट को भीतर से ताला लगा पाया।

"इसकी चा[illegible] कमल अरोड़ा ने [illegible]लता की तरफ देखते हुए पूछा।

"यह ता[illegible] मारा नहीं है [illegible]को देखते हुए बोली हेमलता—"वे [illegible]ने साथ लाये थे। [illegible]श्य ही चाबी उसकी जेब में होगी जो ऊपर [illegible]होश पड़ा है। क्योंकि वही बाद में ऊपर आया था—और उसने अपने साथी से कहा था कि नीचे ताला लगा दिया है।"

"आप यहीं ठहरें मैं चाबी लेकर आता हूं।"

कहकर कमल अरोड़ा वापिस ऊपर बेहोश पड़े गुण्डे के पास पहुंचा।

उसकी तलाशी के दौरान चाबी मिल गई उसे।

वापिस आकर उसने मेन गेट का ताला खोला—और जैसे ही उसने गेट खोला—

पुलिस के अधिकारी उसकी तरफ लपके।

देखते ही देखते कमल अरोड़ा समेत पुलिस ने सभी को घेर लिया।

सरकारी डॉक्टर को पहले ही बुला लिया था पुलिस ने, सो डॉक्टर एक-एक कर सभी को ओ० के० करता जा रहा था। पुलिस के पीछे बच्चों के अभिभावक खड़े थे।

जो भी बच्चा आगे बढ़ता उसकी मां उसे पुचकार अपने कलेजे से लगा लेती और बाप बच्चे को प्यार करने लगता—और फिर दोनों कमल अरोड़ा को हजारों लाखों दुआएं देते हुए पीछे हट जाते।

सभी बच्चों तथा रीटा के ओ० के० होने के बाद एस० एस० पी० ने कमल अरोड़ा के कंधे को थपथपाया—

"वैल्डन यंगमैन—तुमने बहादुरी से काम लेकर जिस तरह अपनी जान को जोखिम में डालकर इन मासूमों को बचाया है वह प्रशंसनीय है।"

"थैंक्यू सर।" बोला कमल अरोड़ा—"मैंने अपना फर्ज पूरा कर लिया—अब आप अपना फर्ज पूरा करें—उधर दूसरा गुण्डा बेहोश पड़ा है उसे गिरफ्तार कीजिये।"

"वो तो होगा ही।" मुस्कुराया एस० एस० पी०, साथ ही तुम्हें भी थाने जाना पड़ेगा।"

"क्यों?" चौंका कमल अरोड़ा।

"अरे भई बयान नहीं लिखवाओगे क्या? तुम कैसे ऊपर चढ़े, कैसे एक को नीचे गिराया और कैसे दूसरे को बेहोश किया। यह सब बताना होगा न तुम्हें।"

"ओह।"

"इंस्पैक्टर गौतम।"

एस० एस० पी० बोला।

"यस सर।"

तुरंत गौतम एस० एस० पी० के करीब आते हुए बोला।

"इसे थाने ले जाओ।" उसने कमल अरोड़ा की तरफ इशारा किया।

"यस सर।"

"और कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिये इसे। आज का हीरो है यह।"

"यस सर।"

कमल अरोड़ा ने इधर-उधर देखा।

कई कैमरों की फ्लैश चमक रही थी उस पर। टी० वी० चैनल वाले उसकी मूवी उतार रहे थे।

"आओ।" गौतम उससे बोला।

कमल अरोड़ा हल्के से मुस्कुराया और उसके साथ चलने लगा।

पुलिस की जिप्सी तक पहुंचने तक कई रिपोर्टरों ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन कमल अरोड़ा ने सभी को थाने पहुंचने के लिये कह दिया और यह कहा कि वह थाने में ही सब कुछ बतायेगा।

कुछ ही देर में वह गौतम के साथ जिप्सी में बैठा थाने की तरफ उड़ा जा रहा था।

जिप्सी के पीछे पत्रकारों की दो कारें थीं और पांच बाईक थीं। निश्चय ही वे कमल अरोड़ा का इंटरव्यू लेना चाहते थे।

थाने के प्रांगण में कमल अरोड़ा के सामने दो न्यूज चैनलों के माईक थे—एक-दो रिपोर्टर टेप रिकार्डर उसके मुंह के पास किये हुए थे।

वे उससे सवाल कर रहे थे—और कमल अरोड़ा उनका जवाब दे रहा था।

गौतम कमल अरो[illegible] के करीब खड़ा [illegible]।

"आपने अपना [illegible] तो बताया नहीं [illegible] एक पत्रकार ने पूछा।

"कमल—कम[illegible]रोड़ा।" कमल उ[illegible]त्रकार की तरफ देखते हुए बोला।

"काम क्या [illegible] हैं आप?" दूसरे [illegible]।

"कुंगफू—[illegible]ल आर्ट सिखाता [illegible] कमल कोचिंग सैंटर है मेरा—।" कमल [illegible]रोड़ा ने दूसरे की त[illegible] देखा।

"क्या आप पहले से ही लवली स्कूल के अन्दर थे?" एक अन्य ने पूछा।

"जी नहीं।"

"तो फिर आप ऊपर कैसे पहुंच गये? क्योंकि स्कूल में प्रवेश करने का बस एक ही रास्ता था। वह मुख्यद्वार था।"

कमल हल्के से मुस्कराकर बोला—

"उधर छत पर बनी पानी की टंकी का पाईप नीचे तक आ रहा था—उसी के जरिये मैं ऊपर छत पर पहुंचा था—और फिर वैसे ही पाईप के जरिये मैं तीसरी मंजिल के फर्श पर उतरा था।"

"लेकिन वो पाईप तो मात्र एक इंच का है। वो भी दीवार से चिपका हुआ। उसे तो सिर्फ उंगलियों के पोरों से ही पकड़ा जा सकता है।" एक अन्य ने पूछा।

"जी हां। लेकिन कुंगफू ऐसी कला है जिसमें हम नाखूनों से भी अपनी पकड़ को मजबूत रख सकते हैं।"

"मैंने उस पाईप को देखा था।" एक अन्य पत्रकार बोला—"वह तो फ्रंट में लगा हुआ है।"

"जी हां—मैं उसी पाईप से ऊपर चढ़ा था।"

"लेकिन किसी ने आपको ऊपर चढ़ते तो देखा नहीं।" पहला पत्रकार बोला—"क्या आप अदृश्य होने की कला भी जानते हैं?"

"जी नहीं।" हंसा कमल अरोड़ा।

"तो फिर यह चमत्कार कैसे हुआ?"

"सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में किसी को भी नजर आये बिना आप ऊपर कैसे चढ़ गये?"

उस पत्रकार के प्रश्न पर कमल अरोड़ा के मुंह से गहरी सांस निकल गई।

"यह चमत्कार करने के लिये मुझे अपनी बाईक की कुर्बानी देनी पड़ी।"

"क्या...?" ... साथ कई चौंक... स्वर उभरे।
"वो...वो क... आपकी थी...?"
"जी हां...उ...रसे आग भी मैंने... लगाई थी।"
"ल...लेकिन ...करने की जरू...त क्या थी आपको?"
"आप क्या स... हैं—पुलिस मु...पर चढ़ने की इजाजत दे देती। मुझे यह कहक... क दिया जाता कि पु...प बच्चों की जिन्दगी का रिस्क नहीं ले सकती।"
सभी पत्रकार चुप रह गये। कमल अरोड़ा की बात बिल्कुल सही थी।
"अब आप कैसा महसूस करते हैं?"
कुछ क्षणों बाद एक पत्रकार ने पूछा।
"अपनी जान को खतरा।"
कहते हुए कमल अरोड़ा ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।
"य...यह आप क्या कह रहे हैं?"
एक पत्रकार हैरानी से बोला।
कमल अरोड़ा के होठों पर फीकी मुस्कान नाच उठी।
"सच्चाई सभी जानते हैं कि मैं सही कर रहा हूं...लेकिन किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही सच कहने की...।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोला कमल अरोड़ा—"लेकिन कभी न कभी किसी न किसी को तो हकीकत बतानी ही पड़ेगी। किसी न किसी को तो अन्याय के खिलाफ बिगुल बजाना ही पड़ेगा। और समझ लीजिये कि वो बिगुल मैं बजाने जा रहा हूं।"
"अ...आप कहना क्या चाहते हैं?" दूसरा पत्रकार बोला।
"सभी जानते हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूं, लेकिन सभी जानबूझकर अन्जान बने हुए हैं। पता नहीं आप में से कोई मेरा साथ देगा कि नहीं...पता नहीं मेरी बताई हकीकत को कोई अखबार में छापेगा कि नहीं। लेकिन मैं फिर भी हकीकत बताऊंगा और हकीकत बड़ी कड़वी है। बड़ी ही कड़वी।"
"आप बताइये तो सही।" एक पत्रकार बोला।
"आप क्या समझते हैं—?" कमल अरोड़ा पत्रकारों पर निगाहें दौड़ते हुए बोला—"कि बड़ा शाह छोटे शाह से नफरत करता है। हकीकत तो किशनपुरा का बच्चा-बच्चा जानता है। पूरे किशनपुरा में दोनों बाप-बेटों का इतना आतंक है कि वे चाहें तो कुछ भी कर सकते हैं। यहां तक कि पुलिस भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। बल्कि मैं

तो यह कहूंगा कि... [illegible] उसने अपने क[illegible] खड़े गौतम को देखा—"यहां की पुलिस, य[illegible] का प्रशासन दोनों [illegible]-बेटों का गुलाम है।"

"क्या बक [illegible] तुम?" एकदम [illegible] उठा गौतम—"जानते हो क्या कह रहे हो [illegible]...?"

"क्यों? [illegible] गलत कह रहा [illegible] को" कमल अरोड़ा उसे गहरी निगाहों से देखते [illegible] बोला—"किशन[illegible] में सरेआम बहू बेटियां उठा ली जाती हैं—[illegible]अरेआम खून हो जाते हैं। लेकिन अभी तक एक भी कातिल नहीं पकड़ा गया—एक भी रेपिस्ट नहीं पकड़ा गया।"

"पकड़ा तो तब जाये—जब यहां कोई शिकायत दर्ज कराने आए। ऐसे में हमें कहां से पता चलेगा कि किसका रेप हुआ है।"

गौतम ने दलील दी।

"और कत्ल हुए जो—उनके बारे में आप क्या कहेंगे?"

"हमारे पास कोई जादू का डण्डा नहीं मिस्टर कमल अरोड़ा, जो हम घुमायेंगे और कातिल पकड़ा जायेगा। तफ्तीश कर रही है पुलिस। और पुलिस की कर्तव्य-परायणता का सबसे बड़ा सबूत इस वक्त हवालात में पड़ा है। छोटे शाह के अगर हम गुलाम होते तो उसे गिरफ्तार ही क्यों करते?"

"अवश्य ही मृतक मोहन लाल की पहुंच बहुत ऊंची होगी, जो मजबूरन पुलिस को छोटे शाह को गिरफ्तार करना पड़ा—और गिरफ्तार करने के साथ-साथ उसे छुड़ाने का भी रास्ता खोज लिया गया। यह तो इत्तफाकन मैंने पुलिस की और बड़े शाह की योजना पर पानी फेर दिया—वर्ना अब तक तो छोटा शाह हवालात से निकलकर कहीं का कहीं पहुंच चुका होता।"

"बकवास—कोरी बकवास।"

मुंह बनाया गौतम ने।

"यह बकवास नहीं हकीकत है इंस्पैक्टर और मैं यह भी जानता हूं कि मेरे मुंह से निकला एक-एक शब्द मौत को मेरी तरफ ला रहा है। आज नहीं तो कल देख लेना किशनपुरा के किसी चौराहे पर मेरी लाश पड़ी नजर आयेगी। क्योंकि एक तो मैंने बड़े शाह की योजना पर पानी फेर दिया है और दूसरे मैं उसके खिलाफ बोल रहा हूं। और मेरी एक बात और गांठ बांध लो—इस बार तो मैंने बड़े शाह की योजना फेल कर दी—लेकिन जल्दी ही बड़ा शाह छोटे शाह को फरार करा लेगा।"

"ऐसा हरगिज नहीं होगा।"

दृढ़ता से बोला गौतम।

"यह तो वक्त ... बतायेगा। फिल... ...त तो आप मेरा बयान लिखने के लिये चलें।" ... कर उसने पत्रका... की तरफ देखा—"मेरा ख्याल है मैं सब कुछ ब... चुका हूं। अब आ... क्या छापना है—क्या दिखाना है—यह आ... ता। चलिये इंस... र साहब।"

उसने पुनः मौ... तरफ देखा।

"ट्रिन...ट्रिन।"

फोन की घण्टी घनघनाई।

गौतम ने हाथ लम्बा कर टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

कमल अरोड़ा अभी थोड़ी देर पहले ही वहां से गया था।

उसकी बातों से गौतम को गुस्सा तो बहुत आया था।

वो तो आना ही था। काने को काना जो कह दिया था कमल अरोड़ा ने।

उस वक्त उसका दिल यही किया था कि वह अभी रिवॉल्वर निकाले और कमल अरोड़ा के सीने में गोली उतार दे।

लेकिन उसने ऐसा किया नहीं।

हालात ही ऐसे थे उस वक्त—ऊपर से छोटा शाह हवालात में था। और कमल अरोड़ा हीरो बना हुआ था।

सो खून का घूंट पीते हुए उसने पहले अपने अफसरों से सलाह करनी ठीक समझी थी। और इस वक्त वह चलने की तैयारी ही कर रहा था कि फोन बज उठा था।

"हैलो—किशनपुरा पुलिस स्टेशन।"

"हरामखोर...।"

दूसरी तरफ से आती फुंफकार को सुनकर बुरी तरह से कांप उठा वह। बड़े शाह की आवाज को फौरन पहचान लिया था उसने।

"ब...बड़े शाह जी...।"

"मेरे जिगर का टुकड़ा हवालात में अभी तक है।" दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी।

"छ...छोटे शाह जी तो अब तक आजाद हो जाते, बड़े शाह जी—लेकिन ऐन वक्त पर उस बेवकूफ ने टांग अड़ा दी।"

"सारी बात बोल—क्या हुआ था?"

सब कुछ कह सु[illegible]ा गौतम ने, फि[illegible]ला—"छोटे शाह तो आजाद हो जायेंगे—ले[illegible] उसका क्या क[illegible] है? यह हुक्म आप कहे तो...।" दूसरी तरफ [illegible] देर के लिये खा[illegible] छा गई।

गौतम बड़े धै[illegible]के साथ दूसरी [illegible] से आवाज आने का इन्तजार करता रहा[illegible]

"पता बोल [illegible] छोकरे का।" थो[illegible]दी देर बाद दूसरी तरफ से आवाज आई—"[illegible]तना बड़ा काम किया [illegible] उसने—अपनी बाईक तक कुर्बान कर दी, ईनाम तो मिलना चाहिये न उसे।"

"ल...लेकिन बड़े शाह जी—इस तरह तो आप पर...।"

"तुझे जो कहा है वही कर...।" गुर्राहट उभरी।

"ज...जी।" हड़बड़ाया गौतम और कमल अरोड़ा का पता बता दिया।

"कौन-कौन से पत्रकार आये हुए थे थाने में?" दूसरी तरफ से पूछा गया।

गौतम ने बताया।

"और कुछ...?"

"साढ़े ग्यारह बजे मोहन लाल की बीवी और चौकीदार आ रहे हैं, छोटे शाह जी की शिनाख्त के लिये।"

"उसका पता है मुझे। तू उसकी चिन्ता मत कर।"

"ज...जी।"

गौतम ने इस तरह सिर हिलाया जैसे बड़ा शाह उसके सामने खड़ा हो।

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

कमल अरोड़ा के सामने से नाश्ते की खाली प्लेट उठाते हुए बोली नेहा।

"क्या नहीं करना चाहिये था?"

कमल अरोड़ा एक तरफ पड़े तौलिये को उठाकर उससे मुंह को पोंछते हुए बोला।

बाईक तो खत्म हो चुकी थी कमल अरोड़ा की—ऐसे में उसे रिक्शे पर घर जाना पड़ा था।

पूरे दो घण्टे लेट हुआ था वह।

ऐसे में नेहा की ... पर तो बन ही ...नी थी।

हालांकि अपने ... पर उसे पूरा वि...स था—लेकिन वह आज तक ऐसे लेट नहीं ... था—। और ... र होता भी था तो घर फोन कर देता था कि व... आयेगा।

लेकिन आज उस... न भी नहीं आय...। ऐसे में चिंता तो होनी ही थी उसे। तरह-तर... बुरे विचार उसके मन में उठ रहे थे।

कहीं उसका एक्सीडें...ो नहीं हो गया? या उसे कुछ और तो नहीं हो गया।

ऐसे विचार मन में उठते तो वह ऊपर वाले से प्रार्थना करने लगती की उसका पति सही-सलामत हो।

पांच-पांच मिनट बाद वह दरवाजे पर आकर बाहर देख रही थी।

और दो घण्टे बाद जब उसने उसे रिक्शा से उतरते देखा—तब जाकर उसकी जान में जान आई।

घर में प्रवेश करते ही कमल अरोड़ा ने नेहा की गोद में पड़े क्षितिज को चूमा और फिर सीधा बाथरूम की तरफ बढ़ गया। नेहा किचन में चली गई।

कुछ भी नहीं पूछा उसने उससे कि वह इतना लेट क्यों हुआ है? क्योंकि उसे पता था कि उसका पति उसे स्वयं ही सब कुछ बता देता। यूं भी एक सुघड़ गृहणी होने के नाते उसका पति के घर में प्रवेश करते ही उससे सवाल-जवाब करना गलत था।

नाश्ता तैयार करके वह ड्राईंगरूम में आई तो उसने कमल अरोड़ा को सोफे पर बैठे पाया।

नाश्ता उसके सामने टेबल पर रखकर नेहा वापिस गई और क्षितिज को उठा लाई और उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गई। दोनों साथ-साथ नाश्ता करने लगे।

क्षितिज के नन्हें हाथ में नेहा ने परांठे का एक टुकड़ा थमा दिया था—जिसे वह मुंह में डालकर चबा रहा था। जैसी कि उम्मीद थी—नाश्ते के दौरान ही कमल अरोड़ा ने उसे अपने लेट होने की वजह बता दी।

उसकी बातों के दौरान नेहा के चेहरे की रंगत कई बार बदली और आखिर में उसने उसे अपने मन की बात कह ही दी कि उसने यह सब ठीक नहीं किया।

"क्या जरूरत थी तुम्हें बड़े शाह के खिलाफ बोलने की? तुम क्या

जानते नहीं कि वह कैसा श... है? उसके साम... शैतान भी पनाह मांगता है और आपने उस... खिलाफ बोल दि...?"

बोली नेहा।

कमल अरोड़ा ने ...ी सांस छोड़ते हु... फे की पुश्त से टेक लगाई और चेहरे पर गम्...ता ओढ़ते हुए ...—

"एक मासूम का कत्ल होते अपनी आ... से देखा है मैंने। हमारे क्षितिज से कोई ज्यादा बड़ा नहीं था वह ... उस हैवान ने तीसरी मंजिल से नीचे फैंक दिया था, अगर तुम वहां होतीं तो तुम भी वही करती जो मैंने किया। जरा सोचो, इस वक्त उस मासूस के मां-बाप का क्या हाल हो रहा होगा?"

कहते हुए उसने इस तरह झुरझुरी ली जैसे यह सब बताते हुए उसके दिल को कुछ हो रहा हो।

"वे हैवान बाकी के बच्चों को भी फेंक देते—लेकिन मैंने ऐसा नहीं होने दिया।" वह बोला।

"वो बात तो ठीक है लेकिन थाने में तुम्हें बड़े और छोटे शाह के खिलाफ बोलने की क्या जरूरत थी? ऊपर से पुलिस के भी खिलाफ बोले तुम। पता है कितनी बड़ी मुसीबत को दावत दे दी है तुमने?"

नेहा गम्भीरता से बोली।

"मैं जानता हूं नेहा।" गंभीरता से उसकी हां में हां मिलाई कमल अरोड़ा ने—"कि मैंने अपने बुरे वक्त को आवाज दी है। लेकिन जो कुछ मैंने कहा बहुत सोच-समझकर कहा...।"

"लेकिन!"

"पहले मेरी बात पूरी हो लेने दो—फिर तुम अपनी बात कहना।"

नेहा चुप हो गई।

कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"शाह बाप-बेटों का जो आंतक किशनपुरा में फैला हुआ है—उससे यहां का हर शख्स त्रस्त है। ऊपर से चाहे कोई कुछ भी कहे—लेकिन उनके मन से पूछोगे तो वह शाह बाप-बेटों के लिये मौत ही मांगता नजर आयेगा। इतना दुःखी है उससे किशनपुरा का वासी। ऐसे में किसी न किसी को तो अपने मन की बात कभी न कभी तो बाहर निकालनी ही थी—वो आज मैंने निकाली दी—क्योंकि आज उससे अपने मन की बात करने का मेरे पास भरपूर मौका था।"

कहकर उसने गहरी सांस छोड़ी और फिर अपनी बात को आगे

बढ़ाते हुए बोला—
"मैंने कई पत्र... पों के बीच यह बात कही थी। यहां के तो सारे पत्रकार उसके गुलाम... लेकिन बाहर से आये दो पत्रकारों को देखकर मैंने यह बात कही थी..."
"ओह!"
"अब बड़ा शा... छोटे शाह को छुड़ाने के लिये सौ बार सोचेगा—क्योंकि जिस... तरह से मैंने बात की थी—उससे अगर वह...पुलिस वाले छोटे शाह को छुड़ायेंगे तो सीधा शक बड़े शाह पर जायेगा—और तब कोई बड़ी बात नहीं कि बाहर से फोर्स आ जाये—और ऐसा न तो बड़ा शाह चाहेगा और न ही पुलिस।"
"ओह-ओह!"
"ओह अपने बारे में मैंने जो कहा कि अब मौत की नजर मुझ पर पड़ गई है—वह भी इसलिये कहा था कि पुलिस या बड़ा शाह मुझे हाथ भी न लगा पायें। क्योंकि मेरी मौत पर बड़े शाह की तरफ उंगली उठेगी।"
"मौत आये उन नामुरादों को, जिन्होंने किशनपुरा की नाक में दम कर रखा है।" बुरा-सा मुंह बनाया नेहा ने—"अगर मौत ने तुम्हारी तरफ का रुख भी किया तो उसे पहले मुझसे निपटना होगा।"
मुस्करा पड़ा कमल अरोड़ा।
वह सोफे से उठा और नेहा के करीब आ उसकी ठोड़ी को धीरे से पकड़ते हुए बोला—
"पिछले जन्म में पता नहीं क्या पुण्य किये थे मैंने जो इस जन्म में मुझे तुम मिली हो अब...।"
"बस—हो गये शुरू।" नेहा उसके दिल की बात समझते हुए बोली—"न बाबा न—अभी घर का सारा काम पड़ा है। सफाई करनी है—बर्तन साफ करने है और...।"
"क्षितिज सो गया है देखो।"
"लेकिन मैं नहीं...।"
लेकिन उसकी बात पूरी नहीं होने दी कमल अरोड़ा ने और उसके गिरेबान में हाथ डाल दिया।
"ओफ्फो...वक्त तो देखो।"
नकली गुस्सा दर्शाया नेहा ने।
"प्यार का भी कोई वक्त होता है...बस जब दिल किया...कर लिया।"

हंसा कमल अरो[illegible]ा और उसकी [illegible]ों को हल्के से दबाया।

नेहा की आंखों में नशा भरने लगा। [illegible] की गर्दिश तेज हो गई।

अपने आप ही उसके हाथों ने क्षिति[illegible] को उठाकर सोफे पर ही एक तरफ लिटा दिया।

कमल अरोड़ा थोड़ा-सा झुका [illegible] उसकी साड़ी को नीचे से पकड़कर ऊपर उठाया और उसकी साड़ी को जांघों के अन्त में इकट्ठा कर दिया।

सैकड़ों बार देख चुका था वह अपनी पत्नी की जांघों को—लेकिन हर बार उसे ऐसा लगता जैसे वह उन्हें पहली बार देख रहा हो।

नेहा की सुडौल गोरी जांघों को देखकर उसके भीतर की उत्तेजना और भी तेज हो गई।

वह झुका और नेहा की जांघों पर अपने होंट रख दिये।

नेहा ने उसके चेहरे को अपनी जांघों में भींच लिया और मुंह से गर्म सांसें छोड़ने लगी।

गाड़ी अगले स्टेशन की तरफ बढ़ने लगी।

लेकिन अगले स्टेशन तक पहुंच नहीं पाई। तभी--

"डिंग...डां...ग...।"

कॉलबैल बज उठी।

दोनों हड़बड़ाते हुए अलग हुए और नेहा खड़ी होकर जल्दी-जल्दी अपने कपड़ों को व्यवस्थित करने लगी।

"इस वक्त कौन आ मरा?"

कमल अरोड़ा भुनभुनाते हुए बोला। उसका सारा उफान सोडे की तरह ठण्डा पड़ चुका था।

"मैं देखती हूं।" बोली नेहा और कमरे से बाहर निकल गई।

पीछे कमल अरोड़ा ने क्षितिज को गोद में उठा लिया।

आंगन पार करके नेहा मेन डोर के करीब आई और ऊंचे स्वर में बोली—"कौन है?"

"बड़े शाह जी आये हैं—दरवाजा खोलो।" बाहर से आवाज आई।

बड़े शाह का नाम सुनते ही नेहा का रोयां-रोयां कांप उठा।

कुछ पल पहले जहां उसके चेहरे पर उत्तेजना की लाली फैली हुई थी—वहीं अब उसकी रंगत एकदम से पीली पड़ गई थी।

बड़ा शाह आया था। दरवाजा तो खोलना ही था उसे। न खोलने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। थूक सटककर उसने किसी तरह स्वयं

को हिम्मत बंधाई और... डा खोलकर दरवाजे को खोला।

सामने बड़ा शाह ...डा था।

होंठों पर कुटिल ...कान लिये वह उसे देख रहा था।

उसके पीछे पत्रकार ...खड़े थे—और कुछ और आदमी भी खड़े थे जो कि बड़े शाह के ही गुलाम थे।

नेहा ने जोरों से थूक सटकी और हाथ जोड़ दिये।

"न...नमस्ते ब...बड़े शाह जी।"

बड़े शाह जी ने हाथ आगे बढ़ा उसके सिर पर रखा और बोला—

"जीती रहो...। तुम कमल अरोड़ा की पत्नी हो?"

"ह...हां...।" नेहा के गले की घण्टी पुनः उछली।

"कमल कहां है?"

"वो...वो...।"

"नमस्ते शाह जी...।"

तभी कमल अरोड़ा की आवाज उसके कानों में पड़ी।

नेहा के सिर से हाथ हटाते हुए बड़े शाह ने कमल अरोड़ा की तरफ देखा जो कि क्षितिज को उठाये उसकी तरफ बढ़ रहा था।

"तो तुम हो कमल अरोड़ा?" कमल अरोड़ा के करीब आते ही बोला बड़ा शाह—"जिसने अकेले अपने बलबूते पर उन मासूमों को आजाद कराया।"

"जी हां।"

कमल गम्भीरता से बोला—और क्षिजित को नेहा के हवाले कर दिया।

"अन्दर आने को नहीं कहोगे बेटे?"

इन्कार करने की सूरत ही कहां थी। सो कमल अरोड़ा एक तरफ हट गया।

उसके पीछे खड़ी नेहा भी एक तरफ हो गई।

बड़ा शाह उनके आगे से निकलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

उसके पीछे-पीछे पत्रकार दाखिल हुए—फिर दो कैमरामैन जिनमें से एक बाहर का था—फिर बड़े शाह के चार आदमी—और फिर एक आदमी एक नई नकोर बाईक को धकेलता हुआ भीतर दाखिल हुआ।

बाईक देखकर कमल अरोड़ा चौंका तो जरूर—लेकिन बोला कुछ नहीं।

वह सभी को लेकर ड्राईंगरूम में दाखिल हो गया।

"आप लोग बैठिये—मैं और कुर्सियां लेकर आता हूं।"

वह बोला और साथ वाले कमरे से चार फोल्डिंग कुर्सियां उठा लाया जो कि एक दूसरे में फंसी हुई थीं।

उसने कुर्सियां अलग-अलग की तो बचे हुए पत्रकार एक-एक कुर्सी खिसकाकर स्टूलिंग वाली जगह पर बैठ गये।

सोफे भी भर चुके थे।

अब सिर्फ बड़े शाह के चार आदमी और खुद कमल अरोड़ा खड़े नजर आ रहे थे—और वे दोनों कैमरामैन जो कैमरों को एडजस्ट कर रहे थे।

"सॉरी।" कमल अरोड़ा ने चारों खड़े आदमियों को देखा—"मेरे पास बिठाने लायक और कोई जगह नहीं।"

"कोई बात नहीं।" उनकी बजाये बड़ा शाह बोल पड़ा जो कि एक सोफा चेयर पर बैठा था—"यह लोग खड़े हुए ही ठीक हैं।"

"चाय वगैरह पीयेंगे आप?"

"नहीं...उसकी तकलीफ न करो।" बड़ा शाह बोला—"बल्कि यह पूछो कि मैं यहां क्यों आया हूं?"

"फरमाइये।" गम्भीरता से बोला कमल अरोड़ा।

"सबसे पहले तो मैं तुम्हें बधाई देना चाहता हूं कि तुमने उन मासूमों को आजाद कराया जिनकी जिन्दगी मेरे बेटे की रिहाई से जुड़ गई थी।"

"मैंने किसी पर कोई अहसान नहीं किया बड़े शाह जी। मेरे दिल ने मुझसे जो करने को कहा मैंने कर दिया।"

कमल अरोड़ा गम्भीरता से बोला।

"तो क्या मेरे बारे में तुमने जो कहा—वो भी तुम्हारे दिल ने तुमसे कहने को कहा था?"

"हां। और यही हकीकत है।" कमल निडरता से बोला।

गहरी सांस छोड़ी बड़े शाह ने।

"तुम भी दूसरों की तरह मुझ पर बिना वजह शक कर रहे हो बेटे। यह मेरी बदनसीबी है कि मैं बिजेन्द्र का बाप हूं। उसके माथे पर मेरे नाम का जो लेबल लगा हुआ है उसे मैं मरकर भी नहीं मिटा सकता। मैं ही क्या कोई भी व्यक्ति अपने बाप या बेटे से स्वयं को अलग नहीं कर सकता। अगर औलाद निकम्मी निकले तो उसका असर बाप पर भी पड़ता है। बदनामी सहनी पड़ती है उसे। ऐसे ही मैं भी बदनाम-

ही रहा हूं। करता... बेटा है—लेकिन दाग मेरे दामन पर लगते हैं।—और उसकी ...से बड़ी वजह यह है कि मैं उसके बुरा होने के बावजूद उसे अपने ... रखे हुए हूं—लेकिन अब—अब मैं तमाम मीडिया के सामने यह घोषित करता हूं कि मैं अपना सम्बन्ध विजेन्द्र शाह से विच्छेद करता हूं। अब वह मेरा बेटा नहीं रहा। किशन पुरा के लोगों में मेरे प्रति कैसी भावनायें उपज रही हैं—यह मुझे तुम्हारी बातें जानकर पता लगा। ऐसे में बचने का यही रास्ता रह जाता है कि उस कैसेट को अपने आप से अलग कर दो। अब उसे चाहे फांसी हो या उसे जेल हो—मुझे उससे कोई मतलब नहीं—। मर गया है वह मेरी तरफ से।"

कहते हुए उसके चेहरे पर नफरत से भरा गुस्सा उभर आया।

दो-चार गहरी सांसें छोड़ने के पश्चात! उसने अपने गुस्से पर जैसे काबू पाया और कमल अरोड़ा की तरफ देखते हुए आगे बोला—

"थाने में तुमने यह कहा था कि तुम्हारी जान को खतरा है। मैं इस वक्त मीडिया के सामने यह बात कहता हूं कि अगर तुम्हारा बाल भी बांका होगा तो उसका जिम्मेदार मैं माना जाऊं। बेशक मैंने तुम्हारे खिलाफ कुछ भी न किया हो। फिर भी तुम्हारे किसी भी तरह के शारीरिक नुकसान का जिम्मेदार मैं स्वयं को घोषित करता हूं।"

कमल अरोड़ा अवाक् से उसे देखे रहा था।

आश्चर्य ही तो हो रहा था उसे।

सांप के मुंह से जहर की बजाये अमृत निकल रहा था। भला इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता था कमल अरोड़ा के लिये।

"मैं नहीं जानता कि तुम कितना कमाते हो।" उसे हैरान देख मन ही मन मुस्कुराते हुए बोला बड़ा शाह—"मगर तुम्हारा घर देखकर तो यही लगता है कि तुम्हारी गुजर-बसर ही हो रही है। ऐसे में तुमने अपनी बाईक की कुर्बानी दे दी। ऐसा काम कोई जिगरे वाला ही कर सकता है। लेकिन मैं तुम्हारा नुकसान नहीं होने दूंगा। बाहर बाईक खड़ी है—जो कि तुम्हारे लिये मेरी तरफ से एक छोटा-सा इनाम है।"

कहकर बड़े शाह ने जेब से चाबी निकाली और उसकी तरफ बढ़ा दी।

कमल अरोड़ा ने चुपचाप चाबी पकड़ ली।

उसकी जेब नई बाईक खरीदने की ताकत नहीं रखती थी—और बाईक की उसे जरूरत भी थी। सो उसने चाबी ले ली थी।

"अब आप क्या कहते हैं मिस्टर कमल अरोड़ा?"

तभी एक पत्रकार उससे बोला।

"बड़े शाह जी के प्रति अब कैसे विचार हैं आपके?" दूसरे ने पूछा।

कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ी और गम्भीर मुस्कान मुस्कुराया।

"बड़े शाह जी ने बड़े सटीक अन्दाज में अपना बचाव किया है। लेकिन बदनामी का जो धब्बा इनके माथे पर लगा है—उसे धुलने में अभी वक्त लगेगा।"

"आप—कहना क्या चाहते हैं?"

"सिर्फ खुद को निर्दोष कहकर और मुझे एक नई बाईक देकर बड़े शाह जी निर्दोष साबित नहीं हो जाते। खुद को देवता साबित करने के लिये इन्हें बहुत कुछ करना पड़ेगा।"

"क्या करना पड़ेगा?" एक पत्रकार ने पूछा।

"बहुत कुछ।"

"बहुत कुछ क्या?"

"सबसे पहले तो बड़े शाह को पब्लिक के दिलों में बैठा खौफ निकालना पड़ेगा। पब्लिक के दुःख-दर्द में साथ देना होगा—तब जाकर पब्लिक के दिल में शाह जी के प्रति विश्वास पनपेगा और यही विश्वास बड़े शाह जी को पब्लिक में देवता बना देगा।"

"मुझे देवता नहीं बनना।" तभी बोल पड़ा बड़ा शाह—"मैं सिर्फ इन्सान ही बना रहना चाहता हूं—और लोगों के दिलों में अपने प्रति विश्वास बिठाना चाहता हूं।"

कमल अरोड़ा कुछ नहीं बोला, बस उसे देखता रहा।

शीला देवी कोठी से निकलकर कम्पाऊण्ड में आई और गेट के करीब खड़े चौकीदार को आवाज लगाई।

"गेट खोल दो रामदीन।"

रामदीन ने तुरंत गेट खोल दिया।

शीला देवी ड्राईव वे पर खड़ी मारुति की तरफ बढ़ी—जिसकी ड्राईविंग सीट पर उसका लड़का बैठा था। अपनी मां और चौकीदार को छोटे शाह की शिनाख्त के लिये ले जा रहा था वह।

दरवाजा खोलकर शीला देवी कार की पिछली सीट पर बैठ गई—और दरवाजा बन्द कर दिया।

उसके लड़के ने कार पहले ही स्टार्ट कर रखी थी—सो दरवाजा बन्द होते ही उसने कार आगे बढ़ा दी।

कार गेट से निकली और खड़ी हो गई।

रामदीन ने गेट से बाहर निकलकर गेट बन्द किया और कार के अगले पैसेंजर डोर के सामने आ खड़ा हुआ।

भीतर बैठे शीला देवी के लड़के ने बांह लम्बी कर दरवाजा खोल दिया।

रामदीन भीतर प्रविष्ट हुआ और सीट पर बैठ गया।

उसने दरवाजा बन्द किया और उसी के साथ ही कार आगे बढ़ गई।

कार अभी सौ-डेढ़ सौ मीटर ही चली होगी कि कोठी की बाउण्ड्री वाल के पीछे से एक व्यक्ति बाहर निकला और कार को देखते हुए जेब से मोबाईल फोन निकालने लगा।

उसने मोबाईल के कुछ बटन दबाये और फिर उसे कान से लगा लिया।

"हां बोल।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई।

"शिकार निकल पड़ा है।"

जाती हुई कार पर निगाहें गाड़ते हुए वह व्यक्ति बोला।

"शीला कहां है?"

"पिछली सीट पर।"

"और आगे की सीट पर?"

"चौकीदार और शीला का लड़का।"

"रास्ता?"

"हकारे वाला ही है।"

"ओ०के०।"

दूसरी तरफ से कहा गया—और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

उस व्यक्ति ने मोबाईल जेब में डाला और सड़क पार कर कोठी से कुछ दूर एक वृक्ष के नीचे खड़ी अपनी बाईक की तरफ बढ़ने लगा।

"आप घबराना नहीं मम्मी।" शीला देवी का लड़का कार ड्राईव करते हुए पीछे की सीट पर बैठी अपनी मां से बोला—"नाक में दम कर रखा है इन शाह बाप बेटों ने—छोटे शाह को फौरन पहचान लेना

है तुम्हें। उस कमीने को मैं मौत की सजा दिलाकर ही दम लूंगा। जब वह मरेगा—तब बड़े शाह को पता चलेगा कि दर्द क्या होता है। सुई जब अपने बदन पर चुभती है—तभी दर्द का पता चलता है। अभी तक तो बड़ा शाह दूसरों का खून देखकर खुश होता रहा है—लेकिन इस बार वह अपने ही खून को बहते देखेगा।"

कहते हुए उसकी आवाज में नफरत से भरी उत्तेजना उभर आई थी—जो कि कदाचित बड़े और छोटे शाह के लिये थी।

पिछली सीट पर बैठी शीला देवी बोली तो कुछ नहीं। हां उसकी आंखों से आंसू जरूर बह निकले थे।

सब कुछ ही तो लुट चुका था उसका।

अब बचा ही क्या था। एक पति ही था जिसके साथ वह अपने दुःख-सुख बांट सकती थी—उससे झगड़ सकती थी—उससे प्यार कर सकती थी और अपने मन की बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी बात कर सकती थी।

लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं हो सकता था।

बेशक उसके दो जवान बेटे थे और एक शादीशुदा था—लेकिन वह दोनों में से किसी के साथ भी झगड़ नहीं सकती थी—अपने मन की बात किसी से नहीं कह सकती थी।

एक पत्नी का जो अधिकार अपने पति पर होता है—वो अधिकार वह अपने बच्चों से प्राप्त नहीं हो सकता। बेशक बच्चे उस पर जान न्यौछावर करते हों—लेकिन फिर भी वह खुद को इतना आजाद नहीं समझती—जितना पति के होते हुए समझती है।

ऐसे में अपने पति की मौत को कौन औरत बर्दाश्त करेगी।

यही हाल शीला का था।

जिस दरिन्दे ने उसके पति को उससे छीन लिया था, उससे क्यों घबरायेगी वह।

अपनी मां के मन से बेखबर उसके लड़के ने अपने बाँई तरफ बैठे रामदीन की तरफ देखा, फिर पुनः सामने देखते हुए बोला—

"तुम भी नहीं घबराना रामदीन। छोटे शाह को देखते ही तुम...।"

बाकी के शब्द बीच में ही रह गये उसके।

रामदीन के होठों से खौफ भरी घुटी-घुटी चीख उबल पड़ी—पीछे बैठी शीला देवी की रंगत एकदम से पीली पड़ गई। बात करते हुए उसने जैसे ही मोड़ काटा सड़क पर बराबर में चलते हुए दो ट्रक उसे

अपनी तरफ बढ़ते नजर आये।

पूरी सड़क घेर रखी थी उन्होंने।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों ट्रक एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हों।

बुरी तरह से घबरा गया शीला देवी का लड़का।

उसी घबराहट में उसने स्वयं को बचाने की कोशिश भी की थी—

मगर—

'भड़ाक।'

बाँईं तरफ वाला ट्रक पूरी शक्ति से कार से टकराया।

उसका दायां पहिया कार के ऊपर चढ़ गया और कार की छत पर पहुंचकर रुक गया।

छत पिचककर फर्श से जा लगी थी और उसमें बैठी सवारियां।

उनके बचने का तो एक पैसे का भी चांस नहीं था।

कार का बोनट भीतर की तरफ धंस गया था—दरवाजे भी मुड़कर भीतर धंस गये थे।

दूसरा ट्रक वहां से भाग निकला—जबकि टक्कर मारने वाले ट्रक का क्लीनर बड़े इत्मिनान से ट्रक से उतरा और कार की छत पर आ गया।

वहां से वह छलांग मारकर सड़क पर आया और झुककर कार के भीतर निगाह मारी।

पिछली सीट पर बैठी शीला देवी की लाश पड़ी थी, आगे वाली सीट का पृष्ठ भाग उसके सीने से लगा हुआ था और दरवाजे का एक हिस्सा मुड़कर उसके सिर में धंसा हुआ था।

चेहरे पर शीशे की किरचें ऐसे लगी हुई थीं जैसे तीरों के अग्र भाग उसने चेहरे पर धंसे हुए हों।

रामदीन का सीने तक का शरीर विण्ड स्क्रीन तोड़ता हुआ बाहर बोनट पर जा गिरा था—और बुरी तरह से पिचका हुआ था।

साफ नजर आ रहा था कि ट्रक का पहिया उसे रौंदते हुए छत पर चढ़ा था।

उसके सीने तक के हिस्से का पूरा मलीदा बाहर निकला हुआ था।

सिर तो कहीं नजर ही नहीं आ रहा था। सिर वाले स्थान पर खून से सने बाल बोनट पर चिपके नजर आ रहे थे—और खोपड़ी

के भीतर का भाग बाहर बिखरा हुआ था।

शीला देवी के लड़के का चेहरा तो साफ था—लेकिन स्टेयरिंग उसके सीने में काफी भीतर तक घुस गया था।

पूरी तरह से आश्वस्त होकर ही कि तीनों मर गये हैं—वह सीधा हुआ तो उसने राह चलते लोगों को उसकी तरफ बढ़ते देखा।

देर नहीं की उसने।

तुरंत उसने वहां से दुड़की लगा दी। वहां ठहरना उसके लिये खतरे से खाली नहीं था—लोग ऐसी तैसी फेर सकते थे। गलियों में से होते हुए वह काफी दूर जाकर सड़क पर पहुंचा तो उसने दूसरे ट्रक को सड़क किनारे खड़ा देखा जो कि उसके साथ रेस लगा रहा था।

वह खिड़की खोलकर ट्रक में प्रविष्ट हुआ और ड्राईवर के बराबर वाली सीट पर बैठ गया।

"क्या रहा?"

सैल्फ मारते हुए ड्राईविंग सीट पर बैठे व्यक्ति ने पूछा।

"तीन थे कार में—कोई नहीं बचा।" वह बोला।

ड्राईवर ने ट्रक आगे बढ़ाया और जेब से मोबाईल निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"शाह जी को सफलता की खबर कर दे।"

दूसरे ने उससे मोबाईल लिया और बड़े शाह का नम्बर मिलाने लगा।

उसी हॉल में लगे एकमात्र दीवान पर बिछी सफेद चादर पर वैसे ही कव्वाली गाने वाले अंदाज में बैठा था बड़ा शाह।

बदन पर चादर जैसे ही सफेद वस्त्र।

दीवान के दायें-बायें वही दोनों बॉडीगार्ड स्टेनगन ताने खड़े थे।

दीवान के पाये के साथ जमीन पर हाथ में कापी पैन लिये बैठा करमचन्द।

बड़े शाह के सामने घुटने टेके एक आदमी खड़ा था।

यह उन चारों में से एक था जो कि बड़े शाह के साथ कमल अरोड़ा के घर गये थे।

"क्या रिपोर्ट लाया है?" पूछा बड़े शाह ने।

"गंगाधर के पार्टनर की बीवी का नाम संजना है बड़े शाह जी।

संजना की उम्र पैंतीस के करीब है। जाटल रोड पर उसकी तीन मंजिला कोठी है।"

"और?"

"उसकी एक लड़की भी है। छह साल की उम्र है लड़की की, विद्या मन्दिर में पढ़ती है। नाम है कविता।"

"संजना के मिजाज कैसे हैं?"

"पैसे का नशा नहीं चढ़ा हुआ उस पर। रिजर्व औरत है—। ज्यादातर वक्त घर में ही गुजारती है। न किसी पार्टी में जाती है और न कहीं और ऐसी किसी जगह पर—। बस सुबह रोज दफ्तर जाती है और दोपहर को अपनी बेटी को स्कूल से लेते हुए वापिस घर आ जाती है। हिसाब-किताब में बनिये को भी मात कर देने वाली बुद्धि है उसके पास—। एक पैसे का भी घपला नहीं होने देती।"

"और गंगाधर के मिजाज कैसे हैं?"

"संजना से वह बड़ी इज्जत से पेश आता है। फैक्ट्री में भी वह शरीफों का-सा व्यवहार करता है। घर में अकेला है वह—। कोई भाई-बहन वगैरह नहीं—। सो हर दूसरे-चौथे रोज कोई न कोई रण्डी उसका पहलू गर्म करने पहुंच जाती है।"

बड़े शाह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया, कुछ सोचा, फिर बोला—

"क्या संजना भी अकेली रहती है?"

"जी हां, बड़े शाह जी।"

"उसका मायका कहां है?"

"अलीपुर में। लेकिन पता अभी पता नहीं चला।"

"पता लगा।"

"जी शाह जी।"

"और कुछ?"

वह हिचकिचाया—जैसे बोलने की इजाजत मांग रहा हो।

"कुछ कहना चाहता है?"

उसे घूरते हुए बोला बड़ा शाह।

"ज..जी शाह जी।"

"तो भौंक—क्या भौंकना चाहता है।"

"उस कमल अरोड़ा ने तमाम मीडिया के सामने आपको बुरा-भला कहा। अ...और आपने उसे कुछ भी नहीं कहा।"

"तो?"

"माफी चाहूंगा बड़े शाह जी—मेरा तो कलेजा तभी से फुंक रहा है। जी चाहता है कि अभी जाकर उसकी बोटी-बोटी कर दूं।"

कहते हुए गुस्से में भर गया वह।

"बनारसी...।" फुंफकार उठा बड़ा शाह—"जानता है उसे अभय दान दे रखा है मैंने।"

"य...यही तो समझ में नहीं आ रहा बड़े शाह जी। पूरे किशनपुरा में आपकी इजाजत के बिना परिन्दा भी पर नहीं मार सकता, आपका सिर्फ एक इशारा किशनपुरा को गर्क करने के लिए बहुत है। फिर भी आप...।"

"यह सियासत है। और सियासत ताकत से नहीं, अक्ल से खेली जाती है बनारसी।" कहते हुए बड़े शाह ने अपनी कनपटी ठकठकाई।

"म...मैं कुछ समझा नहीं बड़े शाह जी।"

उलझे स्वर में बोला बनारसी।

"बाहर से दो पत्रकार आये थे—जो दिल्ली से आये थे। पता है न तुझे?"

"जी हां बड़े शाह जी।"

"अब यह खबर शाम तक टी० वी० पर आ जायेगी कि मैंने अपने बेटे को बुरा-भला कहा और कमल अरोड़ा को अभय दान देने के साथ-साथ उसे नई बाईक भी दी है। कमल अरोड़ा के कारण बंधक वाला ड्रामा तो फेल हो ही गया था, उसे फिर से पटरी पर लाना जरूरी था...अब शाम को जब विजेन्द्र हवालात से फरार होगा तो मैं आसानी से यह कह सकूंगा कि मेरा उससे कोई रिश्ता नहीं—और इस तरह अगर बाहर से फोर्स आती भी है तो भी मेरा बाल भी बांको नहीं कर पायेगी—और विजेन्द्र किसी को मिलेगा नहीं।"

"त...तो क्या अपने सारे धंधे बन्द कर देंगे आप?"

"धंधे तो सभी चलेंगे—लेकिन अब वो छोटे शाह के नाम से चलेंगे। बड़ा शाह तो हर वक्त उसे लानत मलानत ही देता रहेगा।"

"ओह।"

"अब समझा?"

"बिल्कुल समझ गया बड़े शाजी। सचमुच बहुत दूर की सोची है आपने।"

बड़े शाह की गर्दन गर्व से अकड़ गई।

"ल...लेकिन बड़े शाह जी...एक बात अभी भी मेरे जेहन में गोते खा रही है?"

"वो भी उगल दे।"

"कमल अरोड़ा का क्या होगा? उसने आपके सामने आपको बुरा-भला कहा। फिर भी आपने उसे अभयदान दे दिया।"

बड़े शाह के होठों पर जहरीली मुस्कान फैल गई।

"बड़े शाह के आगे आंख उठाने की कभी कोई जुर्रत नहीं कर सकता और उस हरामजादे ने बड़े शाह के सामने उसे बुरा-भला कहा—ऐसे में वह कैसे बच सकता है?"

"लेकिन आपने तो उसे अभयदान दे रखा है।"

"वो तो मिला हुआ है।"

"त...तो फिर...?"

"खत्म करने का यही एक रास्ता तो नहीं कि उसे गोली मार दी जाये। मैं उसे ऐसी मौत मारूंगा कि उसकी मौत पर किसी को मुझ पर जरा भी शक नहीं होगा—उलटा दुनिया ही उसे बुरा-भला कहेगी।"

बनारसी आंखें फाड़े उसे देखने लगा।

"ऐसा कैसे हो सकता है बड़े शाह जी?"

"ऐसा ही होगा मेरे लाल।"

"ल...लेकिन बड़े शाह जी...।"

"अब तू दफा हो यहां से—और जो काम तुझे सौंपा है—वो कर।"

आगे कुछ भी पूछने या कहने की हिम्मत नहीं थी बनारसी में—सो उसने आज्ञा का पालन करते हुए उसे माथ टेका और खड़ा हो गया।

ठीक तभी बड़े शाह की जेब में रखे मोबाइल का म्यूजिक बजा।

टिन-टिना-टिन-टिन!

बड़े शाह ने कुर्ते की जेब में हाथ डालकर मोबाईल निकाला और उस पर अंकित नम्बर को देखा—और फिर फोन को कान से लगाकर बोला—

"हैलो।"

"हुकम बोल रहा हूं बड़े शाह जी।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"रिपोर्ट दे।"

"काम हो गया है बड़े शाह जी।" आवाज आई—"मोहन लाल की बेवा—उसका चौकीदार, उसका लड़का, तीनों का काम तमाम हो गया है।"

"तूने तसल्ली की? किसी में कोई सांस तो नहीं रह गई?"

"बिल्कुल नहीं, बड़े शाह जी। मैंने खुद तसल्ली की थी—और पूरी तरह से आश्वस्त होकर ही वहां से हटा था।"

"गुड...वो ट्रक?"

"अभी कार के ऊपर ही चढ़ा हुआ है।" आवाज आई—आपके हुक्म के मुताबिक मैंने विजय ट्रांसपोर्ट से ट्रक चोरी किया और फिर उससे कार को कुचल डाला।"

"और बिल्लू—वो कहां है?"

"मेरे बराबर में बैठा है—ट्रक चला रहा है।"

"वो भी चोरी का है न?"

"जी हां बड़े शाह जी।"

"तो फिर चला क्यों रहा है। ट्रक को छोड़ और बिल्लू के साथ अड्डे पर पहुंच।"

"जो हुकुम शाह जी।"

बड़े शाह ने मोबाईल को कान से हटाया और उसका बटन बंद करके करमचन्द की तरफ देखा।

"चश्मदीद तो हो गये खत्म।" वह बोला—"अब मेरे बेटे के खिलाफ कोई भी बयान नहीं दे सकता—लेकिन अपने जिगर के टुकड़े को मैं हवालात में बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"आप हुक्म कीजिये शाह जी—करना क्या है?"

"छोटे शाह के कुछ साथी शाम को थाने पर हमला करेंगे और...।" एक अर्थ भरी मुस्कान छोड़ते हुए बड़े शाह ने बात अधूरी छोड़ी दी।

"मैं...समझ गया बड़े शाह जी—मैं अभी भीम को यह काम सौंप देता हूं।"

"तुरन्त बोला करमचन्द।"

"और गौतम को भी फोन कर देना।"

"जी बेहतर।"

"छोटे शाह के फरार होते ही...।" गम्भीरता ओढ़ते हुए बोला—"कोई बड़ी बात नहीं कि बाहर से फोर्स आ जाये। इसमें मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा—क्योंकि मैं अपने बेटे के खिलाफ ब्यान दे चुका हूं—। अगर मुझे डर है तो कहीं बाहर की फोर्स उसे ढूंढ न ले। सो उसके छुपने की जगह पहले से ही सोच लो कि फरार होने के बाद वह ऐसी कौन सी जगह पर छिपे जहां से बाहरी फोर्स भी उसे ढूंढ न पाये।"

करमचन्द ने कुछ देर सोचने की मुद्रा बनाई—फिर बोला—

"दीपक तले अंधेरा, कैसा रहेगा बड़े शाह जी?"

सुनकर पहले तो चौंका बड़ा शाह—फिर जैसे ही उसे करमचन्द की बात समझ आई उसके होंटों पर मुस्कराहट फैल गई। साथ ही आंखों में तेज चमक उभर आई।

"तू ठीक कह रहा है करमे—वह जगह बेहतर रहेगी—किसी को शक भी नहीं होगा कि वह वहां छुपा हुआ है।"

'ट्रिन...ट्रिन...।'

गौतम के ऑफिस की टेबल पर रखे फोन की घण्टी घनघनाई।

गौतम ने हाथ फोन की तरफ बढ़ाया और रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए माउथपीस में बोला—

"हैलो-सिटी पुलिस स्टेशन।"

"करमा बोल रहा हूं।"

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुनकर पहले तो चौंका गौतम—फिर उसके चेहरे पर आदर के भाव उभर आये।

"ओह। करमचन्द जी।"

"ठीक पहचाना।"

"फरमाइये।"

"थाने में तेरी किसी से दुश्मनी है?"

"क्या?" हड़बड़ाया गौतम।

करमचन्द का यह ऊटपटांग सवाल उसे समझ में नहीं आया।

"मैं यह पूछ रहा हूं कि ऐसा कोई थाने में है जो तुझे पसंद न हो?"

"ल..लेकिन आप ऐसा पूछ किसलिये रहे हैं?"

गौतम के चेहरे पर अभी भी असमंजसता थी।

"अगर ऐसा कोई है तो उसे थाने में ही छोड़ जाना। शाम सात बजे तेरे थाने पर हमला होगा—उस वक्त तू थाने से इतनी दूर होना चाहिये कि तेरे मोबाईल पर तुझे खबर मिले तो तुझे थाने में पहुंचने में कम से कम आधा घण्टा लग जाये। थाने में जो तेरी नापसंद के खोते हैं उनका नाम बता दे—ताकि जब तू वहां पहुंचे तो वो यमराज के पास पहुंच चुके हों।"

गौतम के चेहरे पर हल्का-सा पीलापन आ गया।

आंखों में बदहवासी उभर आई।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे।

उसके थाने पर हमला होने जा रहा था—यह बात उसके लिये छोटी बात नहीं थी।

वह थाने का इंचार्ज था। एस० एच० ओ० था वह थाने का। ऐसे में थाने में हुई गड़बड़ी की सारी जवाबदेही उस पर थी।

बेशक एस० पी०, एस० एस० पी० भी बड़े शाह के गुलाम थे—लेकिन सरकार तो उसकी गुलाम नहीं थी।

उसके अफसर न सही सरकार तो पूछताछ कर सकती थी उससे।

बच्चों को बंधक बनाने वाली बात और थी—वहां निर्णय ही सरकार को लेना था। वहां उससे कोई जवाबदेही नहीं हो सकती थी।

लेकिन यहां उससे तरह-तरह के सवाल पूछे जा सकते थे—जिनमें से हो सकता था वह किसी सवाल पर बिचल जाये।

लेकिन बड़े शाह की 'न' थी तो नहीं कर सकता था वह।

न करने का मतलब था मौत को आवाज देना—और जिंदगी से उसे उतना ही प्यार था जितना एक इंसान करता है।

"फिर क्या करे वह?"

कुछ समझ में नहीं आ रहा था उसे।

बड़ी अजीब स्थिति में फंस गया था वह।

"हैलो।" तभी दूसरी तरफ से आवाज आई—"गूंगा हो गया है क्या—या लाईन कट गई है?"

"ज...जी मैं फोन पर हूं।"

"मेरी बात समझ गया न तू?"

"ज...जी हां..स...समझ गया।"

कह तो दिया उसने—लेकिन दिल उसका अभी भी उलझा हुआ था।

"मोबाईल कहां है तेरा?" उसके कान में करमचन्द की आवाज पड़ी।

"मेरी जेब में है।"

अपनी जेब पर हाथ मारते हुए बोला गौतम।

"छोटे शाह के पास जा और मोबाईल उसे दे। मैं तेरे मोबाईल की घण्टी बजाजा हूं।"

उसी के साथ ही सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

गौतम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और कुर्सी से खड़ा होकर ऑफिस से बाहर निकलकर उधर बढ़ा जिधर कि हवालात बने हुए थे।

एक लाईन में कुल छह हवालात बने हुए थे—जिनमें सबसे आखिरी हवालात में अकेला छोटा शाह बन्द था। उससे पहले के ह्वालत में छोटे शाह के दोनों साथी थे।

वह सीधा छोटे शाह वाले हवालात में सीखचों वाले हवाव्रात के करीब आया।

उसकी कुर्सी के पीछे एक पलंग था—जिस पर कि शानदार गद्दे के ऊपर सिल्क की चादर बिछी हुई थी।

कुर्सी के बाँईं तरफ टेबल थी—जिस पर एक टोकरी में फ्रूट रखा हुआ था।

दामाद बनकर रह रहा था वह थाने में।

गौतम ने उसकी हर सुविधा का पूरा ख्याल रखा हुआ था।

टी० वी० देखते छोटे शाह ने उसकी तरफ देखा।

ठीक तभी गौतम की जेब में रखे मोबाईल का म्यूजिक बजा।

"आपका फोन है छोटे शाह जी।" वह जेब से मोबाईल निकालते हुए बोला।

छोटे शाह ने तुरंत टी० वी० को रिमोर्ट कन्ट्रोल से ऑफ किया और उसे टेबल पर रखते हुए खड़ा हो गया।

इधर गौतम ने मोबाइल का बटन दबाकर कान से लगाया।

"हैलो।" वह बोला।

"पहुंच गया छोटे शाह जी के पास?" दूसरी तरफ से करमचन्द की आवाज आई।

"जी हां।" बोला गौतम—"लीजिये बात कीजिये।" कहकर उसने मोबाईल सीखचों के पीछे खड़े छोटे शाह की तरफ बढ़ा दिया।

छोटे शाह ने मोबाईल कान से लगाया।

"हैलो।" वह बोला।

"कैसे हो मेरे लाल?" दूसरी तरफ से बड़े शाह की आवाज आई।

"मजे में हूं पापा।" मुस्कुराया छोटा शाह—"यह थानेदार बहुत ख्याल रख रहा है मेरा। जैसे मैं इसका दामाद होऊं।"

कहते हुए उसने गौतम की तरफ देखा।

गौतम ने इस तरह दांत दिखाए मानो उसने उसका दामाद बनकर उस पर बहुत बड़ा एहसान किया हो।

"कोई तकलीफ तो नहीं हो रही?"

आवाज आई।

"नो पापा।"

"लेकिन मुझे तेरे हवालात में होने की तकलीफ हो रही है।" दूसरी तरफ से आवाज आई—"अब तक तू आजाद हो चुका होता—लेकिन उस हरामखोर कमल अरोड़ा की वजह से सारा खेल बिगड़ गया—लेकिन घबराने की जरूरत नहीं बेटे। आज शाम को सात बजे तू हवालात से बाहर होगा। मैंने गौतम को समझा दिया है कि वह सात बजे थाने में न हो।"

"ओह। मैं समझ गया पापा।"

"हवालात से निकलकर कहां जायेगा तू?"

"जाना कहां है—आप ही के पास...।"

"बेवकूफों वाली बातें मत कर। मैं तो उल्टे तुझे पकड़वाने वाले को ईनाम देने की घोषणा करूंगा। ऐसे में मेरे पास आना तेरे लिये खतरे से खाली नहीं होगा।"

"ओह।"

"एस० पी० के दफ्तर के पीछे ललवा की कोठी है—तू वहीं पहुंचना।"

"ओ० के० पापा।"

"और ध्यान रहे—किसी को भी तेरे वहां पहुंचने का पता न चले। जो तुझे छुड़ाने आयेंगे—उन्हें भी पता नही चले। उस जगह का पता तो तू जानता होगा—या फिर मैं करमचन्द और ललवा...।"

"लेकिन पापा—ऐसे तो मैं...।"

"बाकी बातें रात को होंगी—जब तू ललवा की कोठी पर पहुंच जायेगा।"

उसकी बात काटते हुए दूसरी तरफ से बड़ा शाह बोला।

"ओ०के० पापा।"

गहरी सांस छोड़ते हुए बोला छोटा शाह।

दूसरी तरफ से संबंध विच्छेद हो गया।

छोटे शाह ने मोबाईल कान से हटाया और बाहर खड़े गौतम की तरफ बढ़ा दिया।

गौतम ने उससे मोबाईल लेकर जेब में रखा। लेकिन वहां से हिला नहीं।

उसका चेहरा ही बता रहा था कि वह कुछ कहना चाहता है।

"कुछ कहना है?" उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए बोला छोटा

शाह।

"जी हां शाह जी।" गौतम ऐसे बोला जैसे उसके सामने एक गुण्डा नहीं बल्कि डी० जी० पी० खड़ा हो।

"बोल।"

गौतम पहले तो हिचकिचाया—फिर हिम्मत जुटाते हुए बोला—

"बड़े शाह जी का हुक्म है कि सात बजे मैं ऐसी जगह पर होऊं जहां अगर मुझे खबर लगे तो यहां पहुंचने में आधा घण्टा लगे।"

"तेरे फायदे के लिये ही तो कहा है पापा ने। अगर तू यहां रहा तो तेरे पर भी मुसीबत आ सकती है।"

"मुसीबत तो तब भी आयेगी मुझ पर।"

"कैसे?"

छोटे शाह ने उसे गहरी निगाहों से घूरा।

"थाने का इंचार्ज मैं हूं। यहां हुई छोटी से छोटी गड़बड़ी का जिम्मेदार मैं हूं। लेकिन सात बजे तो यहां बहुत बड़ी गड़बड़ी होगी—इतनी कि एक दो सिपाही भी अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे।"

"तो?"

"ऐसे में एस० पी० या एस० एस० पी० मुझसे बेशक पूछताछ न करें—लेकिन सरकार तो कर सकती है। और अगर सरकार ने पूछताछ के साथ-साथ तफ्तीश की तो—तो मेरा भाण्डा फूट हो जायेगा।"

"बात तो तू ठीक कर रहा है।" सिर हिलाते हुए सोचपूर्ण अंदाज में बोला छोटा शाह—"अब तू बोल तू चाहता क्या है?"

"मेरे पास एक ऐसा रास्ता है—जिस पर चलकर मैं लम्बी-चौड़ी पूछताछ से बच सकता हूं।"

"तो अपना उस रास्ते को—मुझसे क्या पूछ रहा है?"

"सारा किशनपुरा तो आपका गुलाम है छोटे शाह जी। ऐसे में विना आपके आशीर्वाद के मैं उस योजना को अंजाम नहीं दे सकता।"

"तो ऐसे बोल न तुझे मेरी मदद चाहिये।"

"जी हां।"

"बोल।"

गौतम उसे बताने लगा कि उसे क्या करना है।

"अरे वाह।" उसकी बात खत्म होते ही मुस्कराया छोटा शाह—"तेरी खोपड़ी में तो साक्षात् शैतान वास करता है। वाकई बड़े दूर की

सोची है तूने। ला मोबाईल दे।"

गौतम ने उसे पुनः मोबाईल थमा दिया।

मोबाइल लेकर छोटा शाह कोई नम्बर मिलाने लगा।

थोड़ी देर बाद जब गौतम वापिस अपने ऑफिस पहुंचा तो उसके चेहरे पर जरा भी घबराहट नहीं थी।

शाम ठीक छह बजे।

हरि बाग कालोनी के शॉपिंग काम्पलेक्स के प्रांगण में एक कार रुकी।

सब कुछ सामान्य था उस वक्त।

कार के दरवाजे खुले और उसमें से हाकियों से लैस छह आदमी बाहर निकले और बाँईं तरफ एक बड़े शोरूम की तरफ बढ़े।

शोरूम के ऊपर डावर गिफ्ट हाउस का बोर्ड लगा हुआ था।

भीतर एक लम्बे काउण्टर के पीछे चार सेल्समैन खड़े ग्राहकों को अटैण्ड कर रहे थे। एक सेल्समैन एक ग्राहक को गणेश जी की कांस्य की मूर्ति दिखा रहा था जो कि एण्टीक नजर आती थी। दूसरा ग्राहक को मॉर्डन आईटम दिखा रहा था।

एक, एक ऊंचे स्टूल पर चढ़ा ग्राहक की निशानदेही वाली वस्तु को निकाल रहा था।

गद्दी पर उस शोरूम का मालिक शामलाल डावर बैठा था।

अलग-अलग तरह की महंगी आईटमों से शोरूम भरा पड़ा था।

छहों हाकियां लिये हुए उस शो रूम के बाहर आकर ठिठके।

बाहर शोरूम की दोनों साइडों में शीशे के बड़े-बड़े शोकेस थे—जिनमें पीतल की बनी बड़ी-बड़ी मूर्तियां रखी थीं।

"हो जाओ शुरू।"

एक बोला।

तुरंत दो गुण्डों ने एक-दूसरे की तरफ पीठ की और इन शो केस की तरफ बढ़े।

और तभी—

"खनाक्...खनाक्।"

शो केस तेज आवाजों के साथ चूर-चूर हो गये।

बाकी के तीन शो रूम में प्रवेश हो गये।

शामलाल डावर जो कि अपने शो केसों में टूटते देखकर बुरी तरह से घबराते हुए खड़ा हुआ था—उसकी घबराहट उस वक्त और बढ़ गई जब भीतर घुसे गुण्डों ने तोड़-फोड़ शुरू कर दी।

शोरूम में खड़े ग्राहक वहां से कब फुर्र हुए किसी को पता भी नहीं चला।

चारों सेल्समैन घबराकर एक कोने में जा दुबके—जबकि शामलाल डावर उन गुण्डों के सामने गिड़गिड़ा रहा था—"अरे...मेरे बाप...तुम हो कौन? अरे...अरे...गया मेरा पचास हजार का गिफ्ट...अरे इसे न तोड़ना...यह...यह भी गया।"

वह वहीं फर्श पर सिर को हाथों से थामे बैठ गया।

गुण्डे बदस्तूर उसके शोरूम में तोड़-फोड़ कर रहे थे।

शामलाल डावर सिर को हाथों में थामे अपनी बर्बादी को देख रहा था।

तभी बाहर शोर उठा।

"क्या हो रहा है यह सब?"

"कौन हो तुम?"

तोड़-फोड़ कर रहे गुण्डों के हाथ वहीं रुक गये।

सभी की गर्दनें शोरूम के गेट की तरफ मुड़ीं।

सात-आठ व्यक्ति हाथों में लठ लिये खड़े थे।

"हरामजादों...।" लाठी वाला एक दहाड़ा—"इधर किसी की आंख उठाने की हिम्मत नहीं—निक्कू का एरिया है यह...और तुम यहां मेरे इलाके में तोड़-फोड़ कर रहे हो।"

"तुझे यहां बुलाने के लिये ही तो तोड़-फोड़ की है मैंने।" हाकियों वाले गुण्डों का लीडर बोला।

"क्या मतलब?"

"निक्कू का इलाका यह कल तक था। आज से यहां रज्जू का राज चलेगा।"

"साले—तेरी इतनी हिम्मत—टांगें-बांहें तोड़ डालो सालों की।" निक्कू दहाड़ते हुए बोला।

उसके गुण्डे लाठियां उठाये हॉकी वालों की तरफ झपटे।

हॉकी वाले भी उन पर टूट पड़े।

और देखते ही देखते वह शोरूम पानीपत का अखाड़ा बन गया।

दोनों गुट एक-दूसरे से भिड़ गये थे—लेकिन इस लड़ाई में उनको चोट नहीं लग रही थी—हां शामलाल डावर की ऐसी-तैसी

जरूर फिर रही थी।

लाठी वाला अपने दुश्मन को लाठी मारता तो दुश्मन झुकाई देकर खुद को बचा लेता—और लाठी किसी आईटम पर जा पड़ती।

ऐसे ही हॉकियां भी नुकसान कर रही थीं शोरूम का।

सेल्समैन तो डर कर वहां से भागे ही—खुद शामलाल डावर भी बाहर सड़क पर आ गया।

अब तक आस-पास की सभी दुकानें बंद हो गई थीं—और डावर के शोरूम के सामने अच्छा-खासा मजमा लग गया था।

भीतर महाभारत छिड़ी हुई थी।

दोनों दल एक-दूसरे के खून के प्यासे बने एक-दूसरे से लड़ रहे थे—और नुकसान शामलाल डावर का हो रहा था।

"अरे पुलिस को फोन करो।" तभी एक आदमी चीखा।

आवाज शामलाल डावर के कानों में भी पड़ी।

अभी तक वह बुरी तरह से बौखलाया हुआ था—उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे। लेकिन पुलिस का नाम सुनकर उसे एक रास्ता नजर आ गया।

तुरंत उसने जेब से मोबाईल निकाला और थाने का नम्बर मिलाने लगा।

छह बजकर बीस मिनट पर गौतम की ऑफिस टेबल पर रखे फोन ने चीख मारी।

'ट्रिन...ट्रिन... ।'

गौतम तो जैसे फोन के चीखने का ही इंतजार कर रहा था।

तुरंत उसने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"इंस्पेक्टर गौतम स्पीकिंग।"

"अरे मैं यहां लुटा जा रहा हूं इंस्पेक्टर—जल्दी आओ वर्ना यह लोग सब कुछ खत्म कर देंगे।"

"क्या बात है? कौन बोल रहे हैं आप?"

"हरी बाग शॉपिंग काम्प्लेक्स से बोल रहा हूं मैं। डावर गिफ्ट हाउस का मालिक हूं।"

"क्या हुआ?"

"हुआ नहीं हो रहा है। पता नहीं कौन से गुण्डे मेरे शोरूम में

आपस में लड़ रहे हैं। अखाड़ा उनका बना हुआ है—और लुट मैं रहा हूं—तोड़-फोड़ हो रही है यहां।"

"ओह! आप धीरज रखें मैं वहां फौरन पहुंच रहा हूं।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

इस वक्त उसके होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी।

तुरंत वह बाहर निकला और सब इंस्पैक्टर हरवंस लाल को बुलाकर बोला—

"फौरन फोर्स तैयार करो।"

"फोर्स...!" चौंका सब-इंस्पैक्टर।

"हां...हरी बाग शॉपिंग काम्पलेक्स में दो गुट आपस में लड़ पड़े हैं। पांच को यहां छोड़ दो...बाकी तुरंत तैयार हो जाओ। तब तक मैं रोजनामचे में रवानगी लिख दूं।"

कहकर वह तेजी से मुंशी के कमरे की तरफ लपक गया।

और करीब पांच मिनट बाद ही पुलिस की गाड़ियां थाने से निकल रही थीं। जिनमें से एक तो पुलिस का बंद ट्रक था, जबकि दूसरी जिप्सी थी।

जिप्सी में गौतम दो एस० आई०, चार ए० एस० आई० के साथ सवार था—जबकि ट्रक में डण्डों से लैस सिपाही तथा हवलदर थे। और पीछे थाने में सिर्फ पांच ही पुलिसिये रह गये थे।

एक गेट पर खड़ा संतरी—एक मुन्शी और उसका असिस्टेंट—एक सब-इन्सपेक्टर और एक हवलदार।

उस वक्त सात बजने में पांच मिनट थे—जब थाने के गेट के सामने एक मेटाडोर वैन आकर रुकी।

गेट पर खड़े संतरी की निगाहें वैन पर जा टिकीं।

उसके देखते ही देखते वैन के दरवाजे खुले और उसमें से स्टेनगनों से लैस कई गुण्डे बाहर निकलने लगे।

हथियार बंद गुण्डों को देखकर संतरी ने जैसे ही कन्धे पर टंगी राईफल उतारी ठीक तभी—

'तड़...तड़...तड़...!'

एक साथ कई गोलियां उसके जिस्म में जा धंसी।

राईफल को छोड़ चीखता हुआ संतरी उछला और नीचे गिरकर

छटपटाने लगा।

"जल्दी चलो।" एक गुण्डा दहाड़ा।

देखते ही देखते सभी गुण्डे संतरी की लाश को रौंदते हुए थाने में प्रवेश कर प्रांगण में आ गये।

"हवालात उधर है।" कमाण्डर बना गुण्डा हवालातों की तरफ इशारा करते हुए बोला।

तुरंत तीन गुण्डे उधर लपके।

ठीक तभी हवलदार और सब इन्सपेक्टर कमरों से बाहर निकले। गोलियों की आवाजों ने उन्हें चौंका दिया था।

बाहर का नजारा देख उनके हाथों के तोते उड़ गये। और जब तक वे कुछ समझते—

'तड़...तड़...तड़...।'

दो गुण्डों की स्टेनगनें गर्ज उठीं।

सम्भलने या भागने का मौका तक नहीं मिला उन्हें।

देखते ही देखते दोनों के जिस्म छलनी हो गये।

"फैल जाओ।" कमाण्डर गुण्डा बोला—"और जो भी हीरो बनने की कोशिश करे खत्म कर दो उसे।"

तुरंत सभी गुण्डे थाने में इधर-उधर फैल गये।

मुन्शी और उसका असिस्टेंट ही बचा था अब थाने में। दोनों अपने कमरे में रिकार्डो की अलमारी के पीछे खड़े थर-थर कांप रहे थे। उनमें से किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वे बाहर निकलकर देख भी सकें कि माजरा क्या है। पहली बार जब उन्होंने गोलियों की आवाजें सुनी थीं तो दोनों बुरी तरह से चौंक उठे थे—उसी वक्त मुन्शी ने अपने असिस्टेंट को बाहर जाकर देखने का हुक्म दिया था।

असिस्टेंट कुर्सी से उठकर अभी दरवाजे तक ही पहुंचा था कि तभी गोलियों के चलने की आवाज आई—साथ ही सब-इन्सपेक्टर और हवलदार की चीखें उसके कानों में पड़ीं।

डर के मारे वह फौरन पीछे पलटा तो मुन्शी को उसने अपनी कुर्सी से गायब पाया।

साफ नजर आ रहा था कि वह डरकर अलमारियों के पीछे जा छुपा है। ऐसे में असिस्टेंट का रहा सहा हौसला भी दम तोड़ गया—और वह भी अलामरी के पीछे जा दुबका।

इधर तीन गुण्डे हवालातों के करीब आये।

पहली-दूसरी हवालात खाली थी। तीसरी तथा चौथी हवालात

में छोटे-मोटे अपराधी बन्द थे।

गुण्डों ने स्टेनगनों से उन हवालातों के ताले तोड़े और दरवाजे खोल दिये।

"भागो यहां से।" एक बोला।

वे सभी जो कि गिनती में छह थे, सिर पर पैर रखकर वहां से भागे।

किसी भी गुण्डे ने उन्हें रोकने की या गोली मारने की कोशिश नहीं की थी।

गुण्डों ने पांचवें हवालात में से छोटे शाह को आजाद कराया—फिर छोटे शाह की हवालात का ताला तोड़कर उसका कुण्डा खोल दिया।

"आइये छोटे शाह जी।"

तीनों एक साथ सिर झुकाते हुए बड़े ही अदब से बोले।

शान से सीना चौड़ा किये हुए छोटा शाह हवालात से बाहर निकला तो तीनों ने उसे अपने घेरे में ले लिया।

उनके बीच चलता हुआ छोटा शाह थाने के प्रांगण में आया तो बाकी के गुण्डों ने भी उसे घेर लिया।

छोटा शाह उनके बीच चलता हुआ थाने से बाहर निकला और मैटाडोर में सवार हो गया।

बाकी के गुण्डें भी मैटाडोर में सवार हो गये।

और देखते ही देखते मैटाडोर तोप से छूटे गोले की तरह वहां से उड़ चली।

करीब दो किलोमीटर चलने के बाद छोटा शाह बोल पड़ा—

"बस यहीं रोक दे।"

उसके आदेश पर तुरंत ड्राईवर ने ब्रेक मार दिये।

मैटाडोर थोड़ी दूर जाकर सड़क के किनारे रुक गई।

छोटे शाह ने दरवाजा खोला और बाहर निकलकर बोला—

"जाओ तुम लोग।"

किसी में कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं थी—सो ड्राईवर ने मैटाडोर आगे बढ़ा दी।

इधर मैटाडोर आगे बढ़ी—उधर छोटा शाह तेज-तेज कदमों से चलता हुआ एक गली में घुस गया।

एस० पी० का ऑफिस वहां से कुछ ही दूरी पर था—और उसके पीछे ललवा की कोठी थी जहां उसे पहुंचना था।

बड़े शाह के मुताबिक उस कोठी का पता किसी को नहीं था।

गलियों से होता हुआ, वह तेजी से कोठी की तरफ बढ़ रहा था।

इधर थाने में—जैसे ही गुण्डे छोटे शाह को लेकर मैटाडोर वैन में सवार हो वहां से रवाना हुए—मुन्शी तुरंत अलमारी के पीछे से निकला और सीधा एस० एच० ओ० के ऑफिस की तरफ लपका।

कुछ ही देर में वह रिसीवर उठाये कांपती उंगलियों से गौतम के मोबाईल का नम्बर मिला रहा था।

गौतम वापिस थाने लौटा तो वहां एस० पी०, एस० एस० पी० और कई बड़े अधिकारी उससे पहले ही वहां पहुंच चुके थे। उसके वहां पहुंचते ही अधिकार उस पर चढ़ दौड़े थे—लेकिन गौतम के पास उनको देने के लिये हर प्रश्न का उत्तर था—और जो सिपाही उसके साथ गये थे—उनके मुताबिक भी वहां भारी फोर्स की जरूरत थी।

अधिकारियों के यह पूछने पर कि क्या वह किसी को गिरफ्तार कर सका तो गौतम ने जवाब दिया कि उसके वहां पहुंचते ही सभी गुण्डे फरार हो गये थे।

और इस प्रकार गौतम का तो कुछ नहीं बिगड़ा, मगर उसकी अपने फर्ज के प्रति गद्दारी ने तीन सिपाहियों की जान ले ली थी।

लेकिन इससे गौतम को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। बड़े शाह के दिल में तो उसकी कद्र बढ़ गई थी। कानून गया भाड़ में। और फिर अधिकारियों ने उसे यह हुक्म दिया कि वह छोटे शाह की तलाश में जमीन-आसमान एक कर दे।

गौतम ने अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन शुरू कर दिया।

दो तीन दिनों तक वह पूरे दल बल के साथ कई स्थानों पर छापे मारता रहा। बड़े शाह के घर भी छापा मारा—लेकिन छोटे शाह को न मिलना था—न मिला।

और गौतम ने बड़े अधिकारियों को खबर भिजवा दी कि छोटा शाह शहर से बाहर भाग गया है—उसने मुखबिरों का जाल फैला दिया है—और जैसे ही उसका पता चलेगा—वह उसे दबोचने में देर नही करेगा।

इस बीच बड़े शाह ने भी कई टी० वी० न्यूज चैनलों को इन्टरव्यू दे दिया—जिसमें उसने अपने बेटे को कायर कहकर उसकी भर्त्सना

की और यह विश्वास दिलाया कि इस काम में कानून की पूरी मदद करेगा।

और इस तरह वह कानून की नजर में दूध का धुला हो गया।

लेकिन हकीकत जो इसके बिल्कुल विपरीत थी।

छोटे शाह के हवालात से फरार होने के चौथे दिन।

बड़े शाह का दरबार लगा हुआ था।

अपने उसी दीवान पर घुटने मोड़े बैठा था बड़ा शाह।

वैसे ही। उसके बॉडी गार्ड स्टेनगनों से लैस उसके दायें-बायें खड़े थे—और वैसे ही करमचन्द नीचे फर्श पर हाथ में कॉपी पैन लिये बैठा था।

"मेरे बेटे का क्या हाल है करमे?"

तभी पूछा बड़े शाह ने।

"हैं तो खूब मजे में छोटे शाह जी। लेकिन आपसे मिलने को छटपटा रहे हैं। और कह रहे हैं कि एक ही जगह पर बैठे-बैठे उनका दम घुट रहा है।"

करमचन्द गम्भीरता से बोला।

गहरी सांस छोड़ी बड़े शाह ने।

"अपनी औलाद से मिलने को हम भी छटपटा रहे हैं। दिल कर रहा है कि अभी उड़कर उसके पास पहुंच जाऊं और उसे अपने कलेजे से लगा लूं।"

"तो फिर देर क्यों करते हैं बड़े शाह जी...आप...।"

"अभी ऐसा सम्भव नहीं है।"

"मगर बड़े शाह जी...।"

"समझने की कोशिश कर करमे। मुझे पता चला है कि खुफिया तन्त्र का पूरा जाल बिछा हुआ है शहर में। मुझ पर भी नजर रखी जा रही है। ऐसे में अगर मैं विजेन्द्र से मिलने गया तो सब गुड़-गोबर हो जायेगा।"

"ओह।"

"इसलिये छाती पर पत्थर रखना पड़ रहा है मुझे। मेरे जिगर के टुकड़े के पास खबर भिजवा देना कि उपयुक्त मौका देखते ही मैं उससे मिलने जरूर आऊंगा।"

"जो हुक्म बड़े शाह जी।"

"और शहर के हालात कैसे हैं?"

"वैसे ही हैं...कोई फर्क नहीं पड़ा।"

"और वो कमल अरोड़ा...वो कैसा है?" कहते हुए बड़े शाह की आवाज में जहर घुल गया था।

"खूब मजे में है। सुबह छह बजे घर से निकलता है। और बच्चों को कुंगफू सिखाकर नौ बजे लौटता है। फिर शाम कपूर से बा. सात बजे तक क्लास लगाता है।"

"अब मजे के दिन खत्म हो गये उसके।" जहरीली मुस्कान के साथ बोला बड़ा शाह—"हमारे काम में अडंगा डालकर उसने जो पाप किया है उसका फल तो उसे मिलना चाहिए है न।"

"लेकिन आपने तो उसे अभयदान दे रखा है शाह जी।"

बड़े शाह के होठों पर फैला जहर और भी गहरा हो गया।

"मुझे पता है मैंने ऐलान करते हुए उसे अभयदान देते हुए कहा था कि अगर उसकी संदिग्ध परिस्थिति में मौत होती है तो उसका जिम्मेदार मुझे माना जाये।"

"तो फिर फल कैसा देंगे आप उसे?"

"थोड़ा सब्र रख करमे। फिर देखना कैसा खेल दिखाता हूं मैं। ऐसा दांव खेलूंगा कि वो हरामजादा पनाह मांगने लगेगा।"

कहते हुए बड़े शाह की आंखों में अंगारे दहकने लगे।

ठीक तभी बनारसी ने हॉल में प्रवेश किया।

दीवान के करीब आकर उसने घुटने फर्श पर टिकाये और माथे को दीवान के किनारे से लगाते हुए बड़े शाह के घुटनों को छुआ।

"बड़े शाह जी को गुलाम बनारसी का प्रणाम।"

"हां बोल बनारसी—क्या खबर लाया है?" पूछा बड़े शाह ने।

बनारसी सीधा हुआ और बड़े शाह की तरफ देखते हुए बोला—

"संजना के मायके में उसकी विधवा मां के अलावा उसके दो भाई हैं बड़े शाह जी।"

"कारोबार कैसा है उनका?"

"बढ़िया है—करोड़ों में खेलते हैं वो।"

"संजना के बारे में क्या ख्याल हैं उनके?"

"वैसे ही हैं जैसे एक मां के अपनी विधवा बेटी के लिये होते हैं। जैसे भाई के बहन के लिये होते हैं।"

"भाई [illegible]-शुदा हैं संजना के?"

"जी हां—[illegible]ल-बच्चेदार भी हैं। बड़े भाई की दो लड़कियां है, और छो[illegible]भाई क[illegible]क लड़का—एक लड़की है।"

"[illegible] पूरी [illegible]यदाद का एकमात्र वारिस लड़का ही है?"

"जी[illegible]कीव[illegible] [illegible] इ[illegible]"

"कि[illegible] [illegible]रा है[illegible]"

"[illegible] [illegible]ज का हुआ है? नाम है अभिषेक।"

"हुं[illegible]"

गहरी सांस छोड़ते हुए बड़े शाह ने हुंकार भरी और फिर सोचों में डूब गया।

बनारसी उत्सुकता से उसके चेहरे को देखता उसके बोलने का इन्तजार कर रहा था।

थोड़ी देर बाद बड़े शाह ने अपने सिर को इस तरह से झटका दिया—मानो वह किसी निर्णय पर पहुंच गया हो—फिर वह बनारसी को समझाने लगा कि उसे क्या करना है।

बनारसी उसकी बातों के दौरान बीच-बीच में समझने वाले अंदाज में सिर हिला रहा था।

दोपहर दो बजे संजना अपनी बेटी कविता को स्कूल से लेकर अपनी शानदार तीन मंजिला कोठी पर पहुंची।

कोठी का मेनगेट खुला हुआ था, सो संजना ने कार को गेट में प्रविष्ट किया और ड्राईव वे पर कार को चलाती हुई पोर्टिको मे ले जाकर खड़ा कर दिया, जहां पर कि पहले से ही एक कार खड़ी हुई थी।

यह कार उसके किरायेदार की थी।

ऊपर की दोनों मंज़िलें उसने बाईस हजार रुपया महीने पर किराये पर चढ़ा रखी थीं।

इतनी बड़ी क़ोठी में अकेले रहना उसके बस की बात नहीं थी—घर में रौनक बनी रहे—सो उसने ऊपर की दोनों मंजिलें किराये पर दे दी थीं। अब कमाई होने के साथ-साथ कोठी में चहल-पहल भी रहती थी।

अपनी बेटी के साथ वह कार से बाहर निकली और कम्पाऊण्ड की तरफ बढ़ी।

गौरा रंग-मगर साधारण नयन-नक्श वा [illegible] संजना [illegible] वक्त नीले रंग की फूलों की कढ़ाई वाली साड़ी पहने [illegible]

कंधे पर पर्स टंगा हुआ था—जो कि ए[illegible] तरह [illegible]सकी बगल में फंसा हुआ था।

बालों को उसने कसकर पीछे की तरफ बांध[illegible]—जिससे कि बाल खिंचने की वजह से उसकी भौहें थोड़ी [illegible] ड़ी नजर आ रही थीं।

कविता के साथ वह कम्पाऊण्ड में आई और कोठी के मेन डोर के सामने आकर पर्स को कंधे से उतारा और उसे खोलकर उसमें से चाबी निकालकर की-होल में डाली और लॉक खोलकर दरवाजे के हैंडल को नीचे दबाते हुए दरवाजा खोल दिया।

तुरंत कविता भागती हुई भीतर प्रवेश कर गई।

संजना ने भीतर प्रवेश किया—मुड़कर दरवाजा बन्द कर सिटकनी चढ़ाई और वापिस पलटकर सफेद पत्थर से बने फर्श पर चलती हुई हॉल में आ गई।

सिर्फ एक ही नौकरानी रखी हुई थी उसने जो कि सुबह साढ़े सात बजे आकर उसके सारे कमरों में सफाई कर जाती थी और बर्तन धो देती थी। कपड़े वगैरह वह इतवार को धोती थी।

किचन का काम संजना खुद करती थी।

सुबह ऑफिस जाने से पहले ही दोपहर का खाना बनाकर ओवन में रख जाती थी।

हॉल के बीचों-बीच शानदार आठ सीटों वाला सोफा सजा हुआ था—जिसके बीच में शीशे की टेबल थी जिस पर कि फूल छपे हुए थे।

सोफे के ऐन ऊपर एक काफी बड़ा फानूस लटक रहा था जो कि हीरों की तरह तराशे गये शीशे के टुकड़ों से बना हुआ था।

संजना सोफे की बगल से होते हुए पर्स को वहीं सोफे पर फेंका और दाईं तरफ के दूसरे कमरे में दाखिल हो गई।

वह बैडरूम था संजना का।

कविता बैड पर चढ़ी अपनी स्कूल की ड्रैस उतार रही थी। करीब ही उसके दूसरे कपड़े पड़े थे।

ड्रैस उतारकर उसने फ्रॉक पहनी और अपनी मां की तरफ देखते हुए बोली—"खाना।"

"अभी लाती हूं बेटे।" ममता भरे स्वर में बोली संजना और बाहर निकल गई। कविता ने बैड से उतरते हुए कपड़े उठाये और उन्हें

वाड [illegible] में ले [illegible] रख दिया। और फिर वह बाथरूम में घुस गई।

[illegible] ही वह [illegible]हर निकली तो संजना हाथों में खाना उठाये भीतर दाखिल हो [illegible] ई।

कवि[illegible] [illegible] पर चढ़ गई और एक तरफ बैठ गई।

संज[illegible] [illegible] खाना लगाया और फिर स्वयं भी वो बैड पर चढ़क[illegible]

दो[illegible] लंच करने लगीं।

लंच के [illegible] होते ही संजना ने बर्तन उठाये और बाहर निकल गई।

किचन में उसने बर्तनों को सिंक में डाला—वहीं हाथ धोये और वापिस बैडरूम में आ गई।

बैडरूम में दांयें कोने में कलर टी० वी० सजा हुआ था—जिस पर कि उसका रिमोट था।

आगे बढ़कर उसने रिमोर्ट उठाया और टी० वी० ऑन कर बैड की पुश्त से टेक लागकर बैठ गई।

कविता उसके साथ चिपककर बैठ गई और टी० वी० देखने लगी।

टी० वी० देखते हुए संजना को अभी दस-पन्द्रह मिनट ही हुए थे कि तभी—

'डिंग...डां...ग।'

कॉलबैल का मधुर संगीत हॉल में गूंजा।

संजना ने हल्के से चौंककर टी० वी० से निगाहें हटाकर बैडरूम के दरवाजे की तरफ देखा, जैसे उससे मिलने वाला वहीं खड़ा हो।

फिर उसने कविता की तरफ देखा जो कि उससे चिपकी सो रही थी।

यह उसका रोज़ का काम था।

खाना खाने के बाद वह अपनी मां से चिपके हुए सो जाती थी।

उसने बड़े प्यार से उसे अपने से अलग किया और धीरे से बैड पर लिटाकर बैड से उतरी और चप्पल पहनते हुए रिमोट से टी० वी० की आवाज को कम कर दिया।

बैडरूम से निकलकर वह हॉल में आई।

'डिंग...डांग...।'

तभी पुनः कॉलबैल बजी।

सोफे के करीब से होते हुए संजना मेन डोर के पीछे पहुंची।

"कौन...?" वह बोली।

"दरवाजा खोलिये।"

बाहर से शिष्टाचार से भरी आवाज आ[illegible]।

आवाज संजना के लिये नितांत अ[illegible] थी [illegible]—मगर जिस सलीके से बाहर से दरवाजा खोलने के लिये [illegible] ग[illegible]—उससे उसे किसी भी तरह का संदेह नहीं हुआ। [illegible]

हाथ ऊंचा कर उसने सिटकनी गिराई [illegible] से [illegible] को अपनी तरफ खोला।

सामने बनारसी दो आदमियों के साथ खड़ा था।

"नमस्ते संजना देवी।" वह दोनों हाथ जोड़ते हुए होंठों को फैलाते हुए बोला।

पहली ही नजर में वे तीनों संजना को सही आदमी नजर नहीं आये—सो वह दरवाजे से हटी नहीं। वहीं खड़े-खड़े ही वह बोली—"कहिये।"

"एक बहुत जरूरी काम से आपके पास आये हैं।" बनारसी अपनी आवाज में शहद घोलते हुए बोला।

"कैसा काम?"

"क्या भीतर आराम से बैठकर बात नहीं हो सकती?"

"सॉरी...मैं घर में अकेली हूं।" दो टूक इन्कार कर दिया उसने।

"लेकिन बात जरा लम्बी है इसलिये भीतर...।"

"मैंने कहा न—मैं आपको अन्दर नहीं ले जा सकती।"

गहरी सांस छोटी बनारसी ने।

"आपकी मां रमा देवी जी तो बहुत तारीफ कर रही थीं आपकी कि आप हर आने वाले की इज्जत करती हैं...।"

अपनी मां का नाम सुनकर संजना बुरी तरह से उछल पड़ी।

"अ...आप...।"

"आपकी मां से मिलकर आ रहा हूं मैं। सब राजी-खुशी से हैं—आपके दोनों भाई—भाभियां—तीनों भतीजियां—और भतीजा अभिषेक सब राजी खुशी हैं।"

सुनकर संजना पूरा दरवाज़ा खोलते हुए एक तरफ हट गई।

उसके पूरे मायके का ब्यौरा दे दिया था उसने—ऐसे में वह इन्कार कैसे कर सकती थी।

"आईये।" वह बोली।

बनारसी मुस्कुराया और भीतर प्रवेश कर गया।

[illegible]-पीछे [illegible] दोनों साथी भी भीतर प्रवेश कर गये।

[illegible]। उन्हें [illegible] हॉल में सोफे के करीब आई और बोली।—

[illegible]"

"बैठो [illegible]"

"बैठो [illegible] तो।" [illegible]ारसी स्वयं एक सोफे पर बैठते हुए अपने साथियों से [illegible]

वे [illegible] सोफे पर बैठ गये।

संजना [illegible] के सामने वाले सोफे पर बैठ गई।

"मेरे मायके अलीपुर से आये हैं आप?"

संजना बनारसी से बोली।

"जी नहीं।" बनारसी मुस्कुराया—"हम तो यहीं से आये हैं। और आपके पास हमें बड़े शाह जी ने भेजा है।"

बड़े शाह का नाम सुनकर संजना का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा—आंखों में खौफ उभर आया।

"ब...बड़े शाह जी!"

"जी हां...।" बनारसी रहस्यमयी मुस्कान के साथ बोला—"आपके बारे में उन्हें पता लगा कि आप अपनी बेटी के साथ अकेली रहती हैं तो आप पर बहुत ही तरस आया उनको। पहाड़ जैसी जिन्दगी को अकेले काट सकती हैं आप—सो उन्होंने फौरन आपके लिये रिश्ते की खोज की और अब हम बड़े शाह जी की तरफ से आपके लिये रिश्ता लेकर आये हैं।" कहते हुए उसने सोफे पर पड़े संजना के पर्स को उठाकर टेबल पर रख दिया।

एक और झटका लगा संजना को। यह झटका पहले झटके से भी बड़ा था।

"यह क्या कह रहे हैं आप?"

"ठीक ही तो कह रहा हूं। आपकी बेटी को बाप मिल जायेगा और आपको पति।"

"ल...लेकिन मैं...।"

"घबराइये नहीं—लड़का बहुत ही सुशील है...आपका देखा भाला भी है। ऊपर से खालिस कुंवारा है—। आप खूब अच्छी तरह जानती हैं उसे।"

"क...कौन?" बड़ी मुश्किल से थूक निगली संजना ने—"किसकी बात कर रहे हैं आप?"

"अरे आपकी फैक्ट्री का पार्टनर ही तो है वो—गंगाधार। बहुत ही नेक और सुशील लड़का है वो। रानी बनाकर रखेगा वह आपको।"

बुरी तरह से उछल पड़ी संजना। कले[illegible] धाड़[illegible] उसकी पसलियों से बजने लगा।

"ग...गंगाधर...।" [illegible]

"जी हां...।" [illegible]वैता है।

"हरगिज नहीं।" एकदम से भड़क उठी [illegible]कर्पर से[illegible]

"क्या मतलब?"

"मतलब वही जो तुम समझ रहे हो।" संजना गुस्से में आप से तुम पर उतर आई थी—"मैं गंगाधर से शादी करना तो दूर—उसकी सूरत भी नहीं देखूंगी। जाकर अपने बड़े शाह जी से कह देना कि संजना मरना कबूल कर लेगी—लेकिन शादी नहीं करेगी। और यह भी कह देना कि इसी हफ्ते के अन्दर-अन्दर मैं गंगाधर को पार्टनरशिप से भी बेदखल करने जा रही हूं।"

सुनकर बनारसी का चेहरा पहले तो सुर्ख हो उठा—आंखों में कहर उभर आया—लेकिन उसने तुरन्त अपने आप पर काबू पाया और उसी के साथ ही उसके होठों पर फिर से वही मुसकान उभर आई जो कि पहले थी।

"आप तो जानती हैं संजना देवी कि बड़े शाह जी जो भी कहते हैं—बहुत सोच-विचार कर कहते हैं।"

"और मैं भी बहुत सोच-विचारकर कह रही हूं कि मैं शादी नहीं करूंगी।"

"उन्होंने यह कहलवा भेजा है कि आपकी मां राजी खुशी है—आपके भाई-भाभियां राजी-खुशी हैं—और आपका इकलौता भतीजा तो बहुत ही उछलता है। भगवान न करे उस बेचारे की टांगें किसी एक्सीडेंट में खत्म हो जायें—आपकी बूढ़ी मां की मौत हो जाये तो...।"

"नहीं।" एक दम से चीख पड़ी संजना—"मेरी मां को कुछ नहीं हो सकता।"

"अपनी मां के लिये हर बेटी के दिल में ऐसे ही विचार होते हैं। वह अपनी मां को हमेशा सुखी और खुश देखना चाहती है ताकि उसका मायका बना रहे। मां के बाद तो उसका मायके पर एक तरह से अधिकार ही खत्म हो जाता है। भाभियों पर उसका जोर नहीं रहता।"

उसकी कमजोर नस आ गई थी बनारसी की पकड़ में—तभी तो वह उसकी मां के पीछे ही पड़ गया था।

"न...ही...ऐ...ऐसा नहीं हो सकता।"

कांपते स्वर में बोली संजना और मुंह पर हाथ रखकर बिलख पड़ी।

"बड़े शा[illegible] ने मुझे आपका जवाब लाने के लिये भेजा है।"

[illegible]-पीछे [illegible] होठों [illegible] जहरीली मुस्कान बिखरेते हुए बोला बनारसी—संजना [illegible] उन्हें बड़े श[illegible] जी से?"

"क्या कहूं..."

संजी[illegible] छ [illegible] बोली—बस हाथों में चेहरे को छुपाये रोती रही।

"[illegible]इरी सांस छोड़ी बनारसी ने—"मैं शाह जी से कह दूंगा कि आ[illegible] कर दिया है—आगे हरी इच्छा। चलो भाईयों—यहां बैठने को अब क्या फायदा।"

कहते हुए वह खड़ा हो गया।

"नहीं...।" रोते हुए संजना हौले से चीखी और हाथों से चेहरे को निकालकर उसे देखा—"बड़े शाह जी को इन्कार नहीं कहना। मैं...मैं गंगाधर से ब्याह करने को तैयार हूं। प...पर मेरी मां को...।"

"अरे रमा देवी तो मेरी मां के बराबर हैं—भला मैं उनके बारे में बुरा सोच सकता हूं। आप चिंता मत कीजिये—आपकी मां का बाल भी बांका नहीं होगा।"

उसकी बात पर कुछ नहीं बोली संजना—लेकिन उसकी आंखों से बहने वाले आंसू उसके भीतर का हाल बयां कर रहे थे कि किस तरह उसके दिल पर चाकू चल रहे हैं।

"तो फिर कल शाम का मुहूर्त कैसा रहेगा संजना जी? बड़े शाह जी कह रहे थे कि कल शनि और मंगल को छोड़कर बाकी के तमाम ग्रह एक ही लाईन में होंगे। ऐसा शुभ दिन सालों बाद आता है। इस दिन अगर शादी हो तो...।"

बोलते-बोलते रुक गया वह और उसके होठों पर तेज मुस्कान उभर आई थी। क्योंकि संजना उठकर बैडरूम की तरफ भाग गई थी।

वह दरवाजे के करीब पहुंची और ठिठककर पलटी।

"बड़े शाह जी से जाकर कह देना कि वो जब भी कहेंगे—मैं गंगाधर से शादी कर लूंगी।"

कहकर उसने गर्दन पीछे मोड़कर बैड पर सो रही कविता को देखा और फिर पूरी की पूरी घूमकर बैडरूम में प्रवेश कर गई।

लेकिन अभी बनारसी की बात पूरी कहां हुई थी।

तभी तो वह सोफे से उठा और बैडरूम के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया।

संजना बैड पर बैठी आंसू बहाती अपनी बेटी को देखे जा रही थी।

"कल आप राधा कृष्ण मन्दिर में ठीक [illegible]ह बजे [illegible] जाना।" वह बोला—"बड़े शाह जी खुद आप दोनों को आशी[illegible] देने आयेंगे।" कहकर उसने दोनों हाथ जोड़े और बोला—"[illegible] अब [illegible]जत दीजिये।"

और घिनौनी मुस्कान होठों पर लि[illegible], वह [illegible] गया।

उसी शाम को रोजाना की तरफ बच्चों को कुंगफू की कोचिंग देने के लिये कमल अरोड़ा जैसे ही एस० डी० स्कूल के छोटे गेट में से भीतर दाखिल हुआ।

"मिस्टर कमल अरोड़ा।"

उसके दाँई तरफ से आवाज आई।

कमल अरोड़ा ने वहीं ब्रेक पर पैर जमा दिया—साथ ही उसने दाँई तरफ गर्दन मोड़ी।

अपनी बच्ची को बांहों में उठाये संजना उसकी तरफ बढ़ रही थी।

उसने पैर जमीन से लगाते हुए प्रश्न भरी निगाहों से संजना की तरफ देखा।

"कहिये।" उसके करीब आने पर वह बोला।

"मेरा नाम संजना है।" संजना बोली—"और यह मेरी बेटी कविता है।"

"सॉरी।" कमल अरोड़ा बोला—"अभी प्री जूनियर की क्लासें शुरू नहीं की मैंने।"

वह यही समझा कि संजना कविता को जूडो-कराटे सिखाने के लिये लाई है।

"मैं अपनी बच्ची के लिये नहीं...अपने लिये आई हूं मिस्टर कमल अरोड़ा—और मैं आपसे कुंगफू वगैरह सीखने नहीं—बल्कि मदद मांगने आई हूं।"

"मदद!" हल्के से चौंका कमल अरोड़ा।

"जी हां...जिस तरह से आपने अकेले अपने बलबूते पर बड़े शाह से टक्कर ली है—उससे मुझे पूरी दुनिया में बस आप ही मेरे मददगार नजर आ रहे हैं।" कहते हुए संजना की आंखों से आंसू बह निकले।

एक बार फिर चौंका कमल अरोड़ा। एक औरत का रोना उससे

...ड़े श...
...-पीछे ... होठों... था थी...
देखा नह. उन्हें ... बड़े श...
"आ..." ...ना ... चाहती हैं? किस तरह की मदद चाहिये आपको?"

"अ... ...थोड़ा वक्त दीजिये—मैं आपको सब कुछ बता दूंगी।"

"लेकिन ... क्लास...।"

"प्लीज मिस्टर कमल—अगर एक बार क्लास नहीं ली गई तो आपको कोई फर्क नहीं पड़ने वाला—लेकिन मैं बर्बाद हो जाऊंगी।"

उसकी बात सुन कमल अरोड़ा को समझते देर न लगी कि चक्कर गहरा ही है।

"आप दो मिनट रुकें।" वह बोला—"मैं बच्चों को कहकर आता हूं।"

आंसू पौंछते हुए संजना ने सिर हिला दिया।

कमल अरोड़ा ने बाईक आगे बढ़ाई और ग्राउण्ड की तरफ बढ़ गया।

ग्राउण्ड में खड़े अपने शिष्यों को उसने आज की छुट्टी दी और वापिस संजना के करीब आकर बोला—

"अब कहिये—क्या दुःख है आपको?"

"पास ही मेरी कोठी है—अगर वहां चलकर...।"

"सॉरी...।" तुरंत कमल अरोड़ा बोल पड़ा—"मैं आपकी कोठी पर नहीं जा सकता।"

"ल...लेकिन बात लम्बी है।"

"पास ही अजन्ता कैफे है—वहां चलते हैं।"

कमल अरोड़ा बोला।

बड़े शाह की तरफ से वह अभी भी शंकित था। चुटियल सांप था वह—कहीं से भी वार कर सकता था। ऐसे में उसका हरदम चौकन्ना रहना जरूरी था।

वह जानता था कि बड़े शाह की ताकत के आगे उसकी कोई औकात नहीं। फिर भी अपनी तरफ से वह जितनी चौकसी बरत सकता था बरत रहा था।

और संजना की कोठी पर जाने से इन्कार करना भी उसकी चौकसी थी।

क्या पता शाह बाप बेटों ने उसे मारने के लिये संजना की कोठी में जाल फैला रखा हो। और संजना उन्हीं की गुलाम हो।

बस यही सोचकर उसने इन्कार किया था [illegible]

कॉफी हाउस में से उस पर सीधा हमला [illegible] सूरत [illegible] सकता था जब बड़ा शाह पूरी तरह से नंगा हो जाये [illegible]

"ठीक है...चलिये।" संजना गहरी सांस [illegible] ड़ते [illegible] ट की तरफ बढ़ी।

कमल अरोड़ा उसके पीछे-पीछे गेट [illegible] नि [illegible] ही उसने संजना को बाँईं तरफ खड़ी सफेद मारुति की तरफ ब [illegible] या।

"आप मेरे आगे-आगे चलिये।" वह [illegible] जते हुए उसे देखते हुए बोली।

कमल अरोड़ा ने सिर हिला दिया।

संजना ने झुककर पहले कविता को सीट पर बिठाया—फिर स्वयं भीतर प्रवेश कर स्टीयरिंग के पीछे बैठ गई।

अजन्ता कैफे के कॉफी हाऊस में कमल अरोड़ा और संजना कोने की टेबल पर आमने-सामने बैठे थे।

हालांकि कमल अरोड़ा कोने की टेबल पर नहीं बैठना चाहता था—लेकिन संजना के मिन्नत करने पर उसे उसका कहा मानना ही पड़ा। हाल में नीम अंधेरा था। बिल्कुल मद्धम रोशनी में हॉल में बैठे दो-चार लोग सायों की तरह प्रतीत हो रहे थे।

कमल अरोड़ा ने वेटर को बुलाकर दो कॉफी और स्लाईस तथा कविता के लिये एक फ्रूट क्रीम लाने का ऑर्डर दिया और फिर संजना की तरफ देखते हुए बोला—

"हां...अब कहिये...मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं।"

संजना ने कविता को पास वाली खाली कुर्सी पर बिठाया और फिर थोड़ी धीमी आवाज में बोला—

"कपूर इन्डस्ट्री का नाम तो आपने सुना होगा।"

"जी हां—घर से स्कूल आते वक्त रास्ते में पड़ती है। अक्सर निगाह पड़ जाती है।"

"मैं उसकी मालकिन हूं।"

"ओह।" कमल के चेहरे पर उसके लिये आदर उभर आया—"तो आप शेखर कपूर जी की विधवा हैं।"

"हां शेखर कपूर मेरे पति थे जिनकी छह महीने पहले रोड

एक्सी[illegible] मौत [illegible]ई थी।"

"[illegible]।"

"मेरे [illegible]क्ट्री [illegible] ही एक पार्टनर है गंगाधर। दस परसेंट का पार्टनर है वह[illegible] और [illegible]की के नब्बे परसेट पर मेरा अधिकार है।" कहकर संजना [illegible]र के लिये रुकी और फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोली[illegible]गाधर को मैं आज दोपहर तक सीधा-सादा और शरीफ आदमी [illegible] थी। लेकिन उसके भीतर के शैतान का पता तो मुझे आज उस वक्त लगा जब बड़े शाह के भेजे कुत्ते मेरी कोठी पर आ धमके।"

"क्यों?" हल्के से चौंका कमल अरोड़ा।

"उन्होंने मुझे धमकी दी कि अगर मैंने अपने पार्टनर गंगाधर से शादी नहीं की तो—तो वो मेरी मां को—मेरे भाईयों-भाभियों—सभी को खत्म कर देंगे।" कहते हुए उसकी आवाज भर्रा गई।

"ओह नो।"

"कल शाम को मुझे राधा कृष्ण मन्दिर पहुंचना है। जहां बड़ा शाह खुद गंगाधर से मेरी शादी करायेगा।" कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ी।

"साफ नजर आ रहा है कि...।" वह गम्भीरता से बोला—"गंगाधर आप से शादी करके आपकी पूरी फैक्ट्री पर कब्जा करना चाहता है और वह यह भी जानता था कि वह आपसे सीधे रिश्ते की बात नहीं कर सकता था—इसलिये उसने बड़े शाह के सामने मोटा पैसा फैंककर मदद मांगी।"

"अब तो मुझे यह भी लगने लगा है कि मेरे पति की मौत कोई साधारण एक्सीडेंट नहीं था—बल्कि उनकी हत्या की गई थी—और मुझे शक है कि हत्या भी इसी गंगाधर ने कराई थी।"

कहते हुए संजना का चेहरा ऐसे हो गया जैसे उसके दिल पर आरे चल रहे हों।

तभी वेटर ऑर्डर सर्व करने आ पहुंचा।

दोनों की बात वहीं रुक गई।

वेटर के जाने के बाद कमल अरोड़ा ने पहले फ्रूट आईस क्रीम उठाकर कविता को दे दी—जिसे उसने अपने नन्हें हाथों से थाम लिया। बड़ी ही शांत बच्ची थी वह। वर्ना इतनी उम्र में बच्चों को तो सिवाये उछल-कूद के कुछ सूझता ही नहीं।

मगर वह चुपचाप बैठी थी।

कमल अरोड़ा ने कॉफी का मग उठाकर [illegible] के [illegible] रखा और फिर अपना मग उठाते हुए बोला—

"अब आप मुझसे क्या चाहती हैं?"

संजना के चेहरे पर दयनीय भाव उभर आये।

"मैं गंगाधर से शादी नहीं करना चाहती। मुझे अपनी मौत पसंद है—लेकिन इस बच्ची का ख्याल...।" उसने कविता के सिर पर हाथ रखा—"मुझे मरने की भी इजाजत नहीं देता। ऊपर से बड़े शाह की धमकी कि अगर मैंने यह शादी नहीं की तो वह मेरा पूरा मायका खत्म कर देगा।" उसकी आवाज भर्रा गई—लेकिन उसने जल्दी ही स्वयं को सम्भाला और आगे बोली—"पूरे किशनपुरा में शाह बाप-बेटों का दबदबा है। वे कभी भी कुछ भी कर सकते हैं—और उनका कुछ भी नहीं बिगड़ सकता और पुलिस भी उसकी गुलाम है। ऐसे में मुझे बस आप ही एक मददगार नजर आये। आपने जिस तरह से बड़े शाह के खिलाफ बोला—जिस तरह से आपने बच्चों को बचाया—उससे मुझे यही लगा कि आप ही मुझे इस मुसीबत से निजात दिला सकते हैं।"

कमल अरोड़ा के होंठों पर फीकी मुस्कान फैल गई।

"बहुत बड़ी गलतफहमी में हैं आप...।" वह बोला—"शाह बाप-बेटे से जितना डरती हैं—उतना ही मैं भी डरता हूं। स्कूल में अगर उन गुण्डों ने बच्चों की जगह बड़ों को बंधक बनाया होता तो मैं किसी भी सूरत में कुछ नहीं करता। बड़े शाह के खिलाफ मैंने मीडिया के सामने जानबूझकर जहर उगला था सिर्फ इसलिये कि अगर मैं ऐसा न करता तो अब तक मेरा चौथा भी हो चुका होता। लेकिन अब मुझे खत्म करने के लिये शाह को दिमाग लगाना पड़ेगा। वह सीधे गोली नहीं मार सकता मुझे। ऐसे में सारा ब्लेम उस पर आयेगा—और मीडिया भी मेरी मौत को जोर-शोर से उछालेगा—ऐसे में शाह के लिये सिरदर्दी बढ़ सकती है—जो कि वह हरगिज नहीं चाहेगा।"

"ओह।"

"बस यूं समझ लीजिये संजना जी कि इस वक्त मैं हर वक्त मौत को याद करके ही सोता हूं। और मौत को याद करके ही घर से निकलता हूं। मैं भी बाल-बच्चेदार हूं—मेरी बीवी है—एक तीन साल का प्यारा-सा बेटा है। आप खुद अंदाजा लगा सकती हैं कि मुझे अपनी जिन्दगी से कितना प्यार होगा।"

संजना का चेहरा बुझ गया।

...आंखों में आशा की एक छोटी-सी किरण थी—वह भी ...ड़ा ...कार से बुझ गई।

...मल अ... ने कॉफी का घूंट भरा और मग को टेबल पर रखते हुए गम्भीरता... बोला—

"अब तो आप बस ऊपर वाले से दुआ ही कर सकती हैं कि गंगाधर को प्लेग हो जाये—उसका हार्ट फेल हो जाये—या वह अंधा होकर छत से गिरकर मर जाये। शायद आपकी दुआ काम कर जाये और गंगाधार सुबह का सूरज न देख पाये—उस सूरत में आप बर्बादी से बच सकती हैं।"

संजना ने कविता को उठाया और खड़ी हो गई।

"अरे...कॉफी तो रह गई आपकी—और स्लाईस तो आपने खाया नहीं।" हल्की-सी हड़बड़ी के साथ बोला कमल अरोड़ा।

"बड़ी उम्मीद लेकर आई थी मैं आपके पास।" आंखों में आंसू भरते हुए बोली संजना—"लेकिन...।"

बात को बीच में छोड़ वह झटके से मुड़ी और टेबलों के बीच में से निकलती हुई शीशे के गेट की तरफ बढ़ गई।

कमल अरोड़ा उसे जाते देखता रहा।

रोका नहीं उसने उसे।

उसके गेट से निकलने के बाद कमल अरोड़ा ने आराम से स्लाईस खत्म किया—अपनी बची हुई कॉफी पी और फिर काऊण्टर की तरफ बढ़ गया।

बिल पे करके वह बाहर निकला और अपनी बाईक पर सवार हो अपने घर की तरफ रवाना हो गया।

एक जहरीली मुसकान नाच रही थी उसके होठों पर उस वक्त और आंखों में अजीब से भाव फैले हुए थे।

"अब तो आप बस ऊपर वाले से प्रार्थना ही कर सकती हैं कि गंगाधार को प्लेग हो जाये—उसका हार्ट फेल हो जाये—या वह अंधा होकर छत से गिरकर मर जाये। शायद आपकी दुआ काम कर जाये और गंगाधर सुबह का सूरज न देख पाये—उस सूरत में आप बर्बादी से बच सकती हैं।"

"अरे...आपकी कॉफी तो रह गई—स्लाईस तो आपने खाया ही नहीं।"

"बड़ी उम्मीद लेकर आई थी मैं आपके पा[illegible]—"

कुछ देर सैंडिलों की आवाज गूंजी—फि[illegible] कार स्टा[illegible]ने की आवाज आई।

बड़े शाह के होठों पर घमण्ड से भरी मुस्कान उभर आई।

उसने अपने सामने रखे छोटे से टेपरिकार्डर को ऑफ किया और फिर एकाएक ही उसके मुंह से ठहाका उबल पड़ा।

"हा...हा...हा। देखा बनारसी।" वह सामने खड़े बनारसी से बोला—"इसे कहते हैं दहशत—। अगर तू चुपके से संजना के पर्स से माइक्रोफोन न चिपकाता तो तुझे किसी भी सूरत में पता नहीं चलता कि कॉफी हाऊस में वह कमल के साथ क्या गिटर-पिटर कर रही है?"

"आप ही ने तो ऐसा सुझाया था शाह जी।" बनारसी बोला—"आप ही ने कहा था कि संजना को हुक्म देकर वहां से वापिस नहीं आना बल्कि उस पर निगाह रखनी है। अपने घर में किसी से फ़ोन पर क्या बात करती है—उसके लिये आप ही ने माइक्रोफोन का रास्ता सुझाया था।"

"तभी तो मुझे पता लगा। साथ ही कमल अरोड़ा का भी पता चल गया। वह हरामी भी मुझसे डरता है। मगर पट्ठे ने दिमाग से काम लिया और उसी दिमाग की व[illegible] से बच गया—वर्ना वह ठीक ही कह रहा था कि अब तक उसका चौथा हो जाना था। मगर बचेगा वह अब भी नहीं—ऐसा जाल बिछाऊंगा कि उस जाल से वह मरकर ही निकल सकेगा।"

कहते हुए बड़े शाह की आंखों में अंगारे दहकने लगे।

"मेरे लिये क्या हुक्म है बड़े शाह जी?" बनारसी हाथ बांधते हुए बोला।

"अभी नजर रख संजना पर। जब तक गंगाधर से उसकी शादी नहीं हो जाती—तब तक मुझे उसके मुंह से निकली हर बात सुनाई देनी चाहिये। और उसकी भी जो उसके साथ बात कर रहा हो।"

"जो आज्ञा बड़े शाह जी।"

कमल अरोड़ा ने नेहा के साथ रात का खाना खाया और क्षितिज को अपनी गोद से निकालकर उसके पास बिठाकर झूठे बर्तन उठाये और बाहर निकल गई।

कमल अरोड़ा ने क्षितिज को उठाया और उठकर बैडरूम में आकर बैड पर लेटा और क्षितिज को अपनी सीने पर उल्टा लिटा लिया। तभी नेहा कमरे में दाखिल हुई और उसके करीब बैठकर उसके बालों में उंगली फिराने लगी।

"क्या बात है?" वह बोली।

"क्या?" कमल उसकी तरफ देखते हुए बोला।

"कुछ छुपा रहे हो मुझसे तुम।" नेहा बोली—"जब से घर आये हो—सोचों में ही डूबे हुए हो। खाना भी चुपचाप खाया—क्षितिज को भी आज पहले जैसा प्यार नहीं कर रहे।"

कमल अरोड़ा के होठों पर गम्भीर मुस्कान फैल गई।

"तुम ठीक कह रही हो नेहा। सचमुच परेशान हूं मैं।"

"मुझे बताओ—हो सकता है मैं कोई सुझाव दे सकूं।"

कमल अरोड़ा ने गहरी सांस छोड़ी और थोड़ा ऊपर उठकर पीछे खिसका और बैड की पुश्त से टेक लगाते हुए बोला—

"जानती हो आज मैंने कोचिंग भी नहीं ली।"

"क्यों?" एकदम से चौंकी नेहा।

"कपूर इन्डस्ट्री की मालकिन स्कूल में दाखिल होते ही मिल गई थी...।" कमल अरोड़ा ने उसे सारी बात कह सुनाई फिर आगे बोला—"कॉफी हाऊस के बाहर जब वह अपना पर्स उठाकर कार से बाहर निकली—तभी इत्तफाक से मेरी नज़र पर्स के साईड में चिपके माइक्रोफोन पर पड़ गई थी—जिसे मैंने तुरन्त पहचान लिया। मैं समझ गया कि हो न हो उस पर नजर रखी जा रही है।"

"ओह!"

"और जब उसने मुझे यह बताया कि उसके पास शाह के कुत्ते आये थे तो मैं समझ गया कि वह बड़े शाह की नजरों में है।"

"फिर?"

"मैंने उसकी मदद करने से साफ इन्कार कर दिया। और ऐसा मैंने जानबूझकर किया—ताकि बड़े शाह के दिल में यह बैठ जाये कि मैं उससे वाकई डरता हूं। लेकिन हकीकत तो तुम भी जानती हो। ऊपर वाले के अलावा कमल किसी से नहीं डरता।"

"फिर तो बेचारी रोती हुई गई होगी वहां से।"

"हां...सचमुच मुझे भी बहुत दुख हुआ था उसकी हालत देखकर।"

"क्या कोई रास्ता नहीं कमल—जिससे कि उसकी शादी गंगाचर

से न हो।"

नेहा ऐसे बोली जैसे उसे संजना पर बहुत तरस आ रहा हो।

"रास्ता तो एक ही है।"

"क्या?"

"गंगाधर को मौत आ जाये। इस तरह जब दूल्हा ही नहीं होगा तो संजना शादी कैसे करेगी।"

"तो तुम ही खत्म कर दो न उसे।"

नेहा की बात पर बुरी तरह से उछल पड़ा कमल अरोड़ा और आंखें फाड़े उसे ऐसे देखने लगा जैसे नेहा के सिर पर सींग उग आये हों।

मगर नेहा पूरी तरह से गम्भीर थी। साफ नजर आ रहा था कि यह बात उसने मजाक में नहीं कही थी।

"य...यह क्या कह रही हो तुम?"

आखिर वह हैरानी से बोला। उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि यह बात नेहा ने कही थी या उसके कान बज रहे थे।

नेहा ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"अगर संजना अपनी मर्जी से गंगाधार से शादी कर रही होती तो मुझे कोई एतराज नहीं था। लेकिन वह तो मजबूर की जा रही है शादी के लिये—बस यूं सोच लो कमल कि अगर संजना की शादी गंगाधर से हो गई तो संजना के साथ-साथ उसकी मासूम बच्ची की जिन्दगी भी खराब हो जायेगी और बड़े शाह का किशनपुरा में फैला खौफ और भी गहरा हो जायेगा।"

"ल...लेकिन नेहा...!"

"अभी तक सिर्फ तुमने ही बड़े शाह की आंख में आंख डालकर उससे बात की है। मगर अब तुम नजर चुरा रहे हो...।"

"कैसी बच्चों जैसी बातें कर रही हो तुम।" बोल पड़ा कमल अरोड़ा—"जानती हो क्या कह रही हो तुम! कितना बड़ा गुनाह करने को उकसा रही हो तुम मुझे, अगर पुलिस को पता चल गया तो मैं सीधा जेल में—और तुम और क्षितिज सड़क पर आ जाओगे। नहीं...किसी का घर बचाने के लिये मैं अपना घर नहीं उजाड़ सकता।"

"कुछ नहीं होगा हमारे घर को। बस तुम तरकीब से काम लो। काम ऐसे करो कि किसी को कानोंकान खबर न हो।"

"लेकिन है तो यह पाप ही।"

"कांटे को निकालने के लिये कांटे का प्रयोग करना पाप नहीं

होता। भगवान विष्णु ने कई अवतार धरकर दुष्टों का संहार किया—क्या वो पाप नहीं? नहीं वो पाप नहीं था। ऐसे ही गंगाधर को खत्म करना पाप नहीं होगा। अगर हम अपने ही स्वार्थ में अंधे होकर अपने बारे में ही सोचते रहे तो बड़े शाह और छोटे शाह का खौफ तो वहां बढ़ता ही जायेगा न। अब अगर गंगाधर मरता है तो बडे शाह के पैरों तले से धरती खिसक जायेगी। तुम्हारे बारे में तो वह सोच भी नहीं सकेगा कि तुमने यह काम किया है—क्योंकि तुम माईक्रोफोन के जरिये उसके कानों तक उससे डरने की बात पहुंचा चुके हो। रही पुलिस...तो वह उधर ही चलेगी जिधर उसे शाह चलायेगा।"

कमल अरोड़ा की आंखों में गहरी सोचें उभर आईं।

उसे लग रहा था कि अब ऐसी जंग की शुरूआत होने जा रही है—जिसका अन्त बहुत ही खतरनाक होगा।

काफी देर तक वह सोचता रहा—आखिर उसने हाथ पीछे कर बैड की पुश्त पर रखे फोन को उठाया और अपनी गोद में रखकर रिसीवर उठाकर संजना का नम्बर डायल करने लगा।

हाल बेहाल हो रहा था संजना का।

कल शाम को शादी करनी थी उसने गंगाधर से—और अभी तो पूरी रात और कल का पूरा दिन पड़ा था—लेकिन संजना की हालत ऐसी हो रही थी कि वह मरी कि मरी।

कमल अरोड़ा से निराश होकर वह घर आई और बैड पर मुंह के बल गिरकर बिलखने लगी।

अपनी मां को रोते देख नन्ही कविता भी रोने लग पड़ी और बार-बार उसका चेहरा ऊपर उठाने की कोशिश करने लगी।

काफी देर बाद जाकर संजना ने अपना आंसुओं से भरा चेहरा उठाया और अपनी बेटी को उठाकर कलेजे से लगा लिया।

एक बार फिर बिलख पड़ी थी वह।

कविता अपने नन्हें हाथों से अपनी मां की आंखें पौंछते हुए बार-बार कह रही थी—

"मत रोओ मम्मी...!"

अब उस बेचारी को क्या पता था कि उसकी मां के साथ क्या अनर्थ होने जा रहा था।

कई बार संजना का जी चाहा कि वह अपनी इहलीला समाप्त कर दे। लेकिन हर बार कविता का ख्याल उसके इरादे को रोक देता था।

रात का खाना भी नहीं खाया था उस मासूम ने।

अपनी मां को चुप कराने की कोशिश करते-करते वह खुद सो गई थी।

लेकिन संजना की आंखों में नींद का नामोनिशान नहीं था। आने वाले वक्त की भयावहता सोच-सोचकर ही उसके प्राण कांप रहे थे।

तरह-तरह के विचार उसके जेहन में डंक मार रहे थे। लेकिन एक ख्याल उसके दिल में पक्का बैठ गया था—वो यह कि शादी के बाद वह और उसकी बेटी ज्यादा समय तक जिन्दा नहीं रहेंगे। गंगाधर उनका कत्ल कर देगा—और फिर उसकी सारी दौलत का मालिक बन बैठेगा।

अभी वह इन हौलनाक विचारें में उलझी ही हुई थी कि तभी फोन की घण्टी घनघना उठी।

'ट्रिन...ट्रिन...!'

संजना की रो-रोकर सूज रही आंखें फोन की तरफ घूम गईं, जो उसके भीतर के दर्द से बेखबर चीखे जा रहा था।

आखिर हारकर संजना ने करवट बदली और साइड़ स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोली—

"हैलो...!"

उसे खुद को अपनी आवाज कोसों दूर से आती प्रतीत हो रही थी।

"संजना जी...!" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"हां।"

"अभी आप कुछ नहीं बोलना संजना जी—बस फोन को एक बार रखकर फिर उठा लीजिये—और फिर माऊथपीस में फूंक मारिये।"

"दूसरी तरफ से आती आवाज को सुनकर वह हैरान होने के साथ-साथ परेशान भी हो गई। फिर भी कुछ सोचकर उसने रिसीवर को क्रेडिल पर रखा और पुनः उठाकर माऊथपीस में हल्की-सी फूंक मारी।

"आप अभी भी कुछ नही बोलियेगा। मैं कमल अरोड़ा बोल रहा हूं।"

सुनकर बुरी तरह से चौंकी संजना। साथ ही उसने कुछ बोलने के लिये मुंह खोला—लेकिन तुरंत बन्द कर दिया।

"कुछ भी बताने से पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि आपका पर्स कहां है—आपके पास इसी कमरे में है तो एक फूंक मारें—नहीं तो दो फूंक मारें।"

संजना हैरान। साथ ही उसकी नजर अपने पर्स पर जा पड़ी जो कि सैंटर टेबल पर पड़ा था।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कमल अरोड़ा उससे ऐसी बात क्यों कर रहा है। अपने पर्स में उसे ऐसी कोई खास बात नजर नहीं आई।

फिर भी उसने एक फूंक मारी—जिसका मतलब था 'हां'।

"किसी और कमरे में फोन है आपके। हां के लिये एक फूंक।"

संजना ने पुनः हल्के से दो फूंक मारी।

"ओह...! यानि यही एक फोन है। खैर कोई बात नहीं—आप बस बोलियेगा नहीं और हां के लिये एक और न के लिये दो फूंक मारते रहिये।" दूसरी तरफ से कमल अरोड़ा की गम्भीर आवाज आई—"सबसे पहले तो मैं आपसे क्षमा चाहूंगा। आप मेरे पास इतनी उम्मीद लेकर आई—लेकिन मैंने आपको निराश कर दिया। दरअसल वह मेरी मजबूरी थी। दरअसल आपके पर्स के साथ एक माइक्रोफोन चिपका हुआ है—जो कि निश्चय ही बड़े शाह के कुत्तों ने चिपकाया होगा। ऐसे में हमारे बीच हुई सारी बातें निश्चय ही बड़े शाह तक पहुंचनी थीं।"

संजना बुरी तरह से उछल पड़ी—साथ ही वह आंखें फाड़े अपने पर्स को देखने लगी। लेकिन उसे वहां ऐसी कोई चीज नजर नहीं आई।

"यह तो हमारी किस्मत अच्छी थी जो उस माईक्रोफोन पर मेरी नजर पड़ गई। और मैंने आपकी मदद करने से साफ इन्कार कर दिया। अब आप यह बताये कि क्या आप गंगाधर से शादी करना चाहती हैं या नहीं—जवाब फूंक से दीजियेगा।"

संजना ने फौरन दो फूंक मार दीं।

"ओ०के० मैं आपसे वादा करता हूं कि गंगाधर की शादी आपसे नहीं होगी। और हां आप पर्स से अभी छेड़छाड़ मत कीजियेगा—क्योंकि ऐसी आहटें बड़े शाह को शक में डाल सकती हैं। और मेरे फोन रखते ही गंगाधर को फोन करके दरियाफ्त कीजियेगा कि वह आप पर तरस खायें हालांकि वह मानेगा नहीं—लेकिन ऐसा आपने सिर्फ इसलिये करना है क्योंकि अब आपके फोन रखने की आवाज माईक्रोफोन पकड़ लेगा और कल को बड़ा शाह आपसे इसकी जवाब तलबी कर सकता

है—पहले मैंने आपसे फोन रखने के लिये इसलिये कहा था ताकि आप जवाब दे सकें कि रांग नम्बर था और आपने फोन रख दिया था और अब होने वाली आवाज का जवाब आप यह दे सकेंगी कि आपने फोन रखा नहीं बल्कि उठाया था—गंगाधर के कहने के लिये। मेरा ख्याल है आप मेरी बात की गहराई समझ गई होंगी।"

संजना ने एक फूंक मारी।

"तो अब आप बेफिक्र हो जायें—और जो मैंने कहा है—वही कीजिये। और अगर आप अपनी भड़ास निकालना चाहे तो मुझे एतराज नहीं।"

इसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

संजना कुछ पलों तक तो मन्त्रमुगध से रिसीवर को कान से लगाये बैठी रही—फिर उसने रिसीवर को क्रेडिल पर रखकर उठाया और गंगाधर का नम्बर मिलाने लगी।

'ट्रिन...ट्रिन...!'

गंगाधर ने हाथ में थमा पैग होंठों से लगा कर उसे एक ही सांस में खाली किया और उसे सैंटर टेबल पर रखकर सोफे पर ही अपने करीब पड़े फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो...!"

वह सैंटर टेबल पर पड़ी प्लेट में से संतरे की फांक उठाते हुए बोला।

"गंगाधर...!" दूसरी तरफ से संजना की आवाज आई।

"ओह! आप...!" गंगाधर के होंठों पर जहरीली मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

"मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी गंगाधर—! पीठ पर छुरा घोंपा है तुमने मेरी। आखिर क्या बिगाड़ा था मैंने तुम्हारा जो तुम इस हद तक गिर गये।"

"ऐसी बात नही संजना जी।" वह अपनी बात में गम्भीरता लाते हुए बोला—"मैं आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ना चाहता। बल्कि मैं तो कविता को एक बाप का प्यार देना चाहता हूं।"

"बकवास बन्द करो अपनी...।" गुर्राहट भरी आवाज पड़ी गंगाधर के कान में—"तुम्हारी चाल समझ रही हूं मैं! बड़े शाह की तरफ

से दबाव डलवाकर तुम मेरे शरीर को बेशक पालोगे—लेकिन यह बात गांठ बांध लो गंगाधर मेरी दौलत में से एक फूटी कौड़ी भी हासिल नहीं होगी तुम्हें। मैं जानती हूं मेरी दौलत की खातिर ही तुम यह सब कर रहे हो—मगर जब मैं तुम्हें हासिल होऊंगी तो मेरे पल्ले एक पैसा भी नहीं होगा।"

"क्या मतलब?"

बुरी तरह से उछल पड़ा गंगाधर। सारा नशा पल भर में ही काफूर हो गया।

"अपने भाइयों को मैंने बुलवा लिया है यहां और अपने वकील को भी। सुबह ही सभी यहां पहुंच जायेंगे। और तब मैं अपनी सारी सम्पत्ति अपने भाइयों के नाम कर दूंगी। और अपनी बेटी भी उन्हें सौंप दूंगी। फिर तुम बेशक मुझसे शादी करते रहना।"

गंगाधर को काटो तो खून नहीं।

संजना की इस बात ने उसके होश उड़ा दिये थे। जहां वह अभी से खुद को करोड़ों पति समझने लगा था वहीं वह स्वयं को एकाएक ही कंगाल नजर आने लगा था।

कर्जा उठाकर उसने बड़े शाह को अस्सी लाख उसने दिया ही इसलिये था कि शादी के बाद संजना का सब कुछ उसी का हो जायेगा—लेकिन संजना की बातों ने तो उसकी बाजी ही पलट दी थी।

"क्या हुआ गंगाधर सांप सूंघ गया क्या?"

तभी दूसरी तरफ से जहर भरी हंसी उसके कान में पड़ी।

भीतर ही भीतर छटपटाकर रह गया गंगाधर—लेकिन तुरंत ही उसने पलटा खाया और आवाज़ को गम्भीर बनाते हुए बोला—

"मुझे नहीं मालूम था कि आप मुझसे इस हद तक नफरत करती हैं। और आपसे यह किसने कह दिया कि मैं दौलत की खातिर आपसे शादी करना चाहता हूं।"

"क्या मतलब?" चौंकती आवाज।

"आप मुझे अपनी दौलत किसी और को देने की जो धमकी दे रही हैं। तो यह सुन लीजिये कि मैं खुद भी यही चाहता हूं कि आप जब मेरे पास आयें तो सिर्फ आप हों—और कविता हो। दौलत न आये आपके साथ।"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

जाहिर था कि संजना को उससे ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

"मैं तो कपूर साहब की इच्छा की पूर्ति कर रहा हूं संजना जी।"

वह मन ही मन मुस्कुराते हुए बोला।

"क...या...क्या मतलब?" हड़बड़ाती आवाज।

"अगर कपूर साहब की इच्छा न होती तो मैं किसी भी सूरत में ऐसी हरकत नहीं करता।"

"क...क्या इच्छा थी मेरे पति की?" दूसरी तरफ से कांपती आवाज आई।

"आप तो कपूर साहब के एक्सीडेंट की खबर सुनकर जब अस्पताल पहुंची थीं तो कपूर साहब दम तोड़ चुके थे—लेकिन मरने से पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि उनकी मौत पर कविता अनाथ हो जायेगी—और आप बेसहारा हो जायेंगी—। सो उन्होंने मुझसे यह कहा था कि उनकी मौत के बाद मैं आपसे शादी कर लूं—और कविता को बाप का नाम दूं। लेकिन यकीन मानिये मैंने साफ इन्कार कर दिया—और मैं तब भी इन्कार ही करता रहा जब वे स्वर्ग सिधार गये। और यकीन मानिये पंद्रह दिन पहले तक मेरे दिल में ऐसी कोई बात भी नहीं थी—पंद्रह दिन पहले मुझे सपने में फिर से कपूर साहब आये और अपनी अन्तिम इच्छा जाहिर की।"

"न...हीं।"

"और यह सपना मुझे तब से लगातार आ रहा है।"

"नहीं...!"

कांपती आवाज।

"यह सच है संजना जी। बस यूं समझ लीजिये कि कपूर साहब ने मुझे मजबूर कर दिया था। लेकिन यह बात मैं आपसे सीधे नहीं कह सकता था—। उससे आप मेरी बात पर हरगिज विश्वास नहीं करतीं। उल्टे मुझे बुरा भला कहकर मुझे घर से निकाल देतीं—और यह भी हो सकता था कि आप पुलिस में मेरी कम्पलेंट करा देती।"

"ओह।"

"इसीलिये मैंने यह घिनौना रास्ता अख्तियार किया—बड़े शाह के पास जाना पड़ा मुझे—उससे यह बताया कि मैं आपकी दौलत के लिये आपसे शादी करना चाहता हूं—! और अपनी कोठी गिरवी रखकर अपने पास जितनी भी जमा पूंजी थी—सब बड़े शाह को दे दी। और ऐसा मैंने इसलिये किया कि आप मुझसे शादी करने को मजबूर हो जाये—साथ ही आपके दिल में मेरे लिये इतनी नफरत हो जाये कि आप अपनी दौलत किसी और के नाम कर दें। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि अपनी बीवी की दौलत पर ऐश करूं...बल्कि मैं तो यह चाहता हूं

कि मेरी बीवी मेरी कमाई पर ऐश करे।"

दूसरी तरफ एक बार फिर से सन्नाटा छा गया।

इधर गंगाधर के होंठों पर कुटिल मुस्कान नाच रही थी। अपना चलाया तीर उसे निशाने पर लगता महसूस हो रहा था।

"मैं तो बस कपूर साहब की अन्तिम इच्छा पूरी कर रहा हूं संजना जी। मुझे आपकी दौलत का कोई लालच नहीं। बल्कि मैं तो खुद यही चाहूंगा कि आप अपनी सारी सम्पत्ति अपने भाईयों के नाम कर दें। मुझे तो बस आपसे और कविता से मतलब है—जिसे मैं बाप का नाम देना चाहता हूं। और यह शादी आपको करनी ही पड़ेगी। गुडनाईट...।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया—।

उसके साथ ही उसके होंठों पर जहर भरी मुस्कान नाच उठी।

"अरे वाह रे गंगाधर!" उसने अपनी पीठ थपथपाई—"जवाब नहीं तेरी खोपड़ी का—क्या कमाल की बात की है तूने—कि वह साली संजना चारों खाने चित्त। अब वह सारी रात मेरे बारे में ही सोचती रहेगी—अपने प्यार का मैंने उसके दिल में ऐसा बीज बो दिया है कि सुबह तक वह पेड़ बन जायेगा—और मुझे पूरा विश्वास है कि वह किसी भी सूरत में अपनी दौलत किसी के भी नाम नहीं करेगी। हा...हा...हा...।"

एक शैतानी अट्टहास उबल पड़ा उसके होंठों से।

संजना अवाक्!

रिसीवर अभी भी उसके कान से लगा हुआ था।

कानों में जैसे सांय-सांय हो रही थी।

दिमाग भक्क से उड़ा जा रहा था।

खोपड़ी अंतरिक्ष में चक्कर लगा रही थी।

हालात इस क़दर पलटा खायेंगे कि वह सपने में भी नहीं सोच सकती थी।

उसने जब गंगाधर को फोन किया था तो उसके दिल में उसके लिये इतनी नफरत थी कि वह बयां नहीं कर सकती थी—तभी तो वह कमल अरोड़ा से मदद मांगने गई थी।

लेकिन अब—

अब हालात एकदम से बदल गये थे—और बदले हालात के चिन्ह उसके चेहरे पर साफ नजर आ रहे थे।

दूसरी तरफ से गंगाधर ने उससे जो बातें कहीं थीं—उन बातों ने उसे हिलाकर रख दिया था।

अब तो उसे भी ऐसा लगने लगा था जैसे उसका मरहूम पति उससे कह रहा हो कि वह गंगाधर से शादी कर ले।

गंगाधर उसकी दौलत के लिये नहीं—बल्कि उसके मरे हुए पति द्वारा मजबूर किये जाने पर उससे शादी कर रहा था।

यानि उसके पति की आत्मा अभी भी भटक रही है—और उस भटकती आत्मा को तभी चैन मिलेगा जब उसकी पत्नी उसकी बेटी सुरक्षित साये में पहुंच जायें—और वह साया गंगाधर था।

पता नहीं कितनी ही देर वह ख्यालों के इस तूफान में घूमती रही।

काफी देर बाद जाकर उसे जैसे होश आया—और जब उसे होश आया तो वह मन ही मन एक फैसला कर चुकी थी।

गंगाधर से शादी करने का फैसला।

अब गंगाध्यार उसे कमीना शख्स नजर नहीं आ रहा था—। बल्कि वह उसे शरीफ और नेक नजर आ रहा था। जिसे उसकी दौलत से नहीं—बल्कि सिर्फ उससे मतलब है।

और सोचते हुए वह सहसा ही उछल पड़ी।

कमल अरोड़ा का चेहरा एकदम से उसके जेहन में नाच उठा। साथ ही उसके शब्द भी उसके जेहन में डंक मारने लगे।

'आप निश्चिंत हो जाईये गंगाधर की शादी आपसे नहीं होगी।'

ऐसा क्या करेगा वह जो गंगाधर की शादी उससे नहीं हो।

उसने स्वयं से प्रश्न किया।

और जो उत्तर उसके जेहन में दिया—उसे सुनकर वह बुरी तरह से कांप उठी।

"ख...खू...न...।"

यह एक शब्द उसके जेहन से हथौड़े की तरह टकराया।

कुंद हो गया उसका दिमाग।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसके कि वह क्या करे क्या न करे।

गंगाधर की बातों ने उसके ऊपर ऐसा जादू कर डाला था कि अब वही उसे अपनी जिन्दगी का खिवईया नजर आने लगा था। और

जब उसके जेहन ने कुछ काम करना शुरू किया तो उसने हड़बड़ाते हुए रिसवीर को कान से लगाये हुए ही फोन का प्लंजर दबाया और जब डायल टोन उसके कान में बजने लगी तो वह कांपती उंगलियों से कमल अरोड़ा के घर का नम्बर डायल करने लगी।

मन ही मन वह भगवान से दुआ कर रही थी कि कमल अरोड़ा अभी घर से न निकला हो।

दूसरी तरफ बजती घण्टी वह धड़कते दिल से सुन रही थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो दूसरी तरफ कोई हो ही न—तभी तो अभी तक कोई भी फोन नहीं उठा रहा था।

आखिर दूसरी तरफ से रिसीवर उठाया गया।

"हैलो।" उसके कान में एक औरत की आवाज पड़ी।

"क...कमल...कमल अरोड़ा...।" संजना के होंठों से कांपता स्वर निकला।

"आप कौन बोल रही हैं।"

"मैं स...संजना...।"

"ओह संजना जी—कमल ने आपके बारे में मुझे सब कुछ बता दिया था—और मैंने ही उन्हें आपका कष्ट हरने के लिये कहा था। आप यकीन रखें—जो कुछ भी मेरे पति ने आपसे कहा है—वही होगा। गंगाधर की शादी आपसे नहीं होगी। आप निश्चिंत रहें...।"

"क...कमल कहां है?" दूसरी तरफ से आती बात को बीच में ही काटते हुए बोली वह।

"वो तो आपको फोन करते ही रवाना हो गये थे। अब तक तो वे गंगाधर के पास पहुंच भी गये होंगे।"

"न...हीं...!" कांप उठी संजना।

"क्या बात है संजना जी—आप कुछ ज्यादा ही घबराई हुई...।"

"मोबाईल है कमल के पास?"

"जी नहीं...लेकिन...।"

"ओह गॉड...।"

संजना ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। और बड़बड़ाई—"हे भगवान गंगाधर की रक्षा करना...।"

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे कि वह क्या करे क्या न करे।

आखिर उसने पुनः रिसीवैर उठाया और गंगाधर का नम्बर

मिलाने लगी।

गंगाधर को बचाने का उसको बस यही रास्ता दिख रहा था कि वह वक्त रहते गंगाधर को सावधान कर दे।

नम्बर मिलाने के साथ-साथ वह ऊपर वाले से यही दुआ कर रही थी कि केमल अरोड़ा अभी तक वहां न पहुंचा हो।

"टिन...टिना...टिन...टिन...।"

बड़े शाह की जेब में रखा मोबाईल बजा।

उस वक्त बड़े शाह के हाथ में पैग था और एक हसीनो-तरीन अधनंगी युवती उसके साथ इस तरह से सटकर बैठी थी जैसे वह बस उसकी गोद में बैठने के इशारे का इंतजार कर रही हो।

बड़े शाह का ऊपरी बदन निर्वस्त्र था। सिर्फ पायजामा पहन रखा था उसने और वह इस वक्त अपने बैडरूम में बैड की पुश्त से टेक लगाये अधलेटी अवस्था में बैठा था।

डीलक्स साईज के बैड पर सिल्क की सफेद रंग की चादर बिछी हुई थी। बैड के करीब ही एक टेबल पर स्काच की बोतल के साथ एक प्लेट में तंदूरी चिकन था तथा उसके करीब एक खाली प्लेट में चिकन की हड्डियां पड़ी थीं।

काफी बड़ा था वह बैडरूम।

बैड के दाँई तरफ एक सोफा सैट पड़ा था—जिसके आगे सैंटर टेबल रखी हुई थी। दाईं तरफ वाली दीवार पर एक बड़ी सीनरी लगी थी—लेकिन हकीकत में वह सीनरी नहीं थी—बल्कि टेलीविजन था। बस रिमोट दबाने की देर थी कि सिनरी गायब हो जाती और उसके स्थान पर टी०वी० चालू हो जाता।

"इस वक्त कौन आ मरा?"

मोबाईल के बजने की आवाज सुनकर—शाह ने बुरा मुंह बनाया।

"फोन उठा।" वह युवती से बोला।

युवती फौरन उसके करीब से हटी और बैड से उतरकर सोफे पर पड़े उसके कुर्ते को उठाया और उसकी जेबें टटोलकर उसमें से उसका मोबाईल निकाला और कुर्ते को वापिस सोफे पर रखकर मोबाईल उसके हाथ में दे दिया।

बड़े शाह ने पैग युवती के हाथ में दिया और मोबाईल का कनैक्टिंग का बटन दबाकर कान से लगाया।

"हैलो...!"

"मैं बनारसी बोल रहा हूं बड़े शाह जी।"

दूसरी तरफ से बनारसी की उत्तेजित आवाज सुनकर चौंक उठा बड़ा शाह—।

"बोल...!" वह हल्के से गुर्राया—"संजना ने खुदकुशी कर ली क्या?"

"नहीं बड़े शाह जी।"

"तो फिर फोन क्यों किया?"

"जो हम समझ रहे थे—वैसा कुछ नहीं है बड़े शाह जी।"

"क्या मतलब?" माथे पर बल पड़ गये उसके।

"चाल चली थी कमल अरोड़ा ने हमारे साथ?"

"क्या बक रहा है...साफ-साफ बोल क्या बात है? क्या चाल चली है उस हरामी ने?"

"आ...आ...प खुद ही सब कुछ सुन लीजिये शाह जी—आप सब समझ जायेंगे। मैं टेप रिकार्डर को फोन से लगा रहा हूं।"

"और फिर बड़े शाह के मोबाईल पर फोन की घण्टी बजने की आवाज आई। फिर फोन उठाने की—और फिर संजना की 'हां' का स्वर उसके कान में पड़ा—फिर फोन रखने की आवाज आई।

फिर खामोशी।

थोड़ी देर बाद फिर से फोन उठाने की आवाज आई और फिर संजना की वो सारी बातें जो उसने गंगाधर से की थीं। और फिर काफी देर बाद संजना की आवाज जिसमें वह कमल अरोड़ा को पूछ रही थी।

बड़ा शाह समझ गया कि अब वो कमल अरोड़ा के घर बात कर रही है और फिर संजना की जिस तरह की बातें बड़े शाह के कान में पड़ीं—उससे वह समझ गया कि कमल घर में नहीं है।

घर में नहीं है—और जिस तरह से संजना के आखिरी शब्द उसके कान के पर्दे से टकराये थे जिसमें वह गंगाधर की सलामती के लिये भगवान से प्रार्थना कर रही थी—उससे वह समझ गया कि कमल अरोड़ा अवश्य ही गंगाधर को खत्म करने गया है—। साथ ही वह यह समझ गया कि गंगाधार ने कोई चाल चलकर संजना के दिल में अपने लिये प्यार के बीज बो दिये हैं।

और फिर सहसा ही बड़े शाह के होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

एक जहर से भरी रहस्यमय मुस्कान।
"बनारसी।" वह बोला।
"हुक्म बड़े शाह जी।" दूसरी तरफ से बनारसी की आवाज आई।
"विक्की का नम्बर बोल।"
"विक्की...।"
"मुझे उसकी फौरन जरूरत है।"
दूसरी तरफ से विक्की का नम्बर बताया गया।
"घर जा—और लम्बी तानकर सो जा।"
हंसा बड़ा शाह और मोबाईल को कान से हटाकर विक्की का नम्बर डायल करने लगा।
शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई।
"हैलो...।"
"विक्की...!" बड़े शाह के होंठ हिले।
"ब...बड़े शाह जी...।"
दूसरी तरफ से हड़बड़ायी आवाज आई।
"क्या कर रहा है?"
"आप हुक्म कीजिये।"
बड़ा शाह उसे समझाने लगा।
"समझ गया?" अन्त में पूछा उसने।
"सब समझ गया हूं बड़े शाह जी।"
"तो हो जा शुरू...।"
बोला बड़ा शाह और मोबाईल को कान से हटाकर उसका बटन दबाया और उसे बैड पर ही रखते हुए युवती से पैग लेते हुए बोला—"कपड़े उतार।"
युवती तो जैसे उसके हुक्म का इन्तजार कर रही थी।
तुरंत वह बैड पर खड़ी हुई और जो नाम मात्र के कपड़े उसने पहन रखे थे—वे भी उतार दिये।
और फिर जश्न शुरू हो गया।

कमल अरोड़ा ने बाईक गंगाधर की कोठी के पीछे वाली गली में एक ऐसे स्थान पर रोकी जहां घुप्प अंधेरा था।
वहीं पर उसने बाईक को स्टैण्ड पर लगाया और उसका हेंडल

लॉक करके कोठी के पीछे की बांऊड्री वाल की तरफ बढ़ा।

बाऊंड्री वाल के करीब आकर उसने बाहें आसमान की तरफ की और घुटनों को मोड़कर एकदम से स्प्रिंग की तरह खोला।

फौरन उसका शरीर हवा में उछला और अगले ही पल बाउंड्री वाल का ऊपरी सिरा उसके हाथों में था।

बिना कोई वक्त गंवाये वह फुर्ति से ऊपर उठा और बाउंडी वाल पार करते हुए भीतर कूद गया।

पक्का फर्श था वहां जहां पर उसके पैर पड़े थे।

पीछे कोई लॉन नहीं बना रखा था उसने।

दो मंजिला गंगाधर की कोठी थी तो शानदार—लेकिन जगह कम होने के कारण उसने लॉन नहीं बनाया हुआ था। न आगे न पीछे।

कमल अरोड़ा कुछ क्षणों तक उसी स्थान पर खड़ा रहा जहां पर कि उसके पैर पड़े थे। उसके हाथ इस वक्त मार्शल आर्ट की मुद्रा में थे और शरीर पूरी तरह से तना हुआ था।

किसी भी सम्भावित खतरे से निपटने के लिये वह पूरी तरह से तैयार था।

कुछ देर तक जब उसे कोई भी ख़तरा महसूस नहीं हुआ तो उसके तने हुए शरीर में ढीलापन आ गया और वह दबे पांव कोठी की तरफ बढ़ने लगा।

"पीले...पीले सा...ले...ग...गंगाधर...आज खूब...पीले... हिच्च...।"

नशे में धुत्त गंगाधर ने पैग होंठों की तरफ बढ़ाते हुए स्वयं को ही सम्बोधित किया।

"क...ल...कल...तेरी शादी...संजना के साथ होने जा रही है...पीले...।"

और उसने पैग होंठों से लगाया और गटागट पीने लगा।

पैग पीने के दौरान ही ढेर सारी शराब उसके होंठों के कोरों से निकलकर उसके कपड़ों पर आ गिरी। साफ पता चल रहा था कि वह इस वक्त अत्याधिक नशे में है।

"क...ल...कल तू करोड़ों का मालिक...होने जा रहा ...रहा है...उ...ऊपर से...स...संज...ना...फ्री...हा...हा...हा...अरे...

वाह...वाह रे गं...गाधर...तेरा भी जवाब नहीं...हे...हे...हे।" उसने हंसते हुए खाली पैग को टेबल पर रखा और फिर घूमते हुए बोतल उठाई और नया पैग तैयार करने लगा।

पैग भरते वक्त उसे हाथ लहक रहे थे—जिससे कि शराब आधी बाहर टेबल पर गिर रही थी।

किसी तरह से उसने अपना पैग भरा और बोतल को टेबल पर रखकर पैग उठाया और उसे होंठों से लगाकर पीने लगा।

पैग खाली करके उसने हिचकी ली और सोफे के हत्थे पर हाथ टिकाते हुए खड़ा हो गया।

"तू...तू...यहीं रह...ना...हिच्च...ल...।" वह बोतल को देखते हुए हंसा—"जाना...नहीं...ग...गिर...ना भी नहीं...हिचक ...मैं...अ...अभी आया....।"

वह पुनः हंसा और झूमते हुएस पलटा और लड़खड़ाते हुए बाथरूम की तरफ बढ़ा।

"कल...क...ल...तेरी...शादी है रे...गंगाधर...क...ल...तेरी शा...दी है।"

लड़खड़ाते हुए वह बाथरूम के दरवाजे के सामने पहुंचा और उस पर हाथ रखकर उसे भीतर की तरफ धकेला।

दरवाजा तेजी से भीतर की तरफ खुला।

और गंगाधर अपना बैलेंस कायम नहीं रख पाया।

नतीजा—वह पूरे वेग से आगे को गिरा।

सामने एल्यूमीनियम की पानी की भरी हुई बाल्टी पड़ी थी।

'ठाक...!'

गंगाधर का माथा सीधा बाल्टी के कुंडे पर जा पड़ा।—और कुण्डा पूरा का पूरा उसके माथे की हड्डी को तोड़ते हुए उसकी खोपड़ी में जा धंसा।

हिला भी नहीं वह।

झटका भी नहीं खाया उसने।

वैसे ही पड़ा रहा जैसे गिरा था।

उसका पैर फर्श से लगा हुआ था और माथा ऊपर बाल्टी के किनारे पर था।

बाल्टी के बाहरी हिस्से के साथ खून लग-लगकर नीचे बहने लगा और भीतर पड़ा पानी लाल होने लगा।

'ठाक...!' की आवाज सुनकर कमल अरोड़ा तुरंत एक्शन की मुद्रा में आ गया।

उसकी चौकन्नी निगाहें तेजी से अपने आसपास का जायजा लेने लगीं।

उसे आवाज से ऐसा प्रतीत हुआ था मानो कोई भारी चीज किसी धातु पर गिरी हो। क्योंकि धातु के खड़कने की भी आवाज भी उसके कानों में पड़ी थी।

कुछ देर तक वह यूं ही सतर्क पोजीशन में खड़ा रहा। और फिर सीधा हो वह पूरी सावधानी से उस कमरे की तरफ बढ़ा जिसमें से कि आवाज आई थी।

वह कोठी के भीतर था उस वक्त—! पीछे के कम्पाऊंड से दाखिल हुआ था वह।

दरवाजा सिर्फ भिड़ा हुआ था—सो उसे भीतर प्रवेश करने में जरा भी परेशानी नहीं हुई थी।

हॉल को पार करते हुए वह बाँईं तरफ के उस कमरे की तरफ बढ़ा जिसमें से कि उसे आवाज आई थी।

उस कमरे का दरवाजा खुला हुआ था।

पूरी सावधानी बरतते हुए वह भीतर प्रविष्ट हुआ।

सामने टेबल पर शराब की एक खाली हो रही बोतल पड़ी थी—एक खाली पैग। साथ में प्लेट में संतरे की फांक पड़ी थी।

घूमती हुई उसकी निगाहें जैसे ही बाथरूम की तरफ गईं—वह बुरी तरह से उछल पड़ा।

बाथरूम के आधा बाहर-आधा अन्दर पड़ा था गंगाधर—उसका माथा बाल्टी पर टिका हुआ था।

हालांकि वह गंगाधर को पहचानता नहीं था—लेकिन उसे समझने में देर नहीं लगी कि वही गंगाधर है।

तुरंत वह उसके करीब पहुंचा।

खून अब उसके पेट के नीचे तक फैल चुका था—पानी की बाल्टी अब खून से भरी नजर आने लगी थी।

कमल अरोड़ा का कलेजा धाड़-धाड करता उसकी पसलियों से टकराने लगा।

वह उसे मारने नहीं आया था वहां—बल्कि उसका किडनेप करने आया था—ताकि कल को संजना से उसकी शादी न हो। लेकिन यहां तो हालात ही और हो रहे थे।

धड़कते कलेजे को किसी प्रकार सम्भाले उसने झुककर उसकी नब्ज टटोली।

बुरी तरह से कांप उठा वह।

नब्ज गायब हो चुकी थी उसकी।

उसने बड़ी मुश्किल से थूक सटकी और वापिस पलटकर तेजी से कमरे से निकल गया।

कुछ ही देर में वह बाऊंड्री वाल पार कर गली में पहुंचा और अपनी बाईक की तरफ लपका।

आनन-फानन उसने बाईक स्टार्ट की और वहां से भाग निकला।

गली से निकलकर जब वह मैन रोड पर पहुंचा तब जाकर उसकी जान में जान आई।

ट्रिन...ट्रिन...।

फोन की घण्टी घनघनाई।

गौतम उस वक्त अपने ऑफिस में ही बैठा था।

उसके सामने टेबल पर स्काच की बोतल पड़ी थी—एक डोंगे में चिकन था और वह उस वक्त अपने हाथ में पकड़ा पैग खत्म कर रहा था।

पैग खत्म कर उसने खाली पैग टेबल पर रखा और फोन को अपनी तरफ खिसकाकर बड़बड़ाया—

"इस वक्त कौन साला आ मरा।"

बड़बड़ाते हुए उसने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो—पुलिस स्टेशन।"

नशे की कराहट साफ महसूस की जा सकती थी उसकी आवाज में।

"मुझे इंसपेक्टर गौत से बात करनी है।"

दूसरी तरफ से एक जनना आवाज आई।

"वही बोल रहा हूं।"

"कमल अरोड़ा को तो तुम जानते ही हो इंस्पैक्टर?"

दूसरी तरफ से कमल अरोड़ा का नाम सुनकर गौतम एकदम से सीधा होकर बैठ गया। साथ ही उसने बुरा मुंह बनाया जैसे कमल अरोड़ा के नाम ने उसका नशा उतार दिया हो।

"क्या हुआ कमल अरोड़ा को?" वह बोला।

"उसे कुछ नहीं हुआ—बल्कि किसी और का बुरा कर दिया है उसने।"

"क्या मतलब?" बुरी तरह से चौंका गौतम।

"कपूर इंडस्ट्री के पार्टनर गंगाधर को खत्म करने गया है वो। और कोई बड़ी बात नहीं कि अब तक उसने कत्ल कर भी दिया हो।"

गौतम बुरी तरह से उछल पड़ा।

"तुम...तुम...कौन बोल रही हो?"

जवाब में दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

हड़बड़ाते हुए गौतम ने रिसीवर रखा और टेबल के पाये से लगे पुश बटन को दबाया।

इधर सिपाही ऑफिस मे घुसा उधर फोन की घण्टी पुनः चीखी।

"हवलदार रामसिंह—चेतन—और काले के साथ जिप्सी में बैठ।"

रिसीवर पर हाथ रखते हुए बोला वह और फिर रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो—पुलिस स्टेशन।"

"मैं संजना बोल रही हूं।" दूसरी तरफ से संजना की घबराई आवाज आई।

"संजना...! संजना कौन?"

"कपूर इन्डस्ट्री की मालिक।"

बुरी तरह से उछल पड़ा गौतम। मगर तेजी से उसने स्वयं को सम्भाला और बोला—

"कहो।"

"शिव चौक के पीछे वाली गली में मेरे पार्टनर गंगाधर की कोठी है। एक सौ तीन...। प्लीज आप तुरंत वहां पहुंचें। उनकी जान को खतरा है।"

"मगर आप...।"

"आपने जो कुछ भी पूछना हो—बाद में पूछ लेना—लेकिन

इस वक्त आप उनकी जान बचाईये।"

और उसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

गौतम की खोपड़ी गुल।

एक ही वक्त में दो-दो औरतों का फोन आ गया।

एक ने तो अपना नाम बता दिया—मगर दूसरी ने अपने बारे में कुछ नहीं बताया।

कौन हो सकती है वो दूसरी?

क्या लगती है वो गंगाधर की?

और सबसे बड़ा सवाल उसके जेहन में यह उभरा कि संजना और दूसरी औरत को पता कैसे चला कि गंगाधर का खून होने जा रहा है।

संजना ने तो बस यही कहा कि गंगाधर की जान को खतरा है—मगर दूसरी औरत ने तो सीधे कमल अरोड़ा का नाम ले दिया था कि वह कत्ल करने जा रहा है।

उसने अपने जेहन में उठ रहे तमाम सवालों को एक तरफ हटाया और बाहर लपका।

इस वक्त तो उसे पहले गंगाधर को देखना था।

मन ही मन वह ऊपर वाले से यही दुआ मांग रहा था कि उसके पहुंचने तक गंगाधर मर चुका हो।

इस तरह उसे कमल अरोड़ा से अपनी उस बेइज्जती का बदला लेने का मौका तो मिलेगा जो उसने मीडिया के सामने की थी।

भगवान ने गौतम की सुन ली थी।

जाते ही गंगाधर की लाश के ही दर्शन हुए उसे।

लाश उसी हालत में पड़ी हुई थी जिस हालत में कमल अरोड़ा छोड़ गया था।

वैसे ही उसके माथे से बाल्टी का कुण्डा ठुका हुआ था।

फर्श पर खून बिखरा पड़ा था—और बाल्टी ऐसे ही रही थी मानों वह खून से भरी हुई हो।

सबसे हैरानी वाली बात यह थी कि घर में कोई नौकर नहीं था।

बस अकेला था वह।

उसने अपनी जेब से मोबाईल निकाला—और डॉक्टर तथा

फोटोग्राफर और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट को वहां का पता बताते हुए पहुंचने को कहा।

इधर उसने मोबाईल जेब में डाला—उधर सोफे पर पड़े फोन की घण्टी बज उठी।

वह सोफे के करीब पहुंचा और झुककर रूमाल से रिसीवर उठाकर कानों से लगाते हुए बोला—

"हैलो!"

"म...मैं संजना बोल रही हूं इंस्पैक्टर...।" दूसरी तरफ से संजना की कांपती आवाज आई—"ग...गंगाधर...ठी...क है न?"

"सॉरी?" गम्भीर स्वर में बोला गौतम—"वो अब इस दुनिया में नहीं।"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

गौतम हैलो...हैलो कहता रहा—लेकिन दूसरी तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

आखिर गहरी सांस छोड़ते हुए उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और रूमाल को जेब में डालते हुए हवलदार रामसिंह से बोला—

"तुम यहीं रहना—पंचनामा तुमने ही तैयार करना है।"

"ज...जी जनाब।"

"मैं जरा कातिल को देखता हूं—कैसी नींद ले रहा है वो?"

कहकर वह कमरे से बाहर निकल गया।

कुछ ही देर बाद वह जिप्सी ड्राईव करता कमल अरोड़ा के घर की तरफ उड़ा जा रहा था।

कमल अरोड़ा ने बाईक अपने घर के दरवाजे के आगे रोकी और उसे साईड स्टैण्ड पर खड़ा करके दरवाजे के सामने आया और कॉलबैल का पुश बटन दबाकर छोड़ दिया।

भीतर कहीं घण्टी का मधुर संगीत गूंजा।

करीब एक मिनट इंतजार करने के बाद कमल अरोड़ा ने पुनः बटन दबाया।

"कौन?"

भीतर से नेहा की आवाज आई।

"मैं हूं—दरवाजा खोलो।"

कमल अरोड़ा बोला और बाईक के पास वापिस आकर उसे स्टैण्ड से उतारकर मोड़ते हुए उसे दरवाजे के ऐन सामने ले आया।

तभी दरवाजा खुला।

कमल अरोड़ा ने बाईक धकेलते हुए दरवाजे में प्रविष्ट की और आंगन में ले जाकर खड़ी कर दी।

नेहा ने दरवाजा बन्द किया और कुण्डा लगाकर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोली—

"कुछ बुरा तो नहीं कर आये तुम? उस वक्त पता नहीं जोश में क्या-क्या कह गई थी मैं। और संजना भी घबरा गई थी।"

"संजना...!" चौंका कमल अरोड़ा।

"हां...फोन आया था उसका... ।"

"क्या कह रही थी वह—?" भीतर कमरे में दाखिल होते हुए पूछा उसने।

नेहा ने बताया।

"ओह।"

"मैं भी तो तुम्हें बेवकूफाना राय दे बैठी थी। कहीं मार तो नहीं आये तुम उसे?"

"नहीं...!" बैड पर बैठे जूते उतारते हुए बोला वह—"मैंने उसे कुछ नहीं कहा—ऊपर वाले ने मेरे पहुंचने से पहले ही उसका काम कर डाला था।"

"क...या मतलब?"

कमल अरोड़ा जैसे ही बताने को हुआ—वह एक दम से चौंक पड़ा।

मेन डोर के खुलने की आवाज उसके कानों में पड़ी थी।

तुरंत वह बाहर की तरफ लपका।

कमरे से बाहर निकलते ही उसे मेन डोर से एक व्यक्ति निकलते नजर आया।

"ऐ...कौन है?"

गुर्राया कमल अरोड़ा और उसके पीछे लपका।

बाहर निकलने वाले ने एक बार गर्दन पीछे मोड़कर उसकी तरफ देखा—फिर वहां से ऐसे भागा मानो उसके पीछे भूत लगे हों।

जब तक कमल अरोड़ा मकान से बाहर निकलता—तब तक वह गली के मोड़ पर पहुंच चुका था।

मोड़ पर उसने एक बार फिर कमल की तरफ देखा।

ऊपर सोडियम लाईट जल रही थी—सो इस बार कमल अरोड़ा को उसका चेहरा साफ नजर आया।

गोरे रंग का खूबसूरत शक्ल वाला वह व्यक्ति बाईस तेईस साल का जवान लड़का था जिसने जीन्स और टी शर्ट पहन रखी थी।

बस इतना ही नजर आया उसे—और वह लड़का मोड़ पर गायब हो गया।

जितनी तेजी से वह लड़का गली के अन्त तक पहुंचा था—उससे कमल अरोड़ा समझ गया कि वह उसे किसी भी सूरत में पकड़ नहीं पायेगा।

बेशक वह कुंगफू—मार्शल आर्ट में माहिर था—मगर वो एथलीट तो नहीं था।

गहरी सांस छोड़ते हुए वह वापिस मुड़ा और जैसे ही दरवाजे में प्रविष्ट हुआ—उसकी नजर आंगन में खड़ी नेहा पर पड़ी।

उसी वक्त उसके जेहन में एक विस्फोट हुआ और उसी के साथ ही उसकी आंखों में संदेह के विषैले नाग ने फन उठा लिया।

दरवाज बन्द कर कुण्डा लगाकर वह नेहा के सामने आ खड़ा हुआ और उसकी आंखों में झांकते हुए गुर्राया—

"कौन था वो?"

बुरी तरह से हड़बड़ा उठी नेहा।

"म...मैं उसे नहीं जानती...।"

"तो फिर अन्दर कैसे आया वो?"

"म...मुझे क्या मालूम? मैं तो खुद हैरान हूं कि वह भीतर कैसे आ गया। कहीं वह कोई चोर तो नहीं था?"

"कोई सामान तो हिला नहीं अपनी जगह से। और अगर वह चोर होता तो मेरे आने से पहले तक छुपकर न बैठा रहता यहां, बल्कि तुम्हें बेहोश करके या मारकर चोरी करके भाग चुका होता।"

"त...तुम...मुझ पर शक कर रहे हो?"

कमल अरोड़ा कुछ नहीं बोला—बस चुपचाप गर्दन झुकाई और कमरे में प्रवेश कर बैड पर जा लेटा।

नेहा का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

वह उसके पीछे-पीछे भीतर आई और उसके करीब बैठकर भर्राये स्वर में बोली—

"मेरा यकीन करो कमल—मैं उसे नही जानती। मुझे नही पता कि वह भीतर कैसे आया?"

कहते हुए उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

कमल अरोड़ा ने उसकी किसी बात का जवाब नहीं दिया...बस उसकी तरफ पीठ की और आंखें बंद कर ली।

इस वक्त उसके अपने दिल पर क्या बीत रही थी—यह वो ही जानता था।

नेहा उसके करीब बैठी खुद की पवित्रता की दुहाई दे रही थी।

तभी—

'डिंग...डां...ग...।'

कॉल बैल का मधुर संगीत गूंजा।

कमल अरोड़ा ने चौंककर आंखें खोलीं और उठ बैठा।

चौंकी नेहा भी थी—मगर बोली कुछ नहीं वह।

कमल अरोड़ा बैड से उतरा और कमरे से निकलकर मेन डोर की तरफ बढ़ा।

"कौन?" मेन डोर के पीछे आकर वह बोला।

"पुलिस!" बाहर से गौतम की आवाज आई—"दरवाजा खोलो।"

गौतम की आवाज सुनकर कमल अरोड़ा का कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा।

चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगीं।

दरवाजा तो खोलना ही था उसे।

उसने खोला।

सामने गौतम खड़ा था।

होंठों पर कमीनी मुस्कान लिये—हाथ में हथकड़ी लिये।

"क...या बात है इन्सपैक्टर?" उसने पूछा—मगर जवाब वह पहले ही जानता था। तभी तो उसका कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा था।

"यू आर अरैस्टिड मिस्टर कमल अरोड़ा।"

कहते हुए वह भीतर प्रवेश कर गया।

"म...मैंने क्या किया है?" कांपते स्वर में बोला वह।

"मर्डर...।"

"मर्डर...?"

"हां मर्डर...कपूर इंडस्ट्री के पार्टनर गंगाधर का मर्डर।"

"न...हीं...!" पीछे हटा कमल—"मैंने गंगाधर का कत्ल नहीं किया।"

"अपने इस दावे को तुम अदालत में साबित करना कमल अरोड़ा। इस वक्त तो मुझे तुम बस मेरा फर्ज पूरा करने दो।"

कहकर वह उसके करीब आया और उसकी कलाई में हथकड़ी डाल दी।

कमल अरोड़ा ने गर्दन मोड़कर नेहा की तरफ देखा जो कि उससे थोड़ी पीछे बुत बनी खड़ी थी। उसका चेहरा ऐसा हो रहा था मानो उसके चेहरे का सारा खून निचोड़ लिया गया हो।

कमल अरोड़ा के जेहन में फैले शक के कीड़े ने अपना फन और ऊंचा उठा लिया।

वह गिरफ्तार हो गया था—और उसकी बीवी उसे बस मूक दर्शक बनी देख रही थी—कुछ भी नहीं कह रही थी वह जबकि उसे चाहिये था कि वह आगे बढ़कर कमल की बेगुनाही की दुहाई देती।

मगर वह तो बिल्कुल बुत बनी खड़ी थी।

"चलो इंस्पैक्टर!" वह तनिक नफरत भरे स्वर में बोला।

गौतम के ऑफिस में कमल अरोड़ा उसके सामने कुर्सी पर बैठा था।

उसकी कलाई में पड़ी हथकड़ी का दूसरा सिरा कुर्सी के हत्थे में पिरोया हुआ था।

हालांकि कमल अरोड़ा के लिये वह हत्था कोई मायने नहीं रखता था—उसकी कैरेट का हल्का-सा वार हत्थे को दो टुकड़ों में बाँट सकता था। लेकिन उसका ऐसा कुछ भी करने का इरादा नहीं था।

हां—मन ही मन हैरान जरूर हो रहा था वह।

जिस तरह से गौतम उसे गिरफ्तार करने आ पहुंचा था—उससे तो ऐसा लगता था कि उसे उसके घर से निकलने से लेकर गंगाधार के घर पहुंचनें की पूरी जानकारी थी।

तभी तो वह इस तरह इतनी जल्दी उसे गिरफ्तार करने आ पहुंचा था—जबकि हिसाब से तो उसे गंगाधर की मौत की खबर भी सुबह मिलनी चाहिये थी।

फिर इतनी जल्दी पता कैसे चला इंस्पैक्टर को?

फौरन उसके जेहन में संजना का नाम उभरा।

"हां...उसी ने बताया होगा पुलिस को।" व मन ही मन

बड़बड़ाया—"क्योंकि सिर्फ वही जानती थी कि मैं उसे गंगाधर से निजात दिलाने जा रहा हूं।"

यानि संजना ने मुझे फंसाने के लिये चाल चली थी।

"लेकिन संजना से मेरी क्या दुश्मनी है? मैं तो उसे जानता तक नहीं।"

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसके।

"चलो—शुरू हो जाओ।"

तभी गौतम की आवाज ने उसकी सोचों को बिखेर कर रख दिया।

कमल अरोड़ा ने बैचेनी से पहलू बदला और बोला—

"मेरा यकीन करो इंस्पैक्टर—मैंने गंगाधर का खून नहीं किया।"

"फिर तो तू यह भी कहेगा कि तू वहां गया ही नहीं।"

जवाब में कमल अरोड़ा के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"झूठ मत बोलना तू।" तभी गुर्राया गौतम—"क्योंकि मेरे पास इस बात का गवाह है कि तू गंगाधर के घर गया था।"

"ह...हां...मैं...मैं वहां गया था।" फंसे स्वर में बोला वह—"ल...लेकिन मैंने उसका खून नहीं किया।"

"क्यों गया था तू उसके पास? तेरा साला लगता था क्या वो?"

"न...हीं...।"

"कोई रिश्तेदारी थी?"

"न...हीं।"

"कोई कर्जा लिया था उसने तेरे से जो तू उससे वसूल करने गया था।"

"म...मैं तो उसे जानता ही नहीं था।"

"तो फिर क्या धनिया लेने गया था उसके पास?"

कमल अरोड़ा ने सब कुछ सच-सच बता देने में ही अपनी भलाई समझी—। सो उसने संजना से मिलने से लेकर गंगाधर के घर पहुंचने और वहां से निकलने तक की सारी कहानी कह सुनाई—लेकिन यह बात नहीं बताई कि गंगाधर को मारने की सलाह उसकी बीवी ने दी थी उसे।

"ओ...!" उसकी बात खत्म होते ही गौतम ने भौंहे उछालीं—"तो जनाब अब फिर से बड़े शाह जी को बीच में घसीट रहे हैं। अरे अगर छोटे शाह का नाम लिया होता तो माना भी जा सकता था कि तुझे

फंसाने के लिये यह काम छोटे शाह ने किया है। क्योंकि तेरे ही कारण उसके फरार होने की एक योजना फेल हो गई और दूसरी योजना को अंजाम देने के लिये खाकी वर्दी का रंग खून से रंग गया—। एक संतरी एक हवलदार और एक सब इंस्पैक्टर मरा है—इस थाने में। और इस वक्त पुलिस ही नहीं—सी०आई०डी० भी शिद्दत से उसे तलाश कर रही है—जबकि सी०आई०डी० भी बड़े शाह जी को बेगुनाह मान चुकी है। और तू फिर भी उन्हीं को... ।"

"मुझे संजना ने जो बताया था वो मैंने तुम्हें बता दिया।"

"यानि तू कहना चाहता है कि संजना की रजामंदी से तू गंगाधर का कत्ल करने गया था।"

"मैं उसे कत्ल करने नहीं गया था।"

"लेकिन संजना ने तो फोन पर यही कहा था कि गंगाधर का कत्ल होने जा रहा है।"

कमल अरोड़ा की रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई।

उसकी सोच ठीक ही निकली—और अब उसे संदेह नहीं रह गया था कि बड़े शाह ने उसे फंसाने के लिये यह जाल फैलाया था।

तभी फोन की घण्टी बजी।

'ट्रिन...ट्रिन... ।'

गौतम ने फोन को अपने सामने खिसकाया और उसका हैंड फ्री स्पीकर का बटन दबाकर रिसीवर उठाये बिना ही बोला।

"हैलो।"

"एस०पी० स्पीकिंग।"

दूसरी तरफ से आवाज आई जो कि कमल अरोड़ा ने भी साफ सुनी।

"सर...!" तत्परता से बोला गौतम।

"गश्त पर निकले नहीं अभी?"

"नो सर—कत्ल हो गया था एक।"

"किसका?"

"कपूर इंडस्ट्री के पार्टनर गंगाधर का खून हुआ है सर।"

"और तुम यहां बैठे हो थाने में?"

"लाश का पंचनामा हवलदार रामसिंह भर रहा है सर—और मैं यहां कातिल से पूछताछ कर रहा हूं।"

"क्या?" चौंकती आवाज—"तुमने कातिल को पकड़ लिया?"

"यस सर?"

"क्या कातिल मौके पर मौजूद था?"

"नो सर...!"

"तो फिर पता कैसे चला तुम्हें?"

"दो फोन आये थे मुझे सर। पहले एक गुमनाम फोन आया था सर। किसी औरत ने फोन किया था जिसमें उसने कहा था कि कमल अरोड़ा गंगाधर का खून करने गया हुआ है—और उसने शंका जाहिर की थी कि हो सकता है उसने खून कर ही न दिया हो।"

"और दूसरा फोन?"

"वह कपूर इंडस्ट्री की मालकिन संजना का था। उसने कातिल का नाम तो नहीं लिया—मगर इतना जरूर कहा कि गंगाधर की जान खतरे में है—और मैं फौरन उसके घर पहुंचू। मैं फौरन गंगाधर के घर गया सर—मगर वहां मुझे गंगाधर की लाश मिली।"

"ओह।"

"कातिल कहीं फरार न हो जाये—इसलिये मैंने वहां की सारी जिम्मेदारी हवलदार रामसिंह को सौंपी और सीधा कमल अरोड़ा के घर पहुंचा और उसे गिरफ्तार कर लिया।"

"यह कमल अरोड़ा कहीं वही तो नहीं जिसने बंधक बच्चों को छुड़ाया था?"

दूसरी तरह से एस० पी० की सोच भरी आवाज हुई।

"यस सर।"

"कमाल है—ऐसा आदमी और हत्या। तुमने उससे पूछताछ की?"

"वह तो यह कह रहा है कि उसने हत्या नहीं की। हां गंगाधर के घर जाने की बात कबूल कर रहा है।"

"कहीं...यह खून सचमुच कमल अरोड़ा ने न किया हो—वह बेगुनाह हो...।"

"ले...लेकिन सर...।"

"उस औरत की तलाश करो इंस्पैक्टर...जिसने कमल अरोड़ा का नाम लेते हुए कहा था कि वह खून करने जा रहा है।"

"य...यस सर।"

"जिस आदमी ने अपनी जान पर खेलकर कानून की मदद की हो वह खुद कानून तोड़ेगा—मेरा दिल नहीं मानता कि कमल अरोड़ा ने कत्ल जैसा संगीन जुर्म किया है—तुम निष्पक्षता से तफ्तीश करो।"

"यस सर।"

दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

"क्या बात है?" फोन का बटन दबाते हुए गौतम कमल अरोड़ा को देखते हुए मुस्कुराया—"बड़ी तरफदारी कर रहे हैं एस० पी० साहब तुम्हारी, लगता है काफी खातिरदारी कर रहे हो तुम उनकी।"

"मैंने तो उन्हें ढंग से देखा तक नहीं।" कमल अरोड़ा गम्भीरता से बोला—"और यह बात अपनी गांट बांध लो कि मैंने गंगाधर का खून नहीं किया।"

"यह तो तफ्तीश से पता चल ही जायेगा। बेशक एस० पी० साहब कह रहे हैं कि तुम बेगुनाह हो—लेकिन मेरी तफ्तीश में अगर तुम्हारे खिलाफ एक छोटा-सा भी सबूत मिल गया तो मैं तुम्हें किसी भी सूरत में नहीं छोड़ने वाला।"

कहकर उसने पुनः फोन का हैंडसैट फ्री कर बटन दबाया।

स्पीकर में से तुरंत डायल टोन की आवाज आने लगी।

गौतम ने एक्सचेंज का नम्बर मिलाया।

दूसरी तरफ से घण्टी बजने की आवाज पूरे ऑफिस में सुनाई देने लगी।

तभी दूसरी तरफ से फोन उठाया गया और एक आदर भरी आवाज गूंजी।

"टैलीफोन एक्सचेंज से मैं विजय कुमार आपका स्वागत करता हूं।"

"मैं पुलिस स्टेशन में इंस्पैक्टर गौतम बोल रहा हूं।"

फोन पर गर्दन झुकाये बोला गौतम।

"यस सर।" आवाज आई।

"मुझे नौ और दस बजे के बीच में थाने में आये तमाम फोन्स के नम्बर चाहिये।"

"होल्ड कीजिये प्लीज...।"

आवाज आई।

गौतम ने तुरन्त एक पैन उठाया और एक कागज घसीटकर अपने सामने रख लिया।

शीघ्र ही फोन के स्पीकर में से आवाज आई।

"नोट कीजिये सर।"

"यस।"

"नौ बजकर दस मिनट पर ३६३५८९ नम्बर से फोन आया था।"

"आगे।" बोला गौतम—"वह नम्बर उसने नोट नहीं किया जो कि यही दर्शाता था कि वह नम्बर वह जानता था। नौ बजकर सत्रह मिनट पर ५००८१२५ से फोन आया था।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कमल अरोड़ा।

वह नम्बर उसके कानों ने भी सुना था—और गौतम ने भी नोट किया था।

"य...यह नम्बर तो उसके घर का था।"

"तो क्या न...नेहा ने पुलिस को फोन पर बताया था कि कमल गंगाधर का कत्ल करने जा रहा है।"

उसके जेहन में मार रहे शक के कीड़ों ने अब विकराल रूप धारण कर लिया।

शक की अब कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी।

उसके घर से फोन आने का मतलब यह था कि नेहा ने उसे फंसाने के लिये पुलिस स्टेशन फोन किया था।

"और...और गंगाधर को खत्म करने के लिये भी तो उसी ने ही प्रेरित किया था।"

"यानि वह मुझसे बेवफाई कर रही है।"

"वह मुझसे नहीं उस लड़के की मुहब्बत में गिरफ्तार है। जो उसके घर से निकलकर भागा था।"

"हां...और उनकी आशिकी इस कदर बढ़ गई है कि उन्होंने मुझे रास्ते से हटाने का फैसला कर लिया। तभी तो पहले नेहा ने गंगाधर का कत्ल करने भेजा और फिर थाने फोन कर दिया कि मैं कत्ल करने जा रहा हूं। उसे पूरा यकीन था कि पुलिस मुझे रंगे हाथों गिरफ्तार कर लेगी—तभी तो उसने अपने यार को अपनी हवस की पूर्ति के लिये बुला लिया था।"

एकाएक ही उसके दिल में नेहा के लिये नफरत भर आई।

कल तक वह नेहा से जितना प्यार करता था—अब उससे कहीं ज्यादा नफरत हो गई थी उसे उससे।

"नौ बजकर अट्ठारह मिनट—।" तभी दूसरी तरफ से आवाज आई—"५२८२१६५ से फोन आया...।"

यह नम्बर संजना का था—जिसका पता कमल को था।

"उसके बाद अभी थोड़ी देर पहले ग्यारह बजकर नौ मिनट पर फोन आया था आपके पास—नम्बर है ६६६३३३६।"

"यह तो एस० पी० साहब का नम्बर है—।" बोला गौतम—

"आप प्लीज नौ बजकर सत्रह और अट्ठारह मिनट पर आने वाले नम्बरों के पते बतायें।"

"वो मैं जानता हूं।" तभी बोल पड़ा कमल अरोड़ा। दर्द में डूबी हुई थी उसकी आवाज—आंखों में पीड़ा और गुस्से के मिले-जुले भाव साफ़ नजर आ रहे थे।

गौतम ने बुरी तरह चौंकते हुए उसकी तरफ देखा।

"तुम जानते हो?"

"हां।" दर्द भर आया था कमल की आवाज में।

"थैंक्यू।" गौतम सिर झुकाए हुए बोला और फोन का बटन बंद करते हुए पुनः उसकी तरफ देखते हुए बोला—"किसके नम्बर हैं यह।"

"एक...संजना का नम्बर है—कपूर इन्डस्ट्री की मालकिन का नम्बर...।"

"हां...उसने खुद अपना नाम बताया था मुझे—और दूसरा नम्बर...।"

"म...मेरे घर का है।"

कमल अरोड़ा ऐसे बोला जैसे अपना पता बताते हुए उसके कलेजे पर तीर चल रहे हों।

बुरी तरह से उछल पड़ा गौतम।

आंखें फटने के कगार तक जा पहुंचीं।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम?" उसे विश्वास नहीं हो रहा था—"त...तुम्हारे घर से फोन आया था मुझे...तुम्हारी बीवी ने तुम्हारा नाम लेकर कहा था कि त...तुम गंगाधर का कत्ल करने जा रहे हो।"

कमल अरोड़ा कुछ नहीं बोला—बस गर्दन झुक गई उसकी।

"क्या चक्कर है यह?" उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला गौतम—"जो तुम्हारी अपनी ही बीवी तुम्हें फंसाने पर तुली हुई है?"

कमल अरोड़ा चुप।

उसकी गर्दन झुकी रही।

क्या जवाब देता वह—कि उसकी बीवी चरित्रहीन है—और अपने यार के लिये वह इस कदर पागल हो गई है कि वह उसे ही रास्ते से हटाने पर तुल गई है।

ठीक तभी फोन पुनः चीखा।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

सिर को झुकाते हुए गौतम ने फोन का बटन दबाया और

बोला—

"हैलो।"

"मैं हलवदार रामसिंह बोल रहा हूं सर।"

दूसरी तरफ से आवाज आई।

"हां बोलो रामसिंह—क्या रिपोर्ट है?"

"गंगाधर की मौत की वजह हत्या नहीं सर।"

"क्या मतलब?" चौंका गौतम

"यस सर—उसकी मौत एक्सीडेंटली हुई है। ज्यादा शराब पीने की वजह से वह बाल्टी में गिर पड़ा—और वहीं उसकी मौत हो गई।"

"ओह।"

"बाकी तफ्तीश में क्या लिखना है—वो आप ही बेहतर जानते हैं।"

"तुम वही लिखो जो सच है।"

गम्भीरता से बोला गौतम।

"यस सर।"

आवाज आई।

गौतम ने फोन डिस्कनेक्ट किया ही था कि तभी पुनः फोन की घण्टी बजी।

उसने पुनः बटन दबाया।

"हैलो।" वह बोला—"पुलिस स्टेशन से मैं इंस्पैक्टर गौतम।"

"मैं बोल रहा हूं।"

दूसरी तरफ से बड़े शाह की आवाज सुनकर बुरी तरह से चौंका गौतम।

कमल अरोड़ा भी चौंक पड़ा था—लेकिन अपनी चौंकाहट को उसने चेहरे पर जाहिर नहीं होने दिया। हां—मन ही मन वह हैरान जरूर हो रहा था कि इस वक्त बड़े शाह ने फोन क्यों किया।

कहीं उसे फंसाने के लिये तो नहीं किया उसने फोन।

"बड़े शाह जी...।" गौतम फोन पर सिर झुकाये हुए बोला।

"यह क्या सुन रहा हूं मैं इंस्पैक्टर?" दूसरी तरफ से बड़े शाह की नाराजगी भरी आवाज आई—"कपूर इंडस्ट्री के पार्टनर गंगाधर का खून हो गया है—और खून कमल अरोड़ा ने किया है।"

"अभी तफ्तीश चल रही है बड़े शाह जी—। अभी तो लाश का पोस्टमार्टम होगा—और...।"

"मेरा नाम भी घसीटा गया है इसमें?"

"ज...जी हां..बड़े शाह जी—संजना ने कमल अरोड़ा को यह कहा था कि बड़े शाह के आदमियों ने उसे धमकाते हुए यह कहा था कि उसे गंगाधर से शादी करनी है। सो संजना ने कमल अरोड़ा से मदद मांगी थी। और मजे की बात तो यह है कि खुद संजना ने मुझे फोन पर बताया था कि गंगाधर का खून होने जा रहा है।"

"यह...यह सब छोटे शाह की कारस्तानी है इंस्पैक्टर। वो मेरे नाम पर धब्बा लगाने पर तुला हुआ है।"

"ल...लेकिन शाह जी...।"

"कितना मिलता है तुम्हें छोटे शाह से?"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं बड़े शाह ज़ी?" गौतम शर्मिन्दगी भरे स्वर में बोला।

"मैं ठीक कह रहा हूं—तभी तो तुम हवालात से फरार हुए इतने दिन हो गये—मगर पुलिस उसे अभी तक नहीं ढूंढ पाई।"

"पुलिस उसे ढूंढने की पूरी कोशिश कर रही है बड़े शाह जी।"

"मैं जानता हूं कैसे काम होते हैं पुलिस के।" दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने के साथ कहा गया—"वैसे मेरी तरफ से तुम्हें पूरी छूट है कि उसे देखते ही गोली मार दो। ऐसी औलाद से मैं बेऔलाद भला।"

"यह...यह आप क्या कह रहे हैं शाह जी?"

हड़बड़ाते हुए बोला गौतम।

"मैं बहुत सोच-समझकर ऐसा कह रहा हूं। और हां...कमल अरोड़ा ने गंगाधर का खून किया है या नहीं किया—उसे छोड़ दो।"

"ल...लेकिन बड़े शाह जी...।"

"मेरी जमानत पर छोड़ दो उसे। मैं नहीं चाहता कि उसके दिल में मेरे लिये यह धारणा बने कि मैंने उसे फंसाया है।"

"जी बेहतर बड़े शाह जी।"

भरे स्वर में बोला गौतम।

दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

गौतम ने बटन दबाया और गहरी सांस छोड़ते हुए कमल अरोड़ा की तरफ देखा।

"अभी तुझे यहां बैठे आधा घण्टा भी नहीं हुआ कि पहले एस० पी० का फोन आ गया—और अब बड़े शाह जी तुझे छोड़ने के लिये जमानत दे रहे हैं।"

कमल अरोड़ा कुछ नहीं बोला।

बोलता भी कहां से—उसका दिमाग तो अंतरिक्ष में हिचकोले खा रहा था।

एक तरफ जहां वह बड़े शाह के बारे में सोच रहा था—वहीं दूसरी तरफ वह नेहा के बारे में भी सोच रहा था।

बड़ा शाह उसे एकाएक देवता नजर आने लगा था—और नेहा—उसे गिरी हुई बदचलन औरत नजर आने लगी थीं जो कि अपनी हवस की पूर्ति के लिये अपने ही पति को फंसाने पर तुल गई थी।

तभी तो उसने पहले उसे गंगाधर का खून करने के लिये उकसाया—फिर स्वयं ही थाने फोन कर दिया कि वह खून करने जा रहा है।

गहरी नफरत भर गई थी उसके दिल में अपनी पत्नी के प्रति।

संदेह का नाग अब अजगर रूपी यकीन में तब्दील हो चुका था।

उसे कोई जवाब न देते देख गहरी सांस छोड़ते हुए गौतम कुर्सी से उठा और गिर्द से निकलते हुए उसके पास आकर जेब से चाबी निकाली और उसकी हथकड़ी खोल दी।

"जा भाई।" वह बोला—"जिसकी जमानत खुद बड़े शाह जी दे रहे हों—उसे कैसे रोक सकता हूं मैं।"

कमल अरोड़ा चुपचाप खड़ा हो गया।

"मगर एक बात कान खोलकर सुन लो।"

तभी एकाएक गुर्रा उठा गौतम।

ऑफिस के दरवाजे की तरफ मुड़ते हुए कमल अरोड़ा वहीं रुक गया और उसकी तरफ देखा।

"मैंने तुम्हें शाह जी की जमानत पर छोड़ा है—।" गौतम उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"इसका मतलब यह नहीं कि कानून ने तुम्हें बरी कर दिया है। जब तक तफ्तीश पूरी नहीं हो जाती—तुम शक के दायरे में हो। तुम्हें कभी भी किसी भी वक्त तलब किया जा सकता है—इसलिये तुम यहीं रहोगे—इसी शहर में।"

कमल अरोड़ा कुछ नहीं बोला—बस सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

उसके बाहर निकलते ही गौतम के होठों पर एक धूर्त मुस्कान फैल गई।

कमल अरोड़ा अपने घर की तरफ बढ़ तो रहा था—लेकिन

उसका दिल नहीं कर रहा था कि वह घर में जाये। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसे पीछे से धकेल रहा हो।

मन-मन वजनी हो रहे थे उसके पैर।

अपने हर बढ़ते कदम के साथ उसका मन नेहा के प्रति नफरत से भर उठता था।

किसी तरह वह अपने घर के दरवाजे पर पहुंचा और कॉलबैल का बटन दबा दिया।

शीघ्र ही दरवाजा खुला।

सामने नेहा खड़ी थी। फटी-फटी आंखों से उसे देखे जा रही थी वह उसे।

उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे—क्या पूछे।

फिर जब उसे कुछ नहीं सूझा तो वह एकाएक ही आगे बढ़ी और कमल अरोड़ा से लिपटकर रोने लग पड़ी।

लेकिन कमल अरोड़ा ने उसकी पीठ पर हाथ नहीं रखा—बल्कि उसे ऐसा लग रहा था जैसे गंदगी से भरा बोरा उससे लिपट गया हो।

नफरत भर आई उसकी आंखों में।

उसी नफरत भरे अंदाज में नेहा को स्वयं अलग किया और उसे एक तरफ करते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

नेहा का रोना एकदम से रुक गया। और वह फटी-फटी आंखों से अपने पति की पीठ को देखने लगी।

आखिर उसने दरवाजा बंद किया और कमरे में आकर कमल अरोड़ा के करीब बैठ गई जो कि माथे पर बांह रखे बेड पर लेटा हुआ था।

"य...यह सब क्या हो गया कमल?" वह उसके सीने पर हाथ रखते हुए बोली—"किसकी नजर लग गई हमारे घर को?" कमल अरोड़ा की आंखों में कहर उमड़ आया।

"नजर किसी की नहीं लगी नेहा।" वह एकाएक फट पड़ा—"बल्कि नजर खुल गई है मेरी।"

"क...या मतलब?"

"अरी कम्बख्त।" कमल अरोड़ा उठ बैठा—"मुझसे घात कर रही है—फिर भी भोली बन रही है।"

नेहा का रंग फक्क पड़ गया।

आंखों में तूफान उठने लगे।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम कमल? मैं तुमसे घात करूंगी?"

"बनने की कोशिश मत कर कुतिया।" चीख उठा कमल अरोड़ा—"तेरी सारी पोल खुल गई है मेरे सामने।"

"प...पो...ल...कैसी पोल?"

'तड़ाक...।'

कमल का भरपूर थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

नेहा उछलकर पीछे फर्श पर जा गिरी।

उस थप्पड़ ने नेहा के मुंह को लाल करके रख दिया था।

कमल अरोड़ा झटक से खड़ा हुआ और झुककर उसके बालों को पकड़ लिया।

"छिनाल।" वह उसके बालों को झिंझोड़ते हुए दहाड़ा—"पहले मुझे गंगाधर का खून करने को उकसाया और फिर खुद ही पुलिस को फोन कर दिया कि मैं खून करने जा रहा हूं।"

"य..यह क्या कह रहे हो कमल।" पीड़ा भरे स्वर में बोली नेहा—"मैंने पुलिस को फोन नहीं किया—"म...मुझे तो थाने के नम्बर का भी नहीं पता।"

"बकवास कर रही है तू कुतिया।"

"म...मेरा विश्वास करो कमल...मैं...मैं भला अपने पति को क्यों कर फंसाऊंगी।"

"नाटक बहुत बढ़िया कर लेती है तू हरामजादी...।तेरे और तेरे उस यार के बीच में रोड़ा जो बना हुआ था।"

"क...म...ल...।" चीख पड़ी नेहा।

"चीख मत।" कमल अरोड़ा उससे भी ऊंचे स्वर में दहाड़ा—"तेरी पोल खुल चुकी है बदचलन औरत। मेरी गैर मौजूदगी में तू अपने उस यार से रंगरलियां बनाती है।"

"अपनी जुबान पर काबू रखो कमल।" चीखी नेहा—"तुम मुझ पर इल्जाम लगा रहे हो।"

'तड़ाक।'

उसके बाल छोड़ते हुए कमल अरोड़ा ने उसके गाल पर एक और थप्पड़ रसीद कर दिया।

नेहा चीखती हुई पीछे जा गिरी।

"बदजात...सच्चाई को देखकर भी तू आंखें मूंदे है।" बड़बड़ाया—"तू औरत नहीं हवस की मारी गंदगी है—जिसका एक से दिल नहीं भरता। तू...।"

बात बीच में ही रह गई उसकी। कॉलबैल बज उठी थी।

"डिंग...ड्रांग...।"

साथ ही दरवाजा भिड़भिड़ाये जाने की आवाज भी हुई थी।

कमल अरोड़ा ने कहर भरी निगाहों में दरवाजे की तरफ देखा—फिर तेजी से कमरे से बाहर निकल गया।

गुस्से में वह इस कदर अंधा हो गया था कि उसे क्षितिज के रोने की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी जो कि उसके चीखने से उठ बैठा था।

वह मेन डोर के करीब आया और दरवाजा खोला।

सामने मौहल्ले के पांच-सात आदमी खड़े थे।

"क्या बात है?" वह काटखाने वाले अंदाज में बोला।

"खैरियत तो है कमल बेटे।" एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति बोला—"आज पहली बार तुम्हारे घर से इतना शोर सुन रहे हैं हम।"

"देखो"—दूसरा उसे समझाते हुए बोला—"अपनी पत्नी पर विश्वास करो। ऐसे इतना ऊंचा चीख-चीखकर उसे बदनाम मत करो।"

"अपनी औरत को मारना पाप होता है।" तीसरा बोला।

"मैं अपने घर में चीखूं, चिल्लाऊं—अपनी बीवी को पीटूं...तुम्हें क्या तकलीफ है। जाओ।" दहाड़ा कमल और उनके मुंह पर ही दरवाजा बन्द करके कुण्डा लगा लिया।

गुस्से की आग में जलता हुआ वह कमरे में आया तो नेहा को उसने क्षितिज को अपने सीने से चिपकाये रोते हुए देखा।

उसका चेहरा बुरी तरह से सूज गया था।

कमल अरोड़ा ने नफरत भरे अन्दाज में उसे देखा और बैड पर लेट गया।

नेहा ने भी उससे कुछ नहीं कहा—वह क्षितिज को सीने से लगाये सुबकती रही।

सुबह छह बजे कमल अरोड़ा बिस्तर से उठा।

सारी रात ढंग से सो भी नहीं पाया था वह।

अंगारों पर लोटता रहा था वह।

रह-रहकर उसके कानों में एक्सचेंज से बोले जाने वाले उसके फोन नम्बर गूंज रहे थे। और उसके साथ ही उसकी आंखों के सामने

उस लड़के का चेहरा घूम जाता जिसे उसने चुपके से अपने घर से निकलते देखा था। और हर बार उसके दिल में यह विश्वास पक्का होता जाता था कि उसकी पत्नी बदचलन है। उसके अवैध संबंध हैं उस लड़के के साथ।

उठते ही उसने नेहा की तरफ देखा।

वह अभी भी क्षिति को अपने सीने से चिपकायें लेटी थी।

उसकी आंखें तो बंद थीं—मगर साफ पता चल रहा था कि वह जाग रही है।

उसका गाल अभी भी सूजा हुआ था जहां पर कि कमल ने थप्पड़ मारे थे।

नफरत भरे अंदाज में उसने उसकी तरफ से मुंह फेरा और बैड से उतर गया।

तभी नेहा ने आंखें खोलीं और क्षितिज को अपने से अलग करते हुए उठ बैठी।

बोली कुछ नहीं वह। बैड से उतरी और किचन की तरफ बढ़ गई।

जब तक कमल अरोड़ा मुंह हाथ धोता—फ्रैश होता वह दूध का गिलास गर्म करके ले आई।

यह उसका रोज का नियम था।

कमल सुबह जब कोचिंग के लिये जाता तो दूध पीकर ही जाता था।

दूध देखकर कमल की आंखों में नफरत भर आई।

"तेरे हाथ से अगर अमृत भी मिले—तो भी न पीयूं।" वह गुर्राया—"क्योंकि तेरे जैसी कुलछनी के हाथों में आते ही अमृत भी जहर बन जायेगा।"

नेहा की आंखें बहने लगीं।

"इतने निर्दयी मत बनो कमल।" वह रोते हुए बोली—"मुझ पर विश्वास करो—। मैं क्षितिज की कसम खाकर कहती हूं कि मैं बेगुनाह हूं। मैं अपनी कोख में पल रहे बच्चे की कसम खाती हूं कि मेरा किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।"

"अपने यह मगरमच्छी आंसू मुझे मत दिखा पापिन मैं तेरी बातों में नहीं आने वाला।"

कहकर वह झटके से बाहर निकल गया।

उसने पहले मेनडोर खोला और फिर आंगन में खड़ी बाईक को

धकेलते हुए बाहर ले गया।

बाईक पर बैठकर उसने उसे स्टार्ट किया और वहां से चल पड़ा।

गली से निकलकर वह अभी बाँई तरफ मुड़ा ही था कि उसे थोड़ी दूरी पर वही लड़का अपनी बाईक के करीब बैठा मिला जो कि उसने रात को अपने घर से निकलते देखा था।

उस वक्त वह बाईक का प्लग खोले उसे ऐसे साफ कर रहा था जैसे उसमें कोई नुक्स हो।

उसे देखते ही कमल का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। वह यही समझा कि वह उसके वहां से निकलने का इंतजार कर रहा है। कि कब वह यहां से निकले और कब वह अपनी माशूका से मिले। लेकिन अपने गुस्से को बेकाबू नहीं होने दिया उसने।

उसे नजरअंदाज करते हुए वह आगे बढ़ गया।

उसके वहां से जाते ही उस लड़के ने प्लग फिट किया और बाईक पर बैठकर उसे स्टार्ट कर आगे बढ़ा दी।

गली के मोड़ पर आकर उसने बाईक रोकी और उसे सड़क के किनारे खड़ी करके गली में प्रवेश कर गया।

चलता हुआ वह सीधा कमल के घर के सामने आकर रुका और दरवाजे के सामने आकर कॉलबैल का बटन दबा दिया।

शीघ्र ही भीतर से आवाज आई।

"कौन?"

उसके साथ ही नेहा ने दरवाजा खोला।

उस लड़के ने गली के मोड़ की तरफ देखा।

ऐन तभी कमल की बाईक मोड़ पर आकर खड़ी हुई।

कमल को अपनी तरफ देखते पाकर उस लड़के के चेहरे पर हड़बड़ी के भाव उभरे।

"शाम सुन्दर का घर कौन-सा है?" वह नेहा से बोला।

"पता नहीं।"

नेहा ने कहा और दरवाजा बन्द कर दिया।

उस लड़के ने वहां से कदम हटाये और आगे बढ़ा।

कमल की तरफ देखने की जरूरत नहीं समझी उसने।

इधर कमल—उसका तो खून खौल उठा था।

वह यही समझा कि उसने नेहा को उसके वापिस आने के बारे में बताया है—और नेहा ने दरवाजा बन्द कर दिया है।

शक की अब कोई गुंजाईश नहीं रही थी।

बड़ी मुश्किल से उसने स्वयं पर काबू पाया और बाईक मोड़कर वहां से रवाना हो गया।

पहले तो उसका दिल किया था कि वह उस लड़के की दुर्गत बना दे—मगर फिर उसके दिल में यह बात उभरी कि जब उसका अपना पैसा ही खोटा है तो वह किसी और को दोष क्यों दे।

क्या पता उसकी बीवी के सम्बन्ध और लड़कों से भी हों। ऐसे में किस-किस को पीटता फिरेगा वह।

मन ही मन उसने निश्चय कर लिया कि वह आते ही नेहा से कहेगा कि वह उससे तलाक ले ले।

"टिन-टिना-टिन-टिन।"

मोबाईल के बजने की आवाज बड़े शाह के कानों में पड़ी तो उसकी आंखें ऐसे खुलीं जैसे वह सोया ही नहीं था। बल्कि आंखें मूंदे लेटा हुआ था।

सिर से पांव तक पूरी तरह बेलिबास था वह। और उसी की ही तरह वह युवती भी बेलिबास थी जो उसके साथ लेटी हुई थी। इधर बड़े शाह की आंख खुली—उधर युवती हड़बड़ाकर उठ बैठी और इधर-उधर टटोलकर बड़े शाह की कमर के नीचे दबे मोबाईल फोन को निकालकर बड़े शाह को दे दिया।

बड़े शाह ने कनेक्टिंग का बटन बदाया और मोबाईल कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"विक्की बोल रहा हूं बड़े-शाह जी। प्रणाम।"

"हां बोल विक्की।"

बड़ा शाह बोला—साथ ही युवती को इशारा किया।

उसका इशारा समझ युवकी बड़े शाह की जांघों पर हाथ फेरते हुए उस पर झुककर और अपनी छातियों को उसके पेट से रगड़ने लगी।

"फतह शाह जी।"

"सारी बात बोल।" बड़ा शाह बोला।

"आपके हुक्म के अनुसार मैंने रीमा को साथ लिया और राजन को भी साथ ले लिया।"

"फिर?"

"इत्तफाक से कमल अरोड़ा के घर के बाहर ही उसकी टेलीफोन की तार में जोड़ लगा हुआ था। एल्यूमिनियम की एक लम्बी सीढ़ी हम अपने साथ ले ही गये थे। उसी सीढ़ी पर चढ़कर पहले रीमा ने उस जोड़ के साथ अपनी टेलीफोन की तार को जोड़ा और वहां से थाने फोन कर दिया कि कमल अरोड़ा गंगाधर का खून करने जा रहा है।"

"फिर?"

"रीमा का काम खत्म हो गया—और वह कनेक्शन खोलकर नीचे आ गई।"

"फिर—?"

"फिर मैं सीढ़ी के रास्ते कमल अरोड़ा के घर की छत पर गया और सीढ़ियों से नीचे उतरकर उसके बाथरूम में जा घुसा। रीमा और राजन सीढ़ी लेकर वहां से चले गये। और फिर कमल के वापिस आने पर मैंने दरवाजा खोलते वक्त जानबूझकर आवाज की और फिर गली के मोड़ पर उसे अपनी शक्ल भी दिखाई।"

"उसके बाद का मुझे सब पता है।" मुस्कुराते हुए बोला बड़ा शाह—"गौतम ने मोबाईल से मुझे सारी खबर भेज दी थी—और फिर मेरे ही हुक्म पर पहले एस० पी० ने थाने फोन किया—फिर हवलदार रामसिंह ने फोन करके कमल को निर्दोश बताया। एस० पी० ने मेरे ही कहने पर उस औरत को ढूंढने के लिये कहा था जिसने कमल अरोड़ा का नाम खूनी के तौर पर लिया था। और फिर मेरे कहने पर ही गौतम ने कमल को छोड़ दिया। तू उसके बाद बोला—उसके घर में क्लेश हुआ कि नहीं?"

"बहुत क्लेश हुआ बड़े शाह जी। इतना कि पड़ोसी भी उठकर आ गये थे।"

"फिर?"

"लेकिन कमल अरोड़ा ने सभी को दुत्कार दिया था।"

"और सुबह?"

"आपके हुक्म के अनुसार सुबह गया था मैं उसके घर। कमल को जानबूझकर दिखाया था मैंने अपना चेहरा...।" सब कुछ कह सुनाया विक्की ने, दूसरी तरफ से फिर आवाज आई—"कमल की बीवी का चेहरा सूजा हुआ था—साफ नजर आ रहा था कि कमल ने रात को उसे मारा था।"

"वैरी गुड।"

"अब मेरे लिये क्या हुक्म है बड़े शाह जी?"

विक्की की आवाज आई।

"लोहा गर्म हो चुका है।" कमीनी मुस्कान मुस्कुराया बड़ा शाह—"चोट मार दे।"

"जो हुक्म बड़े शाह जी।"

"हरामजादे ने मेरे बेटे की आजादी की राह में रोड़े अटकाये थे। उसकी सजा तो मिलनी ही चाहिये न उसे। हरामी की औलाद खुद को बड़ा अक्लमंद समझ रहा था—तभी तो मीडिया के सामने मेरे बारे में भौंका था। सचमुच अक्लमंदी ही दिखायी थी उसने—तभी तो मुझे अपने हाथ रोक देने पड़े। वर्ना बड़े शाह के खिलाफ आंख उठाने वाले की भी जान निकल जाती है। अपनी इसी अक्लमंदी से वह कुछ दिनों के लिये बच गया—। लेकिन उसे नहीं पता था कि बड़ा शाह क्या है। अरे मेरा काटा तो पानी भी नहीं मांगता—फिर उसकी क्या बिसात है।"

"जी बड़े शाह जी।"

"आधे घण्टे में मुझे रिपोर्ट मिल जानी चाहिये।"

"मिल जायेगी बड़े शाह जी।"

बड़े शाह ने मोबाईल कान से हटाकर बटन दबाया और युवती की छातियों को पकड़कर उसे अपने ऊपर गिरा लिया।

"ऊई।"

युवती के होठों से पीड़ा भरी सिसकारी उबल पड़ी।

कमरे में आकर काफी देर तक रोती रही नेहा।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब हो क्या रहा है।

कमल—उसका पति—जो कल तक उस पर जान छिड़कता था—अब एकाएक ही उसकी नजर में वह बदचलन हो गई थी।

यहां तक कि उसने उसे थप्पड़ मार दिये थे।

रोते हुए उसका हाथ स्वयं ही उसके गाल पर चला गया।

आंसूओं से भरे गाल पर उसका हाथ लगा तो वहां जलन महसूस हुई उसे।

"हे भगवान।" वह बिलख पड़ी—"यह क्या हो गया हमारे घर को। तू तो जानता है मुझे। तुझे तो सब पता है कि मैं बेगुनाह हूं। मेरा

किसी के साथ कोई गलत सम्बन्ध नहीं। फिर क्यों नाइंसाफी कर रहा है तू भगवान।"

मगर उत्तर में भगवान ने उसे न तो पुकारा न ही कोई प्रतिक्रिया दिखाई।

काफी देर रोने के पश्चात् आखिर वह उठी और दूध का भरा गिलास उठाकर किचन में चली गई।

वहीं सिंक पर ही उसने अपना मुंह धोया और फिर दूध को फीडर में डालकर वापिस कमरे में आई और बैड पर चढ़कर निप्पल सो रहे क्षितिज के मुंह से लगा दी।

सोते हुए ही क्षितिज ने मुंह खोला और दूध पीने लगा।

ठीक तभी—

"डिंग-डांग...।"

कॉलबैल बजी।

गहरी सांस छोड़ते हुए नेहा बैड से उतरी और कमरे से निकलकर मेन डोर की तरफ बढ़ी।

मेन डोर के करीब आकर उसने कुण्डा खोलकर जैसे ही दरवाजा खोला—

उसका कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

चेहरा फक्क पड़ गया था।

सामने वही लड़का खड़ा था जिसने अभी आधा घण्टा पहले ही उससे शाम सुन्दर का पता पूछा था।

उस लड़के के हाथ में रिवॉल्वर थी जिसकी नाल उसकी छातियों के बीचों-बीच लगी हुई थी।

दो और युवक भी थे उस लड़के के पीछे।

"क...कोन हो तुम?"

नेहा कांपते स्वर में बोली।

"पीछे हट।" गुर्राया वह युवक जो कि विक्की था—"वर्ना यहीं गोली छाती में उतार दूंगा।"

नेहा के पैर खुद-ब-खुद ही पीछे हटते चले गये।

उसी के साथ ही विक्की तथा दोनों युवक भीतर प्रवेश कर गये।

सबसे पीछे वाले युवक ने जल्दी से पीछे मुड़कर दरवाजा बन्द करके कुण्डा लगा दिया।

"भीतर चल—तेरे कमरे में।"

इधर विक्की गुर्राया।

नेहा कांपते कदमों से मुड़ी और विक्की की तरफ पीठ करके चलने लगी।

पीछे-पीछे विक्की था—और उसके साथ उसके दोनों साथी भी।

नेहा के कमरे में प्रवेश करते ही विक्की ने पीछे से उसके कूल्हों पर लात दे मारी।

चीखती हुई नेहा मुंह के बल बैड पर जा गिरी।

चीखते हुए वह जैसे ही पलटी—रिवॉल्वर उसके माथे पर आ लगी।

"खबरदार—।" विक्की बेहद खतरनाक लहजे में बोला—"चीखना नहीं—वर्ना गोली माथे में घुस जायेगी।"

खौफ की मारी नेहा ने तुरंत होंठ भींच लिये।

"हां...अब ठीक है।"

विक्की वीभत्स मुस्कान होंठों पर बिखेरे बोला।

"क...कौन हो...तु...तुम...?"

नेहा कांपते स्वर में बड़ी मुश्किल से कह पाई।

विक्की के होंठों पर फैली मुस्कान और भी तेज हो गई।

"अरे...।" वह हंसा—"भूल गई मुझे। मुझे नहीं पहचाना तूने?"

"क...क्या मतलब?"

"अरे...मैं ही तो हूं तेरा वो यार—जिसके कारण तेरे खसम ने तुझे बदचलन कहा। तुझे मारा...उफ जालिम ने कितनी जोर से मारा तुझे—अभी तक तेरे गालों पर निशान पड़े हुए हैं...च....च....च।"

"तु...तुम हो वो कमीने।" एकदम से भड़क उठी नेहा—"जिसने मेरे घर को बर्बाद करने की कोशिश की मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

कहते हुए वह रिवॉल्वर की परवाह किये बिना उसकी तरफ झपटी।

मगर—

पहुंच नहीं पाई वह उस तक।

उससे पहले ही विक्की के साथ आये दो युवकों में से एक ने उस पर झपट पड़ा और उसने नेहा को बैड पर गिरा दिया।

नेहा के होंठों से पीड़ा भरी चीख उबल पड़ी।

मगर तभी दूसरे ने आगे बढ़कर उसके मुंह को दबोच लिया। जबकि पहले वाला उसके फूले हुए पेट पर आ बैठा।

नेहा का चेहरा पीड़ा से विकृत हो उठा।

तभी विक्की उसके चेहरे के करीब अपना चेहरा लाते हुए गुर्राया—

"भारतीय नारी का यह कर्तव्य होता है कि खुद के दामन पर लगे छींटों को धोने के लिये उसे बस एक ही रास्ता चुनना होता है उसे—आत्महत्या।"

"ऊं...ऊं...ऽऽ।"

नेहा तड़पी।

"घबरा नहीं—हम वही रास्ता अपनाने जा रहे हैं। लेकिन उससे पहले तुझे उस जुर्म की सजा मिलेगी जो कि तेरे खसम ने किया है। बड़े शाह जी की मीडिया के सामने बेइज्जती की थी उसने।"

क्रूरता से बोला विक्की और नेहा की पीठ पर बैठे युवक की तरफ देखा। इसके पेट में एक बच्चा पल रहा है राजन।

वह बोला—"श्री गणेश उसी से कर।"

तुरन्त राजन ऊपर उठा और फिर अपने पूरे वजन के साथ नेहा के पेट पर गिरा।

नेहा बुरी तरह से तड़प उठी।

उसका पूरा शरीर एकदम से अकड़ गया। पेट में इतनी जोरों से पीड़ा हुई कि उसकी टांगें स्वयं ही जुड़ गईं।

मुंह बुरी तरह से बंद था उसका वर्ना वह इतनी जोरों से चीख मारती कि पूरा शहर जाग जाता।

तभी राजन पुनः उठा और नेहा के पेट पर गिरा।

उसी के साथ ही बैड की चादर खून से रंगने लगी।

नेहा की नाइटी भी खून से लथपथ होने लगी।

एक अजन्मे बच्चे की हत्या कर दी थी उन दुष्टों ने।

नेहा बुरी तरह से छटपटाने लगी—वह हाथों को बार-बार बैड पर पटकने लगी।

पीड़ा से उसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी।

"बहुत पीड़ा हो रही है बेचारी को।" विक्की क्रूरता से बोला—"खत्म कर दो इसे।"

तुरन्त राजन ने उसकी गर्दन को दबोच लिया और लगा उसे दबाने।

नेहा ने बस कुछ पलों तक ही विरोध किया—फिर वह शांत हो गई।

वह मर चुकी थी।

उसे खत्म करने के बाद उन तीनों दरिन्दों की निगाहें उस मासूम क्षितिज की तरफ घूम गईं जो कि अभी भी गहरी नींद में सोया दूध पी रहा था।

उसके होंठ अभी भी निप्पल को चूस रहे थे।

विक्की ने रिवॉल्वर अपनी जेब में डाली। और बैड पर चढ़कर क्षितिज के करीब आया और उसके होंठों से निप्पल निकाल ली, मासूम क्षितिज पहले तो कुनमुनाया फिर करवट बदलकर सो गया।

तभी उस हैवान के शैतानी पंजे ने उस मासूम का मुंह और नाक दबा दिया।

बच्चा पहले तो हल्का-सा छटपटाया—फिर स्थिर हो गया।

ज्यादा देर नहीं लगी उसे—वह भी अपनी मां के पास पहुंच गया।

विक्की ने उसके मुंह से हाथ हटाया और उसे उठाकर नीचे फर्श पर फेंक दिया।

और फिर तीनों जैसे आये थे—वैसे चले गये।

'फट...फट...फट।'

दूध वाले की राजदूत मोटसाईकिल तेज शोर करती हुई एक घर के आगे रुकी।

दूध वाले ने मोटरसाईकिल स्टैण्ड पर लगाई और नीचे उतरा।

तभी उस घर का दरवाजा खुला और एक औरत पतीला लेकर बाहर निकली।

उसकी मोटरसाईकिल की आवाज ही इतनी थी कि आसपास के घरों के दरवाजे खुल गये और औरतें पतीले लेकर घरों से निकल उसकी तरफ बढ़ीं।

दूध वाले ने दूध के ड्रम का ढक्कन खोला और सभी औरतों को दूध नाप-नापकर देने लगा।

"क्या बात है?" वह बोला—"नेहा बिटिया नहीं आई दूध लेने?"

"रात खूब झगड़ा हुआ था उनका।" एक औरत बोली—"कमल ने मारा भी था उसे।"

"क्यों?" हैरानी से बोला दूध वाला।

"बाहर तक आवाजें आ रही थी।" दूसरी औरत बोली—"नेहा पर बदचलनी का आरोप लगा रहा था।"

"राम...राम...राम...।" दूध वाला कान को हाथ लगाते हुए बोला—"मैं जानता हूं नेहा बिटिया को। जरूर कमल को गलतफहमी हुई है। अरे तुम्हें तो समझाना चाहिये था।" वह आखिरी औरत के पतीले में दूध डालते हुए बोला।

"गये थे सभी मोहल्ले वाले।" वह औरत बोली—"मगर कमल ने सभी को भगा दिया।"

"अब वह तो लड़ने-भिड़ने में ठहरा मास्टर।" दूसरी औरत बोली—"कौन ले उससे पंगा।"

"ओह।"

दूध वाले ने गहरी सांस छोड़ी और एक छोटे ड्रम में नेहा के लिये दूध डालकर उसके घर की तरफ बढ़ा।

"बेचारी शर्म के मारे बाहर नहीं निकली होगी।" वह बड़बड़ाया—"रात उसके घर वाले ने उसकी बेइज्जती जो कर दी थी।"

कमल के घर के आगे आकर उसने छोटे ड्रम को बाँयें हाथ से पकड़ा और फिर दाँयें हाथ से कॉलबैल बजाई।

"डिंग-डांग...।"

भीतर कहीं घण्टी बजी।

लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

थोड़ा इंतजार करके दूध वाले ने पुनः घण्टी बजाई।

मगर नेहा ने तब भी दरवाजा नहीं खोला।

अब तीसरी बार उसने लोहे के दरवाजे को थपथपाया।

दबाव पड़ते ही दरवाजा भीतर की तरफ खुल गया।

"शायद नेहा नहा रही होगी।" वह बड़बड़ाया और भीतर प्रवेश कर गया।

"दूध वाला हूं नेहा बिटिया।" वह आगे बढ़ते हुए ऊंचे स्वर में बोला—"कहां डालना...।"

बाकी के शब्द बीच में ही रह गये उसके।

ड्रम हाथ से छूटकर नीचे गिरा और उसमें से दूध बाहर बिखरने लगा।

लेकिन इस वक्त उसे दूध की होश कहा थी। वह तो फटी-फटी आंखों से नेहा की लाश को देखे जा रहा था। जो कि बैड पर पड़ी थी—

और बैड की चादर खून से लथपथ हुई जा रही थी।

"ख....खू....न।"

वह पहले तो धीरे से बड़बड़ाया—जैसे उसने बहुत जोर लगाया हो—लेकिन उसके मुंह से आवाज न निकल पा रही हो—फिर एकाएक ही वह बाहर भागा और पागलों की तरह चीखने लगा—

"खू...न...खू...न...नेहा बिटिया का खून हो गया...।"

उसकी चीखों ने कुछ पलों में पूरे मोहल्ले को इकट्ठा कर दिया।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी बजते ही गौतम ने रिसीवर यूं उठाया जैसे वह फोन के आने का ही इंतजार कर रहा हो।

"हैलो।" वह माऊथपीस में बोला।

"काम हो गया है।" दूसरी तरफ से बड़े शाह की आवाज आई—"अभी थोड़ी देर पहले ही विक्की का फोन आया।"

"मैं वही इंतजार कर रहा हूं। बड़े शाह जी।" गौतम बोला—"अब मैं जाऊं?"

"नहीं—तू नहीं जाना।"

"लेकिन शाह जी...।"

"जब तक तुझे फोन न आये...या कोई आदमी खुद न आये...तुझे नहीं जाना...तू यहीं थाने में ही रहेगा तब तक।"

"जी शाह जी।"

गौतम आदर भरे स्वर में बोला।

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

गौतम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और वॉल क्लाक की तरफ देखा।

साढ़े सात बजने वाले थे।

बड़ी बेसब्री से वह फोन की घंटी का इंतजार करने लगा।

एक-एक मिनट जैसे घंटों के हिसाब से बीतता प्रतीत हो रहा था उसे।

उसे ऐसा लग रहा था जैसे घड़ी की रफ्तार एकाएक कम हो गई है।

सात बजकर पैंतीस मिनट पर जाकर फोन घनघनाया।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

गौतम के होठों पर घिनौनी मुस्कान नाच उठी।

हाथ नहीं बढ़ाया उसने फोन की तरफ, बल्कि मुस्कुराते हुए फोन को देखता रहा।

जब तक पांच बार घंटी बज चुकी तब जाकर उसने रिसीवर उठाया।

"हैलो—सिटी पुलिस स्टेशन से इंस्पैक्टर गौतम।" वह बोला।

"यहां खून हो गया है इंस्पैक्टर।" दूसरी तरफ से किसी की घबराई आवाज आई।

"खून?" बुरी तरह चौंकने की एक्टिंग की गौतम ने।

"जी हां—आप फौरन यहां आ जायें।"

"कहां?"

दूसरी तरफ से कमल का पता बताया गया।

"य...यह तो कमल अरोड़ा का पता है...और...।"

"जी हां...कमल अरोड़ा की पत्नी का खून हो गया है।"

"मैं आ रहा हूं।"

तुरन्त बोला गौतम और रिसीवर रखकर उठ खड़ा हुआ।

"इस वक्त उसके होठों पर घिनौनी मुस्कान थी और चालाक लोमड़ी की तरह चमक।

"अब आयेगा पट्ठा काबू में।"

वह हंसा और ऑफिस से बाहर निकल गया।

कुछ ही देर में दो हवलदारों और एक सब-इंस्पैक्टर के साथ जिप्सी में बैठा कमल अरोड़ा के घर की तरफ उड़ा जा रहा था।

पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो रहा था कमल अरोड़ा के घर के सामने।

औरतें आपस में तरह-तरह की बातें कर रही थीं।

"हे भगवान—इतना गुस्सा।" एक बोली—"अपनी ही बीवी को मार डाला।"

"नेहा ऐसी थी तो नहीं।"

दूसरी बोली।

"मैंने तो उसे कभी अपने घर से निकलते नहीं देखा था।"

तीसरी बोली।

"फिर भी कुछ न कुछ तो किया होगा उसने।" चौथी हाथ हिलाते हुए बोली—"तभी तो मरी वह। वर्ना कमल ऐसा आदमी नहीं था।" बाहर औरतें बातें कर रही थीं और मकान के भीतर गौतम बैडरूम के दरवाजे पर खड़ा देख रहा था।

नेहा की लाश बैड पड़ी थी और मासूम क्षितिज की लाश फर्श पर पड़ी थी। उसकी छाती फर्श से लगी हुई थी।

बिल्कुल ऐसा ही लग रहा था—जैसे वह छाती के बल सो रहा हो।

कुछ देर तक लाशों को देखने का नाटक करके वह मुड़ा और अपने पीछे खड़े मातहतों को वहीं छोड़ मकान से बाहर आ गया। बाहर लोगों की भीड़ खड़ी थी।

"फोन किसने किया था थाने में?" वह ऊंचे स्वर में बोला।

"मैंने किया था।" तुरंत एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति आगे आते हुए बोला।

"क्या नाम है तुम्हारा?" पूछा गौतम ने।

"वासुदेव।"

"लाश तुम्हीं ने देखी थी सबसे पहले?"

"मैंने तो भीतर कुछ देखा ही नहीं साहब।"

"क्या मतलब?"

"सुबह दूध वाला आया—उसी की चीखें सुनकर पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो गया था। भीतर दूध उसी का बिखरा हुआ है।"

"ओह। तो दूध वाले ने लाशें देखी थीं?"

"लाशें! लेकिन वो तो चीख रहा था कि नेहा बिटिया का खून हो गया है।"

"उसके बच्चे की भी लाश पड़ी है भीतर।"

""हे भगवान।" वासुदेव ने दोनों हाथों से अपने गाल थपथपाये—"गुस्से में इंसान क्या इतना हैवान हो जाता है कि अपनी पत्नी और औलाद को खत्म कर दे।

"क्या मतलब?" जानबूझकर चौंका गौतम।

"रात को कमल अपनी बीवी पर बरस रहा था—उसे चरित्रहीन-कुलटा-बदचलन और पता नहीं क्या-क्या कह रहा था और उसने उसे मारा भी।"

"तो तुमने रोका नहीं?"

"रोका था साहब—हम पांच-छह आदमियों ने दरवाजा खुलवाकर उसे न लड़ने की नसीहत भी दी थी—लेकिन उसने उल्टे हमें ही दुत्कार दिया और हमारे मुंह पर ही दरवाजा बंद कर दिया।"

"ओह।"

"उस लड़ाई का यह परिणाम निकलेगा—यह तो हमने सपने में भी नहीं सोचा था।"

"तो कत्ल कमल अरोड़ा ने ही किये हैं?"

"लग तो ऐसा ही रहा है। अब हकीकत क्या है वो ऊपर वाला ही जाने।"

गौतम ने अन्य पड़ोसियों के भी ब्यान लिये थे।

सभी ने एक मत से कहा था कि कमल ने अपनी बीवी के चरित्र पर तोहमत लगाते हुए उसे रात को मारा था।

मन ही मन हंसा गौतम।

"अब फंसा बच्चू।"

तभी उसकी निगाहें गली के मोड़ पर पड़ीं।

कमल अरोड़ा बाईक पर सवार हुआ गली में प्रवेश कर रहा था।

एक कमीनी मुस्कान आकर लुप्त हो गई उसके होठों पर।

अपने घर के आगे भीड़ देखकर कमल अरोड़ा का कलेजा न चाहते हुए भी धड़क उठा था।

और जब उसकी नजर गौतम पर पड़ी तो वह भीतर ही भीतर कांप उठा।

तरह-तरह की आशंकायें उसके मन में उठने लगीं।

ऐसी बात नहीं थी कि नेहा पर चढ़ा उसका गुस्सा अब शांत हो गया था।

सुबह उसने कोचिंग भी ढंग से नहीं ली थी। रह-रहकर उसकी आंखों के सामने विक्की और नेहा के नग्न मिले हुए शरीर नाच उठते और उसी के साथ ही उसका दिमाग भक्क से उड़ जाता।

तभी तो उसने आज छुट्टी भी जल्दी कर दी थी। और मन ही मन फैसला कर लिया था कि वह नेहा को तलाक दे देगा।

लेकिन क्षितिज को अपने पास ही रखने का फैसला किया था उसने।

मगर यहां गली में प्रवेश करते ही वह रास्ते भर की तमाम सोचों को एकदम से भूल गया था।

उसने बाईक गली में काफी पहले ही खड़ी की और अपने घर की तरफ बढ़ा।

तभी मौहल्ले वालों में खुसफुसर शुरू हो गई।

कमल अरोड़ा ने साफ महसूस किया कि उसके तमाम मौहल्ले वाले उसे नफरत की निगाहों से देख रहे हैं।

तभी उसकी नजरें गौतम पर पड़ीं जो कि तेजी से उसी की तरफ बढ़ रहा था

"यू आर अण्डर अरैस्ट।"

करीब आते ही वह बोल पड़ा। कमल को कुछ कहने का मौका तक नहीं दिया था उसने।

बुरी तरह से उछल पड़ा कमल अरोड़ा।

"य...यह क्या कह रहे हो इंस्पैक्टर? क्या किया है मैंने?"

"इतने भोले मत बनो मियां। सारा मौहल्ला गवाह है इस बात का कि तुमने अपनी पत्नी और बेटे का खून कर दिया है।"

'धड़ाम...धड़ाम।'

कमल अरोड़ा पर जैसे एक साथ कई ग्रह टूटकर आ गिरे। उसे ऐसा लगा जैसे पल भर में उसका सब कुछ लुट गया हो।

"न...नेहा मर गई?"

"मरी नहीं, मार दी गई? अरे कमबख्त...अपने मासूम बेटे पर भी तरस नहीं आया तुझे...उस नन्हीं जान ने क्या बिगाड़ा था तेरा?"

"य...ये क्या कह रहे हो तुम?"

"अरे अगर अपनी बीवी पर शक था तो उससे तलाक ले लेना था—मारने का हक नहीं दिया तुझे कानून ने।"

उसकी बात काटते हुए गुर्राया गौतम।

"...मैंने किसी का खून नहीं किया। मैं...ख...खूनी नहीं हूं।"

"चोर पकड़े जाने पर यही कहता है कि उसने चोरी नहीं...। खूनी भी खुद को बेगुनाह ही कहता है।"

"लेकिन...।"

"अपनी सफाई अदालत में देना तुम।" गुर्राया गौतम—"मैं तुम्हारी बातों में आकर तुम्हें छोड़ने वाला नहीं।"

"म...मेरा यकीन करो इंस्पैक्टर...मैं अपनी पत्नी से नाराज जरूर था—लेकिन उस नाराजगी का यह मतलब कतई नहीं कि मैंने

नेहा का खून कर दिया है।"

"यह बात तुम अदालत को बताना—हो सकता है तुम्हारी बातों पर विश्वास करते हुए अदालत तुम पर तरस खा ले।"

"मगर"

"होंठ बंद।"

फुंफकार उठा गौतम।

कमल अरोड़ा की गर्दन झुक गई।

पल भर में ही उसका सब कुछ लुट चुका था। कुछ भी तो नहीं बचा था उसके पास।

'खट...खट...खट।'

भारी बूटों की आवाज सुनकर कमल अरोड़ा ने घुटनों पर ठोड़ी रखे-रखे ही सींखचों वाले दरवाजे की तरफ देखा।

इस वक्त वह हवालात में घुटनों को बांहों में पिराये आंसू बहा रहा था।

उसकी बीवी मर गई थी—उसका बेटा मर गया था। सब कुछ तो ही उजड़ चुका था उसका।

हवलात में दाखिल होते ही वह घुटनों को सीने पर लगाकर आंसू बहाने लगा था।

जहां उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे वहीं वह यह भी सोच रहा था कि नेहा की मौत कैसे हुई? अपनी पत्नी की लाश तो उसने देखी तक नहीं थी। गौतम उसे वहीं से ही गिरफ्तार करके थाने ले आया था।

अवश्य ही उसकी नाराजगी को बर्दाश्त नहीं कर पाई होगी नेहा—और उसने उसके जाने के बाद आत्महत्या कर ली होगी।

उसने स्वयं से कहा।

लेकिन क्षितिज को किसने मारा?

यह नया सवाल उसके सामने मुंह बाये खड़ा हो गया।

क्या नेहा ने मारा उसे?

"नहीं...वह इतनी निर्दयी नहीं हो सकती कि अपने जिगर के टुकड़े को खत्म करने का हौसला कर सके।"

डायन भी अपनी औलाद का खून नहीं कर सकती—जबकि वह तो सिर्फ एक इंसान थी।

क्षितिज में तो उसकी जान थी। हर वक्त वह उसे अपने साथ चिपकाये रखती थी।

"नहीं...।" उसका दिल नहीं माना—"वह ऐसा हरगिज नहीं कर सकती।"

तो फिर मरा कैसे क्षिजित?

किसने मारा उसे?

हर बार घूम-फिरकर उसके सामने वही सवाल आ खड़ा होता—और जवाब उसे कुछ भी नहीं सूझता।

हर बार इस सवाल का जवाब ढूंढने में चकराकर रह जाता।

वह कई तरह के जवाब अपने जेहन में सोचता—लेकिन हर बार उसका दिमाग उस सवाल के जवाब को न मानने से इंकार कर देता। सुबह से शाम हो गईं और अब रात के अंधेरे ने अपने पांव पसारने शुरू कर दिये थे।

लेकिन कमल अरोड़ा को अभी तक अपने इस सवाल का जवाब नहीं मिला था कि क्षितिज की मौत कैसे हुई?

इस बीच एक सिपाही दो बार उसके लिये खाना लेकर आया था—मगर उसने खाना खाने से इन्कार कर दिया था।

बूटों की आवाजें सुनकर वह यही समझा कि सिपाही उसके लिये खाना ला रहा है।

लेकिन जब उसने सीखचों की साईड में गौतम को सामने आते देखा तो वह हल्के से चौंका—मगर तुरंत ही वह सामान्य हो गया था। वैसे ही घुटनों को सीने से लगाये बैठा रहा—जैसे पहले बैठा था।

गौतम् ने एक जहरीली मुस्कान उस पर फेंकी फिर अपने बाँईं तरफ देखते हुए बड़े ही इज्जत भरे स्वर में बोला—

"आईये बड़े शाह जी।"

बड़े शाह का नाम सुनकर बुरी तरह चौंका वह—उसके साथ ही उसकी आंखों में उम्मीद की हल्की-सी किरण जागी।

कल रात थाने में उसने स्वयं अपने कानों से फोन पर हुए गौतम और बड़े शाह के वार्तालाप को सुना था।

उसमें जिस तरह से बड़े शाह ने अपनी जमानत पर उसे छोड़ देने को कहा था—और जिस तरह से उसने छोटे शाह को जल्दी पकड़ने के लिये गौतम से कहा था—उससे उसके दिल में बड़े शाह के लिये इज्जत बन गई थी।

वह कूदकर इस नतीजे पर पहुंच गया था कि छोटे शाह की

हरकतों के कारण ही बड़े शाह बदनाम हो रहा है। छोटा शाह सभी बुरे कार्य बड़े शाह के नाम पर कर रहा है—और बड़ा शाह एक जिम्मेदार बाप होने का खामियाजा भुगत रहा है। उसे लगा कि अपना दुखड़ा बड़े शाह को सुनाकर वह उसकी हमदर्दी बटोर सकता है। और बड़ा शाह गौतम को सच्चाई सामने लाने के लिये दबाव डाल सकता है।

सो तुरंत वह अपने स्थान से खड़ा हो गया।

तब तक बड़ा शाह भी गौतम के बराबर आ खड़ा हुआ था।

"यह क्या हुआ कमल अरोड़ा?" बड़ा शाह उसे देखते हुए गम्भीरता से बोला—"अपनी ही बीवी का कत्ल कर दिया तुमने—अपने ही जिगर के टुकड़े को मार डाला।"

कमल तेजी से सींखचों के करीब आया और सींखचों को पकड़कर बिलख पड़ा।

"मैं बेगुनाह हूं। बड़े शाह जी। मैंने कुछ नहीं किया।"

"मैं जानता हूं।"

कहते हुए बड़े शाह के होंठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी।

कमल हैरानी से उसे देखने लगा।

"अ...आप जानते हैं?"

"यह इंस्पैक्टर भी जानता है।" जहरीली हंसी हंसा बड़ा शाह।

"त...तो फिर मुझे गिरफ्तार क्यों किया गया है?"

"बड़े शाह का एक शिकार है तू।" एकाएक ही बड़े शाह के स्वर में क्रूरता उभर आई—"बड़े शाह का काटा फड़फड़ा तो सकता है मगर उड़ नहीं सकता।"

एक तेज झटका लगा कमल अरोड़ा के जेहन को।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं बड़े शाह जी?"

"मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं हरामजादे। मीडिया के सामने मुझे बुरा-भला कहा तूने—मेरे बेटे की रिहाई में टांग अड़ाई तूने—ऐसे में मैं तुझे छोड़ दूंगा—ऐसा कैसे हो सकता है?"

"क्या?"

"हां सुअर की औलाद। मीडिया के सामने मैंने तुझे अभयदान दे दिया—और यह कहा था कि अगर तेरी मौत होती है तो उसका जिम्मेदार मुझे समझा जाये...। ऐसे में तुझे मारकर अपनी कुट्टी नहीं कटाना चाहता था—सो मैंने यह चाल चली।"

"चा...चाल?"

"हां चाल।" कुटिलता से मुस्कुराया बड़ा शाह और अपने बा

ओर देखते हुए बोला—"अपनी शक्ल तो दिखा इसे विक्की।"

तुरन्त विक्की साईड से निकलकर जैसे ही सामने आया—कमल बुरी तरह से उछल पड़ा।

"त...तू...।" उसके मुंह से जैसे आग निकली।

"विक्की है इसका नाम...। तेरा बीवी का वो यार—जिसे वो बेचारी जानती तक नहीं थी।"

बड़े शाह की इस बात पर बुरी तरह से उछल पड़ा कमल अरोड़ा।

आंखें फाड़े वह कभी बड़े शाह को देख रहा था तो कभी विक्की को।

इधर बड़ा शाह उसे बता रहा था कि कैसे उसे संजना के फोन का पता जो उसने कमल के घर किया था—और फिर कैसे उसने चाल चली। और फिर जब उसे यह पता चला कि कमल के घर में बहुत क्लेश हुआ है—और उसने नेहा को बदचलन कहा है तो उसी रात उसने विक्की को हुक्म दे दिया कि वह काम कर दे और विक्की ने सुबह कमल के जाने के पश्चात उसके घर में घुसकर नेहा और क्षितिज का खून कर दिया।

और कमल अरोड़ा।

वह आंखें फाड़े उसे देखे जा रहा था।

"देखा।" अन्त में वह बोला—"कैसा फंसाया तुझे—। अब तू मीडिया क्या पूरी दुनिया के आगे चीख कि यह खून तूने नहीं किये—यह मेरी चाल थी—लेकिन तेरे चीखने पर कोई विश्वास नहीं करेगा। क्योंकि खुद तेरे मोहल्ले के लोग तेरे खिलाफ गवाही देंगे कि अपनी बीवी और बच्चे का खूनी तू है। सिर्फ तू—। हा...हा...हा।"

एकएक ही कमल अरोड़ा की आंखों में कहर बरसने लगा।

"रघुराज शाह।" वह घायल शेर की तरह फुफकारा—"तूने मुझे तबाह कर दिया—मेरा सब कुछ खत्म कर दिया। मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा कुत्ते। वो हाल करके छोडूंगा तेरा कि रुह भी कांप उठेगी।"

"हा...हा...हा।" बड़े शाह के होठों से शैतानी ठहाका उबल पड़ा—"बिल्ली को ख्वाब में भी छीछड़े ही दिखायी देते हैं। अरे बेवकूफ—पहले बाहर तो निकल—फिर बदला लेने की सोचना। हा...हा...हा।"

"हरामजादे।" दहाड़ा कमल अरोड़ा और सीखचों को ऐसे झिंझोड़ने लगा जैसे वह बाहर निकलने को छटपटा रहा हो।

"ठाक।"

तभी सीखचों को पकड़े उसकी उंगलियों पर गौतम का डण्डा पड़ा।

बुरी तरह से बिलबिला उठा कमल अरोड़ा—और उसका हाथ सीखचों से छूट गया।

"गाली निकालता है बड़े शाह जी को।" गुर्राया गौतम।

"निकालने दे इसे गाली।" बड़ा शाह हंसा—"बिलबिला रहा है साला—कुछ तो कहेगा ही। निकाल-निकाल गाली—पुच...पुच।"

उसने कमल से कहा।

"अरे सुअर की औलाद।" फुंफकारा कमल—"अगर खुद को इतना ही बड़ा दादा समझता है तो एक बार—सिर्फ एक बार मुझे बाहर निकाल—फिर देखना क्या हालत करता हूं तेरी। पूरा का पूरा जमीन में गाड़ दूंगा।"

"मैं तो खुद चाहता हूं कि तू बाहर निकले। जेल तोड़कर भागे ताकि मैं अपने हाथों तेरी गर्दन मरोड़ सकूं।"

"तो बोल न अपने इस कुत्ते से।" कमल ने गौतम की तरफ इशारा किया—"कि मुझे निकाले बाहर।"

"मेरा यह वफादार कुत्ता।" बड़े शाह ने गौतम की पीठ पर हाथ फेरा—"मेरे कहने पर तुझे अभी छोड़ तो देगा—लेकिन तब तू मरकर सच्चा हो जायेगा—जबकि मैं तुझे दुनिया के सामने झूठा साबित करना चाहता हूं। उसके बाद मैं कोशिश करूंगा तुझे छुड़ाने की—और तब तेरी मौत पर किसी को भी दुःख नहीं होगा।"

कहकर उसने पुनः ठहाका लगाया।

और कमल अरोड़ा—

वह अंगारों पर लोट रहा था उस वक्त।

"अब गुड बॉय।"

हंसते हुए बड़े शाह ने बांई आंख दबाई और विक्की और गौतम के साथ वहां से हट गया।

उसके जाते ही कमल धम्म से नीचे बैठ गया और फर्श पर टक्करें मारते हुए बिलखने लगा।

"न...नेहा...हा...मुझे माफ कर दो नेहा...।" वह रोते हुए कह रहा था—"तुम पर शक करके मैंने जो गुनाह किया है—उसकी सजा मैं सारी जिंदगी जेल में रहकर भी नही पूरी कर पाऊंगा। मैंने तुझ देवी पर शक किया—तुझे बुरा-भला कहा—धिक्कार है मुझ पर। तेरी मौत

का कारण मैं हूं...सिर्फ मैं...। न मैं तुझ पर शक करता न तेरी मौत होती।"

फर्श से माथा टकराते उसका माथा फट गया।

और फिर एकाएक ही वह एक तरफ को लुढ़क गया।

बेहोश हो गया था वह।

और बेहोशी में ही वह बुदबुदाते हुए नेहा से माफी मांग रहा था।

"तुम्हारा नाम?"

"वासुदेव।"

"इसे जानते हो?" सरकारी वकील ने कमल अरोड़ा की तरफ बांह लम्बी करते हुए पूछा।

वासुदेव ने सामने कटघरे में खड़े कमल अरोड़ा की तरफ देखा और नफरत भरे स्वर में बोला—

"हां—जानता हूं—अच्छी तरह से जानता हूं। इसका नाम कमल अरोड़ा है। मेरे घर के बराबर में है इसका घर।"

अदालत में आज काफी भीड़ थी।

बड़े शाह के कहने पर गौतम ने मीडिया में कमल अरोड़ा के कातिल होने की खबर जोर-शोर से दी थी।

इस वक्त जहां किशनपुरा के कई लोग अदालत में थे—वहीं मीडिया के लोग भी आये हुए थे।

अदालत में इस वक्त सम्पूर्ण चुप्पी छाई हुई थी। सरकारी वकील गवाहों से पूछताछ कर रहा था।

"छब्बीस फरवरी की रात को—।" सरकारी वकील ने पूछा—"तुमने क्या देखा—?"

"उस वक्त मैं रात को सोने की तैयारी कर रहा था—जब एकाएक ही मुझे इसके चीखने की...।" उसने कमल की तरफ इशारा किया—"आवाजें आईं। अपनी पत्नी नेहा पर बरस रहा था यह और इसके अपनी पत्नी को मारने और उसके पीड़ा से चीखने की आवाजें सुनाई दीं।"

"क्या वजह थी लड़ाई की? इसका कुछ पता चला तुम्हें?"

"नेहा को बदजात, चरित्रहीन, कुलटा कह रहा था कमल—। साथ ही यह पूछ रहा था कि उसका यह गलत काम कब से चल रहा है?"

"ओह। तो अभियुक्त कमल की पत्नी चरित्रहीन थी और वह धंधा करती थी।"

"कैसी बातें करते हैं आप वकील साहब।" बुरा मुंह बनाया वासुदेव ने—"नेहा तो देवी थी। उस जैसी सचरित्र तो मेरी अपनी बीवी भी नहीं हो सकती।"

"तो क्या तुम्हें अपनी बीवी पर शक है?"

"अरे न...ही...।" हड़बड़ा उठा वासुदेव—"ए...ऐसी बात नहीं। मेरे कहने को आप गलत ढंग से ले रहे हैं।"

"तो आप ही सही ढंग से समझा दीजिये अदालत को।" हंसते हुए बोला सरकारी वकील।

"बस यूं समझ लीजिये वकील साहब कि गंगा तो मैली हो सकती है—लेकिन नेहा का दामन पाक साफ था। छह साल से हमारे मौहल्ले में रह रही है वो—ऐसे में आदमी के अच्छे-बुरे होने का पता तो चल ही जाता है।"

"और कमल?" सरकारी वकील ने कमल की तरफ इशारा करते हुए वासुदेव से पूछा—"कमल कैसा था?"

"बहुत ही अच्छा। अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था यह। पता नहीं उस रोज इसे क्या हो गया जो...।"

"जितना पूछा जा रहा है सिर्फ उतना ही जवाब दो।"

उसकी बात को काटते हुए बोला सरकारी वकील।

हल्की सी हड़बड़ी के साथ सिर हिला दिया वासुदेव ने।

"जब तुमने दोनों के झगड़े का शोर सुना तो तुमने क्या किया?"

सरकारी वकील ने अगला सवाल किया।

"अपनी बीवी के साथ मैं बाहर निकला।"

"क्यों?"

"हमारे पड़ौसी के घर क्लेश हो रहा था—और एक अच्छे पड़ौसी होने के नाते मेरा फर्ज बनता था कि मैं जाकर दोनों को समझाऊं।"

"यांनि तुम कमल अरोड़ा को समझाने के लिये घर से निकले थे।"

"हां।"

"फिर?"

"मैं बाहर निकला तो कमल के घर के सामने जैसे मजमा लगा

हुआ था। मौहल्ले के और लोग भी खड़े थे वहाँ।"

"फिर?"

"मैंने किशन लाल—मक्खन सिंह—अशफाक, रमेश और महिन्द्र को साथ लिया और फिर कमल के घर की घंटी बजाई।

"यह जो तुमने नाम लिये हैं...कौन हैं?"

"सभी वहीं रहते हैं। मौहल्ले वाले हैं सभी।"

"तो घण्टी आने से उसने दरवाजा खोला?"

"हां।"

"फिर...?"

"मैंने कमल को समझाने की कोशिश की—लेकिन मेरी उम्र का भी लिहाज नहीं किया—उल्टे हम सब को दुत्कारते हुए हमारे मुंह पर ही दरवाजा बन्द कर दिया।"

"क्या तुमने फिर कोशिश नहीं की?"

"खाक करता—इसकी हरकत पर तो पूरा मौहल्ला ही नाराज हो गया था। सो उसे बुरा-भला कहते हुए हम सभी अपने-अपने घरों में चले गये।"

"क्या इसके बाद दोनों का झगड़ा होता रहा?"

"नहीं...उसके बाद मुझे कोई आवाज नहीं आई।"

सरकारी वकील कटघरे के करीब से हटा और मजिस्ट्रेट की तरफ देखते हुए बोला—"अदालत ने गवाह वासुदेव का बयान सुना मीलार्ड। अब मैं डॉक्टर रस्तोगी को अदालत में बतौर गवाह पेश करने की इजाजत चाहूंगा।"

"इजाजत है।" मजिस्ट्रेट गम्भीरता से बोले।

"आपका नाम?"

सरकारी वकील कटघरे में खड़े डॉक्टर से बोला।

"डॉक्टर रस्तोगी—डॉक्टर किशनराय रस्तोगी।" डॉक्टर बोला।

"मृतक नेहा और उसके बेटे की लाशों का पोस्टमार्टम आप ही ने किया था?"

"जी हां।"

"हालांकि अदालत को पोस्टमार्टम की रिपोर्ट मिल चुकी है।"

सरकारी वकील बोला—"लेकिन फिर भी अदालत आपके मुंह से सुनना चाहती है कि वो मौतें कैसे हुईं?"

डॉक्टर रस्तोगी ने मजिस्ट्रेट की तरफ देखा और बोला—"योर ऑनर—मृतक नेहा सात माह से गर्भ से थी। उसके भीतर पल रहे बच्चे के सिर पर पड़े निशान बता रहे हैं कि नेहा के पेट पर जोर से वार किये गये थे। उन्हीं प्रहारों से गर्भ गिर गया और खून बहने लगा। लेकिन नेहा की मौत खून बहने से नहीं हुई योर ऑनर—बल्कि दम घुटने से हुई थी।"

"दम घुटने से कैसे?"

"उसके मुंह और नाक को उसके सांस लेने की प्रकिया को रोक दिया गया था। ऐसी सूरत में मृतक के गले की नसें फूल जाती हैं। और वह मर जाता है। नेहा की भी गले की नसें फूली हुई थीं।"

"इसका तो यह मतलब निकलता है कि नेहा के पति ने नेहा का मुंह बंद करके उसके पेट पर प्रहार किया होगा।"

"हो सकता है ऐसा हो।" गम्भीरता से बोला डॉक्टर रस्तोगी—"मैंने बस पोस्टमार्टम में जो देखा—वही बताया है—अब पुलिस का वकील या लोग इसका क्या निष्कर्म निकालते हैं—इससे भला मुझे क्या मतलब?"

"आप ठीक कह रहे हैं डॉक्टर रस्तोगी।" मुस्कुराया सरकारी वकील—"क्या आप अदालत को बतायेंगे कि नेहा की मौत का वक्त क्या था?"

"रात के एक और दो के बीच का वक्त था।"

"और मृतक नेहा के बेटे की मौत कैसे हुई?"

"उसे बेदर्दी से फर्श पर पटका गया था योर ऑनर या उसके सिर पर वार किया गया था जिससे कि उस मासूम के दिमाग की नसें फट गई थीं और वही वजह मौत का कारण बनी।"

"क्या उसकी मौत का भी वही वक्त था?"

"जी हां।"

"थैंक्यू डॉक्टर रस्तोगी।" कहकर सरकारी वकील ने मजिस्ट्रेट की तरफ देखा और पुरजोर लहजे में बोला—"अदालत ने डॉक्टर रस्तोगी का बयान सुना मीलार्ड—और वासुदेव का भी बयान सुना। साफ नजर आ रहा है कि अभियुक्त कमल अरोड़ा को अपनी पत्नी के चरित्र के बारे में गलतफहमी हो गई थी—और वह इसी वजह से नेहा

से लड़ रहा था। लेकिन पड़ौसियों के आ जाने पर उसने उस वक्त चुप रहना ही ठीक समझा...मगर अपने दिल में ठाने बैठा था—उसने कमल की तरफ भाले की तरह उंगली तानी—कि इसे अपनी बीवी को खत्म करना ही है—सो रात को एक और दो बजे के दरम्यान कमल ने अपनी बीवी का मुंह दबाया और उसके पेट पर वार किया।"

उसने एक पल के लिये जुबान रोकी—फिर बोली—

"यहां पर मैं अदालत को यह बता देना जरूरी समझता हूं कि कमल कुंगफू, मार्शल आर्ट्स में मास्टर हैं, ऐसे में पांच-सात पर यह अकेला भारी पड़ सकता है। ऐसे में बेचारी अकेली नेहा उसके सामने कहां टिक सकती थी। और इसने उसे मार डाला। मीलार्ड...यहीं पर ही कमल अरोड़ा की नृशंसता का अंत नहीं हुआ—इसने अपने तीन साल के बेटे क्षितिज का भी खून कर दिया। ऐसे खतरनाक खूनी को तो मौत की सजा मिलनी चाहिये मीलार्ड...जमानत तो बहुत दूर की बात है। दैट्स आल मीलार्ड।"

कहकर सरकारी वकील ने सिर झुकाया और पीछे हटते हुए अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

मजिस्ट्रेट ने कमल अरोड़ा की तरफ देखा।

"आप अपनी सफाई में कुछ कहना चाहेंगे मिस्टर कमल अरोड़ा?"

कमल की आंखें भर आईं।

"हर तरफ से जाल बिछाकर मुझे ऐसा फांसा गया है जज साहब कि मेरे बचने का कोई रास्ता नहीं। यह डॉक्टर।" उसने डॉक्टर रस्तोगी की तरफ इशारा किया—"सरासर झूठ बोल रहा है। सुबह खुद अपने हाथों से नेहा ने मुझे दूध लाकर दिया था जो कि मैंने लेने से इन्कार कर दिया था और वहां से चला गया था—लेकिन यह कह रहा है कि खून रात के एक और दो के बीच हुआ था।"

"यह झूठ है मीलार्ड।" अदालत हकीकत जानने के लिये डॉक्टरों का बोर्ड बनाकर पोस्टमार्टम करवा सकती थी।" विरोध भरे स्वर में बोला डॉक्टर रस्तोगी—"पिछले सत्रह सालों से आज तक किसी ने मेरी रिपोर्ट पर उंगली नहीं उठाई—और यह—यह मुझ पर तोहमत लगा रहा है।"

"मैं तो सिर्फ हकीकत बयान कर रहा हूं जज साहब। मुझे डॉक्टर रस्तोगी से कोई शिकवा नहीं। इसकी जगह कोई भी होता—बेशक डॉक्टरों का बोर्ड भी होता—तब भी वह यही रिपोर्ट तैयार करता

जो डॉक्टर रस्तोगी ने की है।"

"अ...आप कहना क्या चाहते हैं मिस्टर कमल अरोड़ा?"

"आप मजिस्ट्रेट हैं—आपने तो बस गवाहों और दलीलों के आधार पर फैसले देने होते हैं। अदालत के बाहर निकलकर हकीकत का पता करेंगे तो आपको पता चलेगा कि किशनपुरा में कानून का डण्डा नहीं चलता, बल्कि बड़े शाह और छोटे शाह के आतंक का राज है। जो भी इन दोनों बाप-बेटों के रास्तें का रोड़ा बनता है—उसे साफ कर दिया जाता है। मैंने भी कानून की मदद की थी मीलार्ड। नो बच्चों को, एक प्रिंसीपल को और एक टीचर को उन गुण्डों के कब्जे से छुड़ाया था जिन्होंने उन्हें बंधक बनाते हुए यह मांग रखी थी कि छोटे शाह को छोड़ दिया जाये। तब मैंने कानून की मदद की थी—लेकिन छोटे शाह की रिहाई में रुकावट डाल दी थी मैंने। जिसका नतीजा मुझे मिला मेरी बीवी मार दी गई—मेरा बच्चा खत्म कर दिया गया—और मुझे अपनी बीवी की हत्या के इल्जाम में फंसा दिया गया।"

उसने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"इनकी चाल में फंसकर मैं अपनी गंगा-सी पवित्र नेहा पर शक कर बैठा—उससे लड़ा भी—लेकिन मैंने खून नहीं किया मीलार्ड...मैंने खून नहीं किया।"

कमल अरोड़ा ने आस्तीन से अपनी बह रही आंखों को पोंछा और अपने सामने बैठे बिजली उस्ताद की तरफ देखते हुए गहरी सांस छोड़ी।

"छह महीने से मुकदमा चल रहा है। और अगली पेशी पर फैसला हो जायेगा। और मैं जानता हूं कि फैसला क्या होगा। सजाये मौत या आजीवन कारावास।"

बिजली उस्ताद ने भी गहरी सांस छोड़ी और उसके कंधे पर सहानुभूति से हाथ रखते हुए बोला—

"तू सचमुच वक्त का मारा है कमल। अगर तू उन बच्चों को न बचाता तो तू आज यहां न होता। यह सब वक्त के खेल होते हैं। वक्त पता नहीं कब कहां कौन सी करवट ले ले—कुछ पता नहीं चलता। लेकिन सब कुछ वक्त के हाथ में छोड़कर हारकर बैठ जाने से वक्त बदल नहीं जाता। वक्त को मुट्ठी में करना सीखो—और यह होता

है पुरुषार्थ से—हिम्मत से।

हिम्मत से आदमी बुरे से बुरे वक्त को भी बदलने की ताकत रखता है—और माशाअल्ला तू तो अभी जवान है। तेरे में ताकत भी है—और दिमाग भी बढ़िया रखता है तू।"

"क्या मतलब?"

चौंकते हुए कमल अरोड़ा ने उसकी तरफ देखा।

बिजली उस्ताद के होंठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"अपनी बीवी की मौत का बदला लेने का दिल नहीं करता तेरा? अपने बेटे की मौत की याद नहीं आती तुझे?"

सुनकर कमल का चेहरा लरज गया।

आंखों में मजबूरी नजर आने लगी।

"दिल तो करता है कि दोनों बाप-बेटों की गर्दनें मरोड़कर रख दूं।" उसने दांत किटकिटाये—"मगर क्या करूं?" हताशा उभर आई उसके चेहरे पर—"यहां कैद हूं मैं, काश! मैं कुछ रोज के लिये आजाद हो जाता।" उसने गहरी सांस छोड़ी।

बिजली उस्ताद के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

एक रहस्यमयी मुस्कान।

"अगर अपुन तुझे आजाद करवा दे तो?" वह थोड़ा आगे को झुकते हुए फुसफुसाया।

बुरी तरह उछल पड़ा कमल अरोड़ा।

"क...या...?क्या कहा तुमने?" उसे जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

"अपुन बोला अगर अपुन तेरे को आजाद करवा दे तो?"

कमल अरोड़ा ने जोरों से थूक सटकी—उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"क्या ऐसा ह...हो सकता है?" उसके कंठ से थर्राया स्वर निकला।

बिजली पहलवान के होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान रेंग गई।

"सुनो...।" वह अपने चमचों से बोला—"साला क्या कह कहा है?"

"हा...हा...हा।"

उसके चमचे खुलकर हंसे।

"अमां मियां...।" भीखू कमल से बोला—"अपुन का उस्ताद तो बस आराम करने के वास्ते जेल में आता है। जब तक उसका दिल

चाहेगा यहाँ रहेगा और दिल भर गया, बाहर चला जाएगा।"

"कोई साला अपुन के उस्ताद को नहीं रोक सकता।" दूसरा बोला।

कमल अरोड़ा फटी-फटी आंखों से बिजली पहलवान को देखने लगा। उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह जो सुन रहा है सब सच है।

"अबे इस तरियो क्या देख रयैला है अपुन को?" उसे अपनी तरफ देखता पाकर बोला बिजली पहलवान—"मुंह से बोल क्या चाहता है?"

"मुझे आजाद करवा दो बिजली उस्ताद।" आवाज भर्रा गई कमल अरोड़ा की—"मैं तुम्हारा अहसान जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा।"

"अहसान करने की अपुन को आदत नहीं बाप।" बिजली उस्ताद बोला—"अपुन को तो बस यह बोल कि अपुन को क्या देगा तू?"

सुनकर कमल अरोड़ा पहले तो हड़बड़ाया—फिर बोला—

"दौलत के नाम पर मेरे पास बस एक मकान ही है बिजली पहलवान। मैं उसे तुम्हारे नाम लिख दूंगा।"

बिजली पहलवान ने अपने चमचों को देखा—जैसे उनकी राय मांग रहा हो।

"छोकरा मजबूर है उस्ताद।" भीखू बोला—"कभी-कभी दान-पुण्य भी कर देना चाहिये।"

बिजली पहलवान हंसा—और फिर कमल की तरफ देखा।

"कितने दिन में तू ले लेगा अपना बदला?" उसने पूछा।

"बस...एक हफ्ता दे दो मुझे आजादी का—सिर्फ एक हफ्ता।"

"अपुन तुझे दस दिन दूंगा। दस दिनों में तूने अपना काम करके आना है यहां।"

"मुझे मंजूर है बिजली पहलवान।"

"लेकिन अपुन की एक शर्त होगी?"

"शर्त?"

"हां शर्त।"

"कैसी शर्त?"

"तू अपने हाथ से किसी का खून नहीं करेगा।"

"क्या?" हड़बड़ाया कमल।

"अपुन ने भी आज तक खून नहीं किया। ऐसे में तेरे को इसकी

इजाजत कैसे दे सकता है अपुन। हां—टांग चाहे तो तोड़ सकता है तू किसी की—लेकिन खून नहीं करेगा।"

"म...गर...इस तरह मैं अपना बदला कैसे लूंगा?"

"क्यों? भूसा भरा है क्या तेरे भेजे में?"

गुर्राया बिजली पहलवान।

सुनकर पहले तो हड़बड़ाया कमल अरोड़ा—जैसे ही बात उसकी समझ में आई—उसके चेहरे पर गम्भीरता फैल गई।

"मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है। बिजली उस्ताद।"

वह बोला।

"क्या?"

"मैं किसी के खून से अपने हाथ नहीं रँगूगा।"

"मैं यकीन कैसे कर लूं तेरे पे कि तू जो कह रहा है—उस पर अमल करेगा।"

"ल...लेकिन बिजली पहलवान...।"

"मुझे यकीन दिला।"

एक गहरी सांस छोड़ी कमल अरोड़ा ने और बोला—

"मैं अपनी मरी हुई पत्नी और बेटे की कसम खाकर बोलता हूं कि मैं किसी के खून से अपने हाथ नहीं रंगूंगा। इससे ज्यादा यकीन मैं नहीं दिला सकता तुम्हें।"

"बस...।" हाथ उठाया बिजली पहलवान ने—"अपुन को विश्वास हो गया।"

कमल अरोड़ा ने राहत की सांस छोड़ी—"थैंक्यू बिजली पहलवान।" वह बोला।

"तेरे घर में तेरा कोई फोटू पड़ा है?

"हां...पूरी एलबम है मेरी और नेहा की शादी की। इसके अलावा भी मेरी कई तस्वीरें हैं एलबम में।"

"एलबम कहां है?"

"घर में।"

"अरे बाप घर में कौन से कोने में पड़ी है एलबम?" बिजली पहलवान ने माथे पर हाथ मारा।

कमल अरोड़ा ने उसे बताया—

"नाप ले छोकरे का भीखू।" बिजली पहलवान भीखू से बोला।

भीखू तुरन्त कमल के सामने आ बैठा।

इधर कमल हैरान—उसे समझ में नहीं आ रहा था कि भीखू

उसका क्या नाप लेगा।

उसकी हैरानी तब और बढ़ी जब भीखू उसके चेहरे का नाम लेने लगा। उसने उसकी ठोड़ी पर अंगूठा टिकाया और अपने हाथ को खोलकर बीच की उंगली से उसके माथे को छुआ। फिर उसने उसके गालों को हाथ में लिया।

कमल की कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कर रहा है—लेकिन वह कुछ बोला नहीं। भीखू को अपने चेहरे से छेड़खानी करते रहने दी।

करीब दस मिनट तक भीखू उसके चेहरे पर हाथ फेरता रहा। कभी वह उसके कानों को छेड़ता तो कभी नाक को और कभी गर्दन को।

दस मिनट बाद वह उसके सामने से हटा और बिजली पहलवान को देखा।

"हो गया नाप?" बिजली पहलवान बोला।

"हां उस्ताद।" तुरंत बोला भीखू।

बिजली पहलवान ने अपने दूसरे चमचे को देखा और बोला—"दरवाजे के पास खड़ा हो जा।"

दूसरा चमचा तुरंत उठा और सींखचों वाले दरवाजे के करीब जाकर खड़ा हो गया।

अपना ध्यान उसने बाहर की तरफ लगा दिया।

कमल अरोड़ा ने उस पर से निगाहें हटाई और बिजली पहलवान को इस तरह देखने लगा मानो अभी वह कोई जादू करेगा और वह उस जादू के जोर से उड़कर जेल से बाहर निकल जायेगा।

बिजली पहलवान ने अपनी जेब में हाथ डाला और जब उसका हाथ उसके जेब से बाहर निकला तो उसके हाथ में फंसी चीज को देखकर बुरी तरह से उछल पड़ा कमल अरोड़ा।

मोबाइल फोन था उसके हाथ में जिसे कि जेल में रखना कैदी के लिये वर्जित होता है।

बिजली पहलवान ने मुस्कुराते हुए उसे देखा—फिर कोई नम्बर मिलाने लगा।

नम्बर मिलाकर उसने मोबाईल को कान से लगा लिया।

"तेरा उस्ताद बोल रहा हूं पट्ठे।"

दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला।

"..........." दूसरी तरफ से कुछ कहा गया।

"क्या कह रहा है?" बोला बिजली पहलवान।

"..........."

"डेढ़ लाख में कर ले सौदा...।"

"..........."

"नहीं मानत्ता तो भगा दे साले को।"

"..........."

"अबे भूतनी के आज ही तो आया हूं। हफ्ता भर आराम कर लेने दे—फिर आऊंगा।"

"..........."

"तो क्या तेरी मां का ब्याह करने के लिये फोन किया था।"

"..........."

"कनवर से बात करा मेरी...।"

बोला बिलजी पहलवान—और मोबाईल कान से लगाए दूसरी तरफ से बोलने का इंतजार करने लगा।

"कनवर।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला।

"..........."

"एक नाप ले ले। भीखू बतायेगा तुझे।"

कहकर उसने मोबाईल भीखू की तरफ बढ़ाया।

भीखू ने उससे मोबाइल लिया और अपने कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो कनवर।"

"..........."

"लिख—तीन—तेरह—सत्ताईस—बत्तीस—दो—आधा—सत्तावन...पांच...पांच...बाईस...। लिख लिया?"

"..........."

"ले उस्ताद से बात कर।"

कहकर उसने मोबाईल वापिस बिजली पहलवान को दे दिया।

"नाप ले लिया?" मोबाइल को पुनः कान से लगाते हुए बोला बिजली उस्ताद।

"..........."

"अब एक पता नोट कर।" कहकर उसने कमल अरोड़ा के घर का पता बताया और यह भी बताया कि कमल की फोटो कहां रखी है—और फिर बोला—"कब आयेगा?"

"..........."

"ठीक है मैं तेरा इंतजार करूंगा।"

कहकर उसने मोबाईल कान से हटाकर डिस्कनेक्ट किया और उसे वापिस जेब में डालते हुए कमल की तरफ देखते हुए मुस्कुराया।

"परसों शाम को तू आजाद हो जायेगा।" वह बोला।

सुनकर कमल का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"दस दिन का वक्त दिया हुआ है अपनु ने तेरे को।" बिजली उस्ताद आगे बोला—"ग्यारवें दिन तू अपनु को इदरीच मिलना चाहिये।"

"चिंता मत करो बिजली पहलवान।" कमल दांत भींचते हुए बोला—"ग्यारवें दिन मैं तुम्हें यहीं मिलूंगा।"

एक अजीब-सा तनाव फैल गया था उसके चेहरे पर—आंखों में सख्ती उभर आई थी।

अगले दिन

वक्त दोपहर के डेढ़ बज रहे थे।

उस वक्त कमल अरोड़ा एक स्थान पर बैठा खाना खा रहा था।

उसके आगे थाली पड़ी थी—और वह जमीन पर पालथी मारे रोटी को दाल में डूबोकर खा रहा था।

बिजली पहलवान—भीखू तथा अन्य दोनों चमचे भी उसके साथ बैटे खाना खा रहे थे।

"अरे बिजली उस्ताद—।" तभी बिजली पहलवान के पीछे से आवाज आई।

बिजली पहलवान ने रोटी दबाते हुए गर्दन पीछे मोड़ी।

एक व्यक्ति उसकी तरफ बढ़ रहा था हाथ में थाली लिये।

"अबे जीतू...।" बिजली पहलवान बोला—"तू कब आया?"

"बस अभी-अभी आया हूं उस्ताद।"

"आ बैठ जा।"

जीतू नाम का वह व्यक्ति बिजली पहलवान के सामने बैठ गया।

कमल ने उसे देखा।

उसी के कद बुत का था वह व्यक्ति। जीतू ने थाली जमीन पर रखी और रोटी उठाकर उसे तोड़कर खाने लगा।

"काम हो गया?"

तभी धीमे स्वर में पूछा बिजली पहलवान ने।

"हां उस्ताद—यही लौंडा है न?"
जीतू ने कमल की तरफ देखते हुए पूछा।
"हां...।"
कमल के कान उन दोनों की बातों में खो गये। साथ ही वह उन्हें देखने लगा।
"कब की तारीख है?" पूछा बिजली पहलवान ने।
"दो दिन का जूडीशियल रिमाण्ड है उस्ताद। परसों पेश होऊंगा और वकील बाबू कह रहा है कि परसों जमानत हो जायेगी।"
"किया क्या था तूने?"
"बस टांग तोड़ डाली थी।"
"किसकी?"
"जगतू की।" हंसा जीतू—"साला अस्पताल में पड़ा तेरे कू गाली दे रहा है। दो महीने के लिये तेरी वजह में लंगड़ा होना पड़ा उसे।"
"हा...हा...हा।" बिजली पहलवान खुलकर हंसा।
"यहां पूछताछ होगी तेरे से?" हंसने के बाद उसने पूछा।
"यहां कौन साला पूछताछ करेगा अपनु से?" पुनः हंसा जीतू।
"तो फिर कल कू यह तू बन जाये?" उसने कमल की तरफ इशारा करते हुए कहा।
"अपुन तो कहता है उस्ताद कि आज रात ही बन जायें।" बोला जीतू—"ताकि कमी बेशी का पता चल जायेगा।"
"आज नहीं कल दोपहर को।"
जीतू ने सिर हिला दिया। साथ ही उसने कमल की तरफ देखा जिसके चेहरे पर हजारों प्रश्न नाच रहे थे।
उनके बीच जो बातें हुई थी उसकी कुछ भी समझ में नहीं आया था।
"एक दिन पहले हो गया तेरा काम।" तभी बिजली पहलवान बोला—"उस साले जज ने दो दिन का रिमाण्ड दे दिया है।"
"वो तो ठीक है बिजली पहलवान, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कि मैं निकलूंगा कैसे?"
"कल सब समझ आ जायेगा तेरी।"
कहते हुए बिजली पहलवान के होठों पर भेद भरी मुस्कान फैल गई।

'धड़ाक-धड़ाक...।'

एक बड़े हथौड़े से पत्थर तोड़ रहा था कमल अरोड़ा।

एक अन्य कैदी उससे थोड़ी दूर खड़ा हाथ में कुदाल लिये पत्थरों को तोड़ रहा था।

उस वक्त सुबह के साढ़े ग्यारह बजने वाले थे।

"लौंडे।"

तभी अपने पीछे से कमल अरोड़ा को बिजली पहलवान की आवाज सुनाई दी।

उसने हथौड़े को नहीं रोका और गर्दन पीछे मोड़ी।

"उधर देख।" बिजली पहलवान ने अपने दांईं तरफ इशारा किया।

कमल की गर्दन उसके इशारे की तरफ मुड़ी।

उस तरफ बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं।

कमल जानता था कि कैदी उन चट्टानों के पीछे शौचालय के लिये जाते थे।

घूमती हुई उसकी निगाहें जीतू पर जा टिकी जो कि एक चट्टान के पीछे खड़ा था।

नजरें मिलते ही जीतू चट्टान के पीछे लोप हो गया।

"नजर आया जीतू?" तभी पूछा बिजली पहलवान ने।

"हां।"

"बुला रहा है तुझे—जा।"

कमल के चेहरे पर असंमजता के भाव उभरे।

उसकी समझ में कुछ नहीं आया। मगर बिजली पहलवान कह रहा था—सो उसने हथौड़ा छोड़ा और पहाड़ी उतरते हुए उधर बढ़ा।

"ऐ।"

तभी एक वॉर्डन ने उसे टोका।

कमल ने तुरन्त उसके सामने दांयें हाथ की दो उंगलियां खड़ी की।

"ऊहूं।" बुरा-सा मुह बनाया वॉर्डन ने—"कामचोर कहीं के...जा...साले खाते हुए आगा-पीछा नहीं देखते और फिर काम के वक्त गंदगी फैलाने दौड़ते हैं।"

कमल आगे बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह जैसे ही जीतू वाली चट्टान के पीछे पहुंचा—

बुरी तरह से उछल पड़ा वह।

आंखें ऐसे फट पड़ीं जैसे दुनिया का ऐसा आश्चर्य देख रहा हो

जो दुनिया के आठ आश्चर्यों में नहीं था।

उसके सामने हू ब हू कमल अरोड़ा खड़ा था।

बिल्कुल उसी का चेहरा था वह।

जरा भी तो फर्क नहीं था।

"अबे ऐसे उछल नहीं।" तभी दूसरे कमल के होंठों से जीतू की आवाज निकली—"जल्दी से मेरे पास आ।"

एक और झटका कमल के लिये।

बड़ी मुश्किल से उसने स्वयं को सम्भाला और दूसरे कमल के सामने आ खड़ा हुआ।

दूसरे कमल ने अपनी जेब से एक फेस मास्ट निकाला और कमल के चेहरे पर फिट करने लगा।

सिर्फ एक मिनट लगा उसे। और फिर वह अपने कपड़े उतारते हुए बोला—

"जल्दी से कपड़े उतार—।"

कमल हड़बड़ी में अपने कपड़े उतारने लगा।

और कुछ ही देर में दोनों एक-दूसरे के कपड़े पहने हुए थे।

"हां...अब ठीक है।" मुस्कुराया जीतू—अब मैं तू बन गया है—और तू मैं बन गया हूं।

"यानि...।" कमल अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए बोला।

"यानि अब तू जीतू है—और मैं कमल।"

"ओह।"

"पैंट उतार और बैठ जा।" कहते हुए जीतू भी कमल का पहना पायजामा उतार कर ऐसे बैठ गया जैसे शौच के लिये बैठा हो।

कमल भी उससे थोड़ी दूर बैठ गया।

"अब सुन।" जीतू बोला—"कल तू मेरी जगह पर यहां से निकलेगा—और तेरी जगह मैं यहां पत्थर तोडूंगा। इसलिये काम पूरा करके तू फौरन यहां पहुंच जाना—वर्ना मैं मजबूर होकर तेरा भेद खोल दूंगा।"

"तुम...तुम चिंता मत करो जीतू—। बिजली पहलवान ने मुझ पर जो अहसान किया है—उसे मैं जिंदगी भर नहीं उतार सकता।"

"बिजली उस्ताद किसी पर अहसान नहीं करता। अपने काम की पूरी कीमत लेता है वो। तेरा मकान मैंने देख लिया है। पांच-छह लाख का तो होगा ही।"

"हां...।"

"जब तू काम करके वापिस आयेगा तो तू मकान बिजली [illegible]वान के नाम कर देगा।"

"मैं कर दूंगा...मेरे मकान में पड़ी हर चीज बिजली उस्ताद के नाम कर दूंगा।"

"अब जा तू। लंच में उस्ताद से मिलना—वह तुझे समझा देगा कि तुझे क्या करना है?"

कमल खड़ा हो पैंट पहनने लगा।

जीतू भी खड़ा हो गया।

"बहुत बढ़िया।" दोपहर के खाने के दौरान कमल को देखते हुए बोला बिजली पहलवान—"अब तू एकदम जीतू बन गया है—तू खुद तो अपनी शक्ल नहीं देख सकता—पर अपुन तेरे को बता सकता है—जरा भी फर्क नहीं जीतू की और तेरी शक्ल में और जीतू ने भी तेरी शक्ल ले जी है।"

कमल कुछ नहीं बोला—बस सिर झुका लिया।

"अब सुन—कल तुझे क्या करने का है?"

कमल पुनः उसकी तरफ देखने लगा।

बिजली पहलवान ने रोटी का कोर मुंह में डाला और जुगाली करते हुए बोला—

"कल जब मैं तेरे को यहां से ले जायेगा—तेरे को मुंह से आवाज नहीं निकालनी...वर्ना तू आवाज की बिनाह पर पहचान लिया जायेगा।"

"मैं ध्यान रखूंगा।"

कमल सिर हिलाते हुए बोला।

"अदालत में भी कुछ नहीं बोलेगा तू—। जो बोलेगा जीतू का वकील बोलेगा।"

कमल ने पुनः समझने वाले अंदाज़ में सिर हिलाया।

"और जब तेरी जमानत हो जायेगी तो अदालत के बाहर तेरे को कनवर मिलेगा।"

"करवर?"

"अपुन का शागिर्द है। बाकी की बात तू उससे समझ लेना। साथ ही तेरे को जिस चीज की जरूरत होगी—तू उससे हासिल कर लेना।"

"पर मैं उसे पहचानूंगा कैसे?"

"वो तेरे को पहचान लेगा। जीतू को अच्छी तरह से जानता है वो।"

"चल बे—हो जा खड़ा।"

एक सिपाही कमल के करीब आकर लठमार लहजे में बोला।

तुरंत खड़ा हो गया कमल।

इस वक्त उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

मन ही मन वह डर रहा था कि कहीं उसकी हकीकत सामने न आ जाये।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

सिपाही ने उसकी कलाई में हथकड़ी डाली और हथकड़ी का दूसरा सिरा अपनी बैल्ट में पिरोकर कमल को अपने साथ लिये जेल से बाहर आ गया, जहां पर कि पुलिस की एक नीले और लाल रंग की बंद गाड़ी खड़ी थी।

गाड़ी का पिछला दरवाजा खुला हुआ था, और उसमें दांये-बांये दो लम्बे बैंच लगे हुए थे, जिन पर उसे छह कैदी बैठे नजर आये।

"चढ़ जा।" सिपाही बोला।

कमल चुपचाप गाड़ी में प्रवेश कर गया।

सिपाही ने हथकड़ी का दूसरा सिरा अपनी बैल्ट से निकाला और गाड़ी की साइड में लगी जाली में पिरो दिया।

तभी गाड़ी में पांच सिपाही भी चढ़ गये।

सभी के सभी राईफलों से लैस थे।

दांई तरफ की बैंच पर कमल अन्य कैदियों के साथ बैठा था—सब और सिपाही उनके सामने वाली बैंच पर बैठ गये।

तभी एक अन्य सिपाही ने दरवाजा बन्द किया और बाहर से ताला लगा दिया।

और फिर कुछ देर बाद गाड़ी ने हल्का-सा झटका खाया और आगे बढ़ने लगी।

कमल का जेहन इस वक्त तेजी से घूम रहा था।

वह आने वाले वक्त के बारे में सोच रहा था कि किस तरह से

उसे बड़े शाह से अपनी बीवी और बेटे की मौत का बदला लेना है।

ज्यादा देर नहीं लगी उसे अदालत में।

एक घण्टे बाद ही वह जमानत पर रिहा होकर बाहर आ गया।

अदालत कक्ष से बाहर निकलकर वह अभी दो-तीन कदम ही चला था कि तभी उसे पीछे से आवाज पड़ी।

"जीतू।"

उसी वक्त कमल के कदम वहीं के वहीं रुक गये।

गर्दन पीछे मुड़ी।

काले रंग का मगर आकर्षक नजर आने वाला एक युवक उसकी तरफ बढ़ रहा था जिसने कि सफेद रंग की पैंट-शर्ट पहन रखी थी।

"कनवर ही होगा यह।" कमल मन ही मन बोला। लेकिन मुंह से कुछ नहीं बोला वह।

वह व्यक्ति कमल के करीब आया—इधर-उधर देखा—फिर धीमे स्वर में बोला—

"कमल है न तू?"

"हां। तुम...।"

"कनवर...आ मेरे साथ।"

कमल चुपचाप उसके साथ हो लिया।

कुछ ही देर में वह बाईक पर उसके पीछे बैठा था—और कनवर बाईक को उड़ाता ले जा रहा था।

जिस कोठी के ड्राईव वे पर कनवर ने बाईक रोकी—वह दो मंजिला साधारण-सी मगर पैंट की हुई कोठी थी।

पीले रंग का पेंट किया हुआ था बाहरी दीवारों पर।

"आ—।"

बाईक से उतरकर कनवर कमल के आगे-आगे कम्पाऊण्ड की तरफ बढ़ते हुए बोला।

कमल उसके पीछे-पीछे कम्पाऊण्ड में दाखिल हुआ।

कम्पाऊण्ड का फर्श बिल्कुल साधारण फर्श था। सामने दरवाजा

भी दो पल्लों वाला था—जो कि लकड़ी का बना हुआ था—आजकल के प्लाई बोर्डों जैसा नहीं था।"

हरे रंग के पेंट से पुते हुए दरवाजे को खोलते हुए कनवर कमल को लिये भीतर प्रविष्ट हुआ और उस कमरे में जा पहुंचा जिसमें कि तीन शख्स पहले से ही बैठे हुए थे।

कुर्सियों पर नहीं—बल्कि फर्श पर बिछे रुई के गद्दे पर बैठे हुए थे।

गद्दे के बाहर फर्श पर उनके जूते पड़े थे।

"आ भाई कनवर। तू भी आ जा जीतू।" एक बोला।

कमल ने कनवर की तरह जूते उतारे और गद्दे पर बैठ गया।

बैठे हुए तीनों के बीच में एक ट्रे रखी हुई थी जिसमें कि एक बड़ा जग रखा हुआ था—और साथ में तीन गिलास थे।

तीनों गिलास खाली थे। खाली गिलसों से ही पता चल रहा था कि वे जूस पी रहे थे।

"अबे गधे—यह जीतू नहीं—उस्ताद का नया चेला है।" दूसरा बोला।

"ओह।" पहले को जैसे याद आया—फिर बोला—"तू साला कनवर—क्या कारीगरी है तेरे हाथ में।—ऐसा मास्क बनाया है कि पहचाना ही नहीं जा सकता।"

"अब जरा अपनी असली सूरत तो दिखा दे।" तीसरा बोला।

जवाब में कनवर ने कमल का मुंह अपने दोनों हाथों में लिया और उसके कानों के पीछे नाखून फंसाकर झिल्ली खींच ली।

अगले ही पल कमल अपने असली रूप में उनके सामने बैठा था।

"लौंडा तो खूबसूरत है।" पहला मुस्कुराया।

"जानदार भी है।" दूसरा बोला—"उस्ताद को धूल चटा दी थी इसने।"

"तभी तो उस्ताद इसका मुरीद हो गया।" तीसरा हंसा।

और फिर पहले ने एक गिलास में जूस भरकर कमल की तरफ बढ़ाया।

"यहां शराब नहीं चलती।" वह बोला—"सिर्फ जूस चलता है—पी।"

कमल ने चुपचाप गिलास पकड़ा और होठों से लगा लिया। अनार-मौसमी का मिक्स जूस था वह। एक ही सांस में खाली

कर दिया उसने गिलास।

"यह बल्लू है।" कनवर ने उस आदमी की तरफ इशारा किया जिसने कि कमल को जूस सर्व किया था—"यह कुन्दा है।" उसने दांई तरफ वाले व्यक्ति की तरफ बाँह की—"और यह शेरू है।" उसने तीसरे का परिचय कराया।

"हम सभी उस्ताद के सिपहसालार हैं। जब कोई बड़ा केस होता है तो उस्ताद तभी हमें काम पर लगाता है।" बल्लू हंसते हुए बोला।

"तेरा केस भी बड़ा है—तभी तो हमें कहा है।" कुन्दा बोला।

"अब तू अपनी कहानी सुना पहले—।" शेरू बोला

कमल ने उन्हें अपनी दुःख भरी कहानी कह सुनाई।

बल्लू ने उसके हाथ में जूस का भरा गिलास थमाया और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"सचमुच वक्त का मारा है तू।"

"मगर अब तू चिंता मत कर बस यूं समझ ले जिसकी पीठ पर उस्ताद का हाथ होता है—वक्त भी उसका गुलाम बन जाता है।" शेरू बोला।

"छोड़ इसे।" बोला कनवर—"तू बोल—तू चाहता क्या है हमसे? हम तेरी क्या मदद कर सकते हैं तू यह बता।"

कमल ने जूस के दो घूंट भरे और फिर कनवर की तरफ देखते हुए बोला—

"किशनपुरा यहां से कितनी दूर है?"

"सिर्फ साठ किलोमीटर। एक घण्टे का सफर है।"

"एक तो मुझे वहां पहुंचना है।"

"समझ ले पहुंच गया तू। आगे बोल।" बल्लू बोला।

"कुछ रुपये चाहिये मुझे।"

"बीस हजार बहुत हैं?" पूछा शेरू ने।

"बहुत हैं।"

"मिल जायेंगे—और?"

"एक रिवॉल्वर।"

"क...क्या?" बुरी तरह से चौंका कनवर।

"रिवॉल्वर का क्या करेगा तू?" बल्लू बोला।

"तुझे पता है न उस्ताद से क्या वायदा किया था तूने?" कुन्दा गुर्राया।

"चिंता मत करो—।" गम्भीरता से बोला कमल—"बिजली

पहलवान को जो जुबान मैंने दी है वह पूरी होगी।"

"तो फिर रिवॉल्वर का क्या करेगा तू?"

"किसी की जान नहीं लूगा। अपनी जान बचाने के लिये मुझे उसकी जरूरत पड़ सकती है।"

"मगर...।"

"मिल जायेगी।" बल्लू कनवर की बात काटते हुए बोला—"तू और बोल—और क्या चाहिये तुझे?"

"मुझे किशनपुरा पहुंचा दो—बस। आगे जो करना होगा—मैं खुद कर लूंगा।"

"मगर कुछ पता तो चले—कि तू करेगा क्या?"

"अभी कुछ नहीं पता। वहां जाकर हालात देखूंगा—उसके पश्चात् आगे की सोचूंगा।" कहते हुए कमल की आंखों में सोचें उमड़ आईं।

चारों उसकी तरफ देखने लगे।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद कनवर ने अपनी जेब से एक मोबाइल निकाला और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"इसे रख ले अपने पास।"

"क्यों?" हल्की-सी हैरानी से बोला कमल।

"मोटा मुर्गा है तू उस्ताद का। तेरे मकान की कीमत डलवा ली है हमने। सात लाख मिल रहे हैं। अब इतनी मोटी रकम के लिये हमारा भी तो फर्ज बनता है कि तेरी मदद करें। इस मोबाईल में हम चारों के नाम और नम्बर फीड हैं। तुझे जिसकी भी मदद की जरूरत हो—उसे फोन कर देना।"

कमल ने चुपचाप मोबाईल ले लिया।

"अब फिर से जीतू बन जा तू।" अपने करीब पड़ी झिल्ली उठाते हुए बोला कनवर।

कमल ने मुंह उसकी तरफ कर लिया।

संजना ने कविता की तरफ गर्दन झुकाकर देखा।

अपनी मां से चिपकी कविता टी० वी० देखते-देखते सो गई थी।

रोज ही ऐसे ही होता था कविता के साथ। स्कूल से आने के पश्चात् खाना खाने के बाद वह अपनी मां से चिपककर टी० वी० देखने

जाती और टी० वी० देखते-देखते ही वह सो जाती थी।

संजना ने आहिस्ता से उसे स्वयं से अलग किया और उसे बैड पर ठीक तरह से लिटाकर स्वयं बैड की पुश्त से टेक लगाकर टी० वी० देखने लगी।

तभी—

"डिंग...डांग...।"

कॉलबैल बजी।

गहरी सांस छोड़ते हुए संजना बैड से उतरी और चप्पल पहनकर बाहर निकली और हॉल में होते हुए मेन डोर के पीछे आकर सिटकनी गिराते हुए दरवाजा खोल दिया।

सामने एक अजनबी खड़ा था।

"कहिये?" वह प्रश्न भरे स्वर में बोली।

"कमल।"

वह अजनबी जो कमल ही था बोला।

बुरी तरह से चौंकी संजना।

"कमल—कौन कमल?"

"बड़ी जल्दी भूल गईं आप कमल को।" कमल बोला—"अजन्ता कैफे में मेरे सामने ही आपने अपना दुखड़ा रोया था—और अब...।"

"बकवास बन्द करो अपनी।" गुर्रा उठी संजना—"तुमने आवाज तो कमल की बना ली है। लेकिन शक्ल...।"

"यह शक्ल असली नहीं है संजना जी।" कमल ने अपने गालों पर हाथ लगाया—"इस नकली चेहरे के पीछे कमल का असली चेहरा छुपा हुआ है।"

"म...मतलब?"

"भीतर चलिये—आपको विश्वास हो जायेगा।"

संजना मंत्रमुग्ध-सी एक तरफ हट गई।

कमल भीतर प्रवेश कर गया।

दरवाजा बन्द कर संजना उसके साथ हॉल में आई और बोली—

"पहले खुद को कमल साबित करो—फिर आगे बात होगी।"

कमल ने बिना कुछ कहे अपने चेहरे से जीतू का फेस मास्क उतार दिया।

अब संजना के सामने कमल खड़ा था।

असली कमल।

"अब तो विश्वास हो गया आपको?" कमल बोला...तु...म... आप...आप तो जेल में थे और...।

"जेल से भागकर आया हूं यहां।"

संजना को काटो तो खून नहीं। फटी-फटी आंखों से वह कमल को देखे जा रही थी।

कमल ने पुनः अपने चेहरे पर फेस मास्ट चढ़ाया और सोफे पर बैठते हुए बोला—

"इस रूप में मैं जीतू हूं—बैठिये।"

संजना ने जोरों से थूक सटकी और उसके दाईं तरफ वाले सोफे पर ऐसे बैठी जैसे उसमें जान ही न हो।

कुछ पलों तक हॉल में सन्नाटा छाया रहा। हां बैडरूम में टी० वी० की आवाजें जरूर आ रही थीं।

थोड़ी देर बाद संजना ने थूक सटकी और थर्राये स्वर में बोली—

"पहले तो मैं भी यही समझी थी कि गंगाधर का खून आप ही ने किया है—लेकिन बाद में मुझे यह पता चल गया कि उसी कमीने ने मेरे पति की हत्या करवाई थी—और अब वो मेरी सारी दौलत हड़पने के लिये मुझसे शादी करना चाहता था। मैं तो उसकी बातों में आ गई थी—तभी तो मैंने पुलिस को फोन कर दिया था। लेकिन ऊपर वाले को उससे मेरी शादी मंजूर नहीं थी—सो उसने उसे स्वयं ही मार दिया।"

कहते हुए उसके चेहरे पर नफरत उभर आई—जो कि निश्चिय ही गंगाधर के लिये थी।

कमल कुछ नहीं बोला—बस उसे देखता रहा।

"तुम्हारे बारे में भी मुझे पता चला है कि तुमने अपनी पत्नी और बेटे को मार डाला है।" वह बोली—"और तुम पर उनकी हत्याओं का मुकदमा चल रहा है।"

"आप क्या सोचती हैं—क्या अपनी बीवी को मैंने मारा है—क्या अपने ही कलेजे की धड़कन का गला दबाऊंगा मैं।" कमल की आवाज में दर्द उमड़ आया—"नहीं संजना जी...मेरा घर उजाड़ने वाला तो बड़ा शाह है—उसी ने मेरे बच्चे का खून किया, उसी ने मेरी नेहा को मुझसे छीना—और यह बात उसने खुद अपने मुंह से कही थी मुझे। बहुत बड़ी और गहरी चाल चली थी उसने मुझे बर्बाद करने

के लिये—और मैं बर्बाद हो गया।"

संजना के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे उसके दर्द से उसे दर्द हो रहा हो।

"और अब मैं जेल से निकला ही इसीलिये हूं कि उस कमीने का नामोनिशान मिटा दूं।"

कहते हुए कमल की आंखों में दरिंदगी उमड़ आई।

"उन बाप-बेटों की मौत की दुआ तो यहां का बच्चा-बच्चा मांग रहा है।" गहरी सांस छोड़ी संजना ने—"लेकिन ऊपर वाला भी लगता है बहरा हुआ पड़ा है—तभी तो उसे किसी की दुआ सुनाई नहीं देती—किसी मजलूम की चीख नहीं सुनता वह। छोटे शाह का जब दिल करता है...वह चलती किसी भी लड़की को उठा ले जाता है। और जब उसके परिवार वाले थाने जाते हैं तो वहां उन्हें बेइज्जत करके भगा दिया जाता है।"

"ओह नो।"

"इतना ही नहीं—पांच बार छोटे शाह ने अरेआम पांच लड़कियों को नंगा करके उन्हें बाजार में दौड़ाया—और फिर पूरी दुनिया के सामने उनकी इज्जत लूट ली। और हुआ कुछ भी नहीं।"

"हे भगवान!"

कमल की आवाज कांप उठी।

"बाप-बेटों की दहशत पूरे किशनपुरा में इस कदर बढ़ गई है कि अब कोई उनके खिलाफ बोलने की जुर्रत नहीं कर सकता।

हां...जिसे अपनी जान से प्यार न हो—वह जरूर बोल पड़ता है उन बाप-बेटों के खिलाफ। नतीजा यह होता है कि सरेआम उनकी गर्दन कलम कर दी जाती है।"

"हे भगवान...य...यह क्या सुन रहा हूं।"

"और खुद मैं...।" फफक पड़ी संजना—"जलील हो चुकी हूं।"

"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा कमल।

"मेरी इज्जत तो बच गई—लेकिन जिस तरह से उस कमीने ने मेरा पल्लू खींचा था—उससे त...तुम खुद ही सोच सकते हो कि मैं कितना जलील हुई होऊंगी—। जो शब्द छोटे शाह ने मुझसे कहे थे—वे अभी तक मेरे कानों में पिघले सीसे के समान उबल रहे हैं।"

"न...नहीं।"

"बस तभी से मैंने यह शहर छोड़ने का फैसला कर लिया। लेकिन अभी तक मुझे मेरी फैक्ट्री का और कोठी का कोई ग्राहक नहीं

मिल रहा। जबकि मैं आधे भाव पर बेचने को तैयार हूं सब कुछ।

सुनकर गहरी सांस छोड़ी कमल ने और बोला—

"अब आपको यह शहर छोड़ने की जरूरत नहीं संजना जी। मैं जेल से निकला ही इसीलिये हूं कि शाह बाप-बेटों का आतंक खत्म कर दूं।"

संजना के होठों पर व्यंग भरी मुस्कान रेंग गई।

"अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता कमल जी।" वह बोली—"आप अकेले कुछ भी नहीं कर पायेंगे। अरे जिसके पीछे गुण्डों की फौज हो—प्रशासन जिसका गुलाम हो—आप उसका क्या बिगाड़ लेंगे।"

"लंका जलाने के लिये एक छोटी-सी चिंगारी ही बहुत होती है संजना जी।" दृढ़ता से भरा हुआ था कमल का स्वर—"और मैं तो एक धधकता हुआ ज्वलामुखी हूं। जलाकर खाक कर दूंगा उस हरामखोर को।"

कहते हुए उसका पूरा चेहरा सुलग उठा था।

संजना ने गहरी सांस छोड़ी। फिर वह बोली—

"दिल तो मेरा भी यही करता है—लेकिन क्या करूं?"

"आप मेरा साथ देंगी तो मेरा काम और भी आसान हो जायेगा।"

सहसा ही संजना के चेहरे पर भी दृढ़ता फैल गई।

"मैं आपके साथ हूं कमल जी। रोज-रोज डरकर जीने से कहीं बेहतर तो यही है कि एक बार बहादुरी से मर जायें।"

"आप घबरायें नहीं...मौत को आपकी तरफ बढ़ने नहीं दूंगा मैं...। आप तक पहुंचने से पहले मौत को मुझसे दो-चार होना पड़ेगा—यह कमल का वायदा है आपसे।"

"मैं आपके साथ हूं।" इस बार संजना का स्वर पहले से कहीं दृढ़ था—"आप बतायें करना क्या होगा मुझे?"

"आपके किरायेदार बैठे हैं अभी?"

"नहीं—उठा दिये हैं मैंने। कोठी को बेचना जो था।"

"मुझे ऊपर की एक मंजिल में पनाह चाहिये।"

"आप कहीं भी रह सकते हैं। पूरी कोठी में आपको कहीं भी किसी भी वक्त जाने की इजाजत है। लेकिन मेरी एक शर्त है।"

"क्या?"

"आपको एक वचन देना होगा।"

"कैसा वचन?" चौंकते हुए बोला कमल।

"छोटे शाह ने मेरे पल्लू पर हाथ डाला था—म...मैं अपने हाथों से उस कमीने का हाथ तोड़ना चाहती हूं।"

घायल शेरनी की तरह गुर्रायी वह।

कमल ने गहरी सांस छोड़ी।

"मैं वचन देता हूं।" वह गम्भीरता से बोला—"अगर मैं जिंदा रहा तो आपकी हसरत जरूर पूरी करूंगा।"

"आपको कुछ नहीं होगा—यह मेरा दिल कहता है।"

कहते हुए संजना की आवाज भर आई थी।

शाम छह बजे कमल रजापुर पहुंचा।

रजापुर किशनपुरा से सिर्फ बीस किलोमीटर दूर एक कस्बा था।

कहने को तो वह कस्बा था—लेकिन अब वो तेजी से शहर का रूप लेता जा रहा था।

लोहे की काफी बड़ी मण्डी थी रजापुर—जिसकी वजह से वह आस-पास के शहरों में क़ाफ़ी मशहूर हो चुका था।

कमल ने बाईक एक दो मंजिला शानदार मकान के सामने रोकी।

यह बाईक उसको मांगने पर संजना ने उसे दे दी थी।

वह तो कह रही थी कि वह उसकी कार ले ले—लेकिन कमल को बाईक की ही जरूरत थी—सो संजना कविता को छोड़कर घर में ही सोती छोड़ उसी वक्त कमल को साथ लेकर शोरूम पहुंची और वहां से एक नई बाईक उसे दिलवा दी।

कमल ने वहीं से ही उससे विदा ली और वहां से सीधा पेट्रोल पम्प पहुंचा—जहां उसने टंकी फुल करवाई और फिर वहां से रजापुर के लिये निकल पड़ा।

संजना के सामने ही उसने कनवर को फोन करके उससे गौतम के घर का पता जानने को कहा था—और जब संजना ने उससे वजह पूछी तो कमल ने उसे अपनी स्कीम बता दी।

स्कीम संजना को काफी पसंद आयी थी। और उसने कमल को हौसला देते हुए कहा था कि वह जरूर कामयाब होगा।

आधे घण्टे बाद उसे कनवर का फोन आया—जिसमें उसने उसे गौतम के घर का पता बताया—और यह भी बताया कि उसके घर में कौन-कौन हैं।

उसके पश्चात् कमल ने बाईक ली जिसका पैसा संजना [illegible] था—और अब वह गौतम के घर के बंद दरवाजे के सामने था। बाईक से उतरकर वह उस दो मंजिला मकान के गेट के सामने आया—इधर-उधर देखा—और फिर अपने चेहरे से जीतू का मास्क उतरकर कमल बन गया।

मास्क को जेब के हवाले कर उसने दांई तरफ दीवार में लगे बैल पुश को दबाया।

"कौन है?" तभी भीतर से आवाज आई।

"मैं हूं हवलदार विक्की।" कमल बोला।

दरवाजा खुला।

सामने बीस-इक्कीस साल की बेहद खूबसूरत युवती खड़ी थी—जिसका नाक-नक्श गौतम से काफी मिलता था।

उसी से वह समझ गया था कि वह गौतम की बहन है। फिर भी उसने पूछा—

"तुम सविता हो न?"

"हां—तुम...?"

"हवलदार विक्की।" मुस्कुराया कमल—"साहब ने भेजा है मुझे।"

"कहो।" सविता बोली।

कमल के होंठों पर फैली मुस्कान तेज हो गई—"साहब ने कहा है कि मांजी को बोलना है।"

सविता ने पहले उसे घूरा—फिर एक तरफ हटते हुए बोली—"आओ।"

कमल भीतर प्रवेश कर गया।

कमल को लिये सतिवा एक कमरे में पहुंची, जिसमें एक पचपन-साठ साल की औरत आंखों पर चश्मा चढ़ाये कोई धार्मिक पुस्तक प्रढ़ रही थी।

"पाये लागूं मां जी।" आगे बढ़कर उस बुढ़िया के पैरों को छूते हुए बोला वह।

बुढ़िया ने चश्मा दुरूस्त करते हुए उसे देखा।

"कहां से आये हो बेटा—?" वह बोली।

"किशनपुरा से आया हूं माजी। हवलदार विक्की। साहब ने काम के लिये भेजा है आपके पास।"

"कैसा काम?"

कमल ने मुस्कुराकर पहले सविता को देखा—फिर पुन: बुढ़िया को देखते हुए बोला—

"सविता के लिये वर देखा है साहब ने। आपको बुलाया है। कहा है कि आप आठ बजे तक थाने पहुंच जायें।"

कहकर उसने चोर नजरों से सविता को देखा—जिसके चेहरे पर शर्म की लाली फैल गयी थी।

"मैं चाय बनाकर लाती हूं।" वह बोली और बाहर निकल गई।

"गौतम क्यों नहीं आया?" तभी पूछा बुढ़िया ने।

"वे तो तैयार थे आने को—लेकिन ऊपर से ऑर्डर आ गया और उन्हें फौरन कहीं जाना पड़ा। आप तो जानती ही हैं मां जी पुलिस की नौकरी कितनी सख्त होती है। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं आपको खुद जाकर कहूं। आठ बजे आप बस अड्डे पहुंच जाना—साहब आपको वहीं से ले लेंगे।"

"ठीक है।"

"और साहब ने कहा है कि सविता बिटिया को साथ लेकर आयें। लड़का-लड़की एक-दूसरे को देख लेंगे।"

"तूने देखा है लड़का?"

"हां मां जी-बहुत खूबसूरत है।"

"बहुत बड़ा शोरूम है उसका। नई कारें बेचता है। काफी पैसा है उनके पास। हमारी बिटियां राज करेगी राज।"

"तेरे मुंह में घी-शक्कर।"

बुढ़िया ने उसके लिये दुआयें मांगीं।

तभी सविता चाय लेकर भीतर प्रविष्ट हुई।

कमल ने उससे चाय ली और पीकर खड़ा हो गया।

"अच्छा मां जी—मैं चलता हूं।"

कहकर उसने बुढ़िया को प्रणाम किया और बाहर निकल गया।

छोटे शाह ने बोतल की गर्दन को पकड़ा औरा मुंह से लगाकर मुंह छत की तरफ कर दिया।

मुंह सीधा करते हुए उसने बोतल मुंह से निकालकर फ़टाक से टेबल पर रखी तो वह एक चौथाई से ज्यादा खाली हो चुकी थी।

अपनी सुर्ख हो रही आंखों से उसने इधर-उधर देखा—फिर

नशे में थर्राये स्वर में दहाड़ा—

"बाहर आ।"

तुरंत एक हुस्नो-शवाब से लकदक युवती भीतरी कमरे से निकलकर उसके सामने आई और बड़ी उत्तेजक अदा से उसके सामने इस तरह झुकी कि उसकी छातियां उसकी ढीली-ढाली टॉप से बाहर को गिरती नजर आने लगीं।

"हुक्म छोटे शाह जी दासी हाजिर है।" वह बोली।

उसे देखते ही छोटे शाह का मुंह ऐसे हो गया जैसे उसने कुनैन की गोली खा ली हो।

नशा जैसे उतर गया।

तुरंत उसने बोतल को मुंह से लगाया और दो-तीन बड़े-बड़े घूंट भरकर बोतल को वापिस टेबल पर रखकर दहाड़ा—

"जोगी...साले कहां मर गया तू?"

तुरंत एक दुबला-सा व्यक्ति हड़बड़ाते हुए भीतर प्रविष्ट हुआ।

"हुक्म छोटे शाह जी।" वह बोला।

"स्साले...।" फुंफकारा छोटा शाह—"पांच दिन से एक ही मुर्गी खिला रहा है मुझे।"

जोगी हड़बड़ाया—फिर उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कान फैल गई।

"नया माल ढूंढा जा रहा है छोटे शाह जी। कल ऐसी चीज पेश करूंगा छोटे शाह जी कि तबीयत मस्त हो जायेगी। वैसे बुरी यह भी नहीं।" उसने कहा और युवती को इशारा किया—"जरा चखकर तो देखिये। अभी भी फुल करंट है। पूरा झटका मारेगी।"

युवती ने बिना किसी शर्मो-हया के उन दोनों के सामने कपड़े उतार दिये और पूरी तरह निर्वस्त्र हो गई।

"देखिये छोटे शाह जी—कैसी चमक रही है।" जोगी बोला।

छोटे शाह ने युवती को देखा—और बुरा मुंह बनाया।

"पांच दिन से यही तो देख रहा हूं।"

"हाथ लगाकर तो देखिये।"

छोटे शाह ने बोतल को मुंह से लगाकर दो घूंट भरे और खड़ा हो गया।

सुर्ख आंखों से उसने उस युवती की तरफ देखा।

युवती ने उसके सामने ऐसी भाव-भंगिमा बनाई कि देखने वाले की तबीयत पलट जाये।

जोगी का दिल कर रहा था कि छोटे शाह को एक तरफ धकेलकर वह स्वयं उस युवती से जा लिपटे।

युवती की अंदायें ही ऐसी थीं।

लेकिन गुलाम था वह, अपने मालिक को हाथ भी लगाने की जुर्रत नहीं थी उसमें। धकेलना तो दूर की बात थी।

छोटे शाह टेबल और सोफे के बीच से निकलता हुआ जेब में हाथ डाले युवती की तरफ बढ़ा।

जोगी ने मन ही मन चैन की सांस ली।

पिछले दो दिन से वह छोटे शाह के लिये नई छोकरी ढूंढ रहा था—लेकिन किशनपुरा में जैसे लड़कियों का अकाल पड़ गया था।

तभी तो अभी तक उसके हाथ कोई भी लड़की नहीं लगी थी। और छोटा शाह कल से उस पर नई लड़की के लिये जोर डाल रहा था।

तभी एक धमाका गूंजा वहां।

'धांय।'

युवती उछलकर पीठ के बल फर्श पर जा गिरी।

और जोगी—

उसकी हालत उस बकरे जैसी हो गई जो कसाई की धार के नीचे खड़ा हो।

फटी-फटी आंखों से वह उस युवती की लाश को देख रहा था, जिसकी छाती से भल-भल करता खून बह रहा था।

अभी पल भर पहले वह कितनी खूबसूरत लग रही थी—कैसी अंदायें दिखा रही थी वह।

लेकिन अब—अब उसे देखकर ही डर लग रहा था।

जोगी कुछ पलों तक तो लाश को घूरता रहा—फिर उसने जैसे ही छोटे शाह की तरफ देखा—उसके तिरपन कांप उठे।

आंखों में बदहवासी उभर आई।

चेहरा फक्क पड़ गया—जैसे दस किलो पाउडर उसके चेहरे पर थोप दिया गया हो।

छोटे शाह के हाथ में पकड़ी रिवॉलवर का रूख उसकी तरफ था।

"छ...छोटे...श...शाह...जी।"

"एक घण्टा...।" गुर्राया छोटा शाह—"सिर्फ एक घण्टा दे रहा हूं तुझे। आठ बज चुके हैं—नौ बजे तक का वक्त है तेरे पास। नौ बजे तक कड़क जवान और खालिस कुंवारी लड़की मेरे सामने होनी चाहिये—चाहे अपनी बहन को लेकर आ—या अपनी किसी रिश्तेदार

को। समझा?"

जोगी ने सिर हिलाते हुए जोरों से थूक सटकी।

"नौ बजे के बाद...।"

बात बीच में ही रह गई उसकी। उसकी जेबं में प्ड़ा मोबाईल बज उठा था।

"किर्र...र्र...र्र।"

छोटे शाह ने बांयें हाथ से पैंट की जेब से मोबाईल निकाला और उसे कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"छोटे शाह जी—को मेरा प्रणाम।" दूसरी तरफ से चापलूसी से भरी आवाज आई।

आवाज छोटे शाह के लिये बिल्कुल अजनबी थी। मगर जिस तरह से दूसरी तरफ से उसे प्रणाम किया गया था उससे वह यही समझा कि उसके किसी अपने ही आदमी ने फोन किया है।

ऊपर से शराब का भी सरूर हो रहा था उस पर।

"क्या है?" वह बोला।

"जन्नत उतरी है। किशनपुरा में।"

सुनकर ही छोटे शाह की रगों में गर्मी भरने लगी।

"जन्नत।" वह बोला।

"जन्नत से भी बढ़कर है छोटे शाह जी। मेरा दावा है कि उसे देखते ही आपकी धुकधुकी न बढ़ जाये तो गुलाम का सिर कलम करवा देना। पता नहीं इन्द्रलोक की अप्सरा है या...।"

"कहां से बोल रहा है तू?" थूक सटकते हुए बोला छोटा शाह।

"बस अड्डे से बोल रहा हूं छोटे शाह जी—अभी-अभी बस से उतरी है और रिक्शा स्टैण्ड की तरफ जा रही है।"

"साथ में कौन है?"

"उसकी मां है—बस।"

"तो हरामी—फोन क्यों कर रह है मुझे—उठा के ले आ उसे यहां।"

"य...यह क्या कह रहे हैं आप शाह जी। बड़े शाह जी ने मेरी ड्यूटी यहां लगाई है। पौने नौ बजे बड़े शाह जी की कोई कन्साईनमैंट पहुंचनी है यहां—ऐसे में...।"

"ठीक है—तू वहीं रह—मैं जोगी को भेज रहा हूं।"

कहकर उसने जोगी की तरफ देखा और बोला—"सारी बात

सुन ली तूने।"

"जी हां छोटे शाह जी।"

"तो खड़ा-खड़ा मुंह क्या देख रहा है मेरा—जा ले के आ उसे। साथ ही चार आदमी भी ले जा—और जो कोई भी रोड़ा बनने की कोशिश करे साले के सीने में गोली उतार देना।"

जोगी तुरंत वहां से ऐसे निकला जैसे उसे वहां पल भर की भी देर हो गई तो छोटा शाह उसकी लाश बिछा देगा।

उसके जाने के बाद छोटे शाह ने सोफे की तरफ कदम बढ़ाये और सोफे पर बैठकर बोतल उठाई और मुंह से लगा ली। चार-पांच बड़े-बड़े घूंट भरने के बाद उसने बोतल मुंह से हटाई और झूमते हुए आवाज लगाई—

"शम्भू।"

नशे की पूरी थर्राहट थी उसकी आवाज में।

शीघ्र ही एक गुण्डा भीतर प्रविष्ट हुआ।

जैसे ही उसकी नजर युवती की लाश पर पड़ी—गहरी सांस छोड़कर रह गया वह।

"हुक्म छोटे शाह जी।"

वह बोला।

छोटे शाह ने बांयें हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर से लाश को उठाने का इशारा किया और फिर से बोतल मुंह से लगा ली।

शम्भू लाश की तरफ बढ़ गया।

रिक्शे पर सविता अपनी मां के साथ बैठी थी।

उनके पैरों में काले रंग का पोलिस्टर के कपड़े का बना शानदार एयरबैग था जिसमें सविता के दो जोड़ी कपड़े थे।

घर से वह पूरा मेकअप करके आई थी वह। ऐसे में उसकी खूबसूरती में चार चांद लग गये थे।

अपनी तरफ से सविता ने खुद को ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत बनाने की जितनी हो सकी—अपनी कोशिश की थी। आखिर वह जिन्दगी के अगले पड़ाव पर कदम रखने जा रही थी।

हर लड़की की तरह उसके दिल में भी यही इच्छा थी कि लड़का उसे पहली नजर में ही पसंद कर ले।

सविता की मां ने साड़ी पहन रखी थी। आंखों पर नजर का चश्मा था उसकी।

रिक्शा किशनपुरा के बस अड्डे से निकलकर थाने की तरफ बढ़ी।

लेकिन—

ज्यादा दूर नहीं जा पाई रिक्शा—कि रिक्शा पोलर को ब्रेक मारनी पड़ी।

वजह थी रिक्शा के ऐन सामने आ खड़ी हुई मारुति।

और जब रिक्शा पोलर ने मारुति में से चार हट्टे-कट्टे गुण्डों के साथ जोगी को निकलते देखा तो उसकी घिग्घी बंध गई।

तुरंत उसने रिक्शे से छलांग मारी और वहां से ऐसे भागा जैसे उसके पीछे सैकड़ों भूत लगे हों।

सड़क के दांयें-बांयें खुली दुकानों के शटर तेज आवाज़ों के साथ बंद होने लगे।

सड़क किनारे खड़ी फलों वगैरह की रेहड़ियों वाले रेहड़ी छोड़कर वहां से भागे और काफी दूर जा खड़े हुए।

इसी से पता चलता था कि शाह बाप-बेटों का कितना आतंक था किशनपुरा में।

इधर रिक्शा पर बैठी सविता का कलेजा धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

उसे यह तो नहीं पता चल पा रहा था कि वहां इस कदर सुनसान क्यों हो रहा है—मगर इतना जरूर समझ गई थी वह कि उस पर कोई बिजली गिरने वाली है।

और जब उसने जोगी और पांचों गुण्डों को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह समझ गई कि अब क्या होगा।

कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा उसके।

खौफ के मारे अपनी मां से चिपक गई वह।

"म...मां।"

उसकी मां भी माजरा समझ गई थी—तभी तो वह भी कांपने लगी थी।

"वाह।" तभी जोगी रिक्शे के करीब आकर बोला—"क्या चीज है—छोटे शाह तो देखकर ही पागल हो जायेंगे।" उसने चटकारा लिया—फिर अपने गुण्डों से बोला—"ऐ—डालो इसे गाड़ी में।"

सविता अपनी मां से और भी ज्यादा चिपक गई।

चारों गुण्डे सविता की तरफ बढ़े।

उन्हें देखकर ही सविता समझ गई कि वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ पायेगी। सो बिना देर किये उसने रिक्शे से छलांग लगाई और एक तरफ भागी।

मगर—

ठीक तभी पीछे से एक गुण्डे ने उस पर छलांग मारी और पीछे से उसकी कमीज के गले में उसका हाथ जा पड़ा।

नतीजा—

'चर्र...र्र...र्र।' की आवाज के साथ सविता की पीठ अनावृत होती चली गई—और उसकी सफदे पीठ तथा पीठ पर काले रंग की ब्रा की तनियां बंधी नजर आने लगीं।

उसकी कमीज का एक बड़ा टुकड़ा गुण्डे के हाथ में आ गया।

मगर सविता को उसकी परवाह कहां थी—उसे तो अपनी इज्जत की पड़ी हुई थी।

वह पूरी शक्ति से काफी दूर खड़ी लोगों की भीड़ की तरफ भागी—साथ ही वह चींख रही थी।

"बचाओ...बचाओ।"

मगर—

किसी ने भी उसकी चीख नहीं सुनी।

शाह बाप-बेटों के खौफ ने उन्हें अंधा और बहरा बनाकर रख दिया था।

न तो उन्हें किसी मजलूम की चीख सुनाई देती थी—न किसी बेटी की इज्जत लुटती दिखाई देती थी।

तीन गुण्डे उसके पीछे भाग रहे थे। जबकि जोगी और एक गुण्डा वहीं रिक्शा के पास खड़े रहे...जिस पर बैठ सविता की बूढ़ी मां चीखती-चिल्लाती कह रही थी—

"अरे मेरी बच्ची को बचाओ।"

जब तक सविता लोगों के पास पहुंचती—गुण्डे उस तक जा पहुंचे थे।

एक गुण्डे ने झपटकर पीछे से उसकी चोटी पकड़ ली।

"भागती कहां है साली।" वह उसे अपनी ओर खींचते हुए बोला—"छोटे शाह जी कब से छोकरी के लिये तड़प रहे हैं। उनकी प्यास बुझा दे—फिर बेशक जहां चाहे चली जाना।"

बाल खिंचने से बुरी तरह से कराह उठी सविता।

"आह...भाई...ऐ भाई...।" वह एक व्यक्ति की तरफ देखते हुए गिड़गिड़ाई—"भाई मुझे इन दरिन्दों से बचा ले भाई...मैं तेरी छोटी बहन तुझसे अपनी मदद की दुहाई मांगती हूं। मुझे बचा ले भाई।"

उस आदमी की आंखें भर आई—साथ ही उसने मुंह को इस तरह फेर लिया जैसे वह कुछ देख ही नह रहा हो।

मजबूरी उसके चेहरे पर साफ नजर आ रही थी।

"हा...हा...हा।" दहाड़ा उसकी चोटी खींचने वाला—"यहां तुझे कोई बचाने वाला नहीं। इसलिये बेहतरी इसी में है कि चुपचाप हमारे साथ चल।"

"नहीं।" गुर्रा उठी सविता—"मैं जान दे दूंगी—लेकिन तुम कुत्तों के साथ नहीं जाऊंगी।"

और फिर वहां बाकायदा छीना-झपटी शुरू हो गई।

उसी छीना-झपटी में सविता की पूरी कमीज तार-तार हो गई।

और तभी—

"चींऽऽ।" ब्रेकों की आवाज ऐन गुण्डों के करीब गूंजी।

गुण्डों की निगाहें आवाज की दिशा में घूम गई।

बाईक पर कमल बैठा था। जीतू का फेस मास्क लगाये।

"छोड़ दो लड़की को।" वह गुर्राया और बाईक को साईड स्टैण्ड पर खड़ा कर दिया।

"अबे भाग।" एक गुण्डा गुर्राया।

"जानता नहीं यह छोटे शाह जी का माल है।" दूसरा बोला।

"किशनपुरा में नया आया है क्या?" तीसरे ने फुंफकार मारी।

कमल आगे बढ़ा और उनके सामने आ खड़ा हुआ।

"लड़की को छोड़ दो।" वह पुनः गुर्राया।

"यह छोकरा ऐसे नहीं मानेगा।" एक फुंफकारा—"इसे सबक सिखाना कालू।"

तुरंत एक गुण्डे ने चाकू निकाल लिया।

बटन दबाकर उसने चाकू खोला और खूंखार अंदाज से कमल की तरफ ऐसे बढ़ा जैसे एक ही बार में वह उसकी अंतड़िया बाहर निकाल देगा।

लेकिन कमल तक पहुंच भी नहीं पाया था वह। उससे पहले ही कमल की टांग उसके सीने पर जा पड़ी।

उछलकर कई फीट पीछे जा गिरा कालू।

अपने साथी को गिरते देख जोगी अपने साथ खड़े गुण्डों को

लेकर वहां आ पहुंचा, उसने सविता की चोटी पकड़ ली।

"खत्म कर दो हरामजादे को।"

वह दहाड़ा।

तुरंत बाकी के तीनों गुण्डों ने भी चाकू निकाल लिये।

इधर कमल ने अपनी शर्ट ऊपर की और पैंट की बैल्ट में फंसा ननचक निकाल लिया।

ननचक (कुंगफू का हथियार—जिसमें दो डण्डों के बीच चेन बंधी होती है।)

'सांय...सांय...सांय।'

ननचक उसके हाथ में हवा को काटते हुए घूमा—और फिर एकाएक ही कमल गुंडों पर बरस पड़ा।

चाकू चलाने का मौका भी नहीं मिला किसी को और उनकी चीखें गूंजने लगीं।

देखते ही देखते चारों के चारों गुण्डे खून से लथपथ सड़क पर पड़े गहरी-गहरी सांसें छोड़ रहे थे।

कमल ने अब जोगी की तरफ रूख किया।

बुरी तरह से घबराये जोगी के हाथ से कविता की चोटी स्वयं ही छूट गई—और वह थूक सटकते हुए पीछे हटा।

तभी कमल का घूंसा उसके मुंह पर पड़ा।

एक तेज चीख के साथ जोगी उछलकर पीछे गिरा और वहीं लम्बा हो गया।

कमल ने सविता की तरफ देखा और फिर नजरें झुकाते हुए अपनी शर्ट उतारकर उसकी तरफ बढ़ा दी।

"यह सब हीजड़े हैं बहन—। जो अपनी मां जाई की इज्जत बचाने के लायक नहीं—वो तुम्हारी इज्जत क्या बचायेंगे। आओ मेरे साथ मैं थाने ले चलता हूं तुम्हें—देखते हैं पुलिस भी तुम्हारा साथ देती है कि वो भी छोटे शाह की गुलाम बनी सो रही है।"

सविता ने कांपते हाथों से उसकी शर्ट पहनी।

तभी उसकी मां आकर उससे लिपट गई।

"सविता...मेरी बच्ची...।" वह जार-जार रोने लगी।

सविता भी रोने लगी।

"हौसला रखिये मां जी।" कमल उन्हें दिलासा देते हुए बोला—"कानून अभी मरा नहीं—हां सोया हुआ जरूर है, हो सकता है आप के आंसू उसे जगाने मे कामयाब हो जाएं। मेरे साथ चलिये। मैं आपको

थाने लिये चलता हूं। वहां से जहां आप कहेंगी—वहां ले चलूंगा।"

दोनों मां-बेटी उसे इस तरह देखने लगीं मानो साक्षात् भगवान कृष्ण हो उनके सामने।

"शाबास...वाह मेरे बेटे—वाह—क्या खूब हो रही है कानून की सेवा।"

अपनी मां की आवाज सुनकर बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए गौतम ने सिर उठाया।

उस वक्त वह टेबल पर सिर झुकाये चिकन खा रहा था। करीब ही शराब की आधी भरी बोतल पड़ी थी—और एक आधा भरा हुआ पैग पड़ा था।

सामने चिकन का भरा डोंसा था—जिस पर कि वह झुका हुआ था।

सामने अपनी मां को देख वह भौचक्का रह गया।

तभी उसकी नजर अपनी बहन पर और उसके साथ खड़े कमल पर पड़ी जो कि सिर्फ बनियान पहने था। और जो शर्ट सविता ने पहन रखी थी—वह साफ नजर आ रहा था कि वह उस आदमी की है जो सविता के पीछे खड़ा था।

"म...मां...तु...तुम।" हड़बड़ाया स्वर निकला गौतम के होठों से।

"आज मुझे पता चल रहा है कि पुलिस की नौकरी कितनी सख्त होती है।" उसकी मां नफरत भरे स्वर में बोली—"शराब पीनी पड़ती है—मीट खाना पड़ता है। गुण्डे मवालियों की खिदमत करनी पड़ती है। पब्लिक को डराना-धमकाना पड़ता है—बहू-बेटियों की इज्जत को तबाह करना पड़ता है—और अपनी सगी बहन को सरेआम नंगा करवाना पड़ता है।"

"म...मां...।"

"नाज है बेटे मुझे तुझ पर जो इतनी सख्त ड्यूटी कर रहा है। अरे नासपीटे...।"

एकदम से फट पड़ी वह बुढ़िया—"क्या यह सब दिखाने के लिये तूने हमें बुलाया था—। अपनी बहन का सौदा कर लिया था क्या तूने और उसे सरे बाजार नंगा कराने के लिये बुलाया था हमें...।"

"मां...।" दहाड़ते हुए खड़ा हो गया गौतम।

नशा तो उसका उसी वक्त काफूर हो गया था—जब उसकी नजर अपनी मां पर पड़ी थी।

"चीख क्यों रहा है कमीने—अपनी बहन को देख।" बुढ़िया ने सविता की बांह पकड़कर उसे सामने किया—"देख इसे, इसका चेहरा—इसके बिखरे बाल, और...और वह बेगानी कमीज बता रही है कि इसके नीचे तेरी बहन नंगी है। अपनी मां की बातें सुन सविता की रुलाई फूट पड़ी। उसकी आंखों से गंगा-जमुना बहने लगी।

इधर गौतम को ऐसा लग रहा था जैसे हजारों लोगों के बीच उस पर कोड़े बरसाये जा रहे हो।

अपनी मां के मुंह से निकला एक-एक शब्द उसे कोड़े की तरह लगता महसूस हो रहा था।

तभी बुढ़िया ने सविता की बांह पकड़ी और बोली—

"आ बेटी...यह...यह मेरा बेटा नहीं हो सकता—। इसने हमें यहां इसलिये बुलाया है कि हमें बेच सके—तेरा सौदा किया है इसने।"

"म...मां...।"

चीखा गौतम।

"माफी चाहती हूं...इंस्पैक्टर साहब जो हमने आपकी अय्यासी में बाधा पहुंचाई।" कहकर बुढ़िया ने कमल की तरफ देखा और रोते हुए बोली—"बेटे—इतना बड़ा अहसान किया है तूने हम पर—एक छोटा-सा अहसान और कर दो—हमें रजापुर पहुंचा दो।"

तभी गौतम टेबल के पीछे से उनके सामने आ खड़ा हुआ।

"नहीं...।" उसके होठों से अंगारे निकले—"तुम यहां से नहीं जा सकती मां...।"

बुढ़िया की कमजोर आंखों में कहर उमड़ आया।

'तड़ाक।'

तभी बुढ़िया का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

"खबरदार जो मुझे मां कहा तो। मैं तो आज उस दिन को कोस रही हूं...जब तुझ राक्षस को मैंने अपनी कोख में पनाह दी थी।" उस बुढ़िया के थप्पड़ में हालांकि कोई ताकत नहीं थी—मगर थप्पड सीधे गौतम की आत्मा को लगा था।

तभी तो बुरी तरह तड़प उठा था वह।

"नहीं मां...।" उसकी आवाज भर्रा गई—"त...तू यहां से ऐसे नहीं जा सकती।"

"इंस्पैक्टर साहब ठीक कह रहे है मां जी।" तभी बोल पड़ा कमल—"आपको और कुछ नहीं तो अपना दुखड़ा तो बताना चाहिये इन्हें। तभी तो यह कुछ कर पायेंगे।"

"भाई साहब ठीक कह रहे हैं मां।" सविता भी बोली।

बड़ी मुश्किल से बुढ़िया शांत हुई—लेकिन गौतम के प्रति नफरत उसके दिल में अभी भी ज्यों कि त्यों थी।

"लिख थानेदार—।" वह बोली—"रिपोर्ट लिख हमारी—फिर देखती हूं क्या कार्यवाही करता है तू?"

"बताईये।" किसी तरह से अपने भीतर उमड़ रहे तूफानों को भीतर ही दबाते हुए बोला गौतम।

"यह मेरी बेटी है।" बुढ़िया ने सविता की पीठ पर हाथ रखा—"पांच गुण्डों ने बस अड्डे के बाहर सुखदेव नगर वाली सड़क पर मेरी बेटी पर हमला किया और इसकी...इसकी कमीज फाड़कर इसे नंगा कर दिया...।"

कहते हुए बिलख पड़ी वह।

सविता भी रोने लग पड़ी थी।

इधर गौतम की आंखों में खून उतर आया।

चेहरा चट्टान की तरह कठोर हो उठा।

मुट्ठियां भिंच गईं।

"कौन थे वे हरामजादे?" वह फुंफकारा—"मुझे बताओ मां—कौन थे वो?"

"मुझे नहीं पता। मुझे बस इतना पता है कि वे सविता का अहपरण छोटे शाह के लिये करना चाहते थे—मगर इस देवता ने वक्त पर आकर मेरी बेटी को बचा लिया।"

उसने कमल की तरफ अहसान भरी निगाहों से देखा।

छोटे शाह का नाम सुनते ही गौतम के पैरों तले से धरती खिसक गई।

चेहरा धुआं-धुआं होने लगा।

बुढ़िया ने उसे घूरकर देखा।

"तेरा चेहरा बता रहा है कि छोटे शाह को तू अच्छी तरह से जानता है।"

"यह इंस्पैक्टर हैं मां जी।" तभी कमल बोल पड़ा—"छोटे-बड़े शाह हर अपराधी की खबर रहती है इन्हें। लेकिन आपने एक गलती की मां जी।"

कुंदिया के साथ-साथ संगीता और गौतम भी चौंककर उसे देखने लगे।

"कैसी गलती?" कुंदिया बोली।

"आपके बेटे हैं इंस्पेक्टर—और जिस तरह से आपको बात कर रहे हैं—उससे ऐसा लग रहा है कि आप अचानक अपने बेटे से मिलने चल पड़ीं। ऐसी सूरत में आपको पहले फोन कर देना चाहिए था इंस्पेक्टर साहब को—ताकि वह खुद आपको लेने पहुंच जाते।"

यह बात कमल ने जान-बूझकर कही थी—। और यही बात खुलनी उसके लिये सबसे जरूरी था। और अभी तक न तो कुंदिया ने कोई वजह बताई थी—और न ही गौतम ने पूछी थी।

कुंदिया का झुर्रियों से भरा चेहरा बिगड़ गया।

"इस नासपीटे ने खुद बुलाया था हमें।" वह गुर्राई।

"म...मैंने?" बुरी तरह से उछल पड़ा गौतम।

कुंदिया ने खा जाने वाली आंखों से गौतम को देखा।

"क्या तूने हवलदार सिकंदर को नहीं भेजा था रामपुर—यह कहकर कि तूने संगीता के लिये लड़का देखा है। और लड़का देखने के लिये तूने हमें बुलाया था।"

एक और झटका लगा गौतम को।

"म...लेकिन मैंने तो किसी को नहीं भेजा।"

"बुला उस हवलदार को—मैं पूछती हूं उससे कि तूने उसे भेजा था कि नहीं?"

"वे...बुलाऊं कहां से। इस नाम का हवलदार पूरे थाने में क्या पूरे किशनपुर में नहीं था।"

"तो क्या मैं झूठ बोल रही हूं।"

कुंदिया ने आंखें तरेरीं।

"लेकिन मां—मैं भी झूठ नहीं बोल रहा। सिकंदर नाम का यहां कोई हवलदार नहीं और...।"

बोलते-बोलते सहसा ही रुक गया गौतम—। सहसा ही उसकी आंखों के सामने सिकंदर का चेहरा नाच उठा।

"ओह...। अब समझा।" वह मन ही मन बड़बड़ाया—"तो बीरे शाह की नजर मेरी बहन पर पड़ गई थी—और उसने संगीता को यहां लाने के लिये सिकंदर को यहां भेजा था।"

सहसा ही उसके भीतर हजारों ज्वालामुखी धधकने लगे। चेहरा सुर्ख हो उठा।

झटके से उसने कमल की तरफ देखा।

"क्या नाम है तुम्हारा?" वह बोला।

"जीतू।" मन ही मन मुस्कुराते हुए बोला कमल। गौतम का चेहरा पढ़ लिया था उसने।

गौतम ने उसकी बाजू पकड़कर हल्के से दबाई—और आभार भरे स्वर में बोला—"मैं नहीं जानता कि तुम कहां रहते हो—और न ही मैं अभी तुमसे कुछ पूछूंगा—। लेकिन जिस तरह से तुमने अपनी जान की परवाह न करते हुए मेरी बहन को बचाया—और उसके बदन को ढका है—उससे मैं यह समझता हूं कि तुम पर आंख मूंदकर विश्वास किया जा सकता है। क्या तुम मेरी मां और बहन को रजापुर छोड़ आओगे?"

"ल...लेकिन...।"

"ज्यादा दूर नहीं है रजापुर...सिर्फ बीस किलोमीटर दूर है।"

"वो बात तो ठीक है। मगर इन्हें यहां रहने में क्या हर्ज है?"

"यह मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा। फिलहाल तो इनका फौरन यहां से निकलना मेरे लिये बहुत जरूरी है।"

कमल ने इस तरह से गहरी सांस छोड़ी जैसे उसे तरस आ रहा हो गौतम पर। वह मां-बेटी की तरफ मुड़ा।

"चलो मां जी।" वह बोला—"अपनी शर्ट भी तो लेनी है मुझे।"

"और वापिस आकर मिलना मुझसे तुम।" गौतम बोला।

कमल कुछ नहीं बोला बस सिर हिला दिया।

बुढ़िया ने नफरत भरी निगाहों से गौतम को देखा—और फिर झटके से उसकी तरफ पीठ कर ली।

उनके जाते ही गौतम के जबड़े कस गये।

"रामसिंह।" वह दहाड़ा।

तुरंत एक सिपाही हड़बड़ाया-सा भीतर प्रविष्ट हुआ।

"उठाओ इसे और बाहर फेंक दो।" उसने टेबल पर पड़े चिकन और शराब की तरफ इशारा किया।

एकाएक ही नफरत हो गई थी उसे उससे।

रामसिंह तुरंत टेबल की तरफ लपका—और कुछ ही क्षणों में टेबल शीशे की तरह चमक रही थी।

"विक्की!" फुंफकार उबली गौतम के होंठों से—"हरामजादे—मेरी बहन को—इंस्पैक्टर गौतम की बहन को छोटे शाह के सामने परोसने की कोशिश की तूने। मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा।"

"ट्रिन...ट्रिन।"

तभी फोन की घण्टी घनधना उठी।

अपनी खूनी आंखों में गौतम ने झटके से फोन की तरफ देखा। ऐसे जैसे अभी उसकी आंखों ज्वाला निकलेगी और उसे भस्म कर देगी।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

फोन वैसे का वैसा रहा—और घण्टा बजाता उसे पुकारता रहा।

आखिर वह टेबल का घेरा काटकर अपनी कुर्सी पर बैठा और रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"साले—इतनी देर से फोन क्यों उठाया?"

दूसरी तरफ से छोटे शाह की दहाड़ती आवाज आई।

अगर ऐसे ही छोटे शाह ने उसकी मां के आने ले पहले उसे गाली दी होती तो वह हंस पड़ता—तब यह गाली उसके लिये प्रसाद होती।

मगर इस वक्त—

इस वक्त वह गाली उसके दिल पर तीर की तरह लगी थी।

"कहिये।"

किसी तरह से स्वयं पर पाते हुए बोला वह।

जबकि भीतर से उसका दिल कर रहा था कि वह अभी जाये और छोटे शाह के सीने में गोली उतार दे।

"उसे मेरे पास लेके आ।"

दूसरी तरफ से आवजा आई।

"किसे?"

"अब हरामी उस छोकरी की बात कर रहा हूं मैं जो एक बुढ़िया के साथ तेरे पास पहुंची है। और उस हरामजादे को भी ला-जिसने शेर के जबड़े से मांस छीनने की जुर्रत की है। जरा मैं भी तो देखूं किशनपुरा में हमारे सामने सिर उठाने वाला कौन पैदा हो गया?"

गौतम उसकी बात सुन तो रहा था—मगर इस वक्त उसका जेहन कहीं और था। दहकते लावे पर लोट रहा था वह उस वक्त।

"अबे गधे...तू सुन रहा है या...।"

"वो चले गये।" तभी गम्भीरता से बोला गौतम।

"क्या...?" बुरी तरह चौंकती आवाज।

"मैंने उन्हें उसी वक्त भगा दिया था—जब वे रिपोर्ट लिखाने आये थे।"

"तेरी तो मां की...।" दूसरी तरफ से भद्दी गाली आई—"अब रात कैसे गुजारूंगा मैं—क्या तेरी बहन पर चढूंगा?"

"ढिशुम...।"

गौतम के कलेजे पर घूंसा लगा।

उसके जबड़े बुरी तरह से भिंच गये। मगर वह कुछ नहीं बोला। कोई भी उलटा जवाब नहीं दिया।

दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी—"लगता है हराम की खा-खाकर काफी चर्बी चढ़ गई है तेरे पर। कोई इलाज करना पड़ेगा तेरा।"

और इसी के साथ ही दूसरी तरफ से फोन पटके जाने की आवाज आई।

गौतम ने रिसवीर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

वह अपने ऑफिस से बाहर निकला और प्रांगण में खड़ी जिप्सी की तरफ बढ़ा।

उधर वह जिप्सी के करीब पहुंचा—उधर हवलदार रामसिंह और दो सिपाही भागते हुए वहां पहुंचे।

गौतम ने उनकी तरफ देखा और फिर स्टेयरिंग के पीछे बैठते हुए बोला—

"तुम्हारी जरूरत नहीं साथ चलने की। मैं अभी थोड़ी देर में आया।"

कहते हुए उसने जिप्सी स्टार्ट कर दी।

तीनों अपने आप ही पीछे हट गये।

गौतम ने जिप्सी को गियर में डाला और आगे बढ़ा दिया।

"डिंग...डां...ग।"

कॉलबैल का मधुर स्वर विक्की के कानों में पड़ा।

उस वक्त विक्की अपने फ्लैट के ड्राइंगरूम में फर्श पर बैठा था। उसके आगे स्कॉच की बोतल और एक प्लेट में कटा हुआ सलाद पड़ा था।

पैग उठाकर उसने उसे खाली किया और खड़ा होकर पास ही पड़े सोफे के पीछे से निकलते हुए ड्राइंगरूम से निकला और मेन डोर की तरफ बढ़ा।

अभी शराब पीने की शुरूआत ही की थी उसने। सिर्फ दो ही पैग

लगाये थे।

ऐसे में अभी उसकी चाल से या चेहरे से कहीं से ऐसा आभास नहीं हो रहा था कि उसने पी रखी है।

"कौन?" दरवाजे के करीब आकर वह बोला।

"मैं हूं—दरवाजा खोल।"

बाहर से इंस्पैक्टर गौतम की आवाज सुनकर उसे ताज्जुब हुआ।

"यह हरामी कहां से आ मरा?" वह बड़बड़ाया।

दरवाजा तो खोलना ही था उसे। सो उसने दरवाजा खोल दिया।

गौतम भीतर प्रविष्ट हुआ और उसके चेहरे को देखते हुए मुस्कुराया—

"हैरानी हो रही है न मुझे यहां देखकर?"

"वो तो होगी ही...। पहली बार आया है...तू यहां। हैरान तो होऊंगा ही।"

ठीक तभी गौतम ने होलेस्टर से रिवॉल्वर खींची और उसके माथे से लगा दी।

उसकी इस हरकत पर बुरी तरह हड़बड़ा उठा विक्की—साथ ही उसका रंग बदरंग हो गया।

"यह...यह क्या बेवकूफी की है?" वह हड़बड़ाया-सा बोला—"जानता है अगर मैंने तेरी इस हरकत का पता बड़े शाह जी को दे दिया तो वो क्या करेंगे...?"

"क्या करेंगे?" गुर्राया गौतम।

"तेरी मां...।" विक्की ने गाली निकाली।

"अब मेरी नहीं, उसकी मां...।" गौतम ने भी गाली निकाली।

विक्की फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगा। बड़े शाह को गाली निकाली थी उसने—हैरानी तो होनी ही थी उसे।

"य...यह क्या कर रहा है तू...?"

"मेरा घर कहां है?" गुर्राया गौतम।

"क्या?" हड़बड़ाया विक्की।

"मेरा घर कहा है?" फुंफकारा गौतम।

"र...रजापुर में...ल...लेकिन तू...?"

"हरामखोर...मेरी बहन को बुलाया तूने यहां...छोटे शाह के लिये।"

"य...यह क्या कह रहा है तू...।" विक्की बुरी तरह से चकरा गया—"म...मैं तेरे घर...।"

"हवलदार बनकर गया था न तू। हरामखोर...मैं तुझे जिंदा नहीं छोडूंगा।"

उसी के साथ ही उसने ट्रेगर दबा दिया।

गोली उसके माथे में जा धंसी।

विक्की का शरीर उछलकर पीछे को पीठ के बल जा गिरा।

फटी-फटी आंखों से वह अभी भी उसे देखे जा रहा था—लेकिन उन आंखों में अब जान नहीं थी।

गौतम ने हिकारत भरी निगाहों से लाशं बन चुके विक्की को देखा और रिवॉल्वर को होलस्टर में फंसाकर वापिस मुड़ गया।

उसके फ्लैट से निकलकर गौतम ने दरवाजा बंद किया और पैदल ही एक तरफ बढ़ने लगा।

अगले मोड़ पर उसकी जिप्सी खड़ी थी।

कुछ ही देर में वह जिप्सी में बैठा वापस थाने की तरफ उड़ा जा रहा था।

इस वक्त उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे मानो उसके कलेजे को कुछ हद तक ठण्डक मिल रही हो।

विक्की की हत्या करने का उसके चेहरे पर कोई पछतावा नजर नहीं आ रहा था।

गौतम के थाने पहुंचने के आधा घण्टा बाद जाकर कमल थाने पहुंचा था।

थाने आकर गौतम सीधा अपने ऑफिस में पहुंचा था और अपनी कुर्सी पर बैठकर कमल का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करने लगा था।

"बैठो।" कमल के ऑफिस में प्रवेश करते ही गम्भीरता से बोला गौतम।

कमल उसके सामने एक विजीटर चेयर पर बैठ गया।

"मेरी मां और बहन...?"

"दोनों ठीक-ठाक हैं।" गम्भीरता से बोला कमल और अपना कॉलर पकड़कर थोड़ा खींचा—"तभी तो यह शर्ट मेरे बदन पर है।"

गौतम ने गहरी सांस छोड़ी। कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पहलू बदला।

"इस शहर में नये आये हो क्या तुम?" वह बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि जो कुछ भी तुमने किया—वह इस शहर में रहने वाला तो किसी भी सूरत में नहीं कर सकता। शाह बाप-बेटों का पूरे किशनपुरा में इतना आतंक है कि वो कभी भी कहीं भी कुछ भी कर सकते हैं। उनके आदमी हजारों लोगों के बीच से किसी भी लड़की को उड़ाकर ले जा सकते हैं और कोई उन्हें रोकने की हिम्मत नहीं कर सकता।"

"मैंने देखा था वहाँ। शाह के आदमी तुम्हारी बहन को ले जाने की कोशिश कर रहे थे और सैकड़ों लोग इस तमाशे को देख रहे थे।"

"मगर तुमने मेरी इज्जत को बचाया—सिर्फ इसलिये कि तुम शाह बाप-बेटे को नहीं जानते थे—वर्ना तुम भी उन्हीं लोगों में खड़े होकर तलाशा देखते रहते। कहां रहते हो तुम?"

"क्यों?" मुस्कुराया कमल।

"इसलिये कि—।" गम्भीरता से बोला गौतम—"अगर तुम बाहर रहते हो तो मैं तुम्हें सकुशल शहर के बाहर छोड़ आऊं। क्योंकि पूरे किशनपुरा में तुम्हारी तलाश जोर-शोर से शुरू हो गई है। और मैं नहीं जानता कि तुम्हारा बाल भी बांका हो।"

"और अगर मैं यहीं का रहने वाला होऊं तो?"

"तो मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम कुछ रोज के लिये बाहर चले जाओ। कुछ रोज बाद जब मामला कुछ ठण्डा पड़ेगा तो तुम वापिस लौट आना।"

"और अगर मेरे आते ही छोटे शाह के कुत्तों ने मुझे पहचान लिया तो?"

"कोई नहीं पहचानेगा।" कहते हुए गौतम की आंखों में क्रूरता भर आई। जबड़े आपस में बुरी तरह से भिंच गये—जिससे उसके गालों के मसल्स उभर आये थे।

कमल के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

एक रहस्यमयी मुस्कान।

साफ नजर आ रहा था कि वह गौतम के मन की बात को भांप चुका है।

"आओ।" वह बोला।

उसके इस एक शब्द पर बुरी तरह से चौंक उठा गौतम।

"कहां?" वह उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

"यह थाना बेशक तुम्हारा है इंस्पेक्टर साहब।" वह बोला—"लेकिन तुम्हारे मातहत तुम्हारे नही छोटे-बड़े शाह के गुलाम हैं। हमारी बातें इस ऑफिस से निकलकर शाह बाप-बेटों के पास पहुंच सकती हैं। आप मुझे थोड़ी दूर तक छोड़कर आ जाइयेगा। रास्ते में थोड़ी-बहुत काम की बातें भी हो जायेंगी।"

बात सही लगी गौतम को, सो वह खड़ा हो गया।

"मेरी बाईक पर चलते हैं।" ऑफिस से बाहर आकर बोला कमल।

"मगर मैं वापिस कैसे आऊंगा?"

"इस शहर के कोतवाल हो। किसी को भी कह देना—तुम्हें छोड़ जाएगा।"

गौतम ने और कुछ नहीं पूछा—"बस उसके साथ बाईक की तरफ बढ़ गया।

कमल बाईक पर सवार हुआ और किक मारकर उसे स्टार्ट कर दिया।

तभी पीछे गौतम बैठ गया।

कमल ने गियर लगाया और बाईक आगे बढ़ा दी।

जैसे ही बाईक थाने से बाहर निकली—पीछे बैठा गौतम बोल पड़ा।

"अब बोलो—क्या कहना चाहते हो तुम?"

"जरा सब्र रखो। आराम से बैठकर बातें करेंगे। तुम्हें जल्दी है क्या?"

गौतम चुप करके रह गया।

बहुत बड़ा अहसान था उसका उस पर—उसकी बहन की उसने न सिर्फ इज्जत बचाई थी—बल्कि अपनी शर्ट से उसका तन भी ढका था—और फिर वह उसकी मां और बहन को सकुशल रजापुर पहुंचाकर आया था। ऐसे में वह उससे कैसे कुछ कह सकता था।

दस मिनट बाद जब बाईक संजना की कोठी के सामने रुकी तो पीछे बैठा गौतम बुरी तरह से उछल पड़ा।

"य...यह तो संजना की कोठी है।"

"हां...।" मुस्कुराते हुए बोला कमल—"मुझे मालूम है।" कहकर उसने बाईक कोठी के अधखुले गेट में प्रवेश करा दी।

इधर बाईक ड्राईव वे के अन्त में खड़ी संजना की कार के पीछे खड़ी हुई—उधर कोठी का मेन गेट खुला और उसमें से संजना बाहर निकली।

उसके बाहर निकलते ही कमल ने बाईं आंख दबाकर उसे इशारा कर दिया कि मिशन कामयाब रहा।

तभी उसके पीछे से गौतम उतरा।

उसे देखकर संजना ने बुरी तरह से डरने की शानदार एक्टिंग की—और वापस पलटी—जैसे उसे डर हो कि गौतम उसे ही पकड़ने आया हो।

"संजना जी।" तभी पीछे से आवाज लगाई कमल ने।

संजना के पैर वहीं ठिठक गये।

तुरंत वह पलटी और एक बार पुनः गौतम को देखकर उसने थूक सटकते हुए कमल को देखा और घबराये स्वर में बोली—

"य...यह इंस्पैक्टर!"

"घबराने की ज़रूरत नहीं संजना जी।" कमल कम्पाऊण्ड में दाखिल होते हुए बोला।

इधर गौतम—उसे जैसे आज अहसास हो रहा था कि शर्मिन्दगी क्या होती है।

संजना ने हालांकि अभी तक उसके बारे में कोई भी ऐसी-वैसी बात नहीं की थी—मगर जिस सहमे अंदाज में संजना ने उसे देखा था—वही अंदाज ही उसे शर्मिन्दा किये दे रहा था।

उस एक संजना से ही वह समझ रहा था कि पब्लिक में उसकी क्या इमेज है।

कमल संजना के करीब आकर रुका और बोला।

"वक्त ने इंस्पैक्टर को एक ऐसी चोट मारी है—जिससे अगर यह वाकई में इंसान है तो बदल जायेगा।"

संजना कुछ नहीं बोली। बस थूक सटकी और बोली—

"अ...आइये।"

कह कहकर कोठी में प्रवेश कर गई। उसके पीछे कमल और उसके पीछे गौतम प्रवेश कर गया।

ड्राइंगरूम में आकर उसने सोफे की तरफ इशारा किया—

"बैठिये—मैं कॉफी लेकर आती हूं।" कहकर वह बाहर निकल गई।

"बैठो इस्पैक्टर।" सोफे पर बैठते हुए बोला कमल।

गौतम उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

कमल ने गहरी सांस छोड़ते हुए सोफे की पुश्त से टेक लगाई और निगाहें गौतम के चेहरे पर स्थिर करते हुए बोला—

"जानते हो इंस्पैक्टर—आज तीन बजे जब मैं इस शहर में प्रविष्ट हुआ था तो मेरे जेहन में एक हिट लिस्ट थी।"

"हिट लिस्ट?" हल्के से चौंका गौतम।

"हां हिटलिस्ट—और तुम हिटलिस्ट में तुम्हारा भी नाम था।"

बुरी तरह से उछल पड़ा गौतम और आंखें फाड़े उसे देखने लगा।

"त...तुम मुझे मारने यहां आये थे?"

"तुम ही क्या—मेरी हिटलिस्ट में छोटा शाह-बड़ा शाह और विक्की भी था।"

एक और झटका लगा गौतम को। साथ ही वह गहरी निगाहों से उसे इस तरह से देखने लगा जैसे पहचानने की कोशिश कर रहा हो कि उसने पहले से कब और कहां देखा था।

लेकिन वह चेहरा उसे नितांत अजनबी लगा।

मन ही मन हैरानी हुई उसे—जबकि प्रत्यक्ष में वह बोला—"जहां तक मैं सफलता हूं कि हम पहली बार मिले हैं। ऐसे में मैंने तुम्हारा ऐसा क्या बिगड़ दिया कि मैं तुम्हारी हिट लिस्ट में शामिल हो गया।"

कमल के होठों पर एक जहरीली मुस्कान रेंग गई। थोड़ा आगे को झुकते हुए अपने घुटनों पर कोहनियां टिकाई और उसकील आंखों में झांकते हुए बोला—

"कमल को जानते हो?"

कमल का नाम सुनते ही गौतम इस तरह उछला मानो उसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो।

"तुम...तुम कैसे जानते हो कमल को?" पूछते हुए उसकी आंखों में संदेह उमड़ आया।

कमल ने गहरी सांस छोड़ते हुए पीठ पुनः सोफे की पुश्त से लगाई और बोला—

"कमल जेल में है—इसका पता मुझे परसों उस वक्त लगा जब मैं उससे मिलने उसके घर गया। वहां मुझे पता चला कि उसने अपनी पत्नी नेहा और बेटे का बेरहमी से कत्ल कर दिया था—और इस वक्त वो लखनपुर जेल में है।"

वह पल भर के लिये रुका, फिर आगे बोला—

"मुझे विश्वास नहीं हुआ कि वह इतना घृणित काम कर सकता है। बहुत अच्छी तरह से जानता था मैं उसे। दस साल तक हमने एक साथ एक ही गुरु से कुंगफू और मार्शल आर्ट्स की शिक्षा ली थी। मेरे से बिल्कुल भिन्न विचार थे उसके। वह नेक शहरी और मेहनतकश

जिन्दगी जीना चाहता था, जबकि मैं अपनी ताकत को कैश करना चाहता था—सो उसने यहां कोचिंग स्कूल खोल लिया और मैं बिजली उस्ताद के गैंग में शामिल हो गया।"

"बिजली उस्ताद, यह कौन है?"

"लखनपुर पहुंच जाओ—खुद ही पता चल जायेगा।"

"ओह!"

"यहां तो छोटे-बड़े शाह का नाम लेते समय आदमी उसे मन ही मन हजारों गालियां निकालता है—लेकिन कहां बिजली उस्ताद का नाम इज्जत से लिया जाता है—क्योंकि बिजली उस्ताद किसी को नाजायज तंग नहीं करता—किसी की बहू-बेटी को गंदी निगाहों से नहीं रखता—किसी गरीब को नहीं सताता।"

"ओह!"

"लखनपुर जाकर पता पूछोगे तो लोग तुम्हें खुद ही उसके अड्डे तक पहुंचाकर आयेंगे।"

गौतम ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया—लेकिन बोला कुछ नहीं था।

"मैं वापिस लखनपुर में पहुचा और सीधे जेल में पहुंचकर कमल से मिला।" अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोला कमल—"और जब उसने मुझे हकीकत बताई तो मेरे मन में तुम सबके लिये घृणा बैठ गई...।"

बोलते-बोलते रुक गया कमल—और दरवाजे की तरफ देखने लगा जिसमें से संजना भीतर प्रविष्ट हो रही थी। जिसके हाथों में एक ट्रे में तीन कप रखे हुए थे।

सैंटर टेबल के करीब आकर उसने झुककर पहले गौतम के आगे कदम रखा—फिर कमल के सामने—और फिर तीसरा कदम उठाकर स्वयं सोफे पर बैठ गई।

कमल ने कप उठाया और कॉफी का घूंट भरकर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"मैंने वहीं जेल में ही कमल से वादा किया किया कि जब तक मैं शाह बाप-बेटे से उसकी बर्बादी का बदला नहीं ले लूंगा—चैन से नहीं बैठूंगा। वहीं पर कमल ने मुझे संजना जी के बारे में बताया था कि मैं इन पर भरोसा कर सकता हूं—तो बिजली उस्ताद से आज्ञा लेकर मैं सीधा यहां आ गया और—यहां सीधा संजना जी से मिला। और जब संजना जी ने बताया कि छोटा शाह उनसे भी बद्तमीजी कर चुका है तो मेरे मन में फैली तुम सब के प्रति नफरत और भी गहरी हो गई। सो

मैंने संजना जी से रिक्वेस्ट की कि मुझे कुछ रोज के लिये पनाह दे दें। जिसके लिये इन्होंने न सिर्फ हां की—बल्कि यह भी कहा कि इस नेक काम के लिये इनसे जो भी कुछ बन पड़ेगा—यह मदद करेंगी।"

कहकर उसने कॉफी का घूंट भरा।

गौतम चुपचाप बैठा कॉफी पीता उसे देख रहा था।

कमल ने एक और घूंट भरा और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"अपनी हिट लिस्ट में मैंने सबसे पहला नाम विक्की को चुना—क्योंकि उसी ने मेरे दोस्त की बीवी और बेटे का कत्ल किया था। सो शाम पौने आठ बजे मैं विक्की की तलाश में निकल पड़ा। उसके घर गया तो पता था नही मुझे—सो मैंने किसी गुण्डे को काबू करने का फैसला किया। विक्की पता शाह के किसी भी गुलाम से ही चल सकता था। लेकिन...।"

उसने गहरी सांस छोड़ी।

"लेकिन क्या?"

"अब यह काम कल तक के लिये स्थगित हो गया है।" कमल गम्भीरता से बोला और कप को टेबल पर रख दिया—"रास्ते में तुम्हारी बहन के साथ जो कुछ हो रहा था—उससे विक्की को ढूंढने में बेशक देरी हो जाती—लेकिन मेरे लिये एक बेबस लड़की को बचाना ज्यादा जरूरी था।"

"क्या उस वक्त तुम्हें पता था कि सविता मेरी बहन है?"

गौतम उसे गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

कमल के होटों पर एक मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

"तुमने शायद बिजली उस्ताद के उसूल गौर से नहीं सुने।" वह बोला—"उसमें एक उसूल किसी की बहू-बेटी को तंग नहीं करना भी है—और जरूरत पड़ने पर किसी अबला की मदद करना भी है। वैसे तो मुझे पता नही था कि वह तुम्हारी बहन थी—लेकिन अगर मुझे पता होता—तो भी मैं वही करता जो मैंने किया। मेरी दुश्मनी तो तुमसे थी—उस बेचारी ने कमल का क्या बिगाड़ा था जो तुम्हारे पापों की सजा मैं उसे होने देता।"

गौतम ने कृतज्ञ नजरों से उसकी ओर देखा—फिर गम्भीरता से बोला—

"विक्की को ढूंढने की जरूरत नही है तुम्हें अब।"

"क्या मतलब?" चौंका कमल—"क्या तुम बताओगे उसका पता?"

"उसे मारने की जरूरत नहीं तुम्हें।"

कमल इस बार और भी जोरों से चौंका—। लेकिन उसका यह चौंकना सिर्फ एक्टिंग थी।

उसने खूंखार निगाहों से गौतम को देखा—

"लगता है शाह के फेंके टुकड़े तुम्हें अपनी बहन की इज्जत से कहीं ज्यादा बेहतर नजर आ रहे हैं।" वह गुर्राया—"लेकिन इतना याद रखो—विक्की मरेगा—और जरूर मरेगा।"

"नहीं जीतू।" गौतम की आवाज में सख्ती उभर आई—"गौतम ने जितनी हराम की खानी थी खा ली—। आज मुझे अहसास हो रहा है कि दर्द क्या होता है?"

"इस बार कांटा तुम्हारे दिल में जो लगा।"

पहली बार संजना ने मुंह खोला।

गौतम ने उसकी तरफ देखा—बुरा बिल्कुल नहीं माना था उसने संजना की बात का—बल्कि उसकी बात से इत्तफाक रखते हुए बोला—"आप ठीक कह रही हैं संजना जी—दर्द का अहसास तभी होता है—जब खुद को चोट लगी हो। खाकी वर्दी को पैसा कमाने की दुकान समझ लिया था मैंने। भूल गया था मैं उस कसम को जो मैंने पुलिस में भर्ती होते समय खाई थी। मेरे लिये कानून सबसे पहले होता—चोर चाहे मेरा कितना भी करीबी क्यों न हो—मुझे हर सूरत में कानून की रक्षा करनी है। लेकिन बड़े शाह के फेंके चांदी के सिक्कों की चमक में मैं ऐसा खो गया कि कानून को बिल्कुल ही भूल गया। मगर अब...।" उसने गहरी सांस छोड़ी—"मेरी आंखें खुल गई हैं। दर्द का अहसास हो गया है मुझे—आज मुझे पता चल रहा है कि गुनाह की आग एक दिन खुद के दामन को भी पकड़ सकती है। इसलिये तुम्हारे थाने से जाते ही—" उसने कमल की तरफ देखा—"मैं सीधा विक्की के घर पहुंच गया था।"

"क्यों?"

"मेरी बहन की आबरू पर हाथ डाला था उसने। ऐसे में वह जिन्दा कैसे रह सकता था।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कमल।

इस बार वह नकली नहीं बल्कि असली चौंका था—क्योंकि उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि गौतम इतनी जल्दी विक्की को मार डालेगा!

संजना भी चौंक उठी थी।

"तुमने उसे मार डाला?" कमल को जैसे विश्वास नहीं हुआ।

"हां—उस कुत्ते के भेजे में गोली उतार दी है मैंने—इस रिवॉल्वर से खत्म कर दिया है मैंने उसे।"

गौतम ने अपने होलस्टर को थपथपाया।

गहरी सांस छोड़ी कमल ने।

"यहां तुमने गलती कर दी गौतम।"

"क्या मतलब?" गौतम की आंखों में आश्चर्य उमड़ आया—"क्या मुझे विक्की को नहीं मारना चाहिये था? जो हरामी छोटे शाह की हवस की पूर्ति के लिये मेरी बहन को बुलाने रजापुर पहुंच सकता है उसे छोड़ देना चाहिये था मुझे?"

"नहीं इंस्पैक्टर...।" बोला कमल—"मेरा कहने का मतलब यह नही था।"

"तो फिर?"

"मैं तो यह कह रहा हूं कि विक्की को तुम्हें अपनी सर्विस रिवॉल्वर से नहीं मारना चाहिये था—ऐसे में तुम्हारे फंसने के चांस...।"

"उसकी चिंता मत करो।" उसकी बात काटते हुए रहस्यमयी मुस्कान मुस्कुराया गौतम।

"क्या मतलब?"

"कमल ने अपनी बर्बादी की कहानी तुम्हें शायद पूरी नहीं सुनायी थी।" गम्भीर होते हुए बोला गौतम—"जिस डॉक्टर ने उसकी पत्नी और बच्चे की मौत का वक्त एक से दो बता दिया, वह पोस्टमार्टम के दौरान विक्की को लगने वाली गोली बदल भी सकता है।"

"ओह।"

"कमल पता नहीं मुझे माफ करेगा या नहीं...। क्योंकि उसकी बर्बादी में मेरा भी हाथ है, जितना बड़े शाह का था। लेकिन जो गुनाह मैंने किया है—उसका प्रायश्चित अवश्य करूंगा मैं—और वो प्रायश्चित बड़े शाह और छोटे शाह की मौत पर ही पूरा होगा। मुझे उम्मीद है कि दोनों बाप-बेटों की मौतम से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे।"

"य...यानि...अब तुम दोनों बाप-बेटों को मारोगे?"

"बेशक।"

"और मैं...। मैं क्या करूंगा?" कमल ने अपने सीने पर हाथ रखा—"क्या मैं मुंह दिखाने के लिये आया हूं यहां...।"

"तुम्हारा आना तो सार्थक हो गया जीतू...। तुमने उस हैवान को फिर से इंसान बना दिया।"

"ले...लेकिन।"

"तुम चिन्ता न करो—मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ती रहेगी।" गौतम बोला—"बल्कि यूं समझ लो कि मैं तुम्हें चारा बनाकर उन कमीने बाप-बेटों का शिकार करूंगा।"

"बेशक।" कमल बोला—""लेकिन मेरी एक शर्त है।

"कैसी शर्त?"

"मैंने संजना जी से वायदा किया है कि जो बदतमीजी छोटे शाह ने उनके साथ की थी—उसकी सजा छोटे शाह को इनके हाथों से दिलाऊंगा।"

गौतम ने संजना की तरफ देखा—जिसकी आंखों में उस वक्त शोले भड़क रहे थे।

निश्चय ही उसकी आंखों के सामने वो सीन आ गया था जब छोटे शाह ने उसका पल्लू उतारा था।

"ऊपर वाले ने चाहा तो—।" गौतम गम्भीरता से बोला—"आपकी तमन्ना अवश्य पूरी होगी।"

संजना कुछ नहीं बोली—बस सिर झुका लिया।

गौतम खड़ा हो गया।

"अब मैं चलता हूं—।" वह बोला—"सिर्फ मेरे बदल जाने का यह मतलब नहीं कि मेरा पूरा स्टॉफ ही बदल गया है। ऐसे में मुझे सावधानी से काम लेना होगा।"

कमल ने उसकी बात के समर्थन में सिर हिलाया।

"तुम ठीक कह रहे हो इंस्पैक्टर।" वह बोला—"मेरा मोबाईल नम्बर नोट कर लो और यहां आने से पहले मुझे फोन कर देना—ताकि मैं जहां भी होऊंगा—यहां पहुंच जाऊं।"

"ओ० के०। बोलो अपना नम्बर।"

अपना मोबाईल निकालते हुए बोला गौतम।

कमल ने उसे अपना मोबाइल नम्बर बताया—जिसे गौतम ने अपने मोबाईल में फीड कर लिया। फिर अपना नम्बर उसे बताकर बोला—

"कोई भी इमरजैंसी हो—मुझे फोन कर देना।"

कमल ने अपने मोबाईल के बटनों से खेलते हुए सिर हिला दिया।

गौतम के जाने के पश्चात् संजना मेन गेट बन्द करके वापिस

ड्राइंगरूम में आई और कमल को देखते हुए मुस्कुरा पड़ी—"बहुत ही शानदार चाल चली आपने कमल जी।" वह उस सोफे पर बैठते हुए बोली जहां पर कि गौतम बैठा था—"विक्की को हाथ भी नहीं लगाया और उसे मार डाला।"

कमल मुस्कुरा पड़ा।

"सिर्फ विक्की ही नहीं मरा संजना जी—बल्कि गौतम को भी मार डाला है मैंने। उसके भीतर बैठे हुए उस शैतान का खात्मा कर दिया है जो शाह बाप-बेटे का गुलाम था। बिजली उस्ताद से वायदा कर रखा है मैंने कि मैं किसी को अपने हाथों से नहीं मारूंगा। और अपने पहले प्रयास में मैं सफल भी रहा—लेकिन अपनी चाल को सफल बनाने के लिये मैंने सविता को जो बेइज्जत कराया—उसका मुझे बेहद अफसोस है।"

"कांटे को निकालने के लिये हाथ में कांटा लेना ही पड़ता है कमल जी। आपने उसकी इज्जत तो नहीं लुटने दी—यह क्या कम है। भूल जाईए इसे कि आपने ऐसा करके पाप किया है—और अपना सारा ध्यान अब शाह बाप-बेटों पर केन्द्रित करें कि उन्हें कैसे मारना है?"

"हां।" गहरी सांस छोड़ी कमला ने—"वक्त कम है मेरे पास—और काम ज्यादा है। विक्की तो एक मामूली मोहरा था—जिसे खत्म करना गौतम के लिये ही क्या किसी के लिये भी आसान था—लेकिन शाह बाप-बेटों को मारना आसान नहीं होगा—उनके चारों तरफ हर वक्त उनके वफादारों का घेरा रहता है। हमें ऐसे में उस घेरे को तोड़कर उन तक पहुंचना बेहद मुश्किल होगा।"

"ऊपर वाला आपका साथ दे रहा है कमल जी—और मुझे पूरा विश्वास है कि सुबह तक वह आपके जेहन में कोई ऐसी स्कीम जरूर पैदा कर देगा जो उसकी मौत बन जायेगी।"

"आमीन।" दुआ की कमल ने और खड़ा हो गया—"अब मैं ऊपर जाता हूं। सीढ़ियां किधर हैं?"

"यहीं नीचे दो बैडरूम हैं। एक में सो जाइये आप?"

"लेकिन...।"

"खुद पर विश्वास नहीं है क्या?"

सुनकर कमल ने गहरी सांस छोड़ी और खड़ा हो गया—"किधर है बैडरूम?" वह बोला।

संजना भी खड़ी हो गई।

अगले दिन सुबह आठ बजे गौतम अभी थाने में अपने ऑफिस में प्रविष्ट हुआ ही था कि तभी फोन की घण्टी बज उठी। जैसे फोन उसी के आने का इंतजार कर रहा हो कब ऑफिस में पैर रखे—और कब वह बजे।

आगे बढ़कर टेबल पर बैठते हुए गौतम ने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो—इंस्पैक्टर गौतम स्पीकिंग।"

"तेरा बाप बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से बड़े शाह की गुर्राती आवाज आई।

आवाज के लहजे से ही गौतम समझ गया कि कोई गड़बड़ है।

"हुक्म बड़े शाह जी।"

अपने आप पर काबू करते हुए वह बोला।

"हुक्म के बच्चे। रात मेरे बेटे को अकेला सोना पड़ा। पता है तुझे?"

"ल...लेकिन बड़े शाह जी...।"

"मुझे पता लग गया है वो तेरी बहन थी। साथ में तेरी मां भी।"

बुरी तरह से चौंक उठा गौतम। साथ ही उसे समझते देर नहीं लगी कि यहां ऑफिस में उसने अपनी मां-अपनी बहन और कमल से जो-जो बात की थीं—वह सारी बात बड़े शाह तक पहुंच गई हैं, तभी तो बड़े शाह को पता चला है कि सविता उसकी बहन थी। वर्ना उसने तो छोटे शाह को फोन पर कहा था कि उसने उन्हें उसी वक्त भगा दिया था।

"फौरन मेरे सामने पेश हो।" दूसरी तरफ से दहाड़ती आवाज आई—"वर्ना थाने में आकर वो हाल करूंगा कि...।"

"म...मैं आ रहा हूं। बड़े शाह जी।"

"जल्दी आ।"

दूसरी तरफ से गुर्राहट उभरी और सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

वह उसी वक्त उलटे पैर बाहर निकला तो उसे सिपाही खुशीराम अपनी तरफ पीठ किये आगे बढ़ते नजर आया।

पलक झपकते ही वह समझ गया कि खुशी राम ने ही उसकी जासूसी की है।

उसने तेजी से कुछ सोचा और सीधा टायलेट की तरफ बढ़ गया।

टायलेट की तरफ बढ़ते हुए उसने चोर निगाहों से खुशी राम की तरफ देखा तो उसे उसी तरफ देखते पाया।

"हरामजादा।" वह मन ही मन बड़बड़ाया और टायलेट में प्रवेश कर दरवाजा बन्द किया और जेब से मोबाईल निकालकर जल्दी-जल्दी कमल के मोबाईल का नम्बर मिलाया और काल का बटन दबाकर मोबाईल कान से लगा लिया।

"हैलो।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से कमल की आवाज आई।

"जीतू...।" धीमे से फुसफुसाया गौतम।

"हां...बोलो इन्सपैक्टर।" दूसरी तरफ से कमल की आवाज आई।

"मेरा सोचना सही निकला। बडे शाह तक हमारी खबर पहुंच गई है और अभी-अभी बड़े शाह का फोन आया है मुझे फौरन तलब किया है उसने मुझे।"

"ओह।"

"अगर उसे जरा भी संदेह हो गया तो वह वहीं पर मेरी लाश बिछा देगा। मुझे अपनी मौत की परवाह नहीं जीतू—लेकिन मेरी मौत से मेरा मकसद अधूरा रह जायेगा। समझ में नहीं आ रहा क्या करूं? मेरा तो दिमाग बंद होकर रह गया है। अब तुम ही बताओ क्या करूं मैं?"

"मैं भी सारी रात सोचता रहा कि क्या करना चाहिये—और ऊपर वाले की कृपा से मुझे एक युक्ति सूझ गई है। तुम बेफिक्र होकर बड़े शाह के पास जाओ।"

"य...यह क्या कह रहे हो तुम?" हड़बड़ाया गौतम।

"और वहां पर भी कबूल कर लेना कि विक्की को तुमने मारा था।"

"क...क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा गौतम।

और जब दूसरी तरफ से कमल ने उसे स्कीम बताई तो गौतम की आंखें चमक उठीं।

"वाह! क्या स्कीम सोची है तुमने—।" वह तारीफ किये बिना नहीं रह सका।

"अब जाओ और शुरू हो जाओ।"

"ओ०के०।"

बोला गौतम और फोन को कान से हटाकर बटन दबाया और उसे जेब में डालकर फ्लशवाल की ओर दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

खुशीराम उसी जगह पर खड़ा नजर आया—जहां उसने उसे टायलेट में प्रवेश करते देखा था।

गौतम ने लापरवाही दिखाते हुए नजरअंदाज किया और जिप्सी की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह जिप्सी ड्राईव करता हुआ वो शाह के अड्डे की तरफ उड़ा जा रहा था।

"गौतम हॉल में प्रविष्ट हुआ।"

सामने दीवान पर बिछी सफेद चादर पर बड़ा शाह सफेद कपड़े पहने वैसे ही एड़ियों को अपने नीचे दबाये बैठा था—जैसे कि हमेशा बैठता था।

छोटा शाह उसके करीब बैठा था।

करमचन्द वैसे ही जमीन पर बैठा था—हाथ में कापी और पैन लिये।

दोनों गार्ड स्टेशनगन ताने दीवान के दायें-बायें खड़े थे।

बड़े शाह के सामने आकर गौतम घुटनों के बल उसके सामने खड़ा हुआ और बड़े शाह के घुटनों को हाथ लगाकर माथे को दीवान के किनारे से लगाया और फिर सीधा होते हुए बड़े शाह को देखा जो कि कहर भरी निगाहों से उसे देख रहा था।

छोटा शाह भी उसे खूनी आंखों से देख रहा था।

तभी बड़ा शाह आगे झुका और उसका झन्नाटेदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

'तड़ाक।'

गौतम हल्की-सी चीख के साथ पीछे पलट गया। मगर तुरंत वह सीधा हुआ और वैसे ही घुटनों के बल खड़ा हो गया।

"हरामखोर...।" फुफकारा बड़ा शाह—"सारी रात मेरा बेटा बैड पर करवटें बदलता रहा। इसका कसूरवार तू है—सिर्फ तू—। क्या घिस जाता तेरी बहन का...?"

गौतम का जी चाहा कि वह अभी होलेस्टर से रिवॉल्वर खींचे और बड़े शाह के सीने में सुराख कर दे।

उसकी बहन के बारे में बड़े शाह ने जो शब्द कहे थे—वो ना काबिले बर्दाश्त थे।

लेकिन वह चुप रहा—उसके सवाल का बुरा नहीं माना उसने।

उसने एक बार फिर उसे माथा टेका और बोला—

"आपने मुझे समझने में भूल की है बड़े शाह जी। आप मेरी

बहन की बात कर रहे हैं कि मैंने उसे छोटे शाह जी के पास नहीं भेजा। मैं तो भेज देता—और मुझे खुशी भी होती अपनी बहन को छोटे शाह जी के पास भेजने में। लेकिन शाह जी—मैं मजबूर था।"

"तू मजबूर था हरामजादे।" फुंफकारा बड़ा शाह।

"आपने यह भी नहीं पूछा कि मैंने उस आदमी को क्यों छोड़ दिया जो मेरी बहन को आपके गुलामों के चंगुल से बचाकर लाया था?"

"क्या मतलब?" हल्के से चौंका बड़ा शाह।

छोटा शाह भी चौंक पड़ा था।

"मैं तो उस आदमी को आपके हवाले करने को तैयार हो गया था ताकि आप अपने हाथों से उसे सजा देते—लेकिन जो कुछ उसने मुझे दिखाया—उसने मुझे कुछ भी न करने को मजबूर कर दिया था।"

बड़े शाह के माथे पर बल पड़ गये।

"क्या दिखाया उसने तुझे?"

"आई० कार्ड।"

"क्या?"

"हां शाह जी—उस कार्ड पर नजर पड़ते ही मेरे हाथों के तोते उड़ गये। सी० बी० आई० का एजेन्ट है वो।"

बुरी तरह से उछल प्रड़ा बड़ा शाह।

छोटे शाह के चेहरे पर बेचैनी उभर आई।

"स...सी० बी० आई०।" बड़ा शाह हड़बड़ाते हुए बोला।

"जी हां बड़े शाह जी—और इस बार सी० बी० आई० छोटे शाह जी ही नहीं आपके भी चक्कर में है।"

"ओह!"

"मुझे आई० कार्ड दिखाने के बाद उसने मुझे इशारे से कहा कि मैं यह बात अपने मुंह से न निकालूं। मेरी बहन को बचाकर लाया था वह—इसीलिये उसने यही समझा कि मेरा आपकी तरफ अगर झुकाव है तो वह खत्म हो जाये। सो मैंने भी यही दर्शाया और आपको दो-चार गाली निकालकर जीतू को कहा कि वह मेरी मां और बहन को छोड़ आये। यह सब मैंने उसका विश्वास हासिल करने के लिये किया था—वर्ना मैं तो बेशक अपनी मां को मारना पड़ता—अपनी बहन को छोटे शाह के पास पेश कर देता।"

गौतम पल भर के लिये रुका—फिर आगे बोला—

"यह तो आप भी जानते हैं बड़े शाह जी कि सी० बी० आई० पूरी तसल्ली कर चुकने के बाद ही किसी पर विश्वास करती है—और सिर्फ एक घटना से मैं जीतू का विश्वास प्राप्त नहीं कर सकता था, और

विश्वास प्राप्त न करने का मतलब यह होता कि मैं यह न जान पाता कि वह किस मकसद से यहां आया है।"

बड़ा शाह समझने वाले अंदाज में सिर हिलाने लगा।

गौतम की बातों से वह काफी नर्म हो गया था।

"यानि तूने उसका पूरा विश्वास नहीं जीता?"

छोटा शाह बोला।

गौतम ने उसकी तरफ देखा और गहरी सांस छोड़ी—

"विश्वास तो प्राप्त कर चुका हूं मैं—लेकिन उस विश्वास को प्राप्त करने के लिये मुझे आपका छोटा-सा नुकसान करना पड़ा।"

"नुकसान?"

चौंका बड़ा शाह।

"लेकिन हमें तो हमारे किसी नुकसान की खबर नहीं मिली।"

छोटा शाह बोला।

"मैं किसी नुकसान की बात नहीं कर रहा छोटे शाह जी—एक कत्ल करना पड़ा मुझे।"

दोनों बाप-बेटा बुरी तरह से उछल पड़े।

"तू...तूने कत्ल किया?"

बड़ा शाह आंखें फाड़ते हुए बोला।

"हां बड़े शाह जी।" कहते हुए गौतम ने इस तरह निगाहें झुका लीं मानो उसे शर्मिन्दगी हो रही हो।

"किसका कत्ल किया तूने?" छोटा शाह बोला।

"विक्की का।"

एक और झटका लगा दोनों को।

"विक्की का—!" बड़ा शाह बड़बड़ाया—"उसका कत्ल क्यों किया तूने?"

गौतम ने गहरी सांस छोटी और बोला—"थाने में आते ही मेरी मां और मेरी बहन ने विक्की हवलदार का नाम लिया था कि वह घर गया था और...।" उसने सारी बात बताई—फिर आगे बोला—"यह सारी बात जीतू के सामने हुई थी—और जीतू मुझे अपना आई० कार्ड दिखा चुका था—सो उनके वहां से जाते ही मैं सीधा विक्की के पास गया और उसे गोली मार दी—और जीतू के वापस आने पर जब मैंने उससे कहा कि विक्की को मार आया हूं जो मेरे घर में हवलदार बनकर गया था तो वह हैरान रह गया। तब मैंने उससे यह कहा कि मैं आपको और छोटे शाह जी को भी नहीं छोडूंगा—तो वह मुझे अपने साथ ले गया।"

"कहां?"
"संजना के घर।"
"संजना।" माथे पर सोचों वाले बल पड़े बड़े शाह के—"यह संजना कौन है?"
"यह वही संजना है बड़े शाह जी जिसके साथ छह महीने पहले आप गंगाधर की शादी करने जा रहे थे। कपूर इंडस्ट्री की मालकिन।"
बुरी तरह से उछल पड़ा बड़ा शाह। छोटे शाह की भी आंखें फट पड़ीं।
"व...हां ले गया वह तुझे?" बड़ा शाह हैरानी से बोला।
"जी हां।"
"वहां क्यों ले गया वह तुझे?"
विक्की की हत्या की बात से उसके दिल में मेरा विश्वास पूरी तरह से बैठ चुका था। ऊपर से वह यह भी सोच रहा था कि उसने मेरी बहन की इज्जत बचाई है—यानि कुल मिलाकर उसके दिल में यहि बैठ चुका था कि मैं आप दोनों के खून का प्यासा बन गया हूं—ऐसे में उसने मुझे अपना राजदार बनाने में कोई हर्ज नहीं समझा—इसीलिये वह मुझे वहां ले गया था ताकि मेरे स्टॉफ का कोई सिपाही हमारी बातें न सुन ले।"
"मगर उसका संजना से क्या ताल्लुक है? क्यों ले गया था वह तुझे उसके घर?" छोटा शाह शंकित अन्दाज में बोला।
गौतम ने उसकी तरफ देखा और गम्भीर लहजे में बोला—
"आपको याद होगा—कुछ रोज पहले आपने बीच सड़क पर संजना का पल्लू उतारा था।"
छोटे शाह की आंखें सोचने वाले अंदाज में गोल हो गई।
"हां...याद आया।" वह बोला—"पिछले शनिवार की ही तो बात है यह। अच्छा तो वो थी संजना।"
"उसी ने बुलाया है सी० बी० आई० को।"
"क्या मतलब?"
"मोहनलाल हत्याकाण्ड—और फिर उसकी पत्नी—चौकीदार और लड़के की एक्सीडेंट में मौत के बाद यह केस दब गया था। लेकिन बीच सड़क पर अपनी बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर पाई संजना और उसने खुद दिल्ली जाकर होम मिनिस्टर से सारी बात की और यह कहा कि यहां की सारी पुलिस शाह बाप-बेटों की गुलाम बनी हुई है। कानून यहां भारत सरकार का नहीं बल्कि बड़े शाह का चलता है। और सी० बी० आई० की तफ्तीश की मांग करते हुए यह कहा कि दोनों बाप-बेटों

यानि आप दोनों को पकड़ने के लिये जितना भी खर्चा होगा वह करेगी।"

"ओह। तो हरामजादी बदला लेना चाहती है मुझसे।" भड़क उठा छोटा शाह—"साली का आज ही टेटुंआ दबा दूंगा—ताकि न रहेगा बांस—न बजेगी बांसुरी।"

"ऐसा करके आप अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारेंगे छोटे शाहजी।" गम्भीर स्वर में बोला गौतम—"सी० बी० आई० का पूरा स्टॉफ आया हुआ है यहां—और इसका पता न तो एस० पी० साहब को है और न ही एस० एस० पी० साहब को। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कितनी गोपनीयता बरती जा रही है। मुझे भी पता नहीं लगता अगर मेरी बहन वाला केस न होता तो। बस यूं समझ लीजिये बड़े शाह जी कि ऊपर वाला अभी आप ही का साथ दे रहा है—तभी तो उसने यह सारा खेल रचाया और मुझे सी० बी० आई० की यहां मौजूदगी का पता चल गया—और अब आपको भी चल गया है।"

गौतम ने गहरी सांस छोड़ी और फिर अपनी बात को खत्म करते हुए बोला—

"मेरा ख्याल है बड़े शाह जी कि अपनी बहन को छोटे शाह जी तक न पहुंचाने का कारण आप समझ गये होंगे—फिर भी अगर आप मुझे कसूरवार समझते हैं तो गुलाम हाजिर है। बेशक लाश बिछा दीजिये—उफ भी नहीं निकलेगी।"

बड़े शाह ने गहरी सांस छोड़ते हुए छोटे शाह को देखा।

खुद छोटे शाह के चेहरे पर व्याकुलता उभर आई थी।

"सुना तूने?" बड़ा शाह बोला—"क्या कह रहा है यह इंस्पैक्टर—सी० बी० आई० आई हुई है यहां पर।"

छोटा शाह कुछ नहीं बोला—"बस पहलू बदलकर रह गया।

"अब कुछ रोज के लिये अपनी गतिविधियां खत्म कर दे, और किसी पुरानी छोकरी से काम चला।"

"बड़े शाह जी ठीक कह रहे हैं छोटे शाह जी। मेरी मां और बहन के सामने आपके गुलामों ने आपका नाम लिया था कि वो उसे आपके लिये ले जा रहे हैं। यानि सी० बी० आई० को दो बहुत ही महत्वपूर्ण गवाह मिल गये हैं।० ऐसे में कोई बड़ी बात नहीं कि आजकल में आपके रंग महल पर छापा पड़ जाए।"

"क्या?" हड़बड़ाया छोटा शाह।

"जी हां छोटे शाह जी और अगर वहां कोई आपत्तिजनक चीज हो तो उसे फौरन वहां से हटा दीजिये। और पहले की तरह डेढ़ दो महीनों के लिये फिर से गायब हो जायें।

"यह ठीक कह रहा है।" गम्भीरता से बोला बड़ा शाह—"अगर तू सी० बी० आई० के हत्थे एक बार चढ़ गया तो फिर तेरा छूटना मुश्किल से हो जायेगा।"

छोटे शाह ने व्याकुलता से पहलू बदलते हुए होठों पर जुबान फेरी।

"और आप भी बड़े शाह जी—।" गौतम बीच में बोल पड़ा—"पहले की तरह कुछ बयान देने होंगे।"

"कैसे बयान?" चौंकते हुए बोला बड़ा शाह।

गौतम उसे समझाने लगा।

"तू ठीक कह रहा है।" गहरी सांस छोड़ी बड़े शाह ने—"अब फिर से सियासत खेलनी पड़ेगी मुझे। जा तू अब...।"

"और विक्की की लाश?"

"वह ठिकाने लगवा दूंगा मैं। तू जा और मेरा इंतजार कर।"

गौतम ने उसको माथा टेका और खड़ा हो गया।

"सुन।" तभी बड़ा शाह बोल पड़ा।

गौतम पुनः घुटनों के बल बैठ गया।

"हुक्म बड़े शाह जी।" वह बोला।

"तू यहां से सीधा उसके पास जाना और उसे टटोलना कि उसकी रणनीति क्या है?"

"मैं समझ गया शाह जी—यहां से निकलते ही मैं उसके मोबाईल पर फोन करके उसे संजना के घर पहुंचने को कहता हूं।"

"हां...अब जा।"

गौतम ने पुनः उसके घुटनों को छूते हुए माथा टेका और वह खड़ा हो गया।

वहां से गौतम सीधा संजना के घर पहुंचा।

रास्ते में ही उसने मोबाईल पर कमल को संजना के घर पहुंचने को कहा तो कमल का जवाब था कि वह उसी का इंतजार कर रहा है।

तीनों संजना के ड्राइंगरूम में बैठे थे।

संजना ने फैक्ट्री फोन कर दिया था कि उसकी तबीयत खराब है—सो वह ऑफिस नहीं आयेगी।

सुबह काम वाली को भी उसने जल्दी विदा कर दिया था।

और अब तीनों सोफों पर आमने-सामने बैठे थे। तीनों के

सामने कॉफी रखी थी—जो कि संजना अभी-अभी बनाकर लाई थी।

"अब बोलो।" कॉफी का कप उठाते हुए बोला कमल—"क्या हुआ शाह के अड्डे पर?"

"तुम्हारी स्कीम तो बहुत बढ़िया रही जीतू।"

कहते हुए गौतम ने भी अपना कप उठा लिया।.

"कैसे?"

"सी० बी० आई० का नाम सुनकर ही दोनों बाप-बेटों के हाथ-पैर फूल गये। और...।"

कॉफी पीने के साथ सब कुछ बताता चला गया गौतम।

"यानि अब संजना जी पर कोई खतरा नहीं।"

अपना खाली कप टेबल पर रखते हुए बोला गौतम।

"वो तो संजना जी के घर की तरफ मुंह करके भी नहीं सोयेंगे। और मेरे घर पर भी मंडरा रहा खतरा टल गया है। लेकिन यह सब वक्ती तौर पर है जीतू— जैसे ही तुम्हारा भांडा फूटा नहीं कि बड़ा शाह काल बनकर हम तीनों को खा जायेगा। इसलिये जो कुछ करो जल्दी-जल्दी कर लो—ताकि जब तुम्हारी हकीकत सामने आये तो बड़ा शाह या तो मर चुका हो या उसकी सारी ताकत खत्म हो चुकी हो।"

कमल कुछ नहीं बोला—बस सोच भरे अंदाज में सिर हिला दिया उसने।

संजना और गौतम उसे उत्सुकता से देख रहे थे।

कुछ देर बाद कमल ने गौतम के चेहरे पर निगाहें गड़ाई और बोला—

"उसके किसी अड्डे का पता है तुम्हें?"

"हैडक्वार्टर में है दोनों बाप-बेटा। मगर...।"

"मैं अभी उन तक सीधा नहीं पहुंच सकता। मुझे उसके किसी ऐसे अड्डे का पता चाहिये जहां उसका गैर-कानूनी माल पड़ा हो।"

"ऐसा एक अड्डा मैं बता सकता हूं—लेकिन वहां अकेले अपने दम पर फतह हासिल करना तुम्हारे लिये मुमकिन नहीं।"

"कैसे?"

"मैंने देख रखा है वह अड्डा।" बोला गौतम—"करोड़ों का गैर कानूनी माल पड़ा है वहां—चरस, अफीम, हेरोइन, पूरे किशनपुरा में वहीं से सप्लाई होती है। ऐसे में तुम खुद सोच सकते हो कि बड़े शाह ने उस अड्डे की हिफाजत के कितने मुख्ता इंतजाम किये होंगे।"

"क्या वो सारे इंतजाम तुम्हें पता हैं?"

"नहीं। मुझे बस यही पता है कि उस अड्डे का इंचार्ज हुसैन

है—और हुसैन के नीचे पंद्रह-सोलह आदमी काम करते हैं।"

"हुसैन को देख रखा है तुमने?"

"हां।"

"उसका हुलिया बोलो।"

"ठिगने कद का है वो—और उसकी सिर्फ एक ही खूबी उसकी पहचान है।"

"क्या?"

"उसकी लम्बी दाढ़ी जो उसके पेट तक पहुंच रही है। हालांकि उसकी दाढ़ी काफी लम्बी है—लेकिन उस पर जंचती काफी है उसे।"

"हुसैन सिर्फ उसी अड्डे को ही संभालता है या उसे और भी अड्डों का चार्ज मिला हुआ है?"

"सिर्फ उसी अड्डे को सम्भालता है।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"करमचन्द के हाथ में सभी अड्डों का चार्ज है।" गौतम बोला—"और बड़े शाह के सारे उलटे कामों का हिसाब-किताब भी वही रखता है। बस यूं समझ लो कि बड़े शाह का मुनीम होने के साथ-साथ वह उसका सलाहकार भी है। बड़े शाह के तमाम अड्डों पर करमचन्द का ही हुक्म प्रेषित होता है जो कि उसे बड़े शाह की तरफ से मिलता है।"

"और यह करमचन्द—यह कहां हासिल होगा?"

"बड़े शाह के अड्डे पर—। उसके पास ही वह जमीन पर बैठता है। और बड़े शाह का पहुंचना अभी मुमकिन नहीं।"

कमल ने गहरी सांस छोड़ी। और सिर हिलाते हुए सोचपूर्ण अंदाज में बोला—

"यानि—अगर करमचन्द हासिल हो जाये तो बड़े शाह की टांग तोड़ी जा सकती है?"

"बेशक—लेकिन उस तक पहुंचने के लिये मैं तुम्हें बता ही चुका हूं कि पहले बड़े शाह के अड्डे में घुसना होगा।"

"क्या वो कभी नहीं निकलता हैडक्वार्टर से?"

"तीन-चार दफा गया हूं मैं उसके पास।" बोला गौतम—"और हर बार वह मुझे वहीं शाह के पास ही बैठा मिला।"

"दरबार कब तब लगता है बड़े शाह का?"

"सुबह दस से एक बजे तक। हां अगर उसकी मर्जी हो तो वह कभी भी दरबार लगा सकता है।"

कमल ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। कुछ सोचा और

फिर बोला—
"हुसैन वाले अड्डे का पता बताओ।"
गौतम ने उसे बताया।
"अब सुनो तुम्हें क्या करना है।"
गौतम आगे को इस तरह झुका मानो वह कमल के और करीब होना चाहता हो—ताकि उसकी बात को ढंग से सुन सके।
संजना ने भी कान खड़े कर लिये।
कमल उसे समझाने लगा कि उसे क्या करना है।
"समझ गये?" आखिर में वह बोला।
"हां समझ तो गया हूं।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोला गौतम—"तुम्हारी प्लानिंग भी बढ़िया है—लेकिन इसमें तुम्हारी जान को पूरा जोखिम है।"
"अपने यार कमल के लिये तो मैं हजारों बार मरने को तैयार हूं।" कमल बोला—"तुम बस वही करो—जो मैंने कहा है।"
गौतम ने सिर हिला दिया।

गौतम के वहां से जाते ही कमल ने जेब से मोबाईल निकाला और कनवर का नम्बर निकालकर कॉलिंग का बटन दबाया और मोबाईल कान से लगा लिया।
"हैलो।" शीघ्र ही उसके कान में कनवर की आवाज पड़ी।
"मैं बोल रहा हूं।" कमल बोला।
"मुझे पता है। फोन कैसे किया?"
"तुम लोगों की मदद चाहिये मुझे।"
"मिल जायेगी। बोलो क्या मदद चाहिये?"
कमल उसे बताने लगा।
"ओ० के०।" उसकी बात खत्म होते ही दूसरी तरफ से आवाज आई—"हम पहुंच जायेंगे।"
"जरा पहले पहुंचना—कहीं ऐसा न हो कि...।"
"तुम चिन्ता मत करो। हम तुमसे भी पहले पहुंच जायेंगे।"
कमल ने मोबाईल कान से हटाकर उसका बटन दबाया और जेब में डालते हुए संजना की तरफ देखा जो कि अभी तक खामोश बैठी थी।
"अपना ख्याल रखना।" संजना बोली।

कमल ने गहरी सांस छोड़ी।

"जीने का अब मोह नहीं रहा संजना जी। अब तो दिल में बस एक ही तमन्ना है कि किसी तरह से बड़े शाह को उसके अंजाम तक पहुंचा दूं। ताकि मेरी नेहा और बेटे की आत्माओं को शान्ति मिल सके।" आवाज भर्रा गई उसकी।

संजना ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला—मगर फिर चुप कर गई।

'टिन-टिना-टिन-टिन।'

बड़े शाह की जेब में रखा मोबाईल बज उठा।

उस वक्त बड़ा शाह अपने अड्डे के एक सजे हुए कमरे में रखे एक सोफे पर बैठा था। छोटा शाह उसके सामने वाले सोफे पर बैठा था।

बड़े शाह ने जेब से मोबाइल निकाला और उसका बटन दबाकर कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"मैं गौतम बोल रहा हूं बड़े शाह जी—। प्रणाम।"

"गया था जीतू के पास?" छूटते ही पूछा बड़े शाह ने।

"जी हां बड़े शाह जी।" आवाज आई—"अभी रास्ते में ही हूं—आपको मोबाईल से फोन कर रहा हूं।"

"बात हुई उससे?"

"जी हां—तभी तो आपको फोन कर रहा हूं।"

"बोल।"

"सावधान हो जाईये बड़े शाह जी।"

"क्या मतलब?" चौंका बड़ा शाह।

"ठीक तीन घण्टे बाद आपके चांदनी बाग वाले अड्डे पर रेड पड़ने वाली है।"

बड़े शाह के पैरों तले से धरती खिसक गई।

"क्या?"

"जी हां शाह जी। तीन घंटे में आप बहुत कुछ कर सकते हैं बड़े शाह जी। जल्दी से जल्दी उस अड्डे को खाली करवा दीजिये। कहीं ऐसा न हो कि...।" बाकी के शब्द दूसरी तरफ से अधूरे छोड़ दिये गये।

"जीतू ने बताया तुझे यह सब?"

जब मैं उसके पास पहुंचा तो वह फोन कर रहा था किसी को।

फोन पर कह रहा था कि सभी ठीक एक बजे चांदनी बाग वाले अड्डे पर पहुंच जायें।

बड़े शाह ने जोरों से थूक सटकी।

"उसे कैसे पता चला उस अड्डे का?"

किसी तरह से वह स्वयं पर काबू पाते हुए बोला।

"यह मैं कैसे पूछ सकता था बड़े शाह जी—ऐसे तो वह मुझ पर शक कर सकता था?"

"ओह। फिर?"

"फोन करके उसने मुझसे कहा कि मैं फौरन तैयार रखूँ। दस सिपाही जो कि राईफलों से लैस हों—वो तैयार रहें—और मुझसे यह कहा कि मैं मजिस्ट्रेट से सर्च वारंट लेकर आऊं।"

"यानि वह स्वयं को अंधेरे में रखकर तुझे सामने ला रहा है।"

"सी० बी० आई० के काम ऐसे ही होते हैं बड़े शाह जी। जीतू वहां अपने साथियों के साथ पहुंच जायेगा और तलाशी भी ले लेगा—मगर हर गैर कानूनी सामान के मिलने का सेहरा वह मेरे सिर बांधेगा।"

"ओह। तो यह चाल है?"

"जी हां बड़े शाह जी। आप अब देर न करें—वहां से सारा माल निकालकर इधर-उधर ठिकाने लगा दें।"

"ठीक है।" गहरी सांस छोड़ी बड़े शाह ने और मोबाईल कान से हटा लिया।

इस वक्त उसके चेहरे पर गहरी चिंता नजर आ रही थी।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी घनघनाई।

हुसैन ने तुरंत रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए माऊथपीस में बोला—

"हैलो।"

जो हुलिया गौतम ने कमल को हुसैन का बताया था—वह बिल्कुल वैसा ही था।

ठिगना कद—लम्बी काली दाढ़ी जो कि पेट तक पहुंची हुई थी। बाल भी लम्बे थे जो कि पीछे कंधों तक पहुंच रहे थे।

और कपड़े सफेद।

बिल्कुल सूफी लग रहा था वह।

जिस कमरे में वह इस वक्त बैठा था—वह कमरा बिल्कुल साधारण-सा कमरा था। एक तरफ एक डबलबैड लगा हुआ था—उसकी विपरीत दिशा में दीवार से लगकर एक साधार टेबल थी—और उसके करीब कुर्सी पर बैठा हुसैन फोन कान से लगाये हुए था।

"हुसैन।"

दूसरी तरफ से बड़े शाह की आवाज सुनकर हुसैन एकदम से हड़बड़ाते हुए इस तरह खड़ा हुआ मानो बड़ा शाह साक्षात् उसके सामने आ खड़ा हुआ हो।

उसे याद नहीं था कि पिछली बार बड़े शाह ने कब उससे बात की थी—क्योंकि फोन हमेशा करमचन्द का ही आता था।

जाहिर था कि आज कुछ खास ही था—जो बड़े शाह नें खुद उसे फोन किया था।

"ब...बड़े शा...ह जी।" वह थर्राये स्वर में बोला।

"हां मैं बोल रहा हूं।"

"हुक्म करें बड़े शाह जी।"

"तेरे वाले अड्डे पर रेड पड़ने जा रही है।"

"क्या?" बुरी तरह से हड़बड़ा उठा हुसैन।

"फौरन अड्डे को खाली कर दे—सारा सामान ट्रक में लाद और बस्तीपुर पहुंच जा—वहां करमचन्द मिलेगा तुझे—आगे की बात वह करेगा तेरे से।"

"ज...जो हुक्म बड़े शाह जी। क्या सारे आदमी भी साथ ले जाने हैं?"

"नहीं। सिर्फ दो को ले जाना—बाकियों को अभी इधर-उधर कर दे।"

"जो हुक्म बड़े शाह जी।"

"फौरन सफाई शुरू कर दे।"

"मैं...मैं अभी शुरू करता हूं बड़े शाह जी।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

हुसैन ने रिसीवर केडिल पर रखा और फौरन खड़ा होकर दरवाजे की तरफ लपका।

"अशरफ।" उसने आवाज लगाई।

तुरन्त एक मजबूत शरीर वाला व्यक्ति एक कमरे से निकलकर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला—

"जी हुजूर...।"

"जितना भी माल है—फौरन एक ट्रक में लाद दो।" हुसैन

बोला—"पीछे वाली कोठी से ले आओ ट्रक।"

"खैरियत तो है हुसैन?" हल्की-सी हड़बड़ी से पूछा अशरफ ने।

"रेड पड़ने वाली है यहां—सो जल्दी से सारा माल समेटो और ट्रक में लादो।"

अशरफ पहले तो सन्न रह गया—फिर तेजी से वापिस लपका।

"खुदा गारत करे इस पुलिस को।" बड़बड़ाया हुसैन—"शाह जी से पैसा भी खाती है—और ऊपर से रेड भी डालती है।"

कमल-कुनवर-कल्लू-कुन्दा और बल्लू के साथ बड़े शाह के चांदनी शाह वाले अड्डे से कुछ दूर एक चाय की दुकान के बाहर लगे बैंचों पर बैठा था।

अभी-अभी आकर बैठा ही था कमल वहां।

बाईक पर जब वह अड्डे के सामने से निकला था तो तभी कनवर ने खड़े होकर हाथ हिलाकर उसे अपनी तरफ आकर्षित किया था।

"कब आये तुम लोग?" बैठते ही पूछा कमल ने।

"दो-दो कप चाय गटक चुके हैं—और अब तीसरे का ऑर्डर देने जा रहे हैं।"

कनवर मुस्कुराते हुए बोला और बल्लू को इशारा किया।

"ऐ।" बल्लू ने चाय वाले को पुकारा—"पांच चाय।" उसने उसकी तरफ दायां पंजा फैलाया।

"कोई निकला अड्डे से?" पूछा कमल ने।

"अभी तो कोई नहीं निकला।" कनवर बोला।

कमल ने गहरी सांस छोड़ते हुए अड्डे की तरफ देखा।

पीले रंग से पुती वह साधारण-सी एक मंजिला कोठी थी—जिसके बन्द गेट के पीछे एक ट्रक खड़ा नजर आ रहा था। कोठी की बाउण्ड्री वॉल इतनी ऊंची थी कि कमल को खड़े होकर भी कुछ नजर नहीं आया।

कुछ सोचकर वह बैंच पर खड़ा हो गया।

ट्रक कम्पाऊण्ड के साथ इस कदर सटा हुआ था कि उसके पीछे क्या हो रहा है—कुछ भी नजर नहीं आया उसे।

हताशा भरी गहरी सांस छोड़ते हुए वह बैंच से उतरा और हाथ से बैंच को साफ करके उस पर बैठ गया।

"यह ट्रक हमारे आते ही कोठी में प्रविष्ट हुआ था।" कनवर बोला।

"तेरी स्कीम ठीक जा रही है पट्ठे।" बल्लू बोला—"ट्रक में कुछ न कुछ लोड़ हो रहा है। वर्ना इतने से ड्राईव वे पर ट्रक खड़ा करने का क्या तुक। जबकि वहां कार खड़ी करने पर भी रास्ता तंग हो जाता है।"

बल्लू की बात पर बोला कुछ नहीं कमल—बस हल्के से मुस्कुरा पड़ा।

"यह ट्रक तो हासिल कर लेंगे हम।" शेरू बोला—"तू यह बोल आगे क्या करना है तुझे?"

"कमल ने उसकी तरफ देखा और बोला—"यह अड्डा नशे का गोदाम है। तुम्हें बस यह करना है कि सारा माल जला देना है। इससे जहां बड़े शाह को तगड़ी चोट लगेगी—वहीं हजारों नौजवानों की जिंदगियां भी बचेंगी।"

"लौंडा ठीक कह रहा है।" कनवर बोला।

"और उसका क्या करेगा तू जिसे हम ट्रक के साथ पकड़ेंगे?" बल्लू ने पूछा।

कमल ने गहरी सांस छोड़ी।

"दिल तो यही करता है कि शाह के किसी भी कुत्ते को जिंदा न छोड़ूं। लेकिन बिजली उस्ताद को दिये वचन से बंधा हुआ हूं। सो उसे अच्छी तरह से ठोक-पीटकर छोड़ दूंगा।"

"तू कहे तो हम ले जायें उसे अपने साथ।" कनवर ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"क्या मतलब?" चौंका कमल।

"अरे भौंदू—जरा सोच—अगर तूने उसे छोड़ दिया तो वह सीधा शाह के पास जायेगा...।"

"उससे वह यही कहेगा कि सी० बी० आई० वालों ने उसे पीटा है...।"

कमल बोला।

"और यह भी कहेगा कि उसे पीटकर छोड़ दिया गया है—।" कनवर मुस्कुराया—"जरा सोच—यह सुनते ही शाह कूदकर इस नतीजे पर पहुंच जायेगा कि तू सी०बी०आई० का एजेंट नहीं है। वर्ना तू उसे छोड़ता क्यों?"

"तो फिर उसे इंस्पैक्टर के हाथों गिरफ्तार करा दूंगा मैं।"

"उससे अच्छा तो तू उसे हमें सौंप दे।" शेरू बोला।

"क्या मतलब?" चौंकते हुए कमल ने उसकी तरफ देखा।

"अबे ढक्कन—तेरे ही भले की बात कर रहा हूं।" शेरू ने माथे पर हाथ मारा—"हम उसे अपने साथ ले जायेंगे—और बंद कर देंगे—इधर शाह यह समझता रहेगा कि उसे सी०बी०आई० ले गई है—सो वह उसे छुड़ाने के लिये हाथ-पैर मारेगा।"

बात कमल की समझ में आ गई—तभी तो उसने सहमति में सिर हिला दिया था।

तभी चाय वाला पांच गिलासों में चाय लेकर आ गया।

सभी चाय पीने लगे।

चाय पीने के बाद कनवर ने बल्लू-शेरू तथा कुन्दा की तरफ देखा—"तुम तीनों पहुंचो गाड़ी में।" वह बोला।

तीनों चुपचाप उठे और करीब ही सड़क किनारे खड़ी टाटा सूमो की तरफ बढ़ गये।

"यह तीनों...।"

"ट्रक के पीछे लगेंगे।" मुस्कुराया कनवर—"और मैं तेरे साथ भीतर प्रवेश रूकंगा।"

कुछ नहीं बोला कमल।

करीब पांच मिनट बाद गेट खुला और ट्रक रेंगते हुए जैसे ही बाहर आया—कमल एकदम से खड़ा हो गया।

"क्या हुआ?" उसके साथ हड़बड़ाते हुए कनवर भी खड़ा हो गया।

"ट्रक को हुसैन चला रहा है।" हौले से चीखा कमल—"जबकि मैं यह सोच रहा था कि वह यहीं अड्डे पर ही रहेगा।"

कहकर वह तेजी से सूमो की तरफ लपका।

पीछे-पीछे कनवर भी लपका।

उन्हें सूमो की तरफ भागते देख ड्राईविंग सीट पर बैठा कुन्दा हल्के से चौंका—मगर बोला कुछ नहीं वह।

कमल ने आनन-फानन दरवाजा खोला और सूमो में प्रवेश करते हुए बोला—

"हुसैन ट्रक में है।"

"तो घबरा क्यों रहा है—हौसला रख।" हंसा कुन्दा—"भागने नही देंगे उसे।"

तभी कनवर भी पीछे वाला दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गया।

तब तक ट्रक काफी दूर निकल गया था।

कुन्दा ने सूमो गीयर में डाली और आगे बढ़ा दी। और अगले ही पल उसने सूमो को जैसे राकेट बना दिया।

ज्यादा देर नहीं लगी उसे ट्रक तक पहुंचने में।

ट्रक पर नजर पड़ने के बाद ही कमल ने राहत की सांस ली।

"मौका मिलते ही ट्रक को रोक देना।" वह कुन्दा से बोला।

कुन्दा कुछ नहीं बोला—बस ट्रक के पीछे लगा रहा।

थोड़ी देर बाद जब ट्रैफिक कम हुआ तो कुन्दा ने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

अगले ही पल सूमो ट्रक के बराबर से होते हुए उससे आगे निकली और उसी के साथ ही उसकी रफ्तार कम होने लगी।

ड्राइविंग सीट पर बैठे हुसैन का रंग उड़ गया। और जब उसने सूमो का पिछला दरवाजा खुलते देखा तो न चाहते हुए भी उसे ट्रक को रोकना पड़ा।

पिछली सीट पर बैठे कनवर और बल्लू के हाथों में रिवाल्वरें थीं—और उनका रूख उसी की तरफ था।

ट्रक के रुकते ही कनवर तथा बल्लू ने बाहर छलांग लगाई और तेजी से ट्रक की तरफ लपके।

उधर हुसैन ने अपने दोनों साथियों के साथ ट्रक से छलांग लगाई—

लेकिन—

भाग नहीं पाया वह।

कनवर की चेतावनी ने तीनों के पैर वहीं जाम कर दिये थे।

"खबरदार—" दहाड़ा कनवर—"अगर हिलने की कोशिश की तो गोली चल जायेगी।"

आनन-फानन सभी वहां पहुंच गये—और उन्होंने तीनों को काबू कर लिया।

कमल ने सीधा हुसैन पर हाथ डाला।

"हुसैन है न तेरा नाम?"

वह उसके बालों को झिंझोड़ते हुए ऐसे गुर्राया जैसे उसकी नेहा का हत्यारा वही हो।

पीड़ा भरी चीख उबल पड़ी हुसैन के होंठों से।

"बोल हरामजादे—हुसैन है न तू...।"

पुनः गुर्राया कमल और एक भरपूर थप्पड़ उसके गाल पर रसीद कर दिया।

एक ही थप्पड़ में हुसैन की आंखों के आगे लाल-पीले तारे नाचने लगे।

"ठाक!"

तभी कमल का भरपूर घूंसा उसके पेट में पड़ा।

एक तेज चीख उबल पड़ी उसके मुंह से।

"ह...हां...!" अपना पेट पकड़े दोहरा होने की कोशिश करते हुए हुसैन बोला—"म...मैं हुसैन हूं।"

"माल कहां ले जा रहा था तू?"

"बस्ती...पुर...।"

"बड़े शाह ने कहा था तुझे ऐसा करने को?"

"हां।"

"बस्तीपुर में कहां?"

हुसैन ने पता बताया।

"वहां कौन मिलेगा तुझे?"

"क...करमचन्द।"

करमचन्द का नाम सुनते ही कमल की आंखों में एक तेज चमक उभर आई।

गौतम के अनुसार करमचन्द बड़े शाह के तमाम अड्डों के बारे में जानता था।

उसने अपने करीब खड़े कनवर की तरफ देखा। फिर पुनः हुसैन की तरफ देखते हुए बोला—

"करमचन्द का हुलिया बोल।"

हुसैन ने बताया।

दो तीन प्रश्न पूछकर कमल ने हुसैन को बल्लु के हवाले कर दिया—और बोला—"ले जाओ इन्हें यहां से।"

बल्लु ने मुस्कुराकर कनवर की तरफ देखा।

"तू क्या कहता है कनवर?"

"अरे भाई जब बिजली उस्ताद ने इसका कहा मानने को कहा है तो मानना तो पड़ेगा न। तुम इन्हें ट्रक में लादो और ले जाओ।"

"और गाड़ी?" बल्लू ने सूमो की तरफ देखा।

"वो हम ले जायेंगे।" उसने अपने सीने पर हाथ रखकर कमल की तरफ इशारा किया।

बल्लु, कल्लू तथा कुन्दा हुसैन तथा उसके दोनों साथियों को ट्रक में लाद कर वहां से रवाना हो गये।

"अब क्या कहना है?" उनके जाने के उपरांत कनवर ने कमल से पूछा।

कमल की आंखों में इस वक्त शोले उमड़ रहे थे।

बोला कुछ नहीं वह बस सूमो की तरफ बढ़ गया।
कनवर मुस्कुराना और उसके पीछे लपका।

अपने सामने सूमो रुकते देख करमचन्द बुरी तरह से चौंका।

इस वक्त वह सड़क पर अपनी कार के करीब खड़ा उस ट्रक का इंतजार कर रहा था जिसे कि हुसैन लेकर आने वाला था। बेशक बड़े शाह ने उसे माल बस्तीपुर वाले अड्डे पर पहुंचाने के लिये कहा था—लेकिन रास्ते में उसने खुद ही शाह के इस फैसले को बदल दिया था।

वजह थी—बस्तीपुर वाले अड्डे में पड़ा हथियारों का जखीरा।

क्या पता पुलिस को ट्रक की भनक मिल जाये—ऐसे में उसे ट्रक को उस अड्डे पर ले जाना ठीक नहीं लगा। पूरी तसल्ली करके ही उसने ट्रक को अड्डे में ले जाने का फैसला किया था। इसीलिये वह उस अड्डे से पहले ही सड़क पर खड़ा हो गया था ताकि ट्रक को एक अन्य खाली पड़ी कोठी में ले जाये।

मगर उसके सामने ट्रक की बजाये सूमो रुकी थी।

चौंकने के साथ ही उसने सूमो पे नजर मारी।

दो ही व्यक्ति बैठे थे उसमें।

एक ड्राईविंग सीट पर—दूसरा उसके बराबर में। और दोनों का ही ध्यान उसकी तरफ नहीं था।

मन ही मन राहत की सांस ली उसने। वह यही समझा कि इत्तफाक से गाड़ी उसके सामने रुकी है—या फिर वे उससे रास्ता पूछने के लिये रुके हैं।

तभी परली तरफ का दरवाजा खोलकर कमल बाहर निकला और अपनी पेंट की जेब में हाथ डाले हुए उसकी तरफ बढ़ा।

करमचन्द ने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा।

वह अभी भी यही समझ रहा था कि वह उससे किसी रास्ते के बारे में पूछने आ रहा है।

लेकिन करीब आकर उसने जो सवाल किया—उसने बुरी तरह से उछाल दिया उसे।

"करमचन्द है न तू?" कमल बोला था।

"क...कौन हो तुम?" बुरी तरह चौंकते बोला था करमचन्द।

ठीक उसी वक्त कमल ने रिवाल्वर निकाली और उसकी

पसलियों से लगा दी।

"हाथ सिर पर रख ले।" गुर्राया कमल।

"ल...लेकिन तुम हो कौन?"

"सवाल नहीं—जो कहा है वही कर।"

थूक सटकते हुए करमचन्द ने हाथ सिर पर रख लिये।

"सूमो में बैठ।" कमल ने अगला आदेश दिया।

"ल...लेकिन तुम...।"

"हुसैन अब नहीं आने वाला—उसका इंतजार करने की जरूरत नहीं। चुपचाप भीतर बैठ जा।"

करमचद के रहे सहे हौंसले भी पस्त हो गये। उसे समझते देर नहीं लगी कि वह सी०बी०आई० की हिरासत में है—क्योंकि बड़े शाह ने उसे सब कुछ बता दिया था।

मजबूरन उसे दरवाजा खोलकर सूमो में प्रवेश करना पड़ा।

पीछे-पीछे कमल भी प्रवेश कर गया। और प्रवेश करते ही उसने रिवाल्वर का दस्ता सीधे उसकी खोपड़ी में दे मारा।

वार अचानक हुआ था—सो करमचन्द वहीं सीट पर लुढ़क गया।

"संजना के घर चलो।" वह दरवाजा बन्द करते हुए बोला।

एक भेद भरी मुस्कान मुस्कुराया कनवर—और सूमो आगे बढ़ा दी।

कमल बेहोश पड़े करमचन्द की तलाशी लेने लगा।

हल्की-सी कराह के साथ करमचन्द ने आंखें खोलीं।

कुछ देर तक तो वह यूं ही छत की तरफ देखता रहा—फिर जैसे ही उसके दिमाग ने काम करना शुरू किया—वह हड़बड़ाते हुए उठ बैठा।

नंगे फर्श पर पड़ा हुआ था वह।

उठते ही उसकी निगाहें सामने सोफे पर बैठे कमल और कनवर पर पड़ी जो कि उसी को देख रहे थे।

दोनों के हाथों में चाय के कप थे जो कि संजना उन्हें दे गई थी।

तभी कमल ने हाथ में पकड़ा कप साईड़ में झुकते हुए सोफे की दांई तरफ फर्श पर रखा और खड़ा हो गया।

कनवर ने उससे कुछ नहीं पूछा कि वह खड़ा क्यों हुआ है—

बस चुपचाप चाय पीता रहा।

कमल सीधा करमचन्द के करीब आया और फर्श पर उसके सामने बैठते हुए बोला—

"बड़े शाह का बहुत करीबी है न तू?"

करमचन्द जो कि अब तक स्वयं को सम्भाल चुका था—ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"मेरा नाम करमचन्द जरूर है—लेकिन बड़े या छोटे शाह से मेरा कोई सम्बंध नहीं।"

कमल के होंठों पर विष से भरी मुस्कान फैल गई।

"तेरी वफादारी से मुझे खुशी हासिल हुई। ऐसे ही वफादारी निभाते रहना—और मुंह से बिल्कुल न भौंकना कि तू बड़े शाह का खास कुत्ता है।"

कहने के साथ ही उसने 'तड़ाक' से उसके गाल पर थप्पड़ रसीद दिया।

चीखता हुआ करमचन्द पीछे को पलट गया।

"अरे!" उसका गिरेबान पकड़कर कमल उसे खड़ा करते हुए बोला—"इतनी जल्दी गिर गया तू। अभी तो मैंने शुरूआत भी नहीं की। शुरू तो अब होऊंगा।"

कहने के साथ ही वह करमचन्द पर वहशी दरिंदे की तरह टूट पड़ा।

कमरे में गूंजती करमचन्द की चीखें दीवारों को दहलाने लगीं।

लेकिन न तो कमल को उसकी चीखें सुनाई दे रहीं थीं—न ही कनवर को।

वह आराम से बैठा चाय पी रहा था।

करमचन्द का शरीर फुटबाल की तरह कभी इधर लुढ़क रहा था तो कभी उधर।

कुछ ही देर में वह अधमरी हालत में पहुंच गया।

अपनी सांसे दुरूस्त करते हुए कमल उसके करीब बैठा और बोला—

"बोल...कबूल कर कि तू बड़े शाह का खास कुत्ता है।"

"म...मैं बड़े शाह को नहीं जानता।" करमचन्द धीमे स्वर में बोला।

जिस ढंग से कमल ने उसकी ठुकाई की थी—उससे उसे पूरी उम्मीद थी कि वह अपना मुंह फाड़ देगा—लेकिन इतनी मार के बावजूद भी वह पत्थर बना रहा।

कमाल की वफादारी थी उसकी—जो इतनी ज्यादा बुरी हालत में पहुंचने के बाद भी अपनी बात पर अड़ा हुआ था।

कमल ने गहरी सांस छोड़ी—एक नजर कनवर पर डाली—फिर पुनः करमचन्द की तरफ देखते हुए गुर्राया—

"मुंह तो तेरा बाप भी खोलेगा हरामजादे। अपनी बीवी और बेटे की मौत का बदला लेने के लिये जेल तोड़कर निकला हुआ हूं मैं। ऐसे में मैं तेरी जुबान न खुलवा सका तो लानत है मुझ पर।"

बुरी तरह से चौंक उठा करमचन्द।

"क...कौन हो तुम?" वह गौर से उसे देखते हुए बोला।

कमल ने अपना हाथ कान के पीछे किया और अपने चेहरे से जीतू का फेस मास्क नोच डाला।

"अगर तूने कमल को देखा होगा तो मुझे पहचान लिया होगा तूने। कमल हूं मैं—वो कमल जिसने छह महीने पहले नौ मासूम बच्चों को छुड़ाया था—और उसका इनाम बड़े शाह ने मुझे यह दिया कि मेरी बीवी को मार डाला—मेरे बच्चे को मार डाला और मुझे उनके खून के इल्जाम में फंसा दिया।"

करमचन्द फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगा।

"त...तो तुम स...सी०बी०आई० के ऐजेंट नहीं हो?"

"वो तो तेरे बड़े शाह को उलझाने के लिये खेल खेला था मैंने।"

करमचन्द हैरानी से उसे देखने लगा।

"अब बोल—और सब कुछ बोल।"

सहसा ही करमचन्द के होंठों पर मुस्कान रेंग गई।

"गीदड़ की जब मौत आती है तो वह सात ताले तोड़कर भी शहर में आ जाता है। वह हाल तेरा है। तेरी मौत बड़े शाह जी के हाथों में लिखी हुई है—तभी तो तू जेल से भागकर आया है।"

"तो तू कबूल करता है कि तू बड़े शाह का खास कुत्ता है।"

"अब क्या डर!" हंसा करमचद—"मैं तो तुझे सी०बी०आई० का कुत्ता समझ रहा था—मगर तू तो गीदड़ निकला—अब तो मैं सीना ठोककर कहता हूं कि शाह जी मेरे देवता हैं। और यह बात तू अपने भेजे में बिठा ले—अगर तूने इस जैसे—" उसने सोफे पर बैठे कनवर की तरफ इशारा किया—"पांच दस इकट्ठे कर भी लिये हैं तो भी तू शाह जी का कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा।"

"मैं उसका बिगाड़ सकूंगा या नहीं—यह सोचना मेरी सिरदर्द है।" गुर्राया कमल—"तू मुझे शाह के बारे में बता।"

"पूछ...शौक से पूछ—! तेरे को बताने में मुझे कोई हर्ज

नहीं—बोल क्या बताऊं तुझे? शाह जी के अड्डों के बारे में बताऊं।"

वह ऐसे बोला जैसे उसे पूरा विश्वास हो कि वह शाह का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा।

"बोल—पहले वही बोल।" कुटिलता से मुस्कुराया कमल।

करमचन्द उसे बताने लगा—वो भी ऐसे जैसे वह बड़े शाह का गुणगान कर रहा हो।

"और कुछ?" बताने के पश्चात पूछा उसने।

"छोटा शाह कहां छुपा हुआ है?"

"ललवा के घर।" बोला करमचन्द—"जाकर पकड़ ले उसे। लेकिन जरा ध्यान से जाना—वहां जायेगा तो सिवाये मौत के कुछ भी हासिल नहीं होगा तुझे।"

"ललवा का पता बोल।"

"एस०पी० की कोठी के पीछे है। और कुछ?"

कमल ने उससे कुछ प्रश्न और किये और फिर कनवर की तरफ देखा।

कनवर के होंठों पर एक अजीब-सी मुस्कान नाच रही थी—जिसका अर्थ कमल की समझ में बिल्कुल नहीं आया।

तभी कनवर ने अपनी जेब से मोबाईल फोन निकाला और कुछ नम्बर मिलाकर कान से लगाया।

"हैलो...!" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह बोला—"कनवर लाल रिपोर्टिंग सर—! मिशन इज सक्सैस फुल...यस सर...रघुराज शाह उर्फ बड़े शाह के तमाम अड्डों का पता चल गया है सर...। सर उम्मीद है कि वहां से बड़े शाह और छोटे शाह के खिलाफ हमें काफी सबूत हासिल हो जायेंगे...।" और उसने उन अड्डों के नाम, पते बताये जो उसने करमचन्द के मुंह से सुने थे—फिर बोला—"सभी अड्डों पर एक साथ रेड डालनी है सर...ओ०के० सर...यस सर...यस सर...।"

उसने मोबाईल को कान से हटाया और उसका बटन दबाकर कमल की तरफ देखा जो कि आंखें फाड़े उसे देख रहा था।

करमचन्द भी जैसे अपने सारे दर्दो को भूल उसे आंखें फाड़े देख रहा था।

लेकिन कमल की हालत उससे ज्यादा खराब थी। उसे कनवर के मुंह से निकला एक-एक शब्द परमाणु बम की तरह अपने कानों के पास बजता महसूस हो रहा था।

"थैंक्यू कमल अरोड़ा।" उसे देखते हुए बोला कनवर।

कमल बुरी तरह से हड़बड़ाया—फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर सख्ती उभर आई।

"कौन हो तुम?" एक तेज गुर्राहट उबली उसके होंठों से।

कनवर की बातों से इतना तो वह समझ ही गया था कि वह कोई गुण्डा मवाली नहीं—बल्कि कोई पहुंची हुई चीज है।

कनवर के होंठों पर फैली मुस्कान में पहले से कहीं ज्यादा रहस्य उमड़ आया।

"तुम ठीक समझ रहे हो कमल अरोड़ा।" वह बोला—"हम वो नहीं जो नजर आ रहे हैं।"

"क्या मतलब?"

"हम वो भी नहीं जो तुमने हमें बनाया था।"

कमल के चेहरे पर उलझन उभर आई।

"साफ-साफ बताओ—कौन हो तुम?" गुर्राया वह।

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही कनवर ने पहलू बदला और बोला—

"हम सी०बी०आई० से नहीं—बल्कि गुप्तचर विभाग से हैं।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कमल। "क...या?"

"हां...मोहनलाल की हत्या के इल्जाम में जब उसके लड़के ने सैंट्रल में सी०बी०आई० के लिये जांच की गुहार लगाई थी तो उसी दिन छोटा शाह गिरफ्तार हो गया—और सी०बी०आई० की जांच का काम वहीं रुक गया। लेकिन उससे अगले दिन जिस तरह से दस बच्चों को बंधक बनाया गया था—और छोटे शाह को छोड़ने के लिये कहा गया था—और जिस तरह तुमने अकेले अपने बूते पर उन बच्चों को छुड़ाया था—उससे मीडिया ने तुम्हें काफी हाईलाईट किया था।

लेकिन उससे अगले ही रोज थाने में एक सब इंस्पैक्टर और दो सिपाहियों की हत्या करके जिस तरह से छोटे शाह को थाने से भगाया गया—उससे सैन्टर में हड़कम्प मच गया।

आनन-फानन गृहमन्त्री ने इस सारे मामले की तफ्तीश के लिये गुप्तचर विभाग को आदेश दे दिया।

हमने यहां आकर तफ्तीश शुरू की, हमें पता चला कि यहां की तमाम पुलिस बड़े शाह की गुलाम बनी हुई थी—यहां तक कि एस०पी० और एस०एस०पी० भी बड़े शाह के तलवे चाट रहे थे। ऐसे में हमारे लिये बड़े शाह के खिलाफ सबूत जुटाना मुश्किल हो गया—और छोटे शाह का भी कुछ पता नहीं था।

तभी तुम अपनी पत्नी और बेटे की हत्या के आरोप में पकड़े गये।

हमें यह सुनकर बेहद हैरानी हुई कि हत्या जैसा जघन्य अपराध तुमने कैसे कर लिया। सो हमने तुम्हारे बारे में तफ्तीश की तुम्हारे मोहल्ले वाले भी तुम्हें ही खूनी ठहरा रहे थे। क्योंकि हत्या वाली रात को तुमने अपनी पत्नी को पीटा था।"

कनवर ने पहलू बदला—एक नजर फ़र्श पर पड़े करमचन्द पर डाली—फिर पुनः कमल की तरफ देखते हुए बोला—

"अदालत में भी तुम्हारे खिलाफ गवाही दी थी तुम्हारे मोहल्ले के लोगों ने—जबकि तुम चीख-चीख कर कह रहे थे कि बड़े शाह ने एक बहुत बड़ा चक्रव्यूह रचकर तुम्हें फंसाया था। और तुमने पुलिस के खिलाफ भी यही बोला था कि वह बड़े शाह की गुलाम बनी हुई है।

तब हमने अपने चीफ मिस्टर ब्रिजेश को सारी रिपोर्ट दी जिसमें अदालत में दिये तुम्हारे ब्यान भी थे—और हमारी तफ्तीश भी थी।

और फिर चीफ ने एक चक्रव्यूह रचा। लेकिन उसके लिये उन्हें इंतजार करना था।"

"क्यों?"

"ताकि यहां की पुलिस—यहां के लोग—बड़ा शाह और छोटा शाह एक तरह से तुम्हें भूल जायें। सो छह महीने तक इंतजार करना पड़ा हमें। छह महीने बाद हमने चीफ को रिपोर्ट भेजी—जिसमें छोटे शाह की ज्यादतियाँ भी भेजी थीं—और उसका पाश्विक रूप भी बताया था हमने।"

"तो फिर तुमने तब ही उसे पकड़ा क्यों नहीं—गिरफ्तार क्यों नहीं किया?"

कमल ने पहली बार अपना मुंह खोला।

"कैसे पकड़ सकते थे हम उसे। यहां की पुलिस उसकी गुलाम थी—लोगों में दोनों बाप-बेटे का इतना आतंक था कि किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उनके खिलाफ गवाही दे सके। और सबूत हमारे पास था न।"

"गवाही तो दे सकते थे तुम?"

"नहीं...हमारी गवाही अदालतों में नहीं चलती—हमारें सिर्फ सबूत चलते हैं—और सबूत कोई था नहीं हमारे पास।"

"ओह।"

"बड़े शाह के खिलाफ अभी तक सिर्फ एक ही आदमी नें जुबान खोली थी—और वो थे तुम—तुमने मीडिया के सामने बड़े शाह का नाम लेते हुए कहा था कि पूरे किशनपुरा में उसका आतंक है। ऊपर से तुम जेल में थे—जाहिर था कि तुम्हारे भीतर इंतकाम की ज्वाला

पचक रही थी। सो हमारे चीफ ने बड़े शाह को फंसाने के लिये चक्रव्यूह रचा—और पहुंच गये बिजली उस्ताद बनकर जेल में। तुम्हें कोई संदेह न हो—इसलिये उन्होंने तुमसे पहले जानबूझकर पंगा लिया—झगड़ा किया—और फिर तुम्हें जेल से भगाया।"

"मगर इससे तो बेहतर यही था कि वो मुझे साफ-साफ सब कुछ बता देते—मैं तब भी उनका साथ देने को तैयार हो जाता।"

"बेशक हो जाते—लेकिन तब तुम हर वक्त यह सोचते कि तुम्हारी पीठ पर हमारा हाथ है—और तुम कोई बड़ी बात नहीं थी कि बड़े शाह को अपनी हकीकत बताकर ललकार देते। उस सूरत में तुम फौरन् वापिस जेल में जा पहुंचते—और शाह भी पूरी तरह से चौकन्ना हो जाता।"

"ओह।"

"जेल से तुम सीधा हमारे पास आये और फिर वहां से यहां आकर तुमने जिस बेहतरीन ढंग से इंस्पैक्टर गौतम को अपना बनाया—वह काबिले तारीफ था। ऊपर से तुमने बिना हाथ पैर हिलाये विक्की को गौतम के हाथों मरवा डाला। फिर गौतम से ही तुमने हुसैन वाले अड्डे के बारे में जाना और...उसी की बदौलत अब शाह का यह बेहतरीन मोहरा हमारे कब्जे में है—जो बड़े शाह के खिलाफ बढ़िया से बढ़िया सबूत मुहैय्या करायेगा।"

कहते हुए उसने करमचन्द की तरफ देखा जो कि अभी भी फर्श पर पड़ा आंखें फाड़े उसे देखे जा रहा था।

"और मेरा इंतकाम" तभी हल्की-सी गुर्राहट से बोला कमल—"मेरे इंतकाम का क्या होगा?"

"दोनों बाप-बेटे सलाखों के पीछे पहुंच जायेंगे।" बोला कनवर—"भला और क्या इंतकाम लेना चाहोगे तुम?"

"नहीं...!" फुंफकार उठा कमल—"यह मेरा इंतकाम नहीं है। मेरा इंतकाम दोनों बाप-बेटे की मौत है! सिर्फ मौत।"

"समझने की कोशिश करो कमल अरोड़ा—" कनवर से समझाने वाले लहजे में बोला—"गिरफ्तारी के बाद हम दोनों के खिलाफ ऐसे वकील खड़े करेंगे जो कि उन्हें मौत की सजा दिलवाने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देंगे।"

"सिर्फ जोर ही लगायेंगे।" व्यंग से बोला कमल—"लेकिन उन्हें निश्चित मौत नहीं दे पायेंगे।"

"क्या मतलब?" उसके चेहरे के बदलते भावों को देख चौंका कनवर।

"तुम्हारा मेरा करार खत्म हो चुका है मिस्टर कनवर लाल। तुम्हें मेरे जरिये शाह बाप बेटे के खिलाफ सबूत चाहियें थे—वो तुम्हें मिल जायेंगे।" कमल ने करमचन्द की तरफ बांह करते हुए कहा—"तुम जाकर दोनों बाप-बेटे को पकड़ो। रही मेरी बात—तो मेरा प्रतिशोध अब शुरू होगा।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कनवर।

"म...मुझे तुम्हारे इरादे नेक नजर नहीं आ रहे कमल। याद रखो—तुमने बिजली उस्ताद से वादा किया हुआ है कि तुम किसी की जान नहीं लोगे। और बिजली उस्ताद ने तुमसे यह वादा लिया ही इसीलिये था कि तुम किसी गुनाह में न फंसो।"

"मैंने बिजली उस्ताद को यह भी कहा था कि मैं दस दिन बाद आऊंगा—और अभी तो आज तीसरा ही दिन है।"

"लेकिन...!"

"सॉरी मिस्टर कनवर लाल—अब मैं तुम्हारी बातों में नहीं आ सकता। तुम करमचन्द को सम्भालो—मैं चला।"

सहसा ही कनवर ने रिवाल्वर निकाल ली।

"कमल अरोड़ा!" उसकी आवाज एकदम से सख्त हो उठी—"तुम यहां से कहीं नहीं जाओगे। तुम...।"

बात वहीं रुक गई उसकी—उससे पहले ही कमल ने भी रिवाल्वर निकाली और करमचन्द पर तान दी।

"अपनी रिवाल्वर नीचे फैंक दो मिस्टर कनवर लाल।" घायल सांप की तरह फुंफकारा कमल—"वर्ना मैं इसे खत्म कर दूंगा। और अगर यह खत्म हो गया तो फिर तुम लोग शाह के अड्डों को तो जरूर लूट सकते हो—लेकिन शाह तुम्हारी पकड़ में नहीं आयेगा।"

सन्न रह गया कनवर।

कमल से उसे ऐसी हरकत की उम्मीद बिल्कुल नहीं थी।

कमल का चेहरा ही नहीं—उसकी आवाज भी साफ बता रही थी कि वह जो कह रहा है—उस पर अमल करने में जरा भी नहीं हिचकेगा।

"द...देखो कमल...तुम...।"

"बातों में वक्त जाया मत करो कनवर...रिवाल्वर नीचे फैंको।" गुर्राया कमल।

कनवर ने गहरी सांस छोड़ते हुए रिवाल्वर छोड़ दी।

"यह तुम ठीक नहीं कर रहे हो कमल।" वह बोला—"तुम जानबूझकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हो।"

"अच्छा।"

"मैं गलत नहीं कह रहा। करमचन्द का अदालत में दिया हुआ ब्यान ही तुम्हें अदालत में निर्दोष साबित कर देगा। फिर क्यों तुम खून से हाथ रंग रहे हो।"

"मुझे जिन्दगी का लालच मत दो कनवर। मेरी बीवी मर गई—बेटा मर गया—ऐसे में मैं जीकर क्या करूंगा—किसके लिये जीयूंगा। नहीं कनवर—मेरा मकसद जिंदगी पाना नहीं—दोनों बाप-बेटों को उनके अंजाम तक पहुंचाना है।"

"ल...लेकिन कमल...।"

"पीछे हटो।"

"क...या?"

"पीछे हटो और दीवार से लगकर खड़े हो जाओ।" कहते हुए उसने करमचन्द को बालों से पकड़कर खड़ा कर दिया और रिवाल्वर उसकी कनपटी से लगा दी।

मजबूर हो चुका था कनवर—सो वह पीछे हटकर दीवार से लगकर खड़ा हो गया।

कमल करमचन्द को कवर किये दरवाजे तक पहुंचा और बोला—

"अपने चीफ को कह देना कनवर कि कमल अगर जिंदा रहा तो अपने वायदे के अनुसार जेल में पहुंच जायेगा।"

कहने के साथ ही उसने करमचन्द को वापस कमरे में धकेला और दरवाजे से निकलकर बाहर से दरवाजा बन्द करके कुण्डा लगा दिया।

तेजी से वह मुड़ा—और जैसे ही आगे बढ़ा—संजना उसे अपने सामने खड़ी नजर आई।

"अ...आ...प...।"

"मैंने सब बातें सुन ली हैं कमल जी।" संजना बोली।

गहरी सांस छोड़ी कमल ने—"तो क्या आप यह चाहती हैं कि मैं...।"

"नहीं...मैं तो चाहती हूं कि दोनों बाप बेटों—को तुम अपने हाथों से खत्म करो।" संजना का स्वर क्रूर हो गया—"इन कुत्तों को अगर आसान मौत मिली भी तो उन लोगों की आत्माओं को शान्ति नही मिलेगी—जिन्हें इन्होंने मारा है। कुत्ते की मौत मिलनी चाहिये इन्हें और ऐसी मौत उन्हें कानून नहीं दे सकता।"

कमल हैरानी से उसे देखने लगा।

"मैं हर दम आपके साथ हूं। आपको कहीं भी कैसी भी मदद की जरूरत हो—मैं आपके साथ हूं—इसके लिये चाहे मुझे अपनी जान भी क्यों न देनी पड़े।"

"थैंक्यू संजना जी।" कमल बोला—"मेरे जाने के बाद आप दरवाजा खोल दीजियेगा।"

संजना ने सिर हिला दिया।

कमल ने उससे विदा ली और वहां से निकल गया।

पूरा मीडिया थाने में मौजूद था।

प्रिंट मीडिया के साथ-साथ इलैक्ट्रानिक मीडिया भी था।

लेकिन वहां पहुंचे सभी पत्रकार गुलाम थे बड़े शाह के। बड़े शाह ने ही उन्हें फोन करके थाने पहुंचने को कहा था और इस वक्त वह कैमरों की जद में थाने के प्रांगण में ही गौतम को लताड़ रहा था।

"यह क्या हो रहा है इंस्पैक्टर—मेरा मुलजिम बेटा शहर में सरे आम गुनाह कर रहा है—बहु बेटियों को उठा ले जाता है—और तुम कुछ नहीं कर रहे। सोया पड़ा है क्या प्रशासन? जब मैंने कह दिया कि गोली मार दी जाये ऐसे नालायक को, तो तुम कुछ करते क्यों नहीं। गोली मारना तो दूर रहा—उसे गिरफ्तार तक नहीं कर सके तुम।"

"द...देखिये बड़े शाहजी।"

"कैसा शाह रहा मैं।" आवाज भर्रा गई बड़े शाह की—"अरे जिसके अपने खून ने उसके मुंह पर कालिख पोत दी हो—वह कैसा शाह रहा। दुनिया मेरे बेटे पर नहीं मेरे मुंह पर थूक रही है। मेरी इज्जत को मिट्टी में मिला दिया है मेरे ही खून ने। लोग मन्नते मांग-मांग कर बेटे मांगते हैं—ताकि उनका वंश आगे चलता रहे। मैंने भी मांगी थी मन्नतें ऊपर वाले से। लेकिन आज मैं फिर से ऊपर वाले से मन्नत मांग रहा हूं कि वह मेरी औलाद को उठा ले। नहीं चाहिये मुझे ऐसी औलाद जो सारे खानदान के मुंह पर कालिख पोत रही हो। मैंने पहले भी ऐलान किया था—और आज फिर ऐलान कर रहा हूं कि बिजेन्द्र शाह से मेरा कोई रिश्ता नहीं—और मैं पुलिस और प्रशासन को पूरी छूट देता हूं कि उस कमीने को देखते ही गोली मार दी जाये। मैं किशनपुरा की जनता से भी अपील करता हूं कि वह छोटे शाह को खत्म करने में सरकार की मदद करे।"

कहते हुए उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे।

मगर वहां खड़ा हर शख्स जानता था कि घड़ियाली आंसू बहा रहा है।

तभी उसकी जेब में पड़ा मोबाईल बज उठा—

"टिन...टिन...टिन...टिन...।"

अपने आंसू पोंछते हुए उसने जेब से मोबाईल निकाला और उसका बटन दबाकर कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो।"

"कैसा है रे शाह?"

दूसरी तरह से जिस ढंग से कहा गया था—उसे सुनकर बड़े शाह का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।

"कौन बोल रहा है तू?" उसके मुंह से कोबरा की सी फुंफकार उबली।

"तेरा ताजा-ताजा बना बाप बोल रहा हूं हरामजादे।"

दूसरी तरफ से ऐसे कहा गया जैसे उसे गाली निकालते हुए उसके कलेजे को ठण्डक पहुंच रही हो।

बड़े शाह के लिये यह गाली बर्दाश्त से बाहर थी।

"बन्द करो यह सब...।" वह रिपोर्टरों पर दहाड़ा।

अगले ही पल कैमरे ऑफ हो गये। सभी रिपोर्टर धड़कते दिल से उसे देखने लगे।

"अपना नाम बोल हरामजखोर।" गुर्राया बड़ा शाह—"फिर तू दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न छुपा हो—तुझे ढूंढ निकालूंगा मैं।"

"नाम ही सुनने का शौक है न तो सुन।" दूसरी तरफ से गुर्राती आवाज आई—"कमल है मेरा नाम—कमल अरोड़ा। याद है न तुझे—छह महीने पहले मुझे मेरी ही बीवी और बेटे की हत्या के जुर्म में फंसाया था तूने।"

बुरी तरह से उछल पड़ा बड़ा शाह।

"तू...तू...।"

"हां मैं...।"

"तू...बाहर कैसे आया?"

"जेल की दीवारें ज्यादा देर तक मुझे कैद नहीं रख पाई। तुझे खत्म करने के मेरे मजबूत इरादों के सामने जेल की दीवारों ने दम तोड़ दिया।"

"तो मुझसे बदला लेने आया है तू?"

"हां—अपनी नेहा और क्षितिज की मौत का बदला।"

"हा...हा...हा...।" बड़ा शाह ऐसे हंसा जैसे किसी बच्चे ने

चांद को मुट्ठी में दबाने का ऐलान कर दिया हो—"बदला लेगा तू मुझसे...हा...हा...हा...बड़े शाह से बदला लेगा तू...हा...हा,...हा...।"

"मेरी तो शुरूआत भी हो चुकी है तुझे बर्बाद करने की रघुराज।"

सुनकर बड़े शाह की हंसी को एकदम ब्रेक लग गये।

"क...या कहना चाहता है तू?"

"हुसैन तो अपने सारे माल समेत गायब हो गया।"

न चाहते हुए भी बड़े शाह का कलेजा धड़क उठा।

"क...या...क्या कह रहा है तू?"

"अभी तो पहली चोट ही पड़ी है रघुराज—और तेरी हवा खराब हो गई। हिम्मत रख—कलेजा मजबूत कर—अभी तो शुरूआत हुई है—अब तो बस तू गिनना शुरू कर दे।"

"हरामजादे...।" फुंफकार उठा बड़ा शाह—"मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

"मैं तो उसी दिन मर गया था रघुराज जब तूने मेरी पत्नी को मेरे मासूम से बेटे को मरवा डाला था। अब तो मैं एक चलती-फिरती लाश हूं जिसे अपना प्रतिशोध लेना है। वैसे तेरी जानकारी के लिये तुझे बता दूं कि तेरा सबसे वफादार कुत्ता करमचन्द इस वक्त मेरे कब्जे में है...।"

"न...हीं...।"

"हां रघुराज...और उसने सब कुछ भौंक दिया है तेरे बारे में। बस यूं समझ ले तेरे तमाम अड्डों पर या तो रेड पड़ चुकी है—या पड़ने वाली हैं बचा सकता है तो बचा ले खुद को। तूने जितना खेल खेलना था खेल लिया—अब खेलने की बारी मेरी है।"

इसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

बड़े शाह को काटो तो खून नहीं।

उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी ने आसमान से धक्का दे दिया हो।

कुछ पलों तक तो वह यूं ही मुंह बाय खड़ा रहा—फिर बिना किसी से कुछ कहे तेजी से थाने के गेट की तरफ लपका।

पीछे खड़े रिपोर्टरों में हल्की-सी खलबली मच गई।

उन्हें समझते देर नहीं लगी कि आने वाले फोन ने बड़े शाह की चूलें हिला दी हैं।

"सुन लिया तुम लोगों ने।" तभी गौतम वहां खड़े पत्रकारों से बोला—"शाह जी ने क्या कहा। शाम की अखबारों में और टी०वी० पर शाह जी का बयान खूब जोर-शोर से दिखाया जाये—ताकि किसी

की शाह जी पर किसी तरह का शक न हो।"

"ल...लेकिन शाह जी को अचानक क्या हुआ जो...।" एक पत्रकार हैरानी से बोला।

"अरे भाई—बड़े लोगों के बड़े झमेले।" गौतम हंसा—"हमें इनसे क्या लेना-देना तुम बस वही करो जिसके लिये शाह जी ने तुम्हें यहां बुलाया था। शाम तक यह खबर पूरे हिन्दुस्तान में फैल जाये।"

कहते हुए गौतम के होंठों पर एक जहर भरी मुस्कान रेंग गई।

'खट...खट...खट...!'

दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

वासुदेव उस वक्त शाम की चाय पी रहा था।

"कमला—" उसने अपनी पत्नी को आवाज दी—"बाहर देख कौन है?"

उसकी पत्नी कमला किचन से निकलकर आंगन पार करते हुए मेन डोर के करीब पहुंची।

"कौन है?"

"मैं हूं...दरवाजा खोलो!" बाहर से आवाज आई।

कमला ने दरवाजा खोला।

सामने कमल खड़ा था—जीतू के चेहरे को ओढ़े। सो कमला उसे पहचान नहीं पाई।

"वासुदेव जी घर में हैं?" कमल अपनी आवाज को बदलते हुए बोला।

"हां हैं—आप?"

"मैं गुप्तचर विभाग की तरफ से आया हूं। आपके पड़ौसी कमल के बारे में पूछताछ करने।"

कमल का नाम सुनते ही कमला ने नाक भौं सिकौड़ी और मुंह पीछे करती हुई बोली—"अजी सुनते हो...बाहर आईये।"

शीघ्र ही वासुदेव बाहर आया।

"कहिये!" वह कमल से बोला।

कमल ने उससे भी वही कहा जो कमला को कहा था।

"क्या पूछना चाहते हैं आप?" वासुदेव ने पूछा।

"आपके साथ इस मौहल्ले के कुछ और लोगों ने भी गवाही दी थी?"

"हां...!"
"उन सभी को बुलाईये...।"
"ल...लेकिन आप...।"
"कमल जेल से भाग निकला है।"
"क्या?" बुरी तरह से उछल पड़ा वासुदेव।
उसकी पत्नी का तो रंग ही उड़ गया।
"और उसने हमारे चीफ को फोन किया है कि वह बेगुनाह है—और उसे फंसाने में बड़े शाह का हाथ है।" कमल बोला।
वासुदेव ने जोरों से थूक सटकी।
"ल...लेकिन इसमें ह...हम क्या कर सकते हैं।" वह थर्राये स्वर में बोला।
"घबरा क्यों रहे हैं आप—आपको और डॉक्टर रस्तोगी को बस वही बताना है जो सच था।"
"ह...हमने सच ही बोला था।"
"तो फिर चलिये न।"
मरता क्या न करता—वासुदेव को हां करनी पड़ी।
उसने अड़ौस-पड़ौस के उन लोगों को इकट्ठा किया और फिर सभी कमल के साथ अस्पताल की तरफ चल पड़े।
हालांकि ऊपर से सभी सामान्य दिखने की कोशिश कर रहे थे—लेकिन भीतर से उनकी क्या हालत हो रही थी। यह वो ही जानते थे।
सभी के कलेजे धाड़-धाड़ करते उनकी पसलियों से टकरा रहे थे।

उस वक्त डॉक्टर रस्तोगी किसी लाश का पोस्टमार्टम करके अपने ऑफिस में आकर बैठा ही था कि कमल ने भीतर प्रवेश किया।
"फरमाईये।" प्रश्न भरी निगाहों से रस्तोगी उसे देखते हुए बोला।
कमल उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। बड़े इत्मिनान से उसने टांग पर टांग रखी और बोला—
"सभी अन्दर आ जाओ।"
बाहर खड़े वासुदेव और अन्य भीतर आ गये।
छह आदमियों को अपने ऑफिस में प्रवेश करते देख डॉक्टर रस्तोगी का पारा चढ़ गया।

"यह क्या हिमाकत है मिस्टर।" वह कमल पर गुस्सा होते हुए बोला—"जानते हो यह सरकारी डॉक्टर का...।"

"जानता हूं...लेकिन तुम्हें नहीं मालूम कि मैं कौन हूं।" उसकी बात काटते हुए गुर्राया कमल।

"क...या मतलब? कौन हो तुम?"

"वो भी पता चल जायेगा—पहले इन्हें पहचानों।" कमल ने अपने दांयें-बांयें खड़े सभी पड़ौसियों की तरफ इशारा किया।

रस्तोगी नें पहले वासुदेव तथा अन्यों को देखा—फिर उलझे स्वर में बोला—

"कौन हैं यह?"

"यह वो लोग हैं जिन्होंने छह महीने पहले कमल अरोड़ा के खिलाफ अदालत में गवाही दी थी—और तुमने कमल की पत्नी और बेटे की लाशों का पोस्टमार्टम किया था।"

बुरी तरह से उछल पड़ा रस्तोगी—साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"त...तुम मुझसे क्या चाहते हो?" किसी तरह से स्वयं पर काबू पाने की कोशिश की उसने।

"इन लोगों को हकीकत बनाओ रस्तोगी। और हां—बोलने से पहले यह सुन लो कि बड़ा शाह और छोटा शाह कुछ ही देर के मेहमान रह गये हैं। सरकार की टेढ़ी नजर उन पर पड़ चुकी है। और सरकार की नजरों में तुम भी हो। अब बोलो।"

"क...या...?" जोरों से थूक सटकी रस्तोगी ने।

"नेहा और उसके बच्चे की मौत का वक्त क्या था?"

कहते हुए कमल ने रिवाल्वर निकाल ली और उसे उलट-पलटकर ऐसे देखने लगा जैसे वह उसका निरीक्षण कर रहा हो।

रिवाल्वर देखते ही रस्तोगी के देवता ही कूच कर गये।

कमल के हाथ में पकड़ी रिवाल्वर उसे साक्षात अपनी मौत नजर आ रही थी।

उसके गले की घण्टी जोरों से उछली—होंठ फड़फड़ाये—लेकिन वह बोल कुछ भी नहीं पाया।

"तुमने सुना नहीं डॉक्टर—मैंने क्या कहा?" कहर भरी निगाहों से उसे घूरा कमल ने।

बुरी तरह से कांप उठा रस्तोगी।

"म...मुझे...ब...बड़े शाह ने मजबूर किया था।"

सुनकर बुरी तरह से उछल पड़े वासुदेव तथा अन्य।

"खुलकर बोलो डॉक्टर।"

गुर्राया कमल।

"न...नेहा और उसके बेटे की हत्या रात को नहीं बल्कि सुबह सात और आठ के बीच हुई थी।"

"लेकिन अदालत में तो तुमने कहा था कि हत्यायें रात को एक से दो के बीच हुई थीं।"

वासुदेव रोष भरे स्वर में बोला।

"व...वो बड़े शाह जी ने मुझे ऐसा करने को कहा था।"

थूक सटकते हुए बोला रस्तोगी।

"और जरा यह भी बता दो कि हत्यायें हुई कैसे थीं?"

कहते हुए कमल की आवाज में हल्की-सी भर्राहट उभर आई थी।

रस्तोगी ने कांपते हुए बताया था।

"यानि कमल बेकसूर था।" वासुदेव बोल पड़ा—"उसका सिर्फ अपनी बीवी से झगड़ा हुआ था। खून नहीं किये थे उसने।"

"ह...हां...!" रस्तोगी के गले की घण्टी जोरों से उछली।

कमल ने इस तरह से गहरी सांस छोड़ी जैसे उसके दिल से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

अपने मौहल्ले में उसने जो इज्जत बना रखी थी—वह उस पर खून का इल्जाम लगते ही खत्म हो गई थी, लेकिन अब उसके दिल को चैन मिल गया था कि मौहल्ले वालों की नजरों में वह खूनी नहीं रहा।

"हे भगवान...!" तभी वासुदेव अपने दोनों हाथ सिर पर मारते हुए पश्चाताप भरे स्वर में बोला—"यह हमने क्या कर डाला। एक बेगुनाह को फांसी के फंदे तक पहुंचा डाला।"

"अब हमें क्या पता था।" तभी एक अन्य बोला—"कमल का नेहा के साथ झगड़ा ही ऐसा हुआ था कि कोई भी ऐसा सोच सकता था—और रही सही कसर इस कमीने डॉक्टर ने पूरी कर दी।"

तभी कमल खड़ा हुआ और वासुदेव की तरफ देखते हुए बोला—

"नेहा पर कमल ने जो शक किया था वो भी बड़े शाह की चाल थी।"

"क्या मतलब?" बुरी तरह से चौंका वासुदेव।

कमल ने उसे सारी बात बताई और बोला—

"जिस तरह से विक्की कमल के घर से निकला था—और जिस कमल के घर से थाने फोन गया था—उससे कमल क्या उसके

स्थान पर कोई भी होता—वह अपनी पत्नी के बारे में वही धारणा बनाता जो कि कमल ने बनाई थी।"

"ओह! तो बड़े शाह ने अपने बेटे की राह में रोड़ा बने कमल को फंसाने के लिये यह सब किया था।"

एक अन्य बोला।

"हां।"

"हे भगवान!"

कमल ने गहरी सांस छोड़ी और डॉक्टर रस्तोगी की तरफ गर्दन मोड़ी।

"मैं जा रहा हूं डॉक्टर! अब अदालत में तुम्हें झूठ बोलना है कि सच—यह तुम जानो। मगर इतना जान लो—शाह का वक्त करीब आ चुका है—। उसके पापों का घड़ा भर चुका है—और वह कभी भी किसी भी वक्त फूट सकता है। इसलिये उससे मदद की उम्मीद बिल्कुल भी नहीं रखना।"

रस्तोगी कुछ नहीं बोला—बस थूक सटककर रह गया।

"आओ वासुदेव जी।" कमल बोला और रस्तोगी के ऑफिस से बाहर निकल गया।

पीछे-पीछे सभी रस्तोगी पर नफरत भरी निगाह डालते हुए बाहर आ गये।

"आईए...आपके घर बैठकर बाकी की बात करते हैं।" कमल वासुदेव से बोला।

कुछ नहीं बोला वासुदेव—बस सिर हिलाया और चल पड़ा।

बाकी भी उनके साथ चलने लगे।

वासुदेव के घर में एक कमरे में सभी नीचे फर्श पर बिछी दरियों पर बैठे थे।

सभी की निगाहें कमल पर टिकी हुई थीं।

कमल ने सभी पर एक बार निगाहें दौड़ाई—फिर बोला—

"अब बताईये—क्या कहते हैं आप लोग?"

"हम क्या कहें।" वासुदेव बोला—"हकीकत आपके सामने है। आप सरकार हैं। हम तो आपसे बस यही इल्तजा कर सकते हैं कि कमल को छोड़ दीजिये।"

"क्या आप लोग कमल के हक में गवाही देंगे?"

सुनकर सभी बगले झांकने लगे। कोई कुछ नहीं बोला—बस एक दूसरे को देखने लगे।

"क्या हुआ...आप लोग चुप क्यों हैं?"

वासुदेव तनिक हिचकिचाया—फिर हिम्मत करते हुए बोला—

"कमल ने बड़े शाह के खिलाफ सिर्फ एक बार आवाज उठाई थी—नतीजा क्या निकला—वो आप जानते ही हैं। सब कुछ बर्बाद हो गया उसका। उसकी बीवी मर गई—बच्चे का कत्ल हो गया—और वह खुद हत्या के इलजाम में फंस गया। ए...ऐसे में अगर हमने कमल के हक में गवाही दी तो—तो वो हमारी क्या हालत करेगा इसका अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं।"

"हां बाबूजी...कमल तो लड़ना-भिड़ना भी जानता था—फिर भी वह फंस गया—हम तो कुछ भी करने के लायक नहीं।"

दूसरा बोला।

"हम भी बीवी बच्चों वाले हैं।" तीसरे ने कहा—"अगर उन्हें कुछ हो गया तो। नहीं बाबूजी—हम कमल के हक में गवाही नहीं दे सकते।"

"यही ठीक कह रहा है।" वासुदेव बोला—"कमल से हमें सहानुभूमि जरूर है—लेकिन उसके लिये हम अपने परिवार की जिन्दगी दांव पर नहीं लगा सकते।"

"उसकी बात पर कमल को उन पर गुस्सा नहीं आया—बस गहरी सांस छोड़कर उसने पहलू बदला और बोला—

"मुझे हमदर्दी है तुम लोगों से।" वह बोला—"मगर इतना जरूर कहूंगा कि तुम लोग वो हो जो सिर्फ कीड़े-मकौड़ों की तरह जी सकते हैं—जो गुलाम ही पैदा होते हैं और गुलाम ही मर जाते हैं। एक शाह मरेगा तो दूसरे शाह के खौफ में जीना शुरू कर दोगे तुम लोग। और ऐसे लोगों से सिर्फ हमदर्दी ही की जा सकती है।"

"हम...हम लोग कर ही क्या सकते है।" वह बोला।

"क्या नहीं कर सकते तुम लोग। अगर तुम सभी एक हो जाओ तो बड़ा शाह क्या छोटा शाह क्या। क़िसी की कोई भी औकात नहीं रह जाती। बस अपने दिलों को पक्का करने की ज़रूरत है तुम्हें...।"

"अ...आप कहना क्या चाहते हैं?" वासुदेव बोला।

"बड़े शाह से मुझे उतनी ही खुन्नस है जितनी आप लोगों को है। बस फर्क यही है कि मुझे उसका डर नहीं—और तुम उससे डर रहे हो। अगर आप लोग मेरा साथ दो, तो फिर देखो किस तरह गंगा उल्टी बहनी शुरू होती है।"

"क्या मतलब?"

"और जब कमल ने उन्हें समझाया तो सभी के चेहरों पर एक जोश भर आया।

आंखों से शोले उभरे लगे सभी की।

"हम आपके साथ हैं।" वासुदेव जोश भरे स्वर में बोला।

"हम भी साथ देंगे।" अन्य सभी भी बोले।

कमल के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

'टिन...टिना...टिन...टिन...!'

मोबाईल के बजते ही बड़े शाह का चेहरा भिन्ना उठा।

मोबाईल उसके सामने ही टेबल पर पड़ा हुआ था।

अब तक तीन फोन आ चुके थे उसे जो कि उसके अलग-अलग अड्डों से आये थे—और सभी में एक ही बात कहीं गई थी कि अड्डे पर छापा पड़ गया है। और बड़े शाह ने खा जाने वाले अंदाज में कहा था कि अगर उसका एक पैसे का भी नुकसान हुआ तो वह किसी को भी जिन्दा नहीं छोड़ेगा। उसने सभी को खुली छूट दे दी थी कि चाहे सभी को खत्म करना पड़े—उसके माल को आंच नहीं आनी चाहिये।

उसने हाथ में पकड़ा पैग हलक में उतारा और खाली पैग को टेबल पर रखते हुए मोबाईल उठाकर उसकी स्क्रीन पर नजर मारी।

बस्तीपुर वाले अड्डे का नम्बर था स्क्रीन पर।

बड़े शाह का कलेजा धड़क उठा। उसका दिल किया कि वह फोन सुने ही नहीं।

जिस तरह से कमल ने फोन करके उससे कहा था कि उसकी बर्बादी का दौर शुरू हो चुका है। बिल्कुल वैसा ही हो रहा था।

कहीं यहां भी ऐसी ही बात सुनने को न मिले।

मगर फोन तो उसने सुनना ही था।

बटन दबाकर उसने मोबाईल कान से लगाया और बोला—

"बोल!"

"ग...ग...जब हो गया बड़े शाह जी।"

सुनकर ही बड़े शाह का कलेजा बैठने लगा।

बड़ी मुश्किल से उसने थूक सटकी और बोला—

"क...या हुआ?"

"हमारे अड्डे को चारों तरफ से पुलिस ने घेर लिया है।"

"क्या?"

"जी हां बड़े शाह जी। पुलिस भी बाहर की है। और हमें चेतावनी दी गई है कि अगर पांच मिनट में हमने सरैण्डर नहीं किया तो—तो हम पर हमला कर दिया जायेगा।"

"तो क्या तूने चूड़ियां पहन रखी हैं—या हराम की खा-खाकर इतनी चर्बी बढ़ा ली है कि तेरे से काम नहीं होता...।"

"ब...बड़े शा...ह जी...।"

"बड़े शाह के बच्चे—इतना याद रख—मेरा एक पैसे का भी नुकसान नहीं होना चाहिये—आज तो तुझे अपनी वफादारी दिखाने का मौका मिला है और तू पीठ दिखा रहा है। हथियारों की कमी है क्या तेरे पास—खत्म कर दे सभी हरामजादों को—बाकी मैं सम्भाल लूंगा।"

"ज...जो हुक्म बड़े शाह जी।" हड़बड़ाती आवाज आई।

बड़े शाह ने मोबाईल कान से हटाया और एस०एस०पी० का नम्बर मिलाकर कालिंग का बटन दबाया और मोबाईल पुनः कान से लगा लिया।

"एस०एस०पी० ऑफिस...।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई।

"बड़ा शाह बोल रहा हूं।" बड़ा शाह गुर्राया—"बात करा एस०एस०पी० से।"

"सर तो अभी आधा घण्टा पहले ही राजधानी चले गये हैं बड़े शाह जी।"

"क्या कहा?" बुरी तरह से चौंका बड़ा शाह।

"जी हां बड़े शाह जी—ऊपर से फोन आया था। अर्जेंट मीटिंग में गये हैं।"

बड़े शाह ने उसके बाद एस०पी० को फोन मिलाया—लेकिन वहां से भी उसे वहीं जवाब मिला।

अर्जेंट मीटिंग में गये हैं।

"सब हरामजादे हैं।" गुस्से से भुनभुनाया बड़ा शाह—"सब हराम की खाने वाले हैं। आगे-पीछे सभी तलवे चाटने आते रहते थे—लेकिन आज वक्त आया तो एक भी नजर नहीं आ रहा।"

भुनभुनाते हुए उसने थाने का नम्बर मिलाया।

"हैलो...!" तभी गौतम की आवाज उसके कान में पड़ी—"इंस्पैक्टर गौतम स्पीकिंग।"

"शुक्र है तू नहीं गया मीटिंग में।" बुरा मुंह बनाते हुए बोला बड़ा

शाह।

"क्या बात है बड़े शाह जी...खैरियत तो है?" दूसरी तरफ से आवाज आई—"बड़े गुस्से में बोल रहे हैं।"

"अबे हरामखोर जिसका सिर मुंडा जा रहा हो—वो गुस्से में नहीं आयेगा तो क्या करेगा।"

गुस्से में बोला बड़ा शाह।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं—किसकी मजाल हो गई है जो...।"

"मेरा बेड़ा गर्क हो रहा है। बाहर से पुलिस आई हुई है और मेरे सभी अड्डों पर छापे पड़ रहे हैं।"

"क...या?"

"और यह सब किया धरा उस हरामजादे कमल का है।"

"कमल...?"

"हां कमल—जेल से भाग निकला है। लेकिन जिस तरह से छापे पड़ रहे हैं—उससे तो यही लगता है कि वह भागा नहीं—बल्कि सी०बी०आई० के साथ मिल गया है। उसने मुझे भी फोन करके धमकी दी है।"

"त...तो क्या थाने में...।"

"हां—उसी का फोन आया था वहां। अब कुछ कर तू...।"

"म...मैं क्या करूं बड़े शाह जी?"

"क्या यह भी मैं बताऊं तुझे?" गुस्से में दहाड़ा बड़ा शाह—"अपना सारा स्टाफ ले जा बस्तीपुर। वहां ए ब्लाक में अड्डा है मेरा। रेड पड़ी हुई है। बात कर वहां के अफसर से कि उसने तेरे से पूछे बिना तेरे शहर में रेड कैसे डाली। जाकर रोक उसे।"

"ए...ऐसे कैसे हो सकता है?"

"क...या...क्या कहा तूने?"

"यह काम मेरा नहीं है बड़े शाह जी—यह काम तो एस० एस० पी० साहब कर सकते हैं। आप उनसे बात करें...।"

"वो हरामी तो बाहर गया हुआ है। एस० पी० भी गया हुआ है।"

"तो फिर एक काम करें आप?"

"क्या?"

"आप भी गायब हो जायें।"

बुरी तरह से उछल पड़ा बड़ा शाह। आंखों में अविश्वास के भाव उभर आये।

"य...यह क्या बक रहा है तू?"

गुस्से में वह इतनी जोरों से दहाड़ा कि उसके मुंह से थूक के छींटे बाहर उबल पड़े।

"हालात आपके खिलाफ चल रहे हैं शाह जी। बेहतरी इसी में है कि आप किशनपुरा छोड़ दें। पैसा तो आनी-जानी चीज है—लेकिन अगर जान चली गई तो वो वापिस नहीं आने वाली।"

बड़े शाह का चेहरा गुस्से से सुर्ख हो उठा।

आंखों में अंगारे दहकने लगे।

उसने झटके से मोबाईल कान से हटाया और उसका बटन दबाते हुए बड़बड़ाया—

"देख लूंगा—तुझे भी देख लूंगा हरामजादे—बड़े शाह को शहर छोड़ने की नसीहत दे रहा है—मैं तुझे दुनिया से धक्का दे दूंगा।"

तभी...!

एक टैक्सी द्वारा कमल सीधा उस चाय वाले की दुकान पर पहुंचा जहां उसने कनवर आदी के साथ चाय पी थी।

हुसैन के अड्डे के बाहर स्टेनगनों से लैस दो गार्ड खड़े थे जो कि हर आने-जाने वाले को इस तरह से घूर कर देख रहे थे मानों उन्हें वहां से निकलने वाले हर व्यक्ति पर संदेह हो कि वह बड़े शाह का आदमी है।

मन ही मन मुस्कुराया कमल और दुकान के करीब खड़ी अपनी बाईक पर सवार हो वहां से निकल पड़ा।

थोड़ी दूर जाकर उसने बाईक सड़क किनारे खड़ी की और जेब से मोबाईल निकालकर संजना का नम्बर मिलाया।

"हैलो...!" शीघ्र ही दूसरी तरफ से संजना की आवाज आई।

"मैं बोल रहा हूं संजना जी।" कमल बोला।

"ओह! कमल जी।"

"जी हां!" कमल बोला—"मेरे वहां से जाने के बाद क्या हुआ?" उसने पूछा।

"कुछ भी नहीं—कनवर ने कहीं फोन किया था—और फिर वह फरमान को लेकर चला गया।"

"आपसे कोई बात नहीं की उसने?"

"बस इतना कहा कि मैं आपको समझाऊं कि आप कानून को

हाथ में न लें। जो काम कानून का है—कानून को ही करने दें।"

"और आपने क्या कहा?"

"कुछ नहीं—बस सिर हिला दिया।"

"ठीक किया आपने। अब आप वो सुनिये जिसके लिये मैंने आपको फोन किया है।"

"कहिये।"

कमल बताने लगा—फिर अन्त में बोला—

"समझ गई आप?"

"हां...मैं पहुंच जाऊंगी।" दूसरी तरफ से जैसे कोई घायल नागिन फुंफकारी थी।

कमल ने मोबाईल का बटन दबाकर उसे जेब में डाला और बाईक आगे बढ़ा दी।

इस वक्त उसका रूख बस्तीपुर की तरफ था।

कुछ ही देर में वह बड़े शाह के बस्तीपुर वाले अड्डे से कुछ दूर एक ऐसे स्थान पर खड़ा था जहां से वह उस अड्डे का साफ नजारा देख सकता था।

हालांकि उसका दिल उस अड्डे के और करीब जाने का था—लेकिन वहां हो रही गोलीबारी ने उसे पहले ही रुकने को मजबूर कर दिया था।

बाहर काली वर्दी पहने कमांडोज पोजीशन लिये भीतर गोलियां बरसा रहे थे—और इसी तरह भीतर से गोलीबारी हो रही थी।

कमल के होंठों पर भयानक मुस्कान रेंग गई।

बड़े शाह ही लंका की बर्बादी में अब उसे कोई संदेह नहीं रह गया था।

उसने बाईक स्टार्ट की और वहां से निकल गया।

कुछ ही देर में उसकी बाईक एस०पी० के ऑफिस की तरफ उड़ी जा रही थी।

कमल ने बाईक एस०पी० ऑफिस से थोड़ी दूर रोकी और उसे एक पेड़ के नीचे धकेलते हुए ले गया।

वहां उसने बाईक को स्टैण्ड पर लगाया और हैंडल लॉक करके अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखा।

शाम के साढ़े पांच बजने जा रहे थे।

सूर्य अस्त हो रहा था।

कमल ने अपनी जेब में पड़ी रिवाल्वर को थपथपाया और पैदल आगे बढ़ने लगा।

एस०पी० के ऑफिस के आगे से निकलकर वह अगले मोड़ से दांई तरफ वाली सड़क पर आ गया।

करीब डेढ़ सौ गज लम्बी सड़क पार करके वह एक दूसरी सड़क पर आ खड़ा हुआ।

ललवा की कोठी इसी सड़क पर थी—उसके दांई तरफ की तीसरी कोठी थी।

उसने सड़क पार की और फुटपाथ पर चढ़कर लापरवाही से चलते हुए आगे बढ़ने लगा—लेकिन उसकी चोर निगाहें सड़क पार ललवा की कोठी पर टिकीं हुई थीं—जिसका विशाल गेट बन्द था।

गेट के पीछे कोठी की दूसरी मंजिल नजर आ रही थी जिसकी दीवारों पर सफेद पेंट किया हुआ था और बार्डर लाल रंग का था। काफी खूबसूरत लग रही थी वह कोठी उस पेंट में।

दूसरी मंजिल के कम्पाऊण्ड के बाहर ग्रिल लगी थी जिस पर कि महरून रंग का पेंट किया हुआ था। उधर छत पर भी वैसी ही ग्रिल लगी हुई थी।

लेकिन अभी तक उसे वहां किसी आदमी के दर्शन नहीं हुए थे।

चूंकि गेट बन्द था—इसलिये उसे यह पता नहीं चला कि नीचे के कम्पाऊण्ड में क्या-क्या है।

कोठी से थोड़ा आगे निकलकर वह सड़क किनारे एक पेड़ के तने से लगकर खड़ा हो गया और कोठी की तरफ देखने लगा।

निश्चय ही वह यही सोच रहा था कि कोठी के भीतर कैसे घुसा जाये—और उससे पहले वह यह जानना चाहता था कि कोठी में कितने आदमी हैं।

कुछ देर वहीं खड़ा सोचता रहा वह।

आखिर वह अपने स्थान से हिला और सड़क पार कर कोठी वाली साईड़ में आया और कोठी की तरफ बढ़ने लगा।

डर बिल्कुल भी नही था उसके दिल में—मगर फिर भी उसका कलेजा धड़क रहा था।

वजह एक ही थी कि ऐसे कामों का उसे कोई भी तजुर्बा नही था।

जैसे ही कोठी की चारदीवारी शुरू हुई—उसने गर्दन पीछे मोड़ी।

दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया उसे।

आश्वस्त होकर उसने अपना रूख दीवार की तरफ किया और हल्के से उछलकर दीवार के सिरे को पकड़ा और बांहों के दम पर ऊपर उठकर गर्दन को दीवार से ऊंचा उठाया और भीतर झांका।

ठीक तभी कम्पाऊण्ड का दरवाजा खुला और उसमें से एक व्यक्ति बाहर निकलकर ड्राईव वे पर खड़ी कार की तरफ बढ़ा।

कमल तुरंत वापिस जमीन पर आया और तेजी से सड़क पार कर सड़क की दूसरी साईड़ में आ गया।

वह आदमी कार की तरफ बढ़ रहा था—जो यह जाहिर करता था कि वह कोठी से निकल रहा है।

फुटपाथ पर आकर वह चलता हुआ कोठी के मेन गेट के सामने आ खड़ा हुआ और झुककर अपने जूतों के तसमे खोले और फिर उन्हें बन्द करने लगा।

इस वक्त वह दूसरी बार तसमें बांध रहा था—जब कोठी का गेट खुला।

तसमें बांधते हुए ही उसने गेट की तरफ देखा।

जो व्यक्ति गेट खोल रहा था—वह खाकी वर्दी पहने था—जो बता रही थी कि वह दरबान है।

पीछे कार गेट की तरफ बढ़ रही थी—जिसकी ड्राईविंग सीट पर वही आदमी बैठा था जिसे कि उसने देखा था।

कार गेट से निकलकर सड़क पर आई और बाईं तरफ मुड़ते हुए उसने रफ्तार पकड़ ली।

उसी के साथ ही गेट पुनः बन्द होने लगा।

ठीक तभी कमल सीधा हुआ और तेज गति से सड़क पार करते हुए गेट की तरफ लपका।

जब तक वह गेट के करीब पहुंचता गेट पूरी तरह से बन्द हो चुका था। लेकिन कमल ने परवाह नहीं की।

बिना कोई वक्त गंवाये उसने गेट के ऊपरी सिरे को पकड़ा और अगले ही पल उसका शरीर उछलकर गेट के ऊपर से होते हुए भीतर आ पहुंचा।

उस वक्त दरबान बाईं तरफ बने एक केबिन की तरफ बढ़ रहा था।

'धप' की आवाज के साथ जैसे ही कमल के पैर ड्राईव वे की ईंटो से बनी सड़क पर पड़े—बुरी तरह से चौंकते हुए दरबान पीछे पलटा।

एक अजनबी को चोरों की तरह भीतर आते देख दरबान बुरी तरह से उछल पड़ा। और अगले ही पल उसका मुंह खुल गया।

निश्चय ही वह चीखकर भीतर सावधान करना चाहता था।

लेकिन उसकी यह मुराद पूरी नहीं हो पाई। उससे पहले ही कमल की रिवाल्वर की नाल उसके हलक में आ घुसी थी।

"खबरदार—" खूंखार अंदाज में बोला कमल—"अगर चीखा तो गोली पेट में जा पहुंचेगी।"

दरबान का चेहरा पीला जर्द पड़ गया।

आंखें फट पड़ीं।

"चल तेरे केबिन में चलते हैं।" कमल गुर्राया और उसके हलक में रिवाल्वर की नाल का दबाव बढ़ाया।

दरबान के कदम स्वयं ही पीछे हटने लगे।

उसे केबिन में लाकर कमल ने उसकी आंखों में झांका और फुंफकारा—

"मैं रिवाल्वर तेरे मुंह से निकालने जा रहा हूं। मेरी तरफ से तुझे चीखने की पूरी छूट है—लेकिन उस सूरत में मेरी रिवाल्वर को भी गोली उगलने की पूरी छूट मिल जायेगी।"

कहकर उसने रिवाल्वर की नाल उसके मुंह से निकाल ली।

दरवान एक बार खांसा—फिर कमल की तरफ देखते हुए सहमे लहजे में बोला—

"क...कौन हो तुम?"

"सवाल तूने नहीं मुझे करने है—जवाब तू देगा।"

दरवान के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"ललवा की ही कोठी है न यह?" पूछा कमल ने।

"ह...हां...!" थूक सटकते हुए बोला दरबान।

"कहां है ललवा?"

"स...साहब तो अभी-अभी कहीं बाहर गये हैं।"

"ओ...तो वो कार ललवा चला रहा था।"

"ह...हां...!"

"और कौन-कौन हैं कोठी में?"

"ए...एक नौकरानी है...।"

"ओह?"

"बस...अ...और कोई नहीं।"

"छोटा शाह?"

छोटे शाह का नाम सुनकर दरबान का रंग उड़ गया। आंखों में फैला खौफ उभर आया।

"कौन...कौन छोटा शाह?" वह बड़ी मुश्किल से थूक सटकते

हुए थर्राये स्वर में बोला।

कमल की रिवाल्वर की नाल उसके माथे के ऐन बीचों-बीच जा लगी।

"मैं मनाने में यकीन नहीं रखता हरामखोर।" वह फुंफकारा—"दूसरी बार प्रश्न भी नहीं करता। लेकिन तेरे से कर रहा हूं। और इस बार जरा सोचकर जवाब देना—वर्ना मेरी गोली तेरा भेजा फाड़ने में देर नहीं करेगी। बोल छोटा शाह अन्दर है कि नहीं?"

"ह...है।"

दरबान ऐसे बोला जैसे उसने हां करने में देरी की, तो उसका भेजा उड़ जायेगा।

कमल के बोलने का अंदाज ही ऐसा था कि दरबान की जगह कोई भी होता—वह भी यही समझता कि वह जो कह रहा है करने से परहेज नहीं करेगा।

"कहां है?"

"न...नीचे बेसमेंट में।"

"बेसमेंट में जाने का रास्ता बोल।"

दरबान ने बताया।

"नौकरानी के अलावा कोई नहीं अन्दर?"

"न...हीं...।"

"फिर सोच ले?"

"म...मैं सच कहता हूं...अन्दर सिर्फ नौकरानी है।"

थर्राये स्वर में बोला दरबान।

कमल ने उससे और कुछ नहीं पूछा।

उसी पल उसका रिवाल्वर वाला हाथ उठा और रिवाल्वर का दस्ता दरबान की खोपड़ी पर जा लगा।

दरबान के घुटने मुड़ते चले गये—और वह वहीं केबिन में ही बिछ गया।

कमल केबिन से बाहर निकला और ड्राईव वे पर चलते हुए कोठी की तरफ बढ़ा। उससे पहले वह गेट को पूरा खोलना नहीं भूला था।

उसके हाथ में रिवाल्वर इस तरह तनी हुई थी मानों किसी भी वक्त वह गोली उगल सकती हो।

आंखों में कहर के भाव लिये वह ड्राईव वे पर खड़ी सफेद रंग की एक मारुति के बराबर से निकलते हुए कम्पाऊण्ड में आया और बिना किसी हिचकिचाहट के दरवाजे को धकेलते हुए कोठी में प्रवेश कर गया।

करीब दस बाहर फीट लम्बी गली पार कर वह हाल में पहुंचा

तो उसके कानों में दाईं तरफ से सिसकारी उभरी।
झटके से कमल ने दांईं तरफ गर्दन मोड़ी।
किचन थी उधर जिसमें एक हसीन युवती खड़ी सहमी निगाहों से उसे देख रही थी।
कमल को अपनी तरफ देखने पर युवती की आंखों में फैला खौफ और भी गहरा हो गया। और जब कमल के कदम उसकी तरफ बढ़े तो उसके तो देवता ही कूच कर गये।
बार-बार उसके गले ही घण्टी उछलने गिरने लगी।
कमल के हाथ में पकड़ी रिवाल्वर उसे ऐसे प्रतीत हो रही थी—जैसे उसकी मौत उसकी तरफ बढ़ रही हो।
लेकिन—ऐसा कुछ नहीं हुआ।
कमल उसके करीब आया और रिवाल्वर के दस्ते से उसके सिर पर वार कर उसे बेहोश कर दिया।
कुछ भी नहीं पूछा उसने उससे—और न ही कुछ कहा।
वह किचन से निकला और हाल में दांईं तरफ से आखिरी कमरे की तरफ बढ़ा।
बेखटके उसने दरवाजा खोला और कमरे में प्रवेश कर गया।
उस कमरे में एक डबल बैड के अलावा एक सैंटर टेबल और उसके दांयें-बांयें दो-दो कुर्सियां पड़ी थीं।
काफी साफ सुथरा कमरा था वह।
कोई सोच भी नहीं सकता था कि उसी कमरे के नीचे एक और कमरा है—और उसका रास्ता भी उसी कमरे से है।
अगर दरबान कमल को न बताता तो खुद कमल को भी पता नहीं चलता कि वहां रास्ता है।
वह सीधा बैड की पुश्त के पीछे आया और पुश्त के निचले सिरे में हाथ फिराया।
शीघ्र ही उसका हाथ एक स्विच पर जाकर रुका।
बिना स्विच के देखे ही उसने उसे दबा दिया।
"घूं-घूं...!" की हल्की-सी आवाज के साथ बैड एक तरफ से ऊपर उठने लगा।
कोई और वक्त होता तो इस मैकेनिज्म पर कमल अवश्य ही आश्चर्य करता—लेकिन इस वक्त तो उसके जेहन में बस एक ही चीज घूम रही थी।
छोटा शाह!
बैड के उठते ही वहां नीचे जाने के लिये बनी सीढ़ियां नजर

आनें लगीं।

कमल के हाथ में थमी रिवाल्वर पर उसकी पकड़ सख्त हो गई। आंखों में कठोरता उभर आई।

दांतों को सख्ती से भींचे उसने सीढ़ी पर पैर रखा और बिना कोई आवाज किये वह नीचे उतरने लगा।

अभी वह पांच सीढ़ियां ही उतरा था कि उसके होंठों पर खौफनाक मुस्कान रेंग आई।

आंखों में ऐसी चमक उभरी मानो शिकारी को उसका मनचाहा शिकार मिल गया हो।

नीचे एक सोफे पर छोटा शाह बैठा था।

हाथ में शराब से भरा पैग थामे।

उसके सामने टेबल पर स्कॉच की बोतल पड़ी थी।

चूंकि छोटे शाह की पीठ थी सीढ़ियों की तरफ इसलिये वह कमल को नहीं देखा पाया।

कमल दबे पांव सीढ़ियां उतरते हुए नीचे आया और ऐन उसके पीछे आ खड़ा हुआ।

"राम-राम छोटे शाह जी।"

कमल बोला तो बहुत ही धीमें स्वर में था—लेकिन छोटा शाह उछला ऐसे था जैसे उसके पीछें परमाणु बम फटा हो।

हाथ में पकड़ा जाम छलक कर आधे से ज्यादा उसके कपड़ों पर और सोफे पर आ बिखरा।

खड़ा होते हुए उसने तेजी से गर्दन पीछे मोड़ी।

एक अजनबी को देख वह हैरान हुआ।

"कौन हो तुम?"

वह किसी तरह स्वयं पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोला।

"बातें भी होती रहेंगी छोटे शाह जी—पहले पैग तो खत्म कर लीजिये।" कमल हाथ में पकड़ी रिवाल्वर को उंगलियों में नचाते हुए बोला—"सुना है शराब पीने से कलेजा मजबूत हो जाता है। अपना कलेजा मजबूत कर लीजिये।"

छोटे शाह का पैग अपने आप ही उसके होंठों से जा लगा।

पैग खाली कर उसने उसे एक तरफ फैंका और कमल की तरफ देखते हुए अपना प्रश्न दोहराया—

"कौन हो तुम?"

कमल के होंठों पर फैला विष और भी तेज हो गया।

"कमल को तो नहीं भूला होगा तू छोटे शाह।"

बुरी तरह से उछल पड़ा छोटे शाह—"त...तू...कमल—नहीं...तू वो नहीं...तू...।"

"मैं कमल ही हूं हरामजादे—देख!" कहने के साथ ही कमल ने अपने चेहरे पर चढ़ा जीतू का फेस मास्क खींच दिया।

"अब पहचान मुझे—मैं वही हूं—जिसकी बीवी को—जिसके बेटे को तुम कुत्तो ने सिर्फ इसीलिये मार डाला, क्योंकि उसने तेरे बुरे काम में रूकावट डाली थी।"

छोटे शाह को काटो तो खून नहीं।

जो थोड़ा बहुत नशा उस पर चढ़ा हुआ था—वह भी कमल की सूरत देखकर खत्म हो गया।

"द...देखो कमल...ज...जो हुआ उसे भूल जाओ मैं तुमसे...।"

"धड़ाक!"

कमल का रिवाल्वर वाला हाथ उसके मुंह पर पड़ा।

चीखता हुआ छोटा शाह पहले पीछे टेबल पर गिरा—फिर टेबल से लुढ़ककर नीचे फर्श पर जा गिरा।

टेबल पर पड़ी बोतल—चिकन की प्लेट भी फर्श पर गिर पड़ी।

"जो हुआ भूल जाऊं।" फुंफकारते हुए कमल ने उसके कूल्हों पर ठोकर रसीद दी—"अपनी उस देवी जैसी बीवी को भूल जाऊं मैं, जिसके चरित्र पर मैंने उंगली उठाई थी। अपने उस बेटे को भूल जाऊं जिसने अभी ढंग से चलना भी नहीं सीखा था—या खुद को भूल जाऊं जो तेरे बाप की शतरंजी चाल में फंसकर अपनी ही बीवी और बेटे का हत्यारा बन गया था। बोल हरामजादे किसे भूल जाऊं—बोल।"

एक और ठोकर पड़ी छोटे शाह के कूल्हों पर।

बुरी तरह से बिलख उठा छोटा शाह।

कमल ने झपटकर उसके बालों को पकड़ा और उसे खड़ा करके उसकी आंखों में झांकते हुए गुर्राया—

"नहीं छोटे शाह—मैं कुछ भी नहीं भूल सकता—और तब तक नहीं भूलूंगा जब तक कि तुम बाप-बेटों को तुम्हारे अंजाम तक न पहुंचा दूं।"

कहने के साथ ही उसने उसके माथे पर एक भरपूर टक्कर जड़ दी।

छोटा शाह उछलकर टेबल को पार कर पीछे जा गिरा।

कमल टेबल लांघकर उसके करीब आया और उस पर लातों-घूंसों की बौछार कर दी।

कमरे में छोटे शाह की चीखें गूंजने लगीं।

"ब....स!" आखिर हारे स्वर में बोला—"अ...और नहीं...म...मैं अपने गुनाह कबूल करता हूं—मुझे मत मारो।"

"घबरा नहीं—मैं मारूंगा नहीं तुझे।" कहते हुए कमल ने उसका गिरेबान पकड़ा और उसे सीढ़ियों की तरफ ले जाते हुए गुर्राया—"तेरी मौत तो कानून के हाथों होगी।"

उसकी बात सुनकर कुछ राहत पहुंची छोटे शाह को। वह यही समझा कि कमल उसे थाने ले जायेगा। और एक बार वहां पहुंचने की देर है—फिर उल्टा खुद कुत्ते की मौत मरेगा।

सो वह उसके साथ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आ गया।

उसका गिरेबान पकड़े हुए ही कमल उसे कोठी से बाहर लाया और फिर उसे कार की तरफ धकेलते हुए बोला—

"चल बैठ गाड़ी में।"

छोटा शाह चुपचाप कार की तरफ बढ़ा।

जब तक वह कार का दरवाजा खोलकर उसमें प्रवेश करता—कमल अपने चेहरे पर फिर से जादू का फेस मास्क चढ़ा चुका था।

"गाड़ी तूने चलानी है हरामजादे।" वह कार का परली साईड़ का दरवाजा खोलते हुए बोला।

घबराते हुए छोटा शाह सरककर स्टीयरिंग के पीछे बैठ गया।

कमल उसके बराबर वाली सीट पर जा बैठा।

"स्टार्ट कर गाड़ी—।" वह बोला।

छोटे शाह ने थूक सटकते हुए कार स्टार्ट की और बैक करते हुए गेट की तरफ बढ़ा।

गेट से निकलकर उसने पहला गियर लगाया और कार आगे बढ़ा दी।

जिस तबीयत से कमल ने उसकी ठुकाई की थी—उससे उसने फिलहाल कुछ भी चालाकी न दिखाने का फैसला कर लिया था।

करीब बीस मिनट बाद कार सेठी चौंक में थी।

छोटे शाह की पसलियों से रिवाल्वर सटाये कमल ने विण्ड स्क्रीन में से इधर-उधर देखा।

काफी रौनक थी बाजार में।

तभी एकाएक ही उसके होंठों पर एक जहरीली मुस्कान उभर आई।

"गाड़ी रोक।" वह गुर्राया।

हल्की-सी हड़बड़ी के साथ छोटे शाह ने कार रोक दी।

"बाहर निकल।"

कमल का आदेश सुनकर छोटा शाह पहले तो चौंका—फिर एकाएक ही उसके होंठो पर एक जहरभरी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

भरा पूरा बाजार था—और वह उसे वहां उतार रहा था। पूरे किशनपुरा का बच्चा-बच्चा उसे जानता था—ऐसे में इस भरे बाजार में उसकी सिर्फ एक हुंकार से ही खलबली मच जानी थी—और तब कमल उस पर गोली भी नहीं चला सकता था।

सो उसने बिना कुछ कहे दरवाजा खोला और कार से बाहर आ गया।

कमल अभी भी कार में ही बैठा था।

"छोटे शाह!"

तभी एक तरफ से उसे दहाड़ती आवाज आई।

चौंककर छोटे शाह ने आवाज की दिशा में देखा।

संजना बढ़ रही थी उसकी तरफ। उसे पहचानने में उसे एक पल भी नहीं लगा।

संजना उसके करीब आई और बिना कुछ कहे उसके चेहरे पर तड़ाक से थप्पड़ जड़ दिया।

पहले तो संजना की आवाज पर ही राह चलते लोग रुक गये थे—और जब उन्होंने संजना को थप्पड़ मारते देखा तो सभी दहल उठे।

"मेरा पल्लू उतारा था न तूने छोटे शाह—इसी चौंक पर।"

घायल शेरनी की तरफ फुंफकारी संजना।

छोटे शाह के गाल पर पड़ा संजना का थप्पड़ इतना जोरदार नहीं था जितनी जोरदार उसकी गूंज थी।

भरे बाजार में उसे उन लोगों के सामने थप्पड़ पड़ा था—जो उसके सिर्फ नाम से सिर झुका लेते थे। जिस बाजार से वह ठहाके लगाते हुए निकलता था—उसी बाजार में एक औरत ने उसे थप्पड़ मारा था। भला इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता था उसका।

"ऐ...!" वह दहाड़ा—"छोटे शाह पर हाथ उठाती है साली। यहीं नंगी कर दूंगा।"

कमल को वह जैसे थप्पड़ लगते ही भूल गया था।

"तड़ाक!" संजना का एक और थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

"तू हाथ तो लगा मुझे कुत्ते।" संजना दहाड़ी—"फिर देख तमाशा—। अरे देख क्या रहे हो।" वह पीछे हट वहां खड़े लोगों पर चीखी—"यह कोई लोहे का नहीं बना जो तुम इससे डरते हो। हर रोज अपनी इज्जत एक दरिंदे के हाथों लुटवाने से बेहतर तो यही है कि इस दरिंदे को खत्म कर दो। मुझे देखो मैं एक अकेली औरत इससे भिड़ रही हूं—और तुम लोग...आह...।"

उसकी बात बीच में ही रह गई।

छोटे शाह का घूंसा उसके मुंह पर आ पड़ा था।
चीखती हुई वह पीछे जा गिरी।
"हरामजादी...!" छोटे शाह दहाड़ा—"इन हीजड़ों को मेरे खिलाफ भड़काती है। यह मेरे गुलाम हैं—कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते यह मेरा—अब इन्हीं लोगों के सामने मैं तुझे नंगी करके तेरी इज्जत तार-तार करूंगा।"
कहकर जैसे ही वह उसकी तरफ बढ़ा—
पीछे से एक जूता उड़ता हुआ आया और उसके सिर पर आ पड़ा।
बुरी तरह से बौखला उठा छोटा शाह। साथ ही वह तेजी से उधर मुड़ा।
"हमारी बहू बेटियों की इज्जत लूटेगा तू।" जूता फैंकने वाला जो कि वासुदेव था—अपना दूसरा जूता उतारते हुए दहाड़ा—"मारो साले को।" कहने के साथ ही उसने दूसरा जूता भी उस पर फैंक मारा।
छोटा शाह संजना को भूल उसकी तरफ झपटा।
तभी पीछे से उसकी पीठ पर ईंट आ लगी।
वह कमल का दूसरा पड़ौसी था।
"मारो...खत्म कर दो ऐसे दरिंदे को।"
चीखते हुए कमल के एक और पड़ौसी ने उस पर पत्थर दे मारा।
बुरी तरह से बौखला उठा छोटा शाह।
हालात खराब हो रहे थे—सो वह तुरंत एक तरफ भागा।
"मारो-मारो...खत्म कर दो इसे।"
वासुदेव तथा अन्य उसके पीछे लपके।
बस इतना ही बहुत था, वहां खड़े लोगों में जोश भरने के लिये।
लोग शोर करते हुए उसकी तरफ भागे।
छोटा शाह कुत्ते की तरह अपनी जान बचाता भाग रहा था—और लोग उस पर पत्थर फैंकते उसके पीछे भाग रहे थे। लहुलुहान हो गया था छोटा शाह।
आखिर जब उसकी टांगों ने जवाब दे दिया तो वह वहीं सड़क पर गिर पड़ा। और उसी के साथ ही लोगों का झुण्ड उस पर टूट पड़ा।
वर्षों बाद पब्लिक का लावा फूटा था—ऐसे में कयामत तो आनी ही थी।
दूर खड़ा कमल हौले-हौले मुस्कुरा रहा था। उसकी आंखों में ऐसे भाव थे जैसे उसके कलेजे को ठण्डक मिल रही हो।

वासुदेव तथा अपने अन्य पड़ौसियों के साथ उसने यही योजना बनाई थी कि वे भरे बाजार में छोटे शाह पर जूते मारें। उनसे पब्लिक में जोश आयेगा।

और वही हुआ।

उसने जेब से मोबाईल निकाला और बड़े शाह का नम्बर मिलाने लगा।

तभी संजना उसके करीब आ खड़ी हुई।

कमल ने उसकी तरफ देखा और गम्भीरता से बोला—"मेरा ख्याल है—अब आपके कलेजे को ठण्ड़क पहुंच गई होगी।"

"हां कमल जी। सिर्फ दो थप्पड़ मारे हैं मैंने उसे—लेकिन इतने में ही मेरे दिल को जो सुकून पहुंचा—तो मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती।"

"लेकिन मेरे दिल को तो तभी सुकून मिलेगा—जब बड़ा शाह भी अपने बेटे की तरह कुत्ते की मौत मरेगा।" कहकर उसने मोबाईल का बटन दबाया और कान से लगा लिया।

बड़े शाह का दिल कर रहा था कि अपने बाल नोचने लगे।

पूरी तरह से बर्बाद हो चुका था वह।

उसके हर अड्डे पर रेड पड़ चुकी थी। और यहां जहां वह बैठा था—यहां सिवाये उसके बॉडी गार्डों के और कोई भी नहीं था।

जिस ढंग से उसकी बर्बादी हुई थी—उससे उसे लग रहा था कि किसी भी वक्त यहां भी धावा हो सकता है—सो उसने यहां से किनारा कर जाना ही बेहतर समझा।

"बाहर रहूंगा तो फिर से ताकत बना लूंगा।" वह बड़बड़ाया और जेब से मोबाईल निकालकर छोटे शाह के मोबाईल का नम्बर मिलाया और कालिंग का बटन दबाकर कान से लगा लिया।

निश्चय ही छोटे शाह को किशनपुरा से निकल जाने के लिये कहना चाहता था।

दूसरी तरफ घण्टी बजती रही—लेकिन छोटे शाह की आवाज नहीं आई।

"क्या हुआ?" बड़बड़ाया बड़ा शाह—"मोबाईल क्यों नहीं निकाल रहा विजेन्द्र।"

उसने दोबारा फोन मिलाया।

लेकिन इस बार भी किसी ने उसका जवाब नहीं दिया।

बड़े शाह के दिल में अच्छे-बुरे ख्याल उठने लगे।

एक बार और ट्राई मारने की सोची उसने—लेकिन तभी उसके मोबाईल का म्यूजिक बज उठा।

'टिन...टिन...टिन...टिन...!-

स्क्रीन पर उभरे नम्बर को देखकर ही बड़े शाह का कलेजा थर्रा उठा।

एक बार पहले भी इसी नम्बर से कमल ने उससे बात की थी।

अपने धड़कते कलेजे को किसी तरह सम्भाले उसने बटन दबाया और मोबाईल कान से लगाते हुए बोला—

"हैलो!"

"तेरा बेटा तो गया बड़े शाह।"

बड़े शाह के पैरों तले से धरती खिसक गई।

"क्या बकता है हरामजादे।" वह दहाड़ उठा।

"म...मैंने कुछ नहीं किया—कसम से। बस मैं तो उसे ललवा की कोठी से ला रहा था कि रास्ते में सेठी चौंक में लोगों ने तेरे बेटे को मुझसे छीन लिया और उस पर टूट पड़े। बेचारा पागल कुत्ते की मौत मरा है...च...च...च...।"

बड़े शाह के सिर पर जैसे पहाड़ आ गिरा।

"म...मेरा विजेन्द्र...।"

"आकर देख ले—हो सकता है उसमें कोई सांस बची हो। वैसे पब्लिक उसे अभी भी मार रही है। बेचारा...श...।"

दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई।

एकाएक ही बड़े शाह का चेहरा सुर्ख हो उठा।

आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं।

"मैं तेरी चाल समझ गया हूं हरामजादे।" वह फुंफकारा—"लेकिन एक बात सुन ले, अगर मेरे बेटे को कुछ हो गया तो मैं...।"

"बेटे की मौत पर दिल पर क्या गुजरती है रघुराज—पता चला? ऐसे ही मैं तड़पा था, जब मैंने अपने क्षितिज की लाश देखी थी। मेरे बेटे ने तो अभी दुनिया भी नहीं देखी थी और तूने उस निर्दोष को मार डाला—जबकि तेरा बेटा तो—कसूरवार था—उसने पता नहीं कितनी ही अबलाओं की इज्जत लूटी होगी—पता नहीं कितने बेगुनाहों के सिर अपने जूतों से कुचले होंगे—। अब कभी न कभी तो उन बेगुनाहों की—उन अबलाओं की बददुआएं तो लगनी थी न उसे—सो आज लग गई। सेठी चौंक पहुंच जा और कफन भी साथ लेते आना

अपने बेटे का। नंगी लाश को घर ले जाना अपशकुन होता है।"

"हराम...जा...दे...!" दहाड़ा बड़ा शाह।

"और हां—अपनी भी अन्तिम यात्रा की तैयारी कर ले—बहुत जल्द मैं तेरी मौत बनकर तेरे सामने खड़ा होऊंगा।"

"हरामजादे...मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा।"

वह पागलों की तरह चीखा।

लेकिन दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया था।

"बनवारी—नीशू...!" वह हिस्टीराई मरीज की तरह चीखा।

तुरंत उसके दोनों बॉडी गार्ड हड़बड़ाते हुए उसके दांयें-बांयें आ खड़े हुए।

"चलो...!" वह चीखा और हॉल के बाहर की तरफ बढ़ने लगा।

दोनों गार्ड उसके दांयें-बांयें चल रहे थे।

हाथों में स्टेनगनें लिये।

'ट्रिन...ट्रिन...!'

फोन की घण्टी बजते ही गौतम ने इस तरह से रिसीवर उठाया मानों वह काफी देर से घण्टी बजने का इंतजार कर रहा हो।

"हैलो...!" रिसीवर कान से लगाते हुए वह माऊथपीस में बोला।

"जीतू बोल रहा हूं।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"मैं तुम्हारे ही फोन का इंतजार कर रहा था। कहां तक पहुंचे?"

पूछते वक्त कलेजा धड़क उठा गौतम का।

"एक का काम हो गया है।"

"या....नि...।"

"छोटा शाह खत्म हो गया है। पब्लिक ने उसके चीथड़े उड़ा दिये हैं।"

"ठण्डक पड़ गई कलेजे को।" अपने सीने पर हाथ रखते हुए गौतम ने गहरी सांस छोड़ी।

"सेठी चौक आ जाओ।" आवाज आई—"लाश पर कब्जा कर लो—और आगे क्या करना है—यह तुम बेहतर जानते हो।"

"चिंता मत करो।" कहते हुए गौतम का चेहरा सख्त हो उठा—"मुझे सब याद है। अब इस शहर में किसी बेबस की इज्जत नहीं लुटेगी—किसी अबला के गिरेबान में हाथ नहीं डाला जायेगा—

किसी कमल को फंसाया नहीं जायेगा। यहां शाह का नहीं—सिर्फ कानून का राज चलेगा—सिर्फ कानून का।"

"ठोकर खाकर ही सही—अक्ल तो आई तुम्हें।"

"हां...अक्ल तो आ गई—लेकिन ठोकर बहुत देर से लगी।"

कहते हुए गहरी सांस छोड़ी गौतम ने।

"सेठी चौंक।"

"मैं पहुंच रहा हूं।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

गौतम ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

इस वक्त उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे मानों उसके भीतर एक साथ हजारों ज्वालामुखी उबल रहे हों।

'चींऽऽऽ!'

ब्रेकों की तीव्र चरमराहट पूरे सेठी चौंक में गूंज उठी।

चारों तरफ मौत-सा सन्नाटा फैला हुआ था।

एक भी दुकान खुली नजर नहीं आ रही थी। यहां तक कि वहां कोई रेहड़ी वाला भी नजर नहीं आ रहा था।

किसी इंसान तो क्या कुत्ते के भी दर्शन नहीं हो रहे थे वहां।

वासुदेव तथा अन्यों द्वारा लोग जोश में आकर छोटे शाह पर टूट तो पड़े थे—और उस वक्ती जुनून में उन्होंने उसे खत्म कर दिया था। लेकिन जब उनका जुनून खत्म हुआ तो उनके दिलों में खौफ भर गया।

साफ नजर आ रहा था कि अपने बेटे की मौत पर बड़ा शाह पागल हो उठेगा—और उसी पागलपन में वह जो भी सामने आता उसे खत्म कर देगा।

बस—देखते ही देखते लोग वहां से गायब होने लगे—। दुकानों के शटर धाड़-धाड़ करते नीचे गिरने लगे। रेहड़ीयां वाले अपनी रेहड़ीयों को धकेलते हुए भाग खड़े हुए।

कुछ ही देर में वहां ऐसा नजर आने लगा—जैसे वहां वर्षों से किसी इंसान के पैर ही न पड़े हों।

सड़क पर दूर-दूर तक छोटे बड़े पत्थर बिखरे हुए थे—कुछ जूते चप्पलें भी इधर-उधर बिखरी नजर आ रही थीं।

खुली छत की जीप में हाथ में रिवाल्वर लिये बड़ा शाह खड़ा था। पीछे वाली सीट पर उसके दोनों बॉडी गार्ड स्टेनगनों से लैस खड़े थे।

बड़े शाह ने चारों तरफ निगाहें दौड़ाई और गरजते हुए बोला—
"हरामजादे कमल—देख मैं आ गया हूं तेरी मौत बनकर। अगर मां का दूध पीया है तो सामने आ।"
लेकिन उसकी गर्जना व्यर्थ ही साबित हुई।
हां—आसपास की दुकानों के ऊपर कुछ रिहाईशी मकान बने हुए थे—उनकी लाईटें जरूर बन्द हो गईं।
"सामने आ हराम खोर।" वह दोबारा गर्जा और जीप से नीचे उतर आया—"बोल कहां है मेरा बेटा?"
लेकिन जवाब नदारद।
कोई सामने नहीं आया।
"हूऽऽऽऽ....हूऽऽऽऽ....।"
तभी दांई तरफ वाली सड़क पर दो कुत्तों के रोने की आवाज आई।
बड़े शाह का कलेजा धड़क उठा—उसके साथ ही उसके कदम उस तरफ बढ़ने लगे।
सड़क पर बिखरे पत्थर भी उसी सड़क पर नजर आ रहे थे।
उसके आगे बढ़ते ही उसके दोनों बॉडी गार्डों ने सड़क पर छलांग मारी और स्टेनगनें सम्भाले उसके दांयें-बांयें चलने लगे। अभी बड़ा शाह चालीस-पचास कदम ही चला था कि उसका कलेजा मुंह को आ गया।
सामने सड़क के बीचोंबीच पड़ी एक लाश के करीब खड़े दो कुत्ते आसमान की तरफ मुंह करके रो रहे थे—और एक कुत्ता लाश को एक जगह से चाट रहा था। शायद वो लाश का खून चाट रहा था।
बड़ा ही वीभत्स दृश्य था वह बड़े शाह के लिये।
लाश तनिक अंधेरे में थी—और पूरी तरह से कुचली हुई थी—इसलिये वह दूर से पहचान नहीं पाया कि लाश किसकी थी।
लेकिन जिस तरह से कमल ने उससे कहा था—उससे उसे यही लग रहा था कि हो न हो लाश छोटे शाह की है।
वह थूक सटककर आगे बढ़ा तो लाश को चाट रहा कुत्ता उन पर गुर्रा उठा—जैसे लाश पर अपना हक जता रहा हो वह।
दांत किटकिटाते हुए बड़े शाह ने ट्रिगर दबा दिया।
"धांय...!"
गोली कुत्ते के पेट में लगी।
बुरी तरह से तड़पते हुए कुत्ता दूसरे दो कुत्तों के साथ वहां से भाग खड़ा हुआ।
बड़ा शाह जैसे ही लाश के करीब पहुंचा—एकदम चीख पड़ा वह।

"विजेन्द्र।"

अपने बेटे की लाश को पहचानने में उसे जरा भी देर नहीं लगी।

बहुत ही बुरी हालत में थी लाश—।

पूरा शरीर घावों से भरा हुआ था—सिर फटा हुआ था। नाक, होंठ, गाल—कुछ भी सलामत नहीं था उसका।

पूरे शरीर की धज्जियां उड़ी हुई थीं।

सहसा ही वह छोटे शाह की लाश पर गिरकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा।

बनवारी और नीशू गमगीन मुद्रा में उसके करीब खड़े थे।

कुछ देर तक बड़ा शाह यूं ही लाश से लिपटा रोता रहा—और फिर एकाएक ही उसकी रूलाई को ब्रेक लग गये।

और जब उसने लाश पर से अपना चेहरा उठाया तो उसकी आंखों में शोले उमड़ रहे थे।

"हरामजादों।" वह खड़ा होते हुए दहाड़ा—"मेरे बेटे को मारकर तुम दुबक कर जिन्दा नहीं रह सकते। पूरे किशनपुरा को शमशान बना दूंगा मैं—शमशान।"

उसने अपनी रिवाल्वर जेब में डाली और झपटकर बनवारी से स्टेनगन छीन ली और फिर—

"तड़...तड़...तड़...।"

उसने दांयें-बांयें दुकानों के ऊपर बने मकानों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

"खनाक...खनाक...!" की आवाजों के साथ खिड़कियों के शीशे टूट-टूटकर नीचे गिरने लगे।

"बाहर निकलो हरामजादो—बाहर निकलो।"

बड़ा शाह जैसे पागल हो गया था।

लेकिन कौन आता बाहर। हर किसी को अपनी जिन्दगी से प्यार था।

"ऐ...ऐ तू...।" वह नीशू पर दहाड़ा और उसकी कोहनी पकड़ उसे धकेलते हुए बोला—"बाहर निकाल कुत्तों को—दिखा उन्हें मेरे बेटे की लाश—बाहर निकाल...।"

नीशू हड़बड़ाते हुए वहां से हटा और दो दुकानों के बीच बनी गली में घुस गया।

"ऐ...ऐ...तू भी जा...घसीटकर ला सभी को।"उसने बनवारी से कहा।

बनवारी निहत्था ही एक अन्य गली में भागा।

शीघ्र ही नीशू दो आदमियों तथा एक औरत को स्टेनगन से कवर

किये गली से निकला।

उन्हें देखते ही बड़ा शाह पागलों की तरह उनकी तरफ लपका।

एक हाथ से स्टेनगन सम्भाले दूसरे हाथ से उसने औरत की चुटियां पकड़ और उसे खींचकर झटके से जमीन पर पटक दिया।

बुरी तरह से चीख उठी औरत।

तभी बड़े शाह ने स्टेनगन उस औरत पर तान दी—साथ ही अपना जूता उसकी छातियों पर रख दिया।

"तूने...तूने मारा मेरे बेटे को?"

"न...नहीं बड़े शाह जी...म...मैंने नहीं मारा—मैं तो घर से भी नहीं निकली।"

बड़े शाह ने स्टेनगन का रूख दोनों आदमियों की तरफ किया।

"ह...हम बेकसूर हैं बड़े शाह जी—हमने नहीं मारा किसी को।" दोनों हाथ जोड़कर घुटने जमीन पर गिड़गिड़ाते हुए रोने लगे।

"हरामजादों—मेरा बेटा मरा है—मेरा बेटा...ऐसे में तुम कैसे जिन्दा रह सकते हो—सबको खत्म कर दूंगा मैं...।" कहते हुए उसने जैसे ही स्टेनगन का ट्रिगर दबाना चाहा—

"धांय...!"

उसकी दांई तरफ से धमाका हुआ और स्टेनगन उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए उसने दांई तरफ देखा।

हाथ में रिवाल्वर पकड़े गौतम बढ़ रहा था उसकी तरफ। उसके साथ-साथ चार पुलिसकर्मी भी थे। जिनके हाथों में पकड़ी स्टेनगनों का रूख उन्हीं की तरफ था।

आंखें फट पड़ी बड़े शाह की।

वह उस दृश्य को देख रहा था—जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

हैरान तो होना ही था उसे।

"बस रघुराज...!" उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला गौतम—"तुम्हारा खेल अब खत्म हो चुका है।"

सुनकर बड़े शाह का तन बदन सुलग उठा।

"साले—नमक हराम—मेरा खाता है—और मुझी को आंख दिखाता है। खत्म कर दे इन्हें।"

उसने नीशू को हुक्म दिया।

मगर नीशू उनकी तरफ स्टेनगन का रूख भी नहीं कर पाया—उससे पहले ही चार राईफलें एक साथ गर्ज उठी।

"धांय....धांय...धांय...धांय...!"

नीशु के साथ-साथ बनवारी के सीने गोलियों से बिंध गये।

दोनों वहीं गिर पड़े। अगली सांस भी नहीं ले पाये थे वे।

इधर नीचे गिरी औरत तथा दोनों आदमी मौका मिलते ही गली में ज़ा घुसे। गौतम तो उनके लिये जैसे देवदूत बनकर आया था—वर्ना उनकी मौत तो निश्चित हो चुकी थी।

अपने बॉडी गार्डों की मौत पर बुरी तरह से बौखला उठा बड़ा शाह।

कुछ भी नहीं सूझा उसे कि वह क्या करे, क्या न करे।

गौतम उसके करीब आया और कहर भरी निगाहें उस पर डालते हुए फुंफकारा—

"क्या कहा था तूने रघुराज कि तेरे बेटे को अकेले नींद नहीं आनी। मेरी बहन को मांग रहा था तू।"

"ठाक...।"

उसके बूट की भरपूर ठोकर उसके पेट में पड़ी।

बड़ा शाह चीखते हुए उछलकर पीछे जा गिरा।

"मेरी बहन की इज्जत उड़ाना चाहता था तू। ठाक।"

एक और ठोकर पड़ी बड़े शाह के कूल्हे पर।

एक बार फिर चीखा बड़ा शाह—और फिर गौतम जैसे पागल हो उठा।

अपने भारी बूटों से वह उसे ठोकरों पर ठोकरें मार रहा था। और हर ठोकर के साथ बड़ा शाह चीखकर पीछे लुढ़क जाता।

तभी एकाएक ही उसने जेब से रिवाल्वर निकाली और बिना किसी चेतावनी के ट्रिगर दबा दिया।

ठीक उसी वक्त गौतम ने उसे ठोकर मारी।

नतीजा गोली जहां गौतम के सीने में लगनी थी—वह बाईं बाजू में जा घुसी।

बस—अगला फायर करने का मौका नहीं दिया उसने।

"धांय...धांय...धांय...!"

सारी की सारी रिवाल्वर उसने बड़े शाह पर खाली कर दी।

बड़े शाह ने दो-तीन झटके खाये और फिर शांत पड़ गया।

मर चुका था वह।

कमल ने बाईक संजना की कोठी के खुले गेट में प्रविष्ट की और

ड्राईव वे के अन्त में ले जाकर खड़ी कर दी।

मन ही मन हैरान हो रहा था वह कि रात के इस वक्त गेट खुला क्यों हुआ है...साथ ही एक अजीब-सी दहशत भी उसके दिल में भर गई थी।

सो बाईक से उतरते ही उसने रिवाल्वर निकाल ली।

एक अंधेरे स्थान पर छुपकर उसने आंखों से बड़े शाह को मरते देखा—तो जो सुकून उसके दिल को मिला था—वो...वो ही जानता था।

अंधेरे में ही वह वहां से निकला और दो गलियां पार करके वहां आ गया, जहां उसने मारूति खड़ी कर रखी थी।

वह मारूति में सवार हुआ और उसे ड्राईव करते हुए वहां पहुंचा जहां पेड़ के नीचे उसकी बाईक खड़ी थी।

उसने मारूति वहीं छोड़ी और बाईक पर सवार हो सीधा संजना के घर आ गया।

एक-एक कदम फूंक-फूंककर रखते हुए वह कम्पाऊंड में आया और मेन डोर के करीब आकर उस पर हाथ रखकर दबाव डाला।

लेकिन दरवाजा नहीं खुला।

भीतर से बंद था वह।

कहीं संजना खतरे में तो नहीं।

मन ही मन बड़बड़ाया वह—और फिर कुछ सोचकर उसने डोर बैल बजा दी।

"डिंग...डां...ग...।"

भीतर कहीं घण्टी बजी।

कमल तुरंत दीवार के साथ चिपककर खड़ा हो गया।

उसके हाथ में थमी रिवाल्वर पर पकड़ सख्त हो गई।

"कौन?"

तभी भीतर से संजना की आवाज सुनकर उसका सारा तनाव जाता रहा।

"मैं हूं।" वह बोला।

दरवाजा खुला, तब तक कमल ने रिवाल्वर जेब में रख ली थी।

सामने संजना खड़ी थी—जिसके चेहरे पर आज एक अलग ही चमक नजर आ रही थी।

कमल को देखकर वह मुस्कुराई और एक तरफ हट गई।

"बाहर का गेट...!" कमल गर्दन पीछे मोड़ते हुए बोला—"खुला हुआ है।"

"हां...अभी...थोड़ी देर पहले ही आई हूं मैं। आप बताईये बड़े शाह का क्या रहा?"

"किशनपुरा अब आजाद हो गया है।" भीतर प्रवेश करते हुए मुस्कुराया वह।

"यानि बड़ा शाह खत्म...।"

खुशी भरी किलकारी मारी संजना ने।

"हां...!"

संजना उसे लिये ड्राइंग रूम में आ गई।

सोफे पर बैठकर कमल ने उसे बड़े शाह की मौत के बारे में बताया और फिर गम्भीर होते हुए बोला—

"मेरा काम पूरा हो चुका है संजना जी। मेरे प्रतिशोध को पूरा करने के लिये आपने जिस तरह से मेरा साथ दिया, उसे मैं मरते दम तक नहीं भुला पाऊंगा। आपकी बाईक बाहर खड़ी है।"

"कहीं जा रहे हैं आप?"

"हां।"

"कहां?"

"लखनपुर।" गम्भीरता से बोला कमल—"बेशक जीतू गुप्तचर विभाग का है—लेकिन इस वक्त वह मेरा रूप लिये जेल में है। मेरा काम पूरा हो गया है—ऐसे में मेरा वापिस जेल चले जाना ही ठीक है।"

"लेकिन आप तो दस दिन के लिये निकले थे। और अभी तो चार ही दिन हुए हैं।"

कमल के होंठों पर फीकी मुस्कान रेंग गई।

"जिन्दगी से अब मोह नहीं रहा संजना जी। मेरी नेहा मुझसे बिछड़ गई—मेरा बेटा..." आवाज भर्रा गई उसकी—"नहीं संजना जी—मैं अब...।" बात अधूरी ही रह गई उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

उसकी हालत देखकर संजना की भी आंखें भर आई।

ठीक तभी कमल के दांई तरफ वाला दरवाजा खुला।

हल्के से चौंकते हुए कमल ने जैसे ही गर्दन उधर मोड़ी—बुरी तरह से चौंकते हुए वह एकदम से खड़ा हो गया। साथ वाले कमरे से कनवर बाहर निकल रहा था।

होंठों पर मुस्कान लिये वह उसके सामने आया और बोला—

"मैं यहां तुम्हारे लिये ही बैठा हुआ था कमल! मुझे विश्वास था के देर-सवेर तुम यहां जरूर आओगे।"

कमल मुस्कुरा पड़ा।

उसने जेब से रिवाल्वर निकाली और उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"देख लो मिस्टर कनवर लाल—रिवाल्वर ज्योंकि त्यों है। एक भी गोली नहीं चलाई मैंने—और न ही किसी की हत्या की है। बेटे को पब्लिक ने मार डाला और बाप को पुलिस ने।"

"मुझे सब पता है।" मुस्कुराया कनवर—"यूं समझ लो कि तुम हर वक्त, हर घड़ी मेरी नजरों के सामने रहे। संजना ने मुझे वह स्कीम बता दी थी जिसके तहत तुम छोटे शाह को मारने जा रहे थे—तभी तो मैंने कुछ नहीं किया—वर्ना तुम्हारे पहुंचने से कहीं पहले हम वहां पहुंच चुके होते। करमचन्द ने तुम्हारे सामने ही तो बताया था—और उसके घण्टों बाद तुम वहां पहुंचे थे।"

कमल हैरानी से उसे देखने लगा।

"और उस कोठी के मालिक ललवा को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। जहां से तुमने छोटे शाह को पकड़ा था।"

कमल कुछ नहीं बोला—बस गहरी सांस छोड़ कर रह गया।

"अब चलें।"

कमल ने चुपचाप सहमति में सिर हिला दिया।

"मी लार्ड।" कमल का वकील रविकांत मजिस्ट्रेट के सामने पुरजोर लहजे में बोला—"मेरे मुवक्किल मिस्टर कमल अरोड़ा ने न तो अपनी पत्नी का कत्ल किया है—और न ही अपने बेटे को मारा है।"

"मेरे फाजिल दोस्त हर बार एक ही रट लगाये हुए हैं मीलॉर्ड।" सरकारी वकील उसकी बात का विरोध करते हुए चीखा—"शायद यह भूल गये हैं कि सिर्फ इनके कह देने भर से अपराधी दोषमुक्त नहीं हो जाता। उसके लिये गवाह पेश करने पड़ते हैं—सबूत पेश करने पड़ते हैं। और मी लार्ड—मैं अदालत के सामने गवाह पेश कर चुका हूं। कमल अरोड़ा के मोहल्ले वालों ने इसके खिलाफ गवाही दी है। डॉक्टर रस्तोगी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी वही बताती है मी लार्ड कि कातिल कमल अरोड़ा ही है। लिहाजा मैं अदालत से दरख्वास्त करूंगा कि कमल अरोड़ा को सख्त से सख्त सजा दी जाये।"

"मी लार्ड...कानून यह कहता है कि भले ही सौ अपराधी छूट जायें—लेकिन किसी बेगुनाह को सजा नहीं मिलनी चाहिये। इसलिये

मैं अदालत से अपील करूंगा कि मुझे मेरे मुवक्किल को बेगुनाह साबित करने का एक और मौका दिया जाये।"

अदालत खचाखच भरी हुई थी।

मुलजिमों के कटघरे में कमल गर्दन झुकाये खड़ा था।

दर्शक दीर्घा में वासुदेव तथा उसके पड़ोसी बैठे थे—और उन्हीं के साथ ही डॉक्टर रस्तोगी बैठा था—जिसके चेहरे की रंग बदरंग हो रही थी।

"आप कहना क्या चाहते है मिस्टर प्रासीक्यूटर?" मजिस्ट्रेट बोले।

"मैं उन गवाहों को एक बार फिर सामने लाना चाहता हूं मी लार्ड।" रविकांत बोला—"जिन्होंने कमल अरोड़ा के खिलाफ गवाही दी थी।"

"इजाजत है।" कुछ सोचकर बोले मजिस्ट्रेट।

"थैंक्यू मीलार्ड।" सिर को हल्के से झुकाया रविकांत ने।

"तो तुम हो वासुदेव?"

रविकांत कटघरे में खड़े वासुदेव को गौर से देखते हुए बोला।

"जी हां!"

"घटना वाली रात को क्या हुआ—तुम एक बार फिर बता सकते हो?"

"बिल्कुल बता सकता हूं।"

"बताओ।"

वासुदेव ने सब कुछ कह सुनाया।

"यानि उस दिन नेहा के चरित्र पर उंगली उठाते हुए कमल अरोड़ा ने उसे पीटा था?"

"उसके चुप होते ही बोला रविकांत।

"जी हां।"

"क्या पहले भी कमल अरोड़ा ने ऐसे कभी झगड़ा किया था अपनी पत्नी से?"

"बिल्कुल नहीं जी। दोनों ऐसे रहते थे जैसे दोनों दो जिस्म एक जान हों।"

"क्या नेहा ऐसी-वैसी औरत थी?"

"बिल्कुल नहीं जी।"

"तो फिर उस दिन ऐसा क्या हो गया जो कमल अरोड़ा ने अपनी बीवी पर संदेह किया?"

"यह सब बड़े शाह की चाल थी।"

"क्या मतलब?"

"पूरे किशनपुरा में बड़े शाह और छोटे शाह का आतंक था।" वासुदेव मजिस्ट्रेट की तरफ देखते हुए बोला—"दोनों बाप-बेटों की मर्जी के बिना वहां पत्ता भी नहीं हिल सकता था। यहां तक कि वहां की पुलिस भी उनकी गुलाम बनी हुई थी। ऐसे में हम लोगों की क्या औकात हो सकती थी जज साहब। यह आप खुद सोच सकते हैं। हमारा दिल नहीं मान रहा था कि हत्या कमल ने की है—लेकिन वो शाह ने ऐसी शैतानी चाल चली थी कि हर कोई कमल को ही खूनी मान रहा था।"

और फिर वासुदेव ने सारी बात कहे सुनाई।

"यह झूठ बोल रहा है मीलॉर्ड।" सरकारी वकील चीख उठा—"जब डॉक्टर रस्तोगी की रिपोर्ट साफ बता रही है कि कत्ल रात को एक और दो के बीच हुए थे तो फिर... ।"

"यही प्रश्न मेरे फाजिल दोस्त डॉक्टर रस्तोगी से करें तो मैं समझता हूं अदालत को बेहतर ढंग से समझ आयेगा।" उसकी बात को काटते हुए बोला रविकांत—"डॉक्टर रस्तोगी यहीं अदालत में ही मौजूद हैं।"

"डॉक्टर रस्तोगी को पेश किया जाये।"

मजिस्ट्रेट बोले।

डॉक्टर रस्तोगी अपने स्थान से उठा और वासुदेव द्वारा खाली किये कटघरे में आ खड़ा हुआ।

सरकारी वकील द्वारा पूछने पर जब डॉक्टर रस्तोगी ने सच्चाई बताई तो बुरी तरह से बौखला उठा सरकारी वकील।

"य...यह पहले नहीं—अब डरे हुए हैं मीलार्ड—मैं दावे से कहता हूं कि या तो इन गवाहों पर कोई दबाव है—या फिर इन्हें खरीद लिया गया है।"

"नहीं मीलॉर्ड...!" रविकांत बोला—"एक डॉक्टर अपनी नौकरी को यूं दांव पर नहीं लगा सकता। दबाव पहले था डॉक्टर रस्तोगी पर—अब चूंकि बड़े शाह और छोटे शाह की मौत हो चुकी है सो इनके सिरों से आतंक का साया हट गया है—इसी वजह से डॉक्टर रस्तोगी सच बोलने की हिम्मत जुटा पाये हैं।"

"जो गवाह अपना ब्यान बदल ले—उसकी गवाही नकारा हो जाती है मीलार्ड।" सरकारी वकील बोला।

"फिर तो मेरे फाजिल दोस्त को मेरे मुवक्किल को कातिल साबित करने के लिये नये सबूत पेश करने होंगे।"

"क्या—क्या मेरे फाजिल दोस्त कमल अरोड़ा को बेगुनाह साबित कर सकते हैं।"

"बिल्कुल कर सकता हूं मीलार्ड। और इसके लिये मैं इंस्पैक्टर गौतम को अदालत में पेश करने की इजाजत चाहता हूं।"

"इजाजत है।"

"आप इन्हें जानते हैं इंस्पैक्टर गौतम?"

कमल की तरफ उंगली सीधी करते हुए रविकांत ने कटघरे में खड़े गौतम से पूछा।

"जी हां...!" गौतम बोला।

"कौन है यह?"

"कमल अरोड़ा! मैंने खुद इसे गिरफ्तार किया था।"

"क्यों?"

"अपनी पत्नी और बेटे के कत्ल के जुर्म में?"

"क्या वो खून कमल अरोड़ा ने ही किये थे?"

"नहीं।"

"तो फिर किसने किये थे?"

"बड़े शाह के कहने पर उसके विक्की नाम के एक गुलाम ने किये थे।"

"तो फिर आपने कमल को गिरफ्तार क्यों किया—जबकि आप असली कातिल को जानते थे।"

"क्योंकि विक्की की तरह मैं भी बड़े शाह का गुलाम था। मैं ही क्या—किशनपुरा का एस०पी०...एस०एस०पी० भी उसके गुलाम थे। बड़े शाह के ही कहने पर मैंने कमल अरोड़ा को गिरफ्तार किया था।"

"आप बतायेंगे कि विक्की ने कत्ल कैसे किये?"

गौतम ने बताया।

"अदालत को शाह और कमल की दुश्मनी की वजह भी बताईये।"

गौतम ने वह भी बताया।

"कमाल है—!" बोला रविकांत—"आप जानते हैं कि जो कुछ आप अदालत को बता रहे हैं—उसकी बिनाह पर आपकी नौकरी भी

जा सकती है।"

"बिल्कुल जानता हूं।" गहरी सांस छोड़ी गौतम ने—"और मैं शायद ऐसा न भी करता—लेकिन वक्त ने मुझे ऐसी मार मारी कि मेरा काया कल्प हो गया। दर्द का अहसास तभी होता है जजसाहब—जब चोट खुद को लगती है?"

"कैसी चोट लगी थी आपको?"

उत्तर में गौतम ने अपनी बहन सविता की सारी बात कह सुनाई। लेकिन जीतू का नाम नहीं लिया उसने, इसके बारे में उसने यही कहा कि वह उसे नहीं जानता था।

"बस...।" वह आगे बोला—"वहीं मेरे दिल को चोट लगी जज साहब—और मुझे पता लगा कि मैं कितना बड़ा गुनहगार हूं। कमल बेगुनाह है जज साहब—इसने कोई खून नहीं किया।"

"दिटसआल मीलार्ड।"

मुस्कुराया रविकांत।

"डिफेंस के वकील द्वारा पेश किये गये गवाहों और को सही मानते हुए अदालत इस नतीजे पर पहुंची है कि—" मजिस्ट्रेट अपना फैसला सुना रहे थे—"कमल अरोड़ा बेगुनाह है। और यह बड़े शाह की चाल का शिकार हुआ है। लिहाजा अदालत कमल अरोड़ा को बाइज्जत बरी करती है।

डॉक्टर रस्तोगी ने बेशक दबाव में ही सही—अपने पेशे का गलत इस्तेमाल किया है—इसलिये अदालत डॉक्टर रस्तोगी पर मुकदमा दर्ज करने का हुक्म देती है—और इंस्पैक्टर गौतम पर भी चार्ज लगाते हुए उस पर मुकदमा दर्ज करने का हुक्म देती है।"

अपना फैसला सुनाकर मजिस्ट्रेट ने अदालत भंग कर दी और खड़े हो गये।

कोर्ट से बाहर निकलते ही कमल के पैर ठिठक गये।

सामने अपनी कार के करीब कविता को उठाये संजना खड़ी थी—जिसकी निगाहें उसी पर केन्द्रित थीं।

कमल के होंठों पर गम्भीर मुस्कान फैल गई।

वह आगे बढ़ा और संजना के सामने आ खड़ा हुआ।

"बधाई हो कमल जी।" संजना बोली—"अदालत ने आपको बाइज्जत बरी कर दिया है।"

"हां...!" गहरी सांस छोड़ी कमल ने।

"अब कहां जायेंगे आप?"

कमल की आंखों में दर्द उमड़ आया।

घर की याद आते ही उसकी आंखों के सामने नेहा और क्षितिज के चेहरे नाच उठे।

कैसे रह पायेगा वह उनके बिना।

उसके दिल के दर्द का अहसास संजना को भी हुआ—सो वह बोली—

"जिन्दगी यादों के सहारे नहीं काटी जा सकती कमल जी।"

हल्के से चौंककर कमल ने उसे देखा।

संजना का सिर झुक गया।

"अ...आप भी अकेले हैं...अ...और मुझे भी एक सहारे की जरूरत है।" वह थर्राये स्वर में बोली—"अ...और इस मासूम के सिर पर भी कोई साया नहीं।"

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा कमल। उसकी समझ में नहीं आया कि वह उसकी बात का क्या जवाब दे।

ठीक तभी पीछे से उसके कंधे पर थपकी पड़ी।

चौंककर उसने गर्दन पीछे मोड़ी।

बिजली उस्ताद खड़ा मुस्कुरा रहा था।

"संजना ठीक कह रही है। जिन्दगी यादों के सहारे नहीं गुजारी जा सकती। उसके लिये सच्चे सहारे की जरूरत होती है।" वह बोला।

"ल...लेकिन ह...हमारी उम्र...!"

"कितनी बड़ी है यह तुमसे—तीन-चार साल—हद पांच साल। क्या फर्क पड़ता है। प्यार उम्र को नहीं देखता—सिर्फ दिल को देखता है। और यह तुझे अपना दिल दे चुकी है।"

कमल के होंठों पर मुकान उभर आई। उसने हाथ आगे बढ़ाये और कविता को अपनी बांहों में ले लिया।

समाप्त